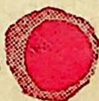
डॉ॰ नारायणदत्त श्रीमाली

# भारतीय ज्योतिष










# भारतीय ज्योतिष

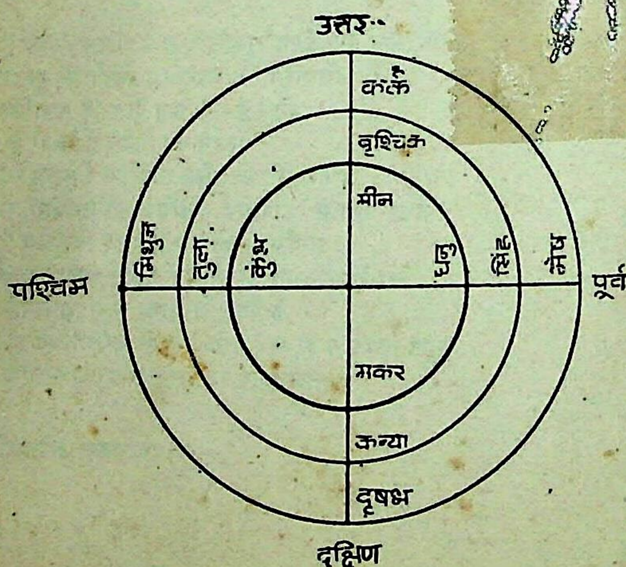
भारतीय ज्योतिष विश्व का सर्वाधिक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण विज्ञान है। अन्य सभी विज्ञान जहाँ वर्तमान के परिणामों को ही स्पष्ट कर पाते हैं, वहाँ ज्योतिष भूत और वर्तमान को समेटते हुए भविष्य के गर्भ में सफलतापूर्वक झाँकने में सफल हो पाता है, फलस्वरूप जो परिणाम प्राप्त होते हैं, उनसे मानव जाति अपना भावी दृष्टि-पथ पहचानकर सफलतापूर्वक लक्ष्य तक पहुंचने में सफल हो पाती है।

'आनन्द पेपरबैक्स' सुप्रतिष्ठित प्रकाशन संस्था है, जिसने मेरी 'भारतीय ज्योतिष' पुस्तक को नई सज-धज के साथ प्रकाशित करने का निश्चय किया है। प्रारंभ में 'भारतीय ज्योतिष : मूल्यांकन' तथा अन्त में 'भारतीय ज्योतिष की उपयोगिता' शीर्षक के दो नये अध्याय दिए गए हैं, जो कि अत्यन्त सारगर्भित नवीन तथा पाठकों के लिए उपयोगी व संग्रहणीयहैं। मुझे विश्वास है, मेरे पाठक इससे लाभान्वित होंगे व ललककर इस पुस्तक को अपनाएंगे।

—नारायणदत्त श्रीमाली

# डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली की अन्य पुस्तकें

| | | |
|---|---|---|
| वर्षफल दर्पण | (,,) | 5·00 |
| कुण्डली-दर्पण | | 5·00 |
| भारतीय ज्योतिष | | 6·00 |
| जन्मपत्री रचना | | 6·00 |
| फलित ज्योतिष | | 5·00 |
| हस्ताक्षर विज्ञान | (प्रकाश्य) | 5·00 |
| अंक दीपिका | (,,) | 5·00 |
| ज्योतिष योग चन्द्रिका | (,,) | 5·00 |
| दशाफल दर्पण | (,,) | 5·00 |
| ज्योतिष योग दीपिका | (,,) | 5·00 |



# भारतीय ज्योतिष

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली



आनंद पेपरबैक्स

भारतीय ज्योतिष



आनंद पेपरबैक्स
मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

शिक्षा भारती प्रेस
शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित

BHARTIYA JYOTISH
by Dr. Narayan Dutt Shrimali

# विषय-सूची

-विश

# भारतीय ज्योतिष : मूल्यांकन

ज्योतिष अपने-आपमें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और गूढ़ विषय है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही ज्योतिष का प्रचलन हो गया था और तब से लगाकर आज तक मानव जाति के उत्थान में ज्योतिष का सक्रिय सहयोग रहा है।

ज्यों-ज्यों मानव जाति ने अपना विकास किया है, उसके पीछे ज्योतिष का लम्बा सुदीर्घ हाथ रहा है। आज मनुष्य उन्नति के उस स्थान पर जा खड़ा हुआ है जहाँ से वह नक्षत्रों का भली प्रकार से अध्ययन करने में समर्थ हो सका है। इसके साथ ही साथ आज के मानव ने ज्योतिष के माध्यम से उन रहस्यों को भी खोज निकाला है जो कि अभी तक उसके लिए अज्ञात थे।

ज्योतिष नियमों के अनुसार ज्योतिष के पाँच अंग माने गए हैं। ये अंग—सिद्धांत, होरा, संहिता, प्रश्न और शकुन शास्त्र हैं। यदि इन पाँचों अंगोंका विश्लेषण किया जाए तो यह ज्ञात हो जाता है कि आज के विज्ञान में जितने भी तत्त्व हैं उन सभी तत्त्वों का समावेश इन पाँच अंगों केअन्तर्गत हो गया है।

प्रारम्भ में ज्योतिष का उपयोग केवल मात्र नक्षत्रों का अध्ययन ही था, परन्तु जैसेजैसे समय बढ़ता गया वैसे-वैसे इसमें नये-नये सिद्धांत और तथ्यों का समावेश होता गया। आज ज्योतिष अपने-आप में सम्पूर्ण विज्ञान को समेटे हुए है, जिसके अन्तर्गत मनोविज्ञान, जीव-विज्ञान, पदार्थ-विज्ञान, रसायन-विज्ञान और चिकित्सा-विज्ञान आदि आ जाते हैं।

सर्वप्रथम जब भारतीय महर्षियों की दृष्टि आकाश-मंडल पर पड़ी और उन्होंने चन्द्रमा, तारों, ग्रह आदि को सूक्ष्मतापूर्वक परखना प्रारम्भ किया तो भयभीत होकर उन्होंने इनको देवत्व का रूप दे दिया। वेदों में कई स्थानों पर ग्रहों को तथा चन्द्र-सूर्य को देवता का रूप दिया गया है और उसी प्रकार से इनकी स्तुति भी की गई है। परन्तु ज्यों-ज्यों उन महर्षियों की दृष्टि स्पष्ट होती गई, उन्हें लगा कि इनका भली भाँति अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि इनके

अध्ययन से ही मानव के और सृष्टि के मूल रहस्यों को समझा जा सकेगा। धीरे-धीरे उन्होंने अनुभव किया कि इन नक्षत्रों और ग्रहों का सीधा प्रभाव मानव पर पड़ता है और इनके प्रभाव के अनुकूल ही मानव जीवन संचालित होता है। यही नहीं, अपितु उन्होंने अनुभव किया कि इन ग्रहों का प्रभाव मानव पर व्यक्तिगत रूप से और सार्वजनिक रूप से भी पड़ता है इसलिए मानव के सुख-दुःख, हानि-लाभ, उन्नति-पतन आदि पर इन ग्रहों का निश्चित प्रभाव है। इसी प्रकार भूकम्प, ज्वालामुखी, महामारी आदि के कारण भी ये ग्रह-नक्षत्र ही हैं जिनके परस्पर संबंधों से इस प्रकार के प्राकृतिक उपद्रव होते हैं।

इस प्रकार की स्थिति देख महर्षियों ने एक ओर जहाँ नक्षत्रों का अध्ययन प्रारम्भ किया, वहीं दूसरी ओर उन्होंने इन ग्रह-नक्षत्रों के प्रभाव का भी विवेचन करना शुरू किया। इस प्रकार से इन ग्रहों के अध्ययन को 'गणित-पक्ष' और इनके फलस्वरूप होने वाले प्रभाव को 'फलित-पक्ष' की संज्ञा दी गई।

इस प्रकार महर्षियों ने ज्योतिष की उपादेयता सिद्ध कर दी कि मानव जीवन के छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कार्य के पीछे इन ग्रह-नक्षत्रों का पूरा-पूरा प्रभाव है।

जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूँ कि ज्योतिष के मुख्य रूप से पाँच अंग हैं और इन पाँच अंगों के आधार पर ही ज्योतिष केन्द्रित है। अब मैं संक्षिप्त में इन पाँचों अंगों का विवेचन प्रस्तुत कर रहा हूँ :

१. सिद्धान्त—गणित के नियम तथा कालगणना, चन्द्रमा की गति, और इसके अतिरिक्त ग्रह-गतियों का सूक्ष्म रूप से निरूपण, ग्रह-नक्षत्र की स्थिति तथा अक्षांश-रेखांश के आधार पर उनकी सही स्थिति ज्ञात करने को 'सिद्धांत' का नाम दिया गया। इसके अन्तर्गत ग्रहों का सही प्रकार से अध्ययन करना और उनकी गति को तथा स्थिति को स्पष्ट करना मुख्य रूप से रहा। धीरे-धीरे इसमें सूक्ष्मता आती गई और ग्रहों की गति तथा उनकी विलोम गति का भली प्रकार से निरूपण करना संभव हो सका।

२. होरा—कुछ विद्वान इसको जातकशास्त्र भी कहते हैं। ज्योतिष में मुख्य शब्द 'अहोरात्र' है जिसका प्रथम और अन्तिम अक्षर हटा देने से 'होरा' शब्द का नामकरण हुआ। अहोरात्र' का अर्थ रात-दिन है, अतः रात-दिन को लघु शब्द में स्पष्ट करने को 'होरा' शब्द प्रचलित किया गया।

इस शास्त्र के अन्तर्गत जन्मकुण्डली के द्वादश भाव, उसमें स्थित ग्रह तथा उन ग्रहों की परस्पर दृष्टि आदि का विवेचन इसी शास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है।

प्रारम्भ में ग्रहों के आधार पर ही मानव जीवन के भविष्य को स्पष्ट किया जाता था परन्तु धीरे-धीरे इसमें सूक्ष्मता आती गई, क्योंकि द्वादश राशियों के अन्तर्गत ही ग्रहों का परिचलन है अतः पहले राशियों के आधार पर और राशियों से संबधित ग्रहों के प्रभाव को लेकर फल-निरूपण किया जाता था।

परन्तु बाद में यह देखा गया कि सवा दो नक्षत्र से एक राशि का निर्माण होता है. अतः यदि ग्रहों का अध्ययन नक्षत्र पद्धति से किया जाए तो ज्यादा सूक्ष्मता आ सकती है। इस प्रकार आगे चलकर नक्षत्र-ज्योतिष का विकास हुआ और इससे फल-कथन में ज्यादा सूक्ष्मता आ सकी।

इस शास्त्र पर कई ग्रन्थों की रचना हुई और इस शास्त्र के प्रसिद्ध विद्वानों में वराहमिहिर, नारचन्द्र, सिद्धसेन-ढुण्ढिराज आदि प्रमुख हैं। उन्होंने इस शास्त्र को अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक देखा और उन्होंने जिन सिद्धांतों की रचना की, वे आज भी होराशास्त्र के अन्तर्गत मान्य हैं।

ग्यारहवीं शताब्दी में होरा शास्त्रकारों ने एक नई पद्धति विकसित की, जिसके अन्तर्गत ग्रह बल, ग्रह वर्ग तथा विंशोत्तरी दशा आदि के माध्यम से फल-कथन स्पष्ट किया गया और इस प्रकार से जो फल-कथन हुआ वह ज्यादा प्रामाणिक और सत्य सिद्ध हुआ। तब से लगाकर आज तक इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर फल-कथन किया जाता है जिससे ज्योतिष की प्रामाणिकता सत्य निरूपित हुई है।

३. संहिता—ज्योतिष का यह भी एक प्रमुख अंग है। इसके अन्तर्गत भूमि-शोधन, गृह-प्रारम्भ, गृह-प्रवेश, जलाशय-निर्माण, कूप-निर्माण, मांगलिक कार्यों के मुहूर्त आदि का विवेचन किया जाता है।

नवमी शताब्दी के आसपास इस अंग के अन्तर्गत कर्मकाण्ड को भी ले लिया गया, जिसके माध्यम से यज्ञों आदि का आयोजन किया जाने लगा तथा इस तथ्य को प्रामाणिक रूप से स्पष्ट किया गया कि यज्ञों के माध्यम से हम अनिष्ट प्रभाव को दूर करने में समर्थ हो सकते हैं और कर्म-काण्ड के द्वारा उन कार्यों में सफलता प्राप्त कर

सकते हैं जो कि हमारे जीवन में कठिन या असम्भव माने जाते हैं।

धीरे-धीरे चौदहवीं शताब्दी के आसपास इस अंग का इतना अधिक विकास हो गया कि जीवन से संबधित सभी उपयोगी विषयों का समावेश इसीके अन्तर्गत किया जाने लगा।

४. प्रश्न शास्त्र—यह ज्योतिष का मुख्य अग है, क्योंकि इसके द्वारा तुरन्त फल-कथन कर लिया जाता है। ज्योतिष के माध्यम से फल-कथन करने के लिए व्यक्ति की जन्मकुण्डली की आवश्यकता होती है, परन्तु कई बार ऐसा भी देखा गया है कि व्यक्ति के पास अपनी जन्म-तारीख, समय आदि का ज्ञान नहीं होता; ऐसी स्थिति में जन्मकुण्डली का निर्माण सम्भव नहीं होता।

बिना जन्मकुण्डली के फल-कथन 'प्रश्न शास्त्र' के माध्यम से सम्भव है। इसके अन्तर्गत उस क्षण विशेष की जन्मकुण्डली बना ली जाती है, जिस क्षण विशेष में प्रश्नकर्ता प्रश्न करता है।

उस समय की कुण्डली बनाकर उसके माध्यम से उसके प्रश्न का उत्तर दे दिया जाता है, और यह फल-कथन अपने-आपमें पूर्णता लिए हुए होता है, इसीलिए इस अंग को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है।

आगे जाकर इस अग के तीन भाग हो गए, जिनमें प्रश्नाक्षर-सिद्धांत, प्रश्न लग्न सिद्धांत और स्वर ज्ञान सिद्धांत प्रमुख हैं। जैन शास्त्रों में स्वर ज्ञान सिंद्धांत पर काफी कुछ लिखा जा चुका है। इसके अन्तर्गत 'केवल ज्ञान प्रश्न चूड़ामणि, चन्द्रोन्मीलन प्रश्न, आयज्ञान-तिलक' आदि ग्रन्थ प्रमुख हैं।

वराहमिहिर के पुत्र प्रथुयशा ने इस विज्ञान को पूर्णता तक पहुँचाया और इसके अन्तर्गत उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की तथा यह स्पष्ट किया कि प्रश्न शास्त्र के आधार पर भी व्यक्ति का भविष्यफल स्पष्ट किया जा सकता है, जो कि अपने-आप में पूर्णतया प्रामाणिक होता है।

मध्यकाल के बाद इस विज्ञान में काफी शोध हुआ और इसे विद्वानों ने पूर्णता तक पहुँचाया।

५. शकुनशास्त्र—यह ज्योतिष का पाँचवाँ अंग है और इसे निमित्त शास्त्र भी कहते हैं। इसके अन्तर्गत पशु-पक्षियों की भाषा का अध्ययन किया जाता है और यह देखा जाता है कि व्यक्ति के रवाना होते समय कोई पशु या पक्षी किस दिशा की ओर है किस प्रकार से बोलता है आदि का अध्ययन इसी शास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है।

आगे चलकर इस शास्त्र का बहुत अधिक विकास हुआ और इसके द्वारा वर्षा कब होगी, चिड़ियों के किस प्रकार से बोलने से वर्षा की कमी रहेगी या भूकम्प आएगा अथवा महामारी की संभावना है आदि का अध्ययन इसी शास्त्र के अन्तर्गत किया जाने लगा। वसन्तराजशकुन, अद्भुतसागर, शकुनशास्त्र आदि इसके प्रामाणिक ग्रन्थ माने जाते हैं, जिनमें इस शास्त्र का विस्तार से विवेचन किया गया है।

यदि सही रूप में देखा जाए तो ज्योतिष भारतीय जीवन का प्राचीनतम विज्ञान है, जिसके माध्यम से भारतवासियों ने अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफलता प्राप्त की है।

## भारतीय ज्योतिष का रहस्य

भारत की मूल विचारधारा अध्यात्म रही है और यदि सही रूप में देखा जाए तो ज्योतिष एक प्रकार से अध्यात्म का ही अंग रहा है। फलस्वरूप यह भारतीय जनमानस में इतने प्रबल रूप से घुल-मिल सका है। भारतीय अध्यात्म का लक्ष्य एकमात्र अपनी आत्मा का विकास कर परमात्मा में विलीन कर देना है या अपनी आत्मा को परमात्मा से समतुल्य बना देना है। पूरा भारतीय चिन्तन इसी तथ्य या इसी रहस्य को स्पष्ट करने में लगा रहा है कि किस प्रकार से ज्योतिष के माध्यम से अध्यात्म की शक्ति का विकास किया जा सके।

यदि हम पिछला इतिहास टटोलें तो ज्ञात होगा कि जितने भी उच्चकोटि के दार्शनिक, महर्षि या विज्ञानवेत्ता बने हैं, वे सभी किसी न किसी प्रकार से ज्योतिष से संबंधित अवश्य रहे हैं। ज्योतिष को दूसरे शब्दों में ज्योतिशास्त्र' कहा जाता है। इसका अर्थ यही है कि यह विज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो प्रकाश देने में तथा आत्मा में जो घनीभूत अन्धकार है उसे दूर करने में समर्थ है। हकीकत में देखा जाए तो जिस विज्ञान से हम अपने जीवन-मरण, सुख-दुःख आदि के रहस्यों को समझ सकें, वह निश्चय ही हमारे जीवन की उन्नति में सहायक है और इस संबध में यदि हमें इसके माध्यम से प्रकाश मिलता है तो निश्चय ही यह 'ज्योतिशास्त्र' कहा जा सकता है।

भारतीय दर्शन में बताया गया है कि मानव का वर्तमान जीवन सही रूप में पूर्व जीवन से बधा हुआ है। पूर्व जीवन में इसके जो भी कार्य रहे हैं उसीका परिणाम मानव को इस जीवन में भोगना पड़ता है। इसी प्रकार मानव इस जीवन में जो कुछ कार्य करता है, जो

भी इच्छाएँ, भावनाएँ और कामनाएँ उसके जीवन में होती हैं तथा वह इस जीवन में जिस प्रकार का संकल्प करता है वैसा ही वह बन जाता है और इस जीवन के किए गए कार्यों का परिणाम आगे के जीवन में उसे भुगतना पड़ता है।

'छान्दोग्य उपनिषद' में बताया गया है कि इसीलिए मानव को चाहिए कि वह अपने हृदय में स्थित ब्रह्म का ध्यान करे और उसके परिणामस्वरूप वह अपने जीवन को ऊँचा उठाकर परमात्मा में लीन हो जाए।

ज्योतिष ही इस क्षेत्र में पूर्ण रूप से सहायक हो सकता है, क्योंकि ज्योतिष के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि इस मानव का पूर्व जीवन किस प्रकार का था ? इस जीवन में यह जो कुछ भोग रहा है, उसके पीछे कौन से संचित कर्म थे, जिनकी वजह से इसको इस जीवन में अनुकूल या प्रतिकूल जीवन भोगना पड़ रहा है। साथ ही साथ यह किस प्रकार के कार्य करे, जिससे कि इसका आगे का जीवन पूर्णतया अनुकूल एवं सन्तुलित बना रह सके।

वास्तव में ज्योतिषशास्त्र के माध्यम से ही व्यक्ति अपने पूर्व जीवन और आगामी जीवन में संतुलन स्थापित कर सकता है।

ज्योतिषशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र के अनुसार मानव-जीवन सीधा और सरल रूप में आगे नहीं बढ़ता अपितु इसके जीवन में पग-पग पर बाधाएँ, कठिनाइयाँ और परेशानियाँ आती रहती हैं। फलस्वरूप इनके घात-प्रतिघातों से यह जीवन आन्दोलित होता रहता है। दर्शन के अनुसार मानव-जीवन तभी गतिशील बना रह सकता है जब उसपर आघात हो। यदि कोई जीवन एकरस हो जाएगा तो उसमें किसी प्रकार का आनन्द अनुभव नहीं हो सकेगा। फलस्वरूप यह आवश्यक है कि उसके जीवन में कमियाँ और विशेषताएँ, सुख और दुःख, हानि और लाभ आदि के घात-प्रतिघात बराबर आते रहने चाहिए, तभी यह जीवन गतिशील रह सकेगा।

हम स्वयं दैनिक जीवन में देखते हैं कि जिन व्यक्तियों का जीवन एकरस हो जाता है उनमें गति नहीं रहती, फलस्वरूप वह जीवन जड़वत् बन जाता है। इसके विपरीत जिनके जीवन में पग-पग पर आशंकाएँ, कठिनाइयाँ खड़ी रहती हैं, वे व्यक्ति हर क्षण सावधान और सतर्क बने रहते हैं और अपने जीवन को अनुकूल बनाए रखने के लिए सतत् प्रयत्नशील बने रहते हैं।

ऐसी स्थिति में मानव प्रत्येक क्षण अपने जीवन के प्रति, अपने कार्यों और विचारों के प्रति सावधान बना रहता है क्योंकि उसे प्रति क्षण यह आशंका बनी रहती है कि यदि ज़रा भी असावधानी से कोई निर्णय ले लिया गया तो उसके परिणाम भी निकट भविष्य में ही भुगतने पड़ेंगे और जीवन परेशानियों से पूर्ण हो जाएगा।

इस प्रकार से देखने पर प्रतीत होता है कि मानव-जीवन सुख-दुःख, घात-प्रतिघात आदि का बिन्दु है और इसका प्रत्येक क्षण तनावपूर्ण तथा रहस्यपूर्ण है। इन आशंकाओं को ज्योतिषशास्त्र ही स्पष्ट कर सकता है कि आने वाला समय किस प्रकार का है और कौन से क्षण हमारे जीवन में परेशानी पैदा करने वाले हैं या किस प्रकार से हम उन क्षणों को पहचान सकते हैं, जिन क्षणों में हमारे निर्णय गलत हो सकते हैं। अतः यदि हमें उन क्षणों का ज्ञान हो जाता है तो हम उस अवधि में पूरी तरह से सावधान एव सतर्क रहेंगे जिससे कि आने वाला जीवन दुखदायी न हो सके। भारतीय ज्योतिष की मान्यता इसीलिए सर्वोपरि है। यह विज्ञान ही उन रहस्यों को स्पष्ट कर सकता है जो कि भविष्य के गर्भ में हैं और उन रहस्यों को स्पष्ट कर उनके हल के लिए मानव को प्रयत्नशील बनाए रख सकता है।

दर्शन के अनुसार प्रत्येक मानव देश, काल और पात्र में बंधा हुआ है। इन तीनों के समन्वय से ही किसीके जीवन को या किसी रहस्य को भली प्रकार से समझा जा सकता है। ज्योतिष में काल-गणना मुख्य है, क्योंकि काल की छोटी से छोटी इकाई की गणना भी ज्योतिष के माध्यम से हुई है और इस गणना के आधार पर ही तथ्यों का निरूपण किया जा सका है कि किस प्रकार से हम यह ज्ञात कर सकें कि काल की अमुक इकाई व्यक्ति के लिए अनुकूल है या प्रतिकूल। इसीलिए 'काल-पुरुष' को ईश्वर के समकक्ष रखा गया है।

चिकित्साशास्त्र के अनुसार मानव-जीवन त्रिगुणात्मक प्रवृत्ति से बंधा हुआ है। तत्त्व, रज, तम—इन तीन प्रवृत्तियों के इर्द-गिर्द ही मानव जीवन घूमता है। जिस मानव में तमोगुण की प्रधानता होती है वह व्यक्ति उसी प्रकार से बन जाता है। उसमें क्रोध की मात्रा जरूरत से ज्यादा आ जाती है। अत्यधिक क्रोध का प्रभाव उसके शरीर पर तथा स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। फलस्वरूप उसके रक्त-संचालन में तीव्रता आ जाने के कारण शरीर कमजोर बना रहता है। इसी प्रकार जिस मानव में रजोगुण की प्रधानता होती है वह राजसी स्वभाव वाला

और आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है, यद्यपि आर्थिक दृष्टि से वह भले ही कमजोर हो, परन्तु उसके स्वभाव में ऐयाशी, भोग-विलास आदि की प्रचुरता होती है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि मानव-जीवन जिस गुण से आबद्ध होता है उसके शरीर की संरचना भी उसी प्रकार से हो जाती है। वराहमिहिर ने स्पष्ट कहा है कि मानव-जीवन के चारों ओर ग्रह अपनी गति से बराबर गतिशील हैं और जिस क्षण विशेष में जिस स्थल पर मानव का जन्म होता है उस समय उस स्थल पर जिस प्रकार के ग्रहों की दृष्टियों का प्रभाव कम या ज्यादा होता है, उस बालक का स्वभाव भी वैसा ही बन जाता है, अर्थात् किसी मानव में तमो-गुण या रजोगुण की प्रधानता ग्रहों के प्रभाव के फलस्वरूप ही सम्भव हो सकती है; क्योंकि उस क्षण विशेष में उस स्थान पर जहाँ कि बालक का जन्म हुआ है यदि तमोगुण-सम्पन्न ग्रहों का प्रभाव विशेष रूप से है तो उसके शरीर में उन्हीं ग्रहों की दृष्टियों का प्रभाव ज्यादा होने के कारण उसमें तमोगुण से संबंधित प्रभाव बढ़ जाएगा और आगे के वर्षों में उस व्यक्ति में इसी गुण की प्रधानता रहेगी।

ज्योतिष में प्रत्येक ग्रह के गुण आदि का विवेचन भली प्रकार से स्पष्ट किया गया है :

१. सूर्य : तमोगुण, तेजस्वी
२. चन्द्रमा : सतोगुण
३. मंगल : तमोगुण, क्रोधप्रधान
४. बुध : सतोगुण
५. गुरु : रजोगुण, शान्त, सात्त्विक व धार्मिकप्रधान
६. शुक्र : रजोगुण
७. शनि : तमोगुण, स्वकेन्द्रित

जन्म के समय यदि किसी एक ग्रह की रश्मियों का प्रभाव विशेष नहीं होता और उस समय मिश्रित रश्मियों का प्रभाव होता है तो वह मानव भी मिश्रित गुणप्रधान हो जाता है, अतः यह स्पष्ट है कि समस्त ब्रह्माण्ड प्रति क्षण आंदोलित अवस्था में रहता है। फलस्वरूप इस ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु भी प्रति क्षण आन्दोलित रहती है और उस-पर ग्रहों का प्रभाव बराबर पड़ता रहता है। जन्म के समय जिन-जिन रश्मि वाले ग्रहों का प्रभाव होता है, उस बालक का स्वभाव भी आगे चलकर उसी ग्रह के गुणों के अनुसार बन जाता है।

एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले
नृणां स्व मूर्ति समम्
कुर्युर्देहं नियतं वहबश्च,
समागता मिश्रम् ॥

अतः ज्योतिषशास्त्र के माध्यम से यह स्पष्ट हो सकता है कि इस बालक का स्वभाव भावी जीवन में किस प्रकार का होगा। इसके जीवन की रचना किस प्रकार से निर्मित होगी और यह आगे के पूरे जीवन में किस प्रकार के ग्रह से सम्बन्धित होगा जिससे कि इसका आगे का जीवन उस ग्रह के अनुरूप बना रह सकेगा।

भारतीय ज्योतिष ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि समय की छोटी से छोटी इकाई भी अपने-आपमें महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि प्रत्येक इकाई अपने-आपमें स्वतंत्र है और उस प्रत्येक इकाई का मूल्य अपने-आपमें दूसरी इकाई से अलग है, इसीलिए ज्योतिष में मुहूर्त आदि की परिगणना हुई है। यदि अमृत रश्मि-प्रधान नक्षत्र के क्षण में हम कोई कार्य करते हैं तो अवश्य ही उसका परिणाम अमृतमय बना रहता है, पर यदि विष-रश्मि-प्रधान समय में कोई कार्य प्रारम्भ करते हैं तो उसका प्रभाव भी जहर के समान ही हो जाता है, जिसके परिणाम-स्वरूप उस कार्य में बाधाएँ और परेशानियाँ बराबर आती रहती हैं और उसका परिणाम अनुकूल नहीं रहता।

भारतीय महर्षियों ने मुहूर्त आदि की विवेचना इस काल-गणना के आधार पर ही की है। उन्होंने इस बात का अनुभव किया कि प्रत्येक ग्रह एक विशेष गुण से प्रभावित है और उस ग्रह के गुण के अनुसार ही उसमें से रश्मियाँ प्रवाहित होती हैं। यदि कोई ग्रह विष-प्रधान होता है या कोई ग्रह तमोगुण-प्रधान होता है तो निश्चय ही उस ग्रह की रश्मियाँ भी तमोगुण-प्रधान होंगी। कई बार दो ग्रहों का बराबर प्रभाव मिलकर विष की सृष्टि कर लेता है। ऐसी स्थिति में उन रश्मियों में भी विष का प्रभाव विशेष रूप से हो जाता है और उस काल-विशेष में यदि कोई कार्य प्रारम्भ किया जाता है तो निश्चय ही उस कार्य में अनुकूलता नहीं आ पाती।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर मुहूर्तशास्त्र का निर्माण हुआ और हमारे पूर्वजों ने तथा त्रिकालदर्शी महर्षियों ने उन क्षणों-विशेष को खोज निकाला जो कि मानव-जीवन की उन्नति में सहायक नहीं हैं या वे क्षण प्रगति में बाधक हैं।

घर प्रारम्भ करते समय, घर में प्रवेश करते समय, मांगलिक कार्य करते समय, यात्रा प्रारम्भ करते समय या जीवन के अन्य जितने भी कार्य हैं, उन कार्यों का प्रारम्भ किस क्षण-विशेष में हो, जिससे कि उस कार्य में पूर्णता आ सके और वह कार्य भली प्रकार से सफल हो सके, इसका ज्ञान समय की गणना और प्रत्येक क्षण के प्रभाव को समझने के बाद ही सम्भव हो सकता है और इस प्रकार का ज्ञान रख-कर यदि अपने जीवन को आगे बढ़ाएँ तो निश्चय ही हम उसमें विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

ज्योतिष में रत्न धारण करने को भी प्रधानता दी गई है। जैसा कि मैंने ऊपर बताया है, ज्योतिष का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के जीवन को अनुकूल तथा सुखमय बनाना है। वे सभी कार्य या वे सभी उपाय जिनसे मानव-जीवन सुखी बन सके और अपने जीवन में पूर्ण प्रगति कर सके, ज्योतिष का मुख्य उद्देश्य हैं।

जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूँ, मानव-जीवन ग्रहों की रश्मियों के संतुलन का एक पुंज है। जीवन में जब वह जन्म लेता है, उस क्षण-विशेष में उस स्थान पर ग्रहों की रश्मियों का जितना और जो कुछ प्रभाव होता है उस प्रभाव को उस क्षण-विशेष में बालक अपने शरीर में समाहित कर लेता है। उदाहरण के लिए दिन को बारह बजे भी जहाँ सूर्य की रश्मियाँ प्रवाहित हैं वहीं चन्द्र, मंगल, बुध आदि ग्रहों की रश्मियाँ भी प्रवाहशील हैं। यह बात अलग है कि उस समय सूर्य की रश्मियाँ सर्वाधिक तीव्र होती हैं अतः उसके प्रभाव को अनुभव कर लेते हैं जबकि अन्य रश्मियाँ इसकी अपेक्षा कम तीव्र होने के कारण अनु-भव नहीं कर पाते, परन्तु इस समय भी समस्त रश्मियों का प्रवाह प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक क्षण न्यूनाधिक होता ही है।

ऐसी स्थिति में जब बालक माता के गर्भ से इस संसार के वायु-मण्डल में प्रवेश करता है, तो उस पहले क्षण में उन रश्मियों का प्रभाव मानव-शरीर पर हो जाता है और उन रश्मियों का प्रभाव जीवन-भर बना रहता है। एक प्रकार से देखा जाए तो उन रश्मियों के संतु-लन के आधार पर ही उस बालक का जीवन-निर्माण होता है। यदि उस क्षण-विशेष में शनि की रश्मियाँ ज्यादा होती हैं तो शनि के गुण के अनुसार उस बालक का निर्माण और आगे चलकर विकास होता है। रूस के वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि जीवन में आदमी तभी बीमार पड़ता है जबकि उन रश्मियों में असंतुलन आ जाता है। उदा-

हरण के लिए किसी बालक के जीवन में मंगल की रश्मियाँ कमजोर हैं या जन्म के समय मंगल आकाशमण्डल में अपने ग्रह-पथ पर होने के कारण दूर होने से उसकी रश्मियाँ जमीन पर क्षीण रूप में आएंगी, फलस्वरूप वह बालक-शरीर मंगल की रश्मियों को न्यून रूप में स्वीकार कर पाएगा और उसके शरीर में मंगल की रश्मियाँ कमजोर होंगी।

यदि उस बालक के ज्योतिष के अनुसार मंगल का प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर हो, तो निश्चय ही उसका स्वास्थ्य कमजोर रहेगा, चाहे उसे कितने ही टानिक या चिकित्सा दी जाए, परन्तु उसके स्वास्थ्य में पूर्ण सुधार नहीं आ सकेगा, क्योंकि उसके शरीर में स्वास्थ्य से संबंधित ग्रह मंगल की रश्मियाँ अत्यन्त कमजोर हैं।

अब यदि उसके शरीर में मंगल की रश्मियाँ कुछ विशेष रूप से प्रवाहित कर ली जाएँ तो संतुलन आ सकता है और ऐसी स्थिति में पूर्ण रश्मियाँ प्राप्त हो जाने के कारण स्वास्थ्य में अनुकूलता सम्भव है। आवश्यकता इस बात की है कि उसके शरीर में मंगल से संबंधित रश्मियों का प्रवाह किया जाए।

मूँगा रत्न (जिसे अंग्रेजी में कोरल कहते हैं) में विशेषता होती है कि वह इस वायुमंडल में से मात्र मंगल की रश्मियों को ही खींचता है, अर्थात् मूँगा रत्न पूरे वायुमंडल में से मंगल की रश्मियों को अपने-आप में जज्ब करने की क्षमता रखता है।

अब यदि किसी अंगूठी में मूँगा रत्न जड़वा दिया जाए और उसके नीचे का हिस्सा इस प्रकार से खोखला रखा जाए कि मानव-शरीर की त्वचा का स्पर्श उस रत्न से बराबर बना रहे तो मानव-त्वचा संवेदनशील होने के कारण उस रत्न के माध्यम से मंगल रश्मियों को जज्ब करती रहती है।

इस प्रकार धीरे-धीरे शरीर में जितनी मंगल की रश्मियों का अभाव होता है, वह अभाव मूँगा रत्न के माध्यम से पूरा हो जाता है; फल-स्वरूप मंगल रश्मियों की न्यूनता के फलस्वरूप जो स्वास्थ्य में कम-जोरी थी वह रश्मियों की पूर्ति होने के कारण नहीं रह पाएगी और स्वास्थ्य पूर्णतया अनुकूल तथा स्वस्थ हो सकेगा।

इसी प्रकार जिसके जीवन में गुरु रश्मियों का अभाव होता है तो वह गुरु से संबंधित रत्न के माध्यम से उन रश्मियों की पूर्ति कर सकता है।

नीचे मैं प्रत्येक ग्रह और उससे संबंधित रत्न का वर्णन कर रहा हूँ :

१. सूर्य : माणिक्य
२. चन्द्रमा : मोती
३. मंगल : मूंगा
४. बुध : पन्ना
५. गुरु : पुखराज
६. शुक्र : हीरा
७. शनि : नीलम
८. राहु : गोमेद
९. केतु : लहसुनिया

इन रत्नों का कितना वजन होना चाहिए, इसका निर्णय इस आधार पर किया जाता है कि उसको कितनी रश्मियों की आवश्यकता है और कितने वजन का रत्न एक दिन में कितनी रश्मियों को प्राप्त कर सकता है जिससे कि उसके शरीर में संतुलन आ सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर रत्न की मात्रा निश्चित की जाती है।

इसके साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि रत्न की प्रकृति का मेल धातु से सही रूप में हो। धातु और रत्न दोनों विपरीत गुणों से युक्त न हों, इसलिए प्रत्येक रत्न से संबंधित धातु का निर्णय भी महर्षियों ने स्पष्ट कर दिया है।

१. सूर्य : सोना
२. चन्द्रमा : चाँदी
३. मंगल : सोना
४. बुद्ध : सोना
५. गुरु : सोना
६. शुक्र : सोना या पंच धातु
७. शनि : लोहा
८. राहु : सोना
९. केतु : चाँदी

धातु की मात्रा निश्चित नहीं है। धातु उतनी ही लेनी चाहिए जिससे कि भली प्रकार से अंगूठी का निर्माण हो सके और उसमें रत्न भली प्रकार से बिठाया जा सके।

इस प्रकार जब हम देखते हैं तो ज्ञात होता है कि रत्न धारण

करने की विधि अपने-आपमें पूर्ण वैज्ञानिक और तर्कसंगत है और उसके पीछे ठोस वैज्ञानिक आधार है।

यहाँ पर एक और प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या ग्रह सुख-दुःख देते हैं या ये मात्र सुख-दुःख के सूचक हैं ?

जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूँ कि प्रत्येक क्षण मानव-जीवन पर ग्रहों का प्रभाव रश्मियों के माध्यम से पड़ता रहता है, और इसी वजह से सुख-दुःख आदि का भोग उस व्यक्ति को भोगना पड़ता रहता है। इसके साथ ही साथ मानव के पूर्ण जीवन के कार्यों का भी परिणाम उसे भोगना पड़ता है। उदाहरण के लिए मैं यह कहूँ कि जब मानव जन्म लेता है तो वह पूर्व जीवन के संस्कारों से बंधा हुआ होता है। उसके जीवन में उन संस्कारों का प्रभाव भी होता है। इसके साथ ही साथ इस जीवन के ग्रहों के प्रभाव को भी उसको स्वीकार करना पड़ता है और उन दोनों के समन्वय से उसका यह जीवन-पथ निर्माण होता है।

अब यहाँ यह प्रश्न उठता है कि यदि ज्योतिष के माध्यम से ज्ञात होता कि निश्चित समय पर किसी तेज गति वाले वाहन से दुर्घटना होगी तो यह ज्ञात होने पर क्या उस दुर्घटना को टाला जा सकता है ?

यदि दुर्घटना को टाला जा सकता है तो फिर यह स्पष्ट है कि ग्रहों का प्रभाव स्थायी नहीं होता अपितु हम अपने प्रयत्नों से उस प्रभाव को बदल सकते हैं, और यदि यह प्रभाव स्थायी और अमिट होता है तो रत्न-मंत्र आदि सब व्यर्थ हैं।

वास्तविकता यह है कि सामान्य रूप से यदि कुछ भी नहीं किया जाए तो ज्योतिष के आधार पर जो घटनाएँ स्पष्ट होती हैं, वे निश्चित समय में अवश्य ही घटित होंगी, परन्तु उन घटनाओं की तीव्रता को कम किया जा सकता है या उनका प्रभाव बढ़ाया जा सकता है, इसके लिए रत्न, मंत्र-तंत्र आदि निश्चित रूप से उपयोगी हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति को यह ज्ञात हो जाता है कि २७ मई को तेज गति वाले वाहन से दुर्घटना होगी, पर यदि उस दुर्घटना के कारण ग्रह के प्रभाव को न्यून कर दिया जाए तो घटना के प्रभाव को भी न्यून बनाया जा सकता है। विज्ञान का नियम है कि विपरीत प्रभाव से अनुकूलता लाई जा सकती है। उदाहरण के लिए जब कार की गति धीमी करनी होती है तो विपरीत वेग को बढ़ाया जाता है, फलस्वरूप विपरीत वेग बढ़ जाने के कारण उसकी गति में न्यूनता आनी स्वाभाविक है।

इसी प्रकार जब किसी व्यक्ति के जीवन में किसी ग्रह का प्रभाव ज्यादा होता है और उसके जीवन में हानि हो रही हो या उस ग्रह का प्रभाव अनुकूल नहीं हो तो उसके विपरीत गुण वाले ग्रह की रश्मियों को बढ़ाने से उस ग्रह के प्रभाव में न्यूनता लाई जा सकती है।

यदि किसी बालक के जीवन में गुरु की प्रधानता हो और यह गुरु उसके स्वास्थ्य में अनुकूल फल नहीं दे रहा हो तो इसके विपरीत ग्रह शुक्र को महत्त्व दिया जाता है या शुक्र से संबंधित रश्मियों को बढ़ाया जाता है, जिसकी वजह से गुरु का प्रभाव स्वभावत: न्यून हो जाता है। ऐसी स्थिति में शुक्र से संबंधित रत्न हीरा पहनाना चाहिए जिससे कि गुरु का प्रभाव कम हो सके।

इसी प्रकार ग्रह के प्रभाव को कम करने के लिए मंत्र का उपयोग भी किया जाता हैं। मंत्र से ग्रह को प्रसन्न नहीं किया जाता या मंत्रों के प्रभाव से ग्रह को संतुष्ट नहीं किया जाता अपितु उसके प्रभाव में न्यूनता लाई जाती है।

ऐसी स्थिति में जब उसके प्रभाव में न्यूनता आ जाती है तो उससे संबंधित कार्य में भी न्यूनता आनी स्वाभाविक है। अब यदि जिस ग्रह की वजह से २७ मई को दुर्घटना होने वाली है, यदि समय से पूर्व उस ग्रह के प्रभाव को रत्न या मंत्र-तंत्र आदि से कम कर लिया जाए तो निश्चय ही दुर्घटना भी छोटी-सी और प्रभाव-शून्य होगी।

दुर्घटना का निश्चित पैमाना नहीं है। सिर फटकर बहुत अधिक रक्त बह जाने को भी दुर्घटना कहते हैं और साइकल से नीचे गिरने से पैर में मोच आ जाने को भी दुर्घटना ही कहते हैं।

अब यह तो स्पष्ट है कि उस क्षण-विशेष में जो घटना घटित होने वाली है वह घटना घटित तो अवश्य होगी परन्तु उसका प्रभाव न्यून हो सकता है।

जिस ग्रह की वजह से जीवन में हानि होने की संभावना होती है, उस ग्रह के प्रभाव को कम किया जा सकता है, और जिस ग्रह की वजह से उन्नति, प्रमोशन, आर्थिक लाभ आदि की संभावना होती है, उस ग्रह को रत्न या मंत्र-तंत्र के माध्यम से सबल बनाकर उसके फल को पूर्णता के साथ प्राप्त किया जा सकता है।

वास्तव में हमारे महर्षियों ने मंत्र आदि की रचना कर जो सिद्धान्त निर्धारित किए हैं, वे वास्तव में ही प्रामाणिक हैं और उनसे निश्चित और ठोस परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

इस दृष्टि से देखने पर ज्योतिष की उपयोगिता पूर्ण रूप से अनुभव होने लगती है। हम यह स्वीकार करने को बाध्य हैं कि मानव-जीवन में पूर्णता तभी आ सकती है जब कि हम अपने आगामी जीवन को पहले से ही पहचान सकें और उसके अनुकूल बना सकें। इस प्रकार हम अपने जीवन को ज्यादा स्वस्थ व अनुकूल बना सकते हैं और जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं।

मानव-जीवन में ज्योतिष की उपयोगिता सर्वोपरि है, क्योंकि इसके द्वारा हम काल-गणना सूक्ष्मतापूर्वक कर सकते हैं। इसके माध्यम से दिन, सप्ताह, पक्ष, मास, ऋतु आदि की गणना सही प्रकार से करके यह निश्चित किया जा सकता है कि किस समय में किस प्रकार की ऋतु होगी और वातावरण पर किस प्रकार का प्रभाव रहेगा।

इसी प्रकार काल-गणना के आधार पर सूर्य-ग्रहणआदि का समय निर्धारित कर उसके अनुकूल व्यवस्था कर सकते हैं।

जैसा कि पीछे बताया जा चुका है कि प्रत्येक क्षण की अपने-आप में स्वतंत्र सत्ता है और प्रत्येक क्षण अपने-आप में मूल्यवान है। इसके साथ ही साथ प्रत्येक क्षण का प्रभाव भी अपने-आप में अलग-अलग है। ज्योतिष के माध्यम से ही हम उस क्षण को और उसकी प्रकृति को पहचान सकते हैं और तदनुकूल कार्य करके इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

इतिहास को भी ज्योतिष से बहुत अधिक सहारा मिला है, क्योंकि ज्योतिष के द्वारा ही तिथि की गणना संभव हो सकी है, जिसके माध्यम से काल-निर्धारण करने में इतिहास को सहायता मिली है। ज्योतिष की वजह से ही वेदों का समय-निर्धारण हो सका है और इतिहास को भली प्रकार से समझा जा सका है।

सृष्टि के रहस्य का पता भी ज्योतिष के माध्यम से ही हो सका है क्योंकि ज्योतिष ने प्रत्येक अणु की संरचना का ज्ञान प्राप्त किया है और यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक अणु का निर्माण किस प्रकार से संभव हो सका है। इसी तथ्य के आधार पर सृष्टि का निर्धारण और इसके रहस्य को समझा जा सका है।

शरीर-विज्ञान और चिकित्सा-विज्ञान पूर्ण रूप से ज्योतिष से बंधे हुए हैं, क्योंकि इन दोनों का संबंध मानव-शरीर है और इसी प्रकार ज्योतिष का संबंध भी मानव-शरीर ही है। चिकित्सा-विज्ञान मानव को स्वस्थ बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील है। इसी प्रकार ज्योतिष

भी आने वाली घटनाओं को स्पष्ट करने में सहायक है, जिससे कि यह ज्ञात हो सके कि आने वाला समय स्वास्थ्य की दृष्टि से किस प्रकार का है और किन ग्रहों की वजह से स्वास्थ्य में विपरीतता आने की संभावना है।

इस विज्ञान की सबसे बड़ी उपयोगिता यही है कि यह मानव-जीवन के उन रहस्यों को भी स्पष्ट कर लेता है जो कि भविष्य के गर्भ में छिपे हुए हैं। इस प्रकार भविष्य का आकलन हो जाने की वजह से हमारे लिए अपने जीवन को अनुकूल बनाने में सफलता मिल सकी है।

आज का युग जरूरत से ज्यादा जटिल हो गया है। मानव जितना ही ज्यादा सृष्टि के रहस्यों का पता लगाने में समर्थ होता जा रहा है, उतना ही ज्यादा अपने-आप के बारे में अन्धकारग्रस्त है। उसने चन्द्रमा का पता तो लगा लिया है परन्तु अपने शरीर के बारे में भली प्रकार से नहीं जान सका है कि कल क्या होगा या मेरे साथ किस प्रकार की घटना घटित हो जाएगी।

ऐसी स्थिति में मानव के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह अपने बारे में भली प्रकार से जान ले और आने वाले समय को पहले से ही पहचान ले जिससे कि भविष्य में आने वाली परेशानियों, बाधाओं, अभावों और कठिनाइयों को दूर किया जा सके; जिससे कि हमारा जीवन संतुलित, सुखप्रद और उन्नतिपूर्ण हो सके; जिससे कि कम से कम समय में हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकें।

वस्तुत: आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने पूर्वजों के द्वारा प्राप्त इस विज्ञान को भली प्रकार से समझें। इसका सही प्रकार से उपयोग करें और इसके माध्यम से अपने जीवन को संतुलित बना सकें, जिससे कि हम अपने लघु रूप को पूरे विश्व में फैलाकर एक कीर्तिमान स्थापित कर कालजयी हो सकें।

# १ : प्रवेश

प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह कितना ही सुख-सुविधा-सम्पन्न क्यों न हो, अपना भविष्य-फल जानने की उत्कट इच्छा रहती है, क्योंकि मानव-मन सदैव अप्राप्य और अगोचर के लिए उत्कण्ठित रहता है। मानव का भावी जीवन व जीवन की घटनाएँ भविष्य के गर्भ में निहित रहती हैं, अतएव उसकी भविष्य की इच्छा बलवती रहना स्वाभाविक है। अपनी तथा दूसरों की अनहोनी एवं अप्रत्याशित उन्नति-अवनति को देखकर उसके मन में भी भविष्य के गर्भ में जाने की जिज्ञासा होती है। इसी जिज्ञासा की पूर्ति के हेतु मानव ने अपना भावी जीवन जानने की अनेकानेक विधियाँ खोज निकालीं, जिनमें सामुद्रिक-शास्त्र, ज्योतिष, ताजिक, रमल, प्रश्न आदि प्रमुख हैं। सामुद्रिक और ज्योतिष मनुष्य की वे प्रारम्भिक वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हैं, जिन्हें वह सभ्यता के प्रथम चरण में ही प्राप्त कर चुका था।

सभ्यता का उदय भारत, चीन आदि देशों में हुआ, ऐसा माना जाता है। इन देशों में प्रागैतिहासिक काल से आज तक ज्ञान के जो अक्षय भंडार प्राप्त हुए हैं, ज्योतिष उनका एक अंश मात्र ही है। तब से लगाकर आज तक ज्योतिष के सम्बन्ध में निरन्तर शोध होता रहा है। ज्योतिष एवं सामुद्रिक-शास्त्र आदि मूलतः भारतीय विधाएँ हैं, जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ-साथ फारस, चीन आदि देशों में पहुँची, परन्तु कालान्तर में जब इन देशों के सम्बन्ध भारत के साथ शिथिल पड़े तो स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में, अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग ढंग से इन विधाओं का विकास हुआ।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने पर यह पता चलता है कि इस जिज्ञासा वृत्ति ने ही मानव को ज्योतिष-शास्त्र के गम्भीर रहस्योद्घाटन के लिए प्रवृत्त किया है। तारे, ग्रह, नक्षत्र, चन्द्र, सूर्य आदि को देखकर वह उनके पीछे छिपे रहस्य का पता लगाने को विवश हो उठा और तब से आज तक वह इन गुत्थियों को सुलझाता जा रहा है।

'ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्' शब्द से ज्योतिष शास्त्र की व्युत्पत्ति करते हुए सूर्यादि ग्रह और उसके शोध कराने वाले शास्त्र को ज्योतिष शास्त्र कहा गया है। इस शास्त्र से प्रमुखतः ग्रह, नक्षत्र, संचार,

परिभ्रमण आदि घटनाओं का सही-सही निरूपण एवं ग्रह-नक्षत्रों की गति से घटित शुभाशुभ तथ्यों का विचार किया जाता है।

ज्योतिष शास्त्र के आविष्कर्ता भारतीय ही थे, इसमें कोई संदेह नहीं है। योग-विज्ञान, भारतीय ऋषियों की श्रेष्ठतम उपलब्धि रही है, जिसके द्वारा उन्होंने अपने शरीर के भीतर ही सौरमण्डल के दर्शन कर उसका नियमन आकाशीय सौरमण्डल से किया। यहाँ से यह विद्या ग्रीस में गई और फिर वहाँ से पूरे संसार में फैली। डब्ल्यू० डब्ल्यू० हंटर, गलबरूनी, प्रो० मैक्समूलर, फ्रॉक्वीस, बर्नियर, कॉण्ट्स, आर्मस्टर्जन, विल्टन, राबर्टसन, प्रो० कोलब्रुक प्रभृति पाश्चात्य विद्वानों ने एक मत से इस विद्या की प्राचीनता स्वीकार करते हुए इसे विश्व को भारत की देन कहा है।

मानव सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के साथ अपने जीवन का सम्बन्ध स्थापित करने का इच्छुक रहता है। उसकी इस प्रवृत्ति ने ही ज्योतिष को जीवन के साथ सम्बन्धित किया है। भारतीय दर्शन के अनुसार मानव निरन्तर काम करता रहता है। इस कर्म के भी 'सञ्चित, प्रारब्ध और क्रियमाण' ये तीन भेद माने गये हैं। किसी के द्वारा वर्तमान क्षण तक किया गया कर्म 'सञ्चित' कहलाता है, भले ही वह इस जन्म में अथवा इससे पूर्व जन्म में किया गया हो। समस्त कर्म एक साथ भोगना सम्भव नहीं है, अतः इन्हें वह क्रम से भोगता है। संचित कर्म में से जो भाग भोगना प्रारम्भ करता है वही 'प्रारब्ध' कहलाता है तथा जो कर्म अभी हो रहा है, उसे 'क्रियमाण' कहते हैं। इस प्रकार इन तीन तरह के कर्मों के कारण आत्मा अनेक जन्मों को धारण करती हुई अग्रसर होती रहती है।

इस प्रकार भारतीय दर्शन के अनुसार यह आत्मा, एक स्थूल शरीर जीर्ण होने पर दूसरे स्थूल शरीर में प्रवेश कर लेती है, परन्तु ऐसा होने पर नये स्थूल शरीर को पिछले लिंग शरीर का कोई भान नहीं रहता, वह अपने पूर्व जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों की निश्चित स्मृति को खो बैठता है। इसीलिए ज्योतिष यह बात स्पष्ट रूप से सामने रखता है कि मानव के वर्तमान स्थूल शरीर में रहते हुए भी आत्मा जन्म-जन्मान्तरों से सम्बन्धित रहती है।

जो भी जन्म लेता है, वह दूसरे रूप में समाज का एक पूरक होता है। जन्म लेते ही माता-पिता, भाई-बहन, बन्धु-बान्धवादि मिलकर बालक का एक छोटा-सा संसार बन जाता है, परन्तु जन्म लेते ही वह न तो चल सकता है और न स्वतन्त्र रूप से क्रियाशील हो सकता है। लगभग बारह

वर्ष की अवस्था तक वह एक प्रकार से परतन्त्र ही होता है। इस अवस्था तक उसकी कोई स्वतन्त्र देन नहीं आंकी जाती। इसलिए 'फलित-ज्योतिष' के अनुसार बारह वर्ष तक जातक के अपने ग्रह उतना प्रभावी नहीं होते, जितना उसके माता-पिता के होते हैं। इस अवस्था तक वह चेष्टारत तो रहता है, परन्तु स्वतन्त्र रूप से उसका फल पाने में समर्थ नहीं रहता।

मनोवैज्ञानिकों ने आत्मा की क्रियाशीलता को देखते हुए मनुष्य के व्यक्तित्व को दो भागों में विभक्त किया है।

बाह्य व्यक्तित्व––इसके अनुसार मानव इस भौतिक शरीर के रूप में जन्म लेकर अपने पूर्व जन्म के भाव-विचार और क्रियाओं के अनुसार अपने-आपको ढालता है तथा अनुभवों के द्वारा शनैः-शनैः अपने व्यक्तित्व का विकास करता है।

आन्तरिक व्यक्तित्व––वह है, जो बाह्य जगत् के संचित एवं क्रियमाण कार्यों, अनुभवों एवं विचारों को अपने-आपमें सँजोकर रखता है।

मनुष्य अपने आन्तरिक और बाह्य दोनों प्रकार के व्यक्तित्व में एकरूपता लाने का प्रयत्न करता है। ज्योतिष सिद्धान्त के अनुसार बाह्य व्यक्तित्व के तीन रूपों––भाव-विचार और क्रिया तथा आन्तरिक व्यक्तित्व के तीन रूपों––स्मृति, अनुभव और प्रवृत्ति को अन्तःकरण एक रूप में संगठित करता है। इस प्रकार इन रूपों के प्रतीक सौर-जगत् में रहनेवाले सात ग्रहों को माना गया है, जिनकी न्यूनाधिक्यता से मानव-जीवन का समष्टि रूप व्यक्तित्व बनकर जगत् में निखरता है। संक्षेप में रूप एवं उनके प्रतीक ग्रह इस प्रकार हैं––

| रूप | ग्रह | प्रभाव |
|---|---|---|
| बाह्य व्यक्तित्व | प्रथम रूप बृहस्पति | शरीर, धर्म, कानून, सौन्दर्य, प्रेम, शक्ति आदि के रूप में। |
| | द्वितीय रूप मंगल | इन्द्रियज्ञान, आनन्द, इच्छा, साहस, दृढ़ता, आत्मविश्वास आदि के रूप में। |
| | तृतीय रूप चन्द्रमा | शरीर व मस्तिष्क में होने वाले परिवर्तन, संवेदन, भावना, कल्पना, लाभेच्छा आदि के प्रतीक रूप में। |
| आन्तरिक व्यक्तित्व | प्रथम रूप शुक्र | निःस्वार्थ प्रेम, भ्रातृत्व, |

| | | |
|---|---|---|
| | | स्नेह, स्वच्छता, कार्यक्षमता, परख, बुद्धि आदि के प्रतीक रूप में। |
| | द्वितीय रूप बुध | आध्यात्मिक शक्ति, निर्णय-बुद्धि, स्मरणशक्ति, सूक्ष्म कला-प्रेम, तर्क, खण्डन-मण्डन के प्रतीक रूप में। |
| | तृतीय रूप सूर्य | दैवत्य, सदाचार, इच्छा-शक्ति, प्रभुता, ऐश्वर्य, महत्वाकांक्षा, आत्मविश्वास, सहृदयता आदि के प्रतीक रूप में। |
| अन्तःकरण | शनि | तात्त्विक ज्ञान, नायकत्व, मननशीलता, धैर्य, दृढ़ता, गंभीरता, सतर्कता, कार्य-क्षमता आदि के प्रतीक रूप में। |

वराहमिहिर ने इन सात ग्रहों और बारह राशियों की स्थिति अपने शरीर में ही बताई है, जो कि इस प्रकार है—

| शरीर भाग | राशि |
|---|---|
| १ मस्तक | मेष |
| २ मुख | वृष |
| ३ वक्षःस्थल | मिथुन |
| ४ हृदय | कर्क |
| ५ उदर | सिंह |
| ६ कटि | कन्या |
| ७ बस्ति | तुला |
| ८ लिंग | वृश्चिक |
| ९ जंघा | धनु |
| १० घुटना | मकर |
| ११ पिंडली | कुम्भ |
| १२ पैर | मीन |

इसके साथ-साथ इन बारह राशियों में भ्रमण करने वाले ग्रहों में आत्मा रवि, मन चन्द्रमा, धैर्य मंगल, वाणी बुध, ज्ञान गुरु, वीर्य शुक्र और संवेदना को शनि का प्रतीक माना है। इस प्रकार इस शरीर-स्थित सौरमंडल का बाह्य सौरमण्डल से परस्पर सम्बन्ध बना रहता है। ज्योतिष शास्त्र सौरमण्डल के ग्रहों की स्थिति एवं गति आदि के अनुसार शरीर-स्थित ग्रहों की गति आदि को स्पष्ट कर फलाफल का निर्देश करता है।

## ग्रहों का मनुष्य पर प्रभाव

हमारी पृथ्वी भी सौरमण्डल की एक सदस्या है और वह सूय से आकर्षित होकर अनवरत उसकी परिक्रमा कर रही है। पृथ्वी में भी आकर्षणशक्ति है जिस कारण सूर्य उसे प्रकाश, ताप आदि भेंट करता रहता है। फलस्वरूप पृथ्वी के जीवधारियों में प्राण और शक्ति का संचार होता रहता है। सूर्य एवं चन्द्रमा की तरह ही अन्य ग्रहों का प्रभाव भी पृथ्वी पर पड़ता है और यह एक-दूसरे को ओज आदि प्रदान करते रहते हैं। चूंकि पृथ्वी पर रहनेवाले प्रत्येक काल का एक स्वतंत्र मनस्-अस्तित्व होता है, अतः ग्रह प्रत्येक काल पर भिन्न-भिन्न रूप में अपना प्रभाव डालते हैं।

पृथ्वी के सबसे निकट चन्द्रमा है, इसका जल-तत्त्व पर विशेष प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक पूर्णमासी को समुद्र में ज्वार आना, इसका स्पष्ट प्रमाण है। जल, चल (Mobile) तत्त्व है, यह स्थिर नहीं रहता. इसी प्रकार मन के जल-तत्व होने के फलस्वरूप चन्द्रमा का मन पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है। अतः चन्द्रमा के द्रुतगामी होने से मन भी द्रुतगामी है।

जातक की जन्मकुण्डली में चन्द्रमा का एक विशिष्ट स्थान होता है। चन्द्रमा जिस राशि पर होता है, वही जातक की जन्म-राशि कहलाती है। जन्मराशि से ही मनुष्य के मन का स्वभाव और वृत्तियों का पता चलता है। सूर्य प्रकाश का स्वामी है अतः उसका प्रभाव नेत्रों पर विशेष होता है। इसी प्रकार विभिन्न ग्रहों के अध्ययन से फलित-ज्योतिष में जातक के शुभाशुभ का निर्णय होता है।

आकाश में जितने भी ग्रह हैं वे सब निर्दिष्ट गति से अपने पथ पर चलते रहते हैं और शुभ गति से ग्रहों का प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है, उसी गति से उनका फल होता है। व्यक्ति की कुण्डली एक प्रकार से आकाशीय नक्षत्र ग्रह-समूहों का मानचित्र है। क्रान्ति वृत्त पृथ्वी के सूर्य परिक्रमण मार्ग का नाक्षत्रिक वृत्त है, जिस मार्ग से सभी ग्रह सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते

रहते हैं। जिस मार्ग से पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है, उसी मार्ग के आसपास ही नक्षत्र गोल में समस्त ग्रहों का भी मार्ग है, जो क्रान्तिवृत्त से अधिक-से-अधिक सात अंश का कोण बनाते हुए चक्कर लगाते हैं। बुध का मार्ग क्रान्तिवृत्त पर ७° कोणात्मक, शुक्र का ३° २३° ३५°, भौम का १° ५१° ०२', बृहस्पति का ६° ४१° १८°, शनि का २° २९° ४०°, वरुण (यूरेनस) का ०° ४६° २०°, वारुणी (नेपच्यून) का १° ४०° ४° ०२° क्रान्तिवृत्त पर झुका हुआ है। चन्द्रमा का पृथ्वी परिक्रमा मार्ग क्रान्तिवृत्त से ४° ५६° से ५° २०° तक ऊपर-नीचे है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सभी ग्रह क्रान्तिवृत्त से ७·८° उत्तर या दक्षिण होकर चलते हैं। इस विशिष्ट मार्ग का आकाशीय विस्तार राशि है, जिसके बारह भाग हैं और प्रत्येक भाग ३०° का होता है। इन बारह राशियों में प्रत्येक का आकार पृथ्वी पर रहने वाले जीव-जन्तुओं के आकार पर होने के कारण ही उनका वैसा नाम पड़ा। इस प्रकार से मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन—ये बारह राशियाँ बनीं। चूँकि मनुष्य के भाग्य का सम्बन्ध ग्रहों की गति पर ही अवलम्बित है और ग्रहों की गति क्रान्तिवृत्त के आसपास के नक्षत्र-मंडल में ही होती है, इसलिए ज्योतिषियों ने नक्षत्र-मंडल के २७ भागों के २७ नक्षत्र मानकर उनका नामकरण स्पष्ट किया।

चूँकि चन्द्रमा एक दिन में इस मण्डल में १३° २०° चलता है इसलिए उसकी गति का २७ भागों में विभाजन किया गया। पृथ्वी भी इन्हीं नक्षत्रों में ३६५. १५. ३१. ३० / ३६५. ०६. ९ ९७ गति पर सूर्य की परिक्रमा करती है, जिससे एक सौर वर्ष बनता है। इसके साथ ही पृथ्वी अपनी धुरी पर भी २३° २६° ५२° झुकी हुई है, जिससे उसकी गति के मध्य में उसका विषुव वृत्त दो स्थानों पर क्रान्तिवृत्त को काटता है जिससे अयन बनता है। इसी के फलस्वरूप सूर्य एक वर्ष में ६ महीने दक्षिण अयन पर तथा ६ महीने उत्तर अयन पर रहता है। इस क्रान्तिवृत्ताश्रित मार्ग के नक्षत्र मण्डल के ३०° के एक भाग को राशि कहते हैं, जिसका पूरा वृत्त ३६०° का होता है! यही जातक की जन्म-कुण्डली का आधार होता है।

कुण्डली का निर्माण करते समय जातक के जन्मकाल के समय पूर्व क्षितिज पर क्रान्तिवृत्त का जो भाग होता है, उसे लग्नस्फुट कहते हैं और उस राशि को लग्नराशि कहा जाता है। तत्पश्चात् जो ग्रह आकाशीय पथ पर जहाँ होता है, जातक की कुण्डली में भी वह ग्रह उसी स्थान में बैठा दिया जाता है। इस प्रकार आकाशीय ग्रहों की सही स्थिति उसकी

कुण्डली में स्पष्ट हो जाती है।

ज्योतिष शास्त्र को ज्योतिः शास्त्र भी कहा गया है, क्योंकि उस शास्त्र से जीवन-मरण का रहस्य, सुख-दुःख, हानि-लाभ आदि के बारे में पूर्ण प्रकाश मिलता है। मानव-जीवन पर हर समय ग्रहों का प्रभाव पड़ता है। उत्पत्ति के समय बालक पर जिस ग्रह की व जिन राशियों की छाया पड़ेगी बालक का स्वभाव, चरित्रादि वैसा ही होगा।

इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि प्राचीन काल में हमारे ऋषियों ने अपने दिव्य चक्षुओं से ग्रहपथ का अवलोकन करके मानव-जाति पर उसका प्रभाव स्पष्ट करते हुए उत्तम-कोटि की प्रतिभा का परिचय दिया था। अर्वाचीन ज्योतिष में जो शिथिलता दिखाई पड़ रही है उसका कारण दिव्य ज्ञान वाले ऋषियों की कमी है। बड़ी-बड़ी वेधशालाओं एवं साधनों के अभाव के फलस्वरूप ही इस पर से आस्था हटने लगी है। लेकिन यदि सूक्ष्म निरीक्षण से इस शास्त्र का अध्ययन किया जाय तो यह न केवल विज्ञान के लिए सहायक है, अपितु मनुष्य भी इसके द्वारा अपना भविष्य जानकर उसे सँवारता हुआ उन्नति-पथ पर अग्रसर हो सकता है।

## २ : ज्योतिष-सिद्धान्त

भारतीय ज्योतिष का उद्देश्य मानव के आत्मकल्याण और शुभाशुभ का निर्णय करते हुए भविष्य का संकेत कर देना है। लोक-व्यवहार के लिए क्रियात्मक रूप में इसके दो सिद्धान्त हैं—१. गणित २. फलित। गणित ज्योतिष के तीन भेद—कारण, तन्त्र और सिद्धान्त—तथा फलित-ज्योतिष के जातक, ताजिक, मुहूर्त, प्रश्न और शकुन ये पाँच भेद माने गए हैं। यों इनमें और भी अन्य भेदोपभेद किये जा सकते हैं, परन्तु मुख्यतः उपर्युक्त भेद ही माने जाते हैं।

इस पुस्तक में मुख्यतः 'फलित-ज्योतिष' के अंगों पर ही प्रकाश डाला गया है। यद्यपि ज्योतिष की जानकारी के लिए गणित ज्योतिष का अध्ययन भी आवश्यक है, पर उसका विवेचन दूसरी पुस्तक 'कुण्डली-

दर्पण'[1] में किया गया है। प्रामाणिक ज्योतिषियों द्वारा निर्मित तिथि-पत्रों से गणित के सिद्धान्तों का शुभाशुभ ज्ञान प्राप्त किया तो जा सकता है, किन्तु हर व्यक्ति के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह ज्योतिषी हो, पर जीवन को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए ज्योतिष का साधारण ज्ञान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। 'फलित-ज्योतिष'[2] की जानकारी के लिए आगे के पृष्ठों में कुछ मोटे-मोटे सिद्धान्तों की संक्षिप्त जानकारी दी जा रही है।

**जातक**—जिस व्यक्ति की जन्म-कुण्डली पर विचार किया जा रहा हो वह उस कुण्डली का जातक कहलाता है।

**ताजिक**—वर्ष-कुण्डली से फल जानने की रीति को ताजिक रीति कहते हैं।

**ग्रह**—ज्योतिष में कुल नौ ग्रह माने गये हैं, लेकिन आजकल वरुण (Uranas) तथा वारुणी (Naptune) को भी इनमें सम्मिलित कर लिया है। ग्रहों के नाम पृष्ठ १८-१९ पर दिये गये हैं।

**तिथि**—चन्द्रमा की एक कला को तिथि कहा गया है। इसका सूर्य और चन्द्रमा के अन्तरांशों पर से मान निकाला जाता है। अमावस्या से लेकर पूर्णिमा तक की तिथियाँ शुक्ल पक्ष की तथा पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा से अमावस्या तक की तिथियाँ कृष्ण पक्ष की तिथियाँ कहलाती हैं। ज्योतिष शास्त्र में तिथियों की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से होती है।

## तिथियों की संज्ञाएँ

१, ६, ११ तिथियों का नाम "नन्दा" है।
२, ७, १२ तिथियों का नाम "भद्रा" है।
३, ८, १३ तिथियों का नाम "जया" है।
४, ९, १४ तिथियों का नाम "रिक्ता" है।
५, १०, १५ तिथियों का नाम "पूर्णा" है।

## तिथियों के स्वामी

एकम का स्वामी अग्नि, द्वितीया का ब्रह्मा, तृतीया की गौरी, चतुर्थी का गणेश, पंचमी का शेष, षष्ठी का कार्तिकेय, सप्तमी का सूर्य, अष्टमी

१. लेखक : डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

२. विस्तृत विवरण के लिए देखिए 'फलित-ज्योतिष' लेखक : डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

हो जाती है।

इस प्रकार निश्चित समय की पूर्ण प्रामाणिक कुण्डली बनाई जा सकती है।

# ४ : नक्षत्र

## मानव-शरीर पर नक्षत्र स्थिति

मूल पुरुष की भाँति ज्योतिष में साधारण मानव-शरीर के विभिन्न अंगों में विभिन्न २७ नक्षत्रों की स्थिति कही गई है, जो निम्न प्रकार से है।

(१) कृत्तिका-सिर में (२) रोहिणी-भाल में (३) मृगशिरा-भौंहों में (४) आर्द्रा-आँखों में (५) पुनर्वसु-नाक में (६) पुष्य-चेहरे में (७) आश्लेषा-कानों में (८) मघा-होंठों में (९) पूर्वाफाल्गुनी-दाहिने हाथ में (१०) उत्तराफाल्गुनी-बायें हाथ में (११) हस्त-अँगुलियों में (१२) चित्रा-ग्रीवा में (१३) स्वाति-सीने में (१४) विशाखा-छाती में (१५) अनुराधा-उदर में (१६) ज्येष्ठा-आमाशय में (१७) मूल-कोख में (१८) पूर्वाषाढ़ा-पीठ में (१९) उत्तराषाढ़ा-रीढ़ में (२०) श्रवण-कमर में (२१) धनिष्ठा-गुदा में (२२) शतभिषा-दाहिनी जंघा में (२३) पूर्वाभाद्रपद-बायीं जंघा में (२४) उत्तराभाद्रपद-पिंडली में (२५) रेवती-टखने में (२६) अश्विनी-पैरों के ऊपरी भागों में और (२७) भरणी-पैरों के तलवे में स्थित है।

### फल

जातक के पापग्रह जब उपर्युक्त नक्षत्रों पर आते हैं तब नक्षत्र से सम्बन्धित शरीरांग को पीड़ा पहुँचाते हैं। इसी प्रकार शुभ अथवा सौम्य ग्रह आने पर उस अंग की पुष्टि करते हैं। नीचे नक्षत्रों के गुण-भेद दिए जा रहे हैं।

### गुण-भेद

२७ नक्षत्र मूलतः सात्त्विक, राजस और तामस तीन भेदों में विभक्त किए जा सकते हैं, जिससे जातक के शुभाशुभ का विचार किया जाना है।

**सात्त्विक नक्षत्र**—पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती।

**राजस नक्षत्र**—कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, रोहिणी, हस्त, श्रवण, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा।

**तामस नक्षत्र**—अश्विनी, मघा, मूल, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा, मृगशिरा, चित्रा, घनिष्ठा, पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद।

लिंगभेद की दृष्टि से भी नक्षत्रों को पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग में विभक्त किया जा सकता है।

**पुल्लिंग नक्षत्र**—अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद।

**स्त्रीलिंग नक्षत्र**—भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा और रेवती।

**नपुंसकलिंग नक्षत्र**—मृगशिरा, मूल और शतभिषा।

## नक्षत्रों के स्वामी

नक्षत्रों के अनुसार उसके ९ ग्रह-स्वामी भी होते हैं। जो बालक जिस नक्षत्र में जन्म लेता है, जन्म के समय उस नक्षत्र के स्वामी की ही दशा चलती है। नक्षत्र-स्वामी की जानकारी नीचे दी जा रही है।

(१) अश्विनी—केतु
(२) भरणी—शुक्र
(३) कृत्तिका—सूर्य
(४) रोहिणी—चन्द्र
(५) मृगशिरा—भौम
(६) आर्द्रा—राहु
(७) पुनर्वसु—गुरु
(८) पुष्य—शनि
(९) आश्लेषा—बुध
(१०) मघा—केतु
(११) पूर्वाफाल्गुनी—शुक्र
(१२) उत्तराफाल्गुनी—सूर्य
(१३) हस्त—चन्द्र
(१४) चित्रा—भौम
(१५) स्वाति—राहु
(१६) विशाखा—गुरु
(१७) अनुराधा—शनि
(१८) ज्येष्ठा—बुध
(१९) मूल—केतु
(२०) पूर्वाषाढ़ा—सूर्य
(२१) उत्तराषाढ़ा—सूर्य
(२२) श्रवण—चन्द्र
(२३) धनिष्ठा—भौम
(२४) शतभिषा—राहु
(२५) पूर्वाभाद्रपद—गुरु
(२६) उत्तराभाद्रपद—शनि
(२७) रेवती—बुध

## नक्षत्रानुसार जातक फल

जातक पर नक्षत्रों का बहुत प्रभाव पड़ता है। अतः नीचे नक्षत्रानुसार

उत्पन्न हुए जातक का विशेष फल लिखा जाता है।

(१) अश्विनी—विचारशील, अध्ययन-अध्यापन करनेवाला, ज्योतिष, वैद्यक आदि शास्त्रों में रुचि रखनेवाला, लेखक, ईमानदार, चंचल-प्रकृति, मस्से का रोगी और गृह-कलह कर्त्ता।

(२) भरणी—बलवान, शत्रुओं पर अचानक आक्रमण करनेवाला, चालाक, धार्मिक कार्यों में रुचि रखनेवाला, चित्रकार, धोखेबाज, निम्न-स्तर के कार्य करनेवाला तथा उन्नति का आकांक्षी।

(३) कृत्तिका—विद्याभिलाषी, पशु-प्रेमी, अस्वस्थ, भोगप्रिय, साधक, साधु-सन्तों में आस्था रखनेवाला, कलहप्रिय, निर्धन से धनवान होनेवाला, लड़ाई-झगड़ों में रुचि रखने वाला, वकील और कट्टर धार्मिक।

(४) रोहिणी—स्वच्छताप्रिय, असत्यवादी, संगीत में रुचि रखनेवाला, सामाजिक कार्यकर्त्ता, प्रसन्नचित्त, भूत-प्रेतों में विश्वास रखनेवाला, प्रतिष्ठा का इच्छुक, ईमानदार व सत्यभाषियों का हितसम्पादन करनेवाला।

(५) मृगशिरा—धनवान, अनैतिक कार्यों से धन इकट्ठा करनेवाला, अविश्वासी, उन्नतिगामी, सट्टा-जुआ आदि में रुचि रखनेवाला, व्यापारी, अधिकारी, कार्यों में निपुण, विचारशील, प्रतिभाशाली धार्मिक और यदाकदा उत्सवों में झूठा आडम्बर तथा शान-शौकत दिखानेवाला।

(६) आर्द्रा—मधुरभाषी, सबसे प्रेमपूर्ण व्यवहार करनेवाला, स्वच्छ पर दुर्बल हृदयी, गतकार्यों पर चिन्ता करनेवाला, साधारण आर्थिक स्थितियुक्त, अपमानजनक कार्य करनेवाला, अदूरदर्शी, कुटुम्बियों से कलह करनेवाला, ओछा तथा घुमक्कड़।

(७) पुनर्वसु—विचारपूर्वक कार्य करनेवाला, शिक्षक, मेधावी, दन्त-रोग-पीड़ित, ससुराल से धन प्राप्त करनेवाला, वृद्धावस्था में सुखी, स्वच्छ वस्त्रों का इच्छुक, क्रोधी, अभिमानी, उच्चाभिलाषी, उत्तम तथा महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करनेवाला, व्यभिचारी, आलसी तथा हाथ-पैरों की पीड़ा से ग्रस्त।

(८) पुष्य—अस्वस्थ, कार्यों को चतुरतापूर्वक निबटानेवाला, शिव-भक्त, मशीनरी की वस्तुओं से लाभ पानेवाला, बात-बे-बात मित्रों से विरोध करनेवाला, व्यापारिक बुद्धिवाला, सम्बन्धियों से प्रेम करनेवाला, मानसिक चिन्ता से ग्रस्त, साधारण आर्थिक स्थिति वाला तथा मुंह पर स्पष्ट कहनेवाला।

(९) आश्लेषा—धनवान, स्त्री-प्रेमी, श्वास-शक्ति में कमजोर

स्वाथा, दूसरा का कार्य करने में तत्पर, खाने-पीने में रुचि रखनेवाला, अकस्मात् आहत होनेवाला, कभी-कभी चोरी करनेवाला, आलसी, छोटे व्यक्ति से मित्रता करनेवाला, स्त्री के कष्ट से पीड़ित, हँसमुख और सत्य-वक्ता।

(१०) **मघा**—गुप्त कार्यों में रुचि रखनेवाला, क्रोधी, अकस्मात् हानि उठानेवाला, कर्णरोगी, तेज आवाज वाला, प्रबल कामी, दूसरों के धन पर अधिकार रखनेवाला, उन्नति में बार-बार बाधाओं का सामना करनेवाला, अप्रसन्नचित्त, चर्मरोग से पीड़ित, चिन्ताग्रस्त और अल्प-वेतनभोगी।

(११) **पूर्वाफाल्गुनी**—शस्त्र चलाने में निपुण, पशु-प्रेमी, व्यापारिक कार्यों में रुचि रखनेवाला, धार्मिक संस्थाओं में कार्य करनेवाला, क्रय-विक्रय में हानि उठानेवाला, उन्नति के कार्यों में असफल, मान-सम्मान की इच्छा रखनेवाला, इन्द्रिय-सम्बन्धी रोगों से ग्रस्त, स्वधर्म में अश्रद्धायुक्त, सिर पर चोट का निशान रखनेवाला, परेशान और हिम्मत वाला।

(१२) **उत्तराफाल्गुनी**—प्रियभाषी, कार्य-कुशल, अल्प द्रव्यवाला, थोड़े में निर्वाह करने वाला, एकान्त प्रेमी, पशुओं में श्रद्धा रखनेवाला, मातृ-पितृ-सुख से वञ्चित, तीक्ष्ण स्मरणशक्ति वाला, कलाकुशल और सम्बन्धियों से प्रेम-व्यवहार करनेवाला।

(१३) **हस्त**—मक्कार, कपटप्रिय, असत्यभाषी, अभिमानी, परिश्रमी, माता-पिता के कष्ट से पीड़ित, लापरवाह, गायन-प्रेमी, लम्बे डील-डौलवाला, परिश्रम से उन्नति करनेवाला, जलप्रेमी तथा पशु आदि पालकर निर्वाह करनेवाला।

(१४) **चित्रा**—कर्ण तथा नेत्र रोगी, अद्भुत कार्य करनेवाला, साधारण-सी बातों पर क्रोध करनेवाला, नायक के कार्य में निपुण, शारीरिक बल बढ़ाने में प्रयत्नशील, गरीब, विद्याभ्यास का इच्छुक, अनुभवी, शत्रुओं से सामना करनेवाला तथा ईमानदार।

(१५) **स्वाति**—वीर, नेता, स्वप्नों में जीवित रहनेवाला, भाग्यशाली, क्रोधावेश में स्वयं की तथा घर की हानि करनेवाला, स्वतन्त्र विचारवाला, उन्नति में बाधा का शिकार, अपनी बात पर हठपूर्वक अड़नेवाला, चतुराई से काम निकालनेवाला, पुष्ट शरीर, तीव्र विचार-शक्ति और शरीर में चोट पानेवाला।

(१६) **विशाखा**—विदेश भ्रमणकारी, चित्रकार, सच्चाई का इच्छुक, लड़ाई करने में कुशल, विचारहीन, चतुर, व्यापारिक कार्यों में

रुचि रखनेवाला, दूसरों को अच्छी सलाह देनेवाला, भाषण देने में चतुर, उन्नतिशील तथा ज्योतिषादि में विश्वास रखनेवाला।

(१७) **अनुराधा**—उच्च विचारवाला, ईमानदारी से कार्य करनेवाला, स्वधर्म-प्रेमी, नये विचारों का स्वागत करनेवाला, दर्शन, वेद और ज्योतिष में तीव्र रुचि रखनेवाला, सम्मान पानेवाला, पितृ-सुख से वंचित, काम निकालने में चतुर, कला-निपुण, पढ़ने में परिश्रमी, बचपन में दुःख उठानेवाला, उन्नतिशील, दूसरों की बात समझने व उनको समझानेवाला, उच्च कार्यकर्त्ता और संगीतशास्त्र में रुचि रखनेवाला।

(१८) **ज्येष्ठा**—अच्छा लेखक, अभिमानी, विलासी, भाइयों से हानि उठानेवाला, बोलने में तेज, अस्वस्थ आलसी स्वभाव, पशु-पालक, मित्रों पर अन्ध श्रद्धा रखनेवाला, उन्नति के कार्य में विघ्न-बाधा पानेवाला, स्वकुल-विरोधी तथा उन्नतिशील।

(१९) **मूल**—अपनी इच्छानुसार कार्य करनेवाला, पुरानी पीढ़ी से विद्रोह करनेवाला, पिता को कष्टकारी, उदर-रोगी, दूसरों की बात न माननेवाला, घुमक्कड़ जीवन बितानेवाला, जादू-टोने-टोटके और तान्त्रिक विद्या में निपुण, औषधियों के क्रय-विक्रय से लाभ उठानेवाला, वस्त्रालंकार-प्रेमी, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनेवाला, पढ़ने की तीव्र इच्छा रखनेवाला, स्वच्छता-प्रेमी, बुढ़ापे में तकलीफ उठानेवाला एवम् पढ़ाई से उन्नति करनेवाला।

(२०) **पूर्वाषाढ़ा**—दूसरों से सम्मान प्राप्त करनेवाला, बचपन में दुःखी परन्तु मध्यावस्था में सुख-शान्तिभोगी, प्रबल कामी, अनेक स्त्रियों से संसर्ग रखनेवाला, एकान्तप्रिय, दुर्बल शरीर, गायन-कला में निपुण, स्त्रियों से धन प्राप्त करनेवाला, अल्पायु में पिता-कष्ट से पीड़ित, मानसिक रोगी, अनेक चिन्ताओं से ग्रस्त, कार्यकुशल तथा शीघ्र सफलता प्राप्त करनेवाला।

(२१) **उत्तराषाढ़ा**—चित्रकला में निपुण, स्वच्छ वस्त्रों का शौकीन, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाला, भाषण-कला में निपुण, पुष्ट शरीर, श्रेष्ठ बुद्धि, अल्पायु, अभिमानी, असत्यभाषी, रुक-रुककर बात करनेवाला, व्यापारादि कार्यों से लाभ उठानेवाला, गृहकार्यों में निपुण, तीव्र बुद्धि वाला, प्रबल इच्छाशक्ति और भविष्य के लिए सुख-सुविधा जुटानेवाला।

(२२) **श्रवण**—चंचल स्वभाव वाला, मातृ-पितृ भक्त, अभिमानी, जल-सम्बन्धी कार्यों में रुचि रखनेवाला, सोच-विचारकर कार्य

करनेवाला, मित्र-विरोधी, खाने-पीने की वस्तुओं में शौक रखनेवाला, अस्वस्थ, व्यापार एवं क्रय-विक्रय से लाभ उठानेवाला, भूमि-कार्यों में निपुण, धनवान एवं धार्मिक कार्यों में उत्साह रखनेवाला।

(२३) **धनिष्ठा**—अदूरदर्शी, उन्नति के कार्य में बाधा पानेवाला, युद्ध-कार्यों से प्रेम करनेवाला, गरीब, श्रम से ऊँचा उठनेवाला, स्त्री-प्रेमी, ईमानदार, स्वच्छ वस्त्रधारी, क्रोधी, अभिमानी, उन्नति की आकांक्षा रखनेवाला, लोहे के कार्य से लाभ उठानेवाला तथा मारपीट में नुकसान उठानेवाला।

(२४) **शतभिषा**—सेवाभावी, स्वच्छ-पवित्र कार्य करनेवाला, धार्मिक, चंचल स्वभाव, बिना सोच-विचार के कार्य करनेवाला, यदा-कदा किए गए कार्य से हानि उठानेवाला, मशीनरी के कार्यों मे रुचि रखनेवाला, उच्च विचार एव सात्त्विक जीवन बितानेवाला, बुद्धिमान सदाचारी, साधु-सन्तों का प्रेमी तथा कट्टर धार्मिक।

(२५) **पूर्वाभाद्रपद**—ईश्वरभक्त, स्त्रियों से संकोच करनेवाला आरामपसन्द, पुजारी, पादरी, कार्य में अनायास सफलता प्राप्त करनेवाला, वृद्धावस्था में अकस्मात् द्रव्य प्राप्त करनेवाला, यात्रा-प्रिय, कवि चतुरतापूर्ण कार्य करनेवाला, स्वस्थ, बच्चों का प्रेमी और शिक्षण-कार्य में रुचि रखनेवाला।

(२६) **उत्तराभाद्रपद**—प्रसन्नचित्त, उन्नतिशील, स्त्रियों से विशेष सम्मान पानेवाला, उदारचित, मुक्तहस्त, भावुक, सोचविचार से काम करनेवाला, अकस्मात् हानि का शिकार, शत्रुओं से दुःखी, आलसी, विद्याप्रेमी, उच्च, सत्कुलीन, राजकर्मचारियों का मित्र।

(२७) **रेवती**—विद्या-प्रेमी, सरल स्वभाव, विनम्र, तीर्थ-यात्री, बुद्धि से काम न करनेवाला, प्रसन्नचित्त, गरीब, एकान्तप्रिय, ईश्वरभक्त, उन्नति के कार्यों में रुकावट पानेवाला, आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न, सोच-विचार न करनेवाला और मित्रों से लाभ उठानेवाला।

## ५ : राशि

### शरीरांग स्थित राशियाँ और उनके प्रभाव

जिस प्रकार मानव-शरीर पर नक्षत्रों का प्रभाव रहता है, उसी

प्रकार राशियाँ भी अपनी नियत डिग्रियाँ या अंशों तक उस पर अपना प्रभाव डालती हैं। सम्पूर्ण आकाश-मण्डल को ३६० अंशों में बाँटा जाता है जो कि १२ राशियों में विभक्त है। इस प्रकार ३० अंशों की एक राशि बनती है। नीचे मानव-शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की स्थिति और उनके प्रभाव का विवेचन प्रस्तुत है।

(१) **मेष**—यह राशि डिग्री १ से ३० तक सिर पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक सिर पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे 'ऐरीज' कहते हैं। इस राशि में चार घड़ी और पन्द्रह पल होते हैं। यह विषम राशि कहलाती है और इसका स्वामी मंगल है। इस पर सूर्य ३० दिन, ५५ घड़ी और ३३ पल रहता है। यह राशि पुरुष जाति, चर संज्ञक, अग्नितत्त्व, पूर्व दिशा की स्वामिनी, उग्र प्रकृति, रक्तवर्णयुक्त, क्षत्रिय वर्ण तथा अल्प सन्तति वाली है। साहस, अभिमान और मित्रप्रेम इसका प्राकृतिक स्वभाव है।

(२) **वृष**—यह राशि डिग्री ३० से ६० तक चेहरे पर रहती है तथा उतनी ही डिग्री तक चेहरे पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे 'टॉरस' कहते हैं। यह राशि चार घड़ी, पैंतालीस पल की होती है। यह समराशि कहलाती है और इसका स्वामी शुक्र है। इस पर सूर्य ३१ दिन २४ घड़ी और ५६ पल तक रहता है। यह स्त्री राशि, स्थिर संज्ञक, भूमितत्त्व, दक्षिण दिशा की मालिक, कान्तिहीन, रात्रिबली, श्वेतवर्ण, मध्यम सन्तति, वैश्यवर्ण और शिथिल स्वभाव की है। यह राशि स्वार्थी, सांसारिक कार्यों में दक्ष और विचारपूर्वक कार्य करनेवाली है। इससे मुखमण्डल का अध्ययन किया जा सकता है।

(३) **मिथुन**—यह राशि डिग्री ६० से ९० तक दोनों कन्धों पर रहती है। अंग्रेज़ी में इसे 'जेमिनी' कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी और १५ पल की होती है। यह विषम राशि कहलाती है और इसका स्वामी बुध है। इस पर सूर्य ३१ दिन, ३७ घड़ी और ३२ पल रहता है। यह हरितवर्ण प्रधान, वायुतत्त्व, पुरुष जाति, ऊष्ण स्वभाव, शूद्रवर्ण, दिनबली, मध्यम सन्तति, शिथिल शरीर और पश्चिम दिशा की स्वामिनी द्विस्वभावराशि है। यह जातक को विद्याव्यसनी एवं शिल्प-दक्ष बनाती है। शरीर के कन्धों, बाहुओं और भुजाओं का इस राशि से अध्ययन किया जाता है।

(४) **कर्क**—यह राशि डिग्री ९० से १२० तक सीने (छाती) पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक छाती पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में

इसे 'कैंसर' कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी व ३० पल की होती है। यह समराशि है। इसका स्वामी चन्द्र है तथा यह चर संज्ञक है। इस पर सूर्य ३१ दिन, २२ घड़ी और ३५ पल रहता है। यह राशि स्त्री जाति, कफ प्रकृति प्रधान, पृथ्वीतत्त्व, रात्रिबली, उत्तर दिशा की स्वामिनी, रक्त-धवल वर्ण-युक्त एवं बहुसंतान वाली है। सांसारिक उन्नति में प्रयत्न-शीलता, लज्जा एवं विवेक इसके प्राकृतिक गुण हैं। इस राशि से वक्षः-स्थल तथा गुर्दे आदि का अध्ययन किया जाता है।

(५) सिंह—यह राशि डिग्री १२० से १५० तक रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेज़ी में इसे 'लीओ' कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी और १५ पल की होती है। वह विषम राशि कहलाती है और इसका स्वामी सूर्य हैं। इस पर सूर्य ३१ दिन, २ घड़ी और ५२ पल रहता है। यह पुरुष जाति, स्थिर संज्ञक, दिनबली, अग्नि तत्त्व प्रधान, पीतवर्ण, ऊष्ण स्वभाव, क्षत्रिय वर्ण, पुष्ट अंग और पूर्व दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव भ्रमणप्रियता, साहस और उदारता है। हृदय का अध्ययन इसी राशि से होता है।

(६) कन्या—यह राशि डिग्री १५० से १८० तक आमाशय पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेज़ी में इसे 'वीगो' कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी और ४ पल की होती है। यह समराशि कहलाती है। इसका स्वामी बुध है। इस पर सूर्य ३० दिन, २६ घड़ी और ४ पल रहता है। यह स्त्री जाति, शीतोष्ण स्वभाव, पिंगल वर्ण, पृथ्वी तत्त्व, रात्रिबली, शीत प्रकृति और अल्प सन्तान वाली हैं। विद्याव्यसनी एवं शिल्प-दक्षता इसका प्राकृतिक गुण है। अपनी उन्नति की ओर यह राशि विशेष ध्यान रखती है। इससे पेट और पेट-सम्ब धी बीमारियों का ज्ञान किया जाता है।

(७) तुला—यह राशि डिग्री १८० से २१० तक पेट पर रहती है, उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेज़ी में इसे 'लिदरा' कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी, १४ पल की होती है। यह विषम राशि है और स्वामी शुक्र है। इस पर सूर्य २६ दिन, २७ घड़ी तथा २५ पल रहता है। यह पुरुष जाति, चर संज्ञक, अल्पसन्तान वाली, श्याम वर्ण, वायुतत्त्व और पश्चिम दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव विचार, गान-चिन्तन, कार्य-सम्पादन एवं कुशल राजनीतिज्ञता है। इससे नाभि के नीचे के अंगों का विचार किया जाता है।

(८) वृश्चिक—यह राशि डिग्री २१० से २४० तक पीठ पर रहती

है, इतनी ही डिग्री तक पीठ पर प्रभाव डालती है। अंग्रेज़ी में इसे 'स्कार्पियो' कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी और १५ पल की होती है। यह समराशि है तथा इसका स्वामी मंगल है। इस पर सूर्य २६ दिन, २७ घड़ी और २६ पल तक रहता है। यह शुभ्रवर्ण, स्त्री जाति, स्थिर संज्ञक, रात्रिबली, प्रकृति प्रधान, बहु सन्तति, ब्राह्मण वर्ण और जल तत्त्व प्रधान है। इस राशि का प्राकृतिक गुण दम्भ, हठ, स्पष्टवादिता और निर्मलता है। इससे जननेन्द्रिय का विचार किया जाता है।

(९) **धनु**—यह राशि डिग्री २४० से २७० तक जंघा पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेज़ी में इसे 'सेजीटेरियस' कहते हैं। यह ५ घड़ी और ३० पल की होती है। यह विषम राशि है तथा इसका स्वामी गुरु है। इस पर सूर्य २६ दिन १५ घड़ी और ४ पल रहता है। यह पुरुष जाति, कंचन वर्ण, क्रूर संज्ञक, दिनबली, दृढ़ शरीर, क्षत्रियवर्ण, अल्प सन्तति एवं अग्नि तत्त्व प्रधान है। इसका प्राकृतिक स्वभाव करुणा, मर्यादा और अधिकारप्रियता है। इससे पैरों की संधि तथा जंघाओं का विचार किया जाता है।

(१०) **मकर**—यह राशि डिग्री २७० से ३०० तक घुटनों पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेज़ी में इसे 'केप्रीकोर्न' कहते हैं। यह ५ घड़ी और १५ पल की होती है। यह समराशि है तथा इसका स्वामी शनि है। इस पर सूर्य २६ दिन, २४ घड़ी तक रहता है। यह स्त्री जाति, चर संज्ञक, वातप्रकृति, पिंगल वर्ण, पृथ्वी तत्त्व, रात्रिबली, वैश्य वर्ण और दक्षिण दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना है। इससे घुटनों का विचार किया जाता है।

(११) **कुम्भ**—यह राशि डिग्री ३०० से ३३० तक पैरों पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेज़ी में इसे 'एक्युरीअस' कहते हैं। यह ४ घड़ी और ४५ पल की होती है। यह विषम राशि है तथा इसका स्वामी शनि है। इस पर सूर्य २६ दिन, ४६ घड़ी और ४३ पल रहता है। यह पुरुष जाति, स्थिर संज्ञक, विचित्र वर्ण, वात, पित्त, कफ, प्रकृति प्रधान, वायु तत्त्व, दिनबली और पश्चिम दिशा की स्वामिनी है। यह शूद्र वर्ण, मध्यम सन्तान वाली तथा क्रूर-स्वभाव राशि है। शान्तिचित्तता, धर्मप्रियता और विचारशीलता इस राशि का प्राकृतिक स्वभाव है।

(१२) **मीन**—यह राशि डिग्री ३३० से ३६० तक पदतल पर

रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे 'पीसेस' कहते हैं। यह ४ घड़ी, १५ पल की होती है। यह समराशि है और इसका स्वामी गुरु है। इस पर सूर्य ३० दिन, ३३ घड़ी और ३१ पल रहता है। यह स्त्री जाति, कफ प्रकृति, जल तत्त्व प्रधान, रात्रिबली, विप्रवर्ण, पिंगल रंग एवं उत्तर दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव दयालु, दानशीलता और वीरता है।

ऊपर १२ राशियों का जैसा स्वरूप बतलाया है, इन राशियों में उत्पन्न पुरुष और स्त्रियों का स्वभाव भी प्रायः वैसा ही होता है। जन्म-कुण्डली में राशियों और ग्रहों के स्वरूप के समन्वय के द्वारा ही फलाफल का विचार किया जाता है।

## राशि : शत्रु-मित्र

पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका अथवा एक मित्र का दूसरे मित्र के साथ कैसा सम्बन्ध रहेगा, इसके लिए राशि-तत्त्वों पर ध्यान दिया जाता है। यदि दोनों के मित्र तत्त्व हों तो मित्रता रहेगी, अन्यथा अमैत्री भाव रहेगा। नीचे मित्र-तत्त्व तथा अमैत्री-तत्त्व दिये जा रहे हैं—

| मित्र तत्त्व | अमैत्री-तत्त्व |
|---|---|
| (१) पृथ्वी तत्त्व + जल तत्त्व | १. पृथ्वी तत्त्व + अग्नि तत्त्व |
| (२) अग्नि तत्त्व + वायु तत्त्व | २. जल तत्त्व + अग्नि तत्त्व |
| | ३. जल तत्त्व + वायु तत्त्व |

**राशि स्वभाव**—वर-कन्या अथवा दो व्यक्तियों की शत्रुता-मित्रता को देखने के लिए भी राशि के स्वभाव पर ध्यान दिया जाता है। जिस राशि का जैसा स्वभाव होता है, उन राशियों में उत्पन्न हुआ पुरुष तथा स्त्रियों का स्वभाव भी वैसा ही होता है। दो समान स्वभाव वाले प्राणियों में मित्रता और असमान स्वभाववाले प्राणियों में शत्रुता रहती है।

**अंग-विभाग**—प्रत्येक राशि काल-पुरुष के एक अंग का प्रतीक है, यथा मेष राशि से सिर, वृष से मुख, आदि-आदि। जिस पुरुष या स्त्री के जिन राशियों में अशुभ ग्रह होते हैं, वे उन अंगों को पीड़ा देते हैं। आगे 'राशि स्वरूप' की तालिका दी जा रही है।

# राशि-स्वरूप

| राशि | जाति | संज्ञा | तत्त्व | स्वामी | प्रकृति | प्राकृतिक स्वरूप स्वभाव | शरीर के अंगों का ज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | पुरुष | चर | अग्नि | पूर्व | उग्र | साहस, अभियान, मित्रहित | मस्तक |
| वृष | स्त्री | स्थिर | भूमि | दक्षिण | वात | स्वार्थ, सांसारिक, दक्षता | मुख और कपाल |
| मिथुन | पुरुष | चर | वायु | पश्चिम | उष्ण | शिल्प, विद्याव्यसनी, | कन्धे और बाहु |
| कर्क | स्त्री | चर | भूमि | उत्तर | कफ | सांसारिक, उत्पत्ति, कार्यस्थैर्य | वक्षःस्थल और गुर्दा |
| सिंह | पुरुष | स्थिर | अग्नि | पूर्व | पित्त | साहस, अभिमान, उदारता | हृदय |
| कन्या | स्त्री | चर | पृथ्वी | दक्षिण | वायु | मान, स्व- उन्नतिशील | पेट |
| तुला | पुरुष | चर | वायु | पश्चिम | क्रूर | विचार, ज्ञान, राजनीतिज्ञता | नाभि के नीचे के अंग |
| वृश्चिक | स्त्री | स्थिर | जल | उत्तर | कफ | दंभ, हठ, दृढ़-प्रतिज्ञा | जननेन्द्रिय, |
| धनु | पुरुष | चर | अग्नि | पूर्व | पित्त | अधिकारप्रियता, करुणा, मर्यादा | पैरों की सन्धि तथा जंघाएँ |
| मकर | स्त्री | चर | पृथ्वी | दक्षिण | वात | उच्च दशाभिलाषी | घुटने |
| कुम्भ | पुरुष | स्थिर | वायु | पश्चिम | त्रिदोष (वात, घर्म वीर पित्त, कफ) | विचारशीलता | पेट के भीतरी भाग |
| मीन | स्त्री | चर | जल | उत्तर | कफ | दयालुता व दानशीलता | पैर |

## राशियों के स्वामी

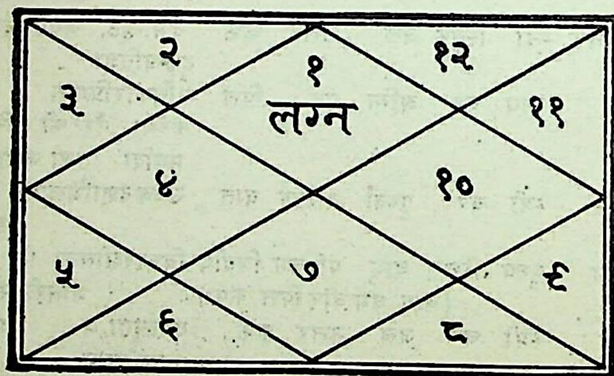
प्रत्येक राशि का स्वामी होता है, जिसके अनुसार शुभाशुभ का निर्णय किया जाता है।

| राशि | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| स्वामी | मंगल | शुक्र | बुध | चन्द्र | सूर्य | बुध |
| राशि | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
| | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| स्वामी | शुक्र | मंगल | बृहस्पति | शनि | शनि | बृहस्पति |

## द्वादशभाव

कुण्डली का प्रत्येक गृह भाव कहलाता है। उनके स्वप्नों का ज्ञान करना भी आवश्यक है। प्रत्येक कुण्डली में १२ घर होते हैं, जिनमें सबसे ऊपर का घर 'लग्न' कहलाता है। इसी प्रकार चौथे, सातवें और ग्यारहवें घर के नाम भी अलग-अलग हैं। नीचे दिया चित्र इसकी जानकारी सुगमता से दे सकता है।

इस चित्र में १ गृह 'लग्न' कहलाता है। १, ४, ७, १० को केन्द्र या जण्टक गृह कहते हैं। २, ५, ८, ११ को पणफर गृह कहते हैं। ३, ६, ९, १२ को आपोक्लिम गृह कहते हैं।



कुण्डली में केन्द्र गृहों (१, ४, ७, १०) को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। चौथे तथा आठवें स्थान को चतुरस्त्र भी कहते हैं।

भावों के हिन्दी और संस्कृत नाम पृष्ठ ४६ की तालिका में हैं।

## भावों के अनुसार विचारणीय बातें

**प्रथम भाव**—इस भाव (गृह) से किसी भी जातक के शरीर, स्वास्थ्य, आचरण, कृशता, पुष्टता, रंग, गुण, आत्मबल, ख्याति, रूप, जाति, आयु, सुख-दुःख, मस्तिष्क, आकृति, स्वभाव आदि का अध्ययन किया जाता है। मिथुन, तुला, कुम्भ और कन्या राशि इस भाव में बलवान मानी जाती हैं।

**द्वितीय भाव**—धन, कोष, कुटुम्ब, मित्र, पशु, बन्धन, आँख, नाक, स्वर, सुन्दरता, मान, प्रेम, सुख-भोग, सञ्चित पूँजी, क्रय-विक्रय आदि का अध्ययन इसी भाव में होता है।

**तृतीय भाव**—भाई, बहन, नौकर-चाकर, पराक्रम, हिम्मत, व्यापार, उद्यम, मेहनत, आभूषण, साहस, शौर्य, धैर्य, दमा, गुर्दा, खाँसी, क्षय, श्वास, योगाभ्यास आदि का अध्ययन इसी भाव से किया जाता है।

**चतुर्थ भाव**—माता-पिता का सुख, घर, गाँव, चौपाये, बन्धु-बान्धव, सुख-शान्ति, मित्र, अन्तःकरण की स्थिति, मातृ-भूमि, वाहन, यान, मकान, जायदाद, बाग-बगीचा, पेट के रोग, यकृत, मनोरंजन, पितृ-सम्पत्ति, छल, कपट, दया, उदारता आदि का इसी भाव से ज्ञान किया जाता है। यह स्थान विशेषतः माता का है। कर्क, मीन और मकर राशि इस भाव में बलवान मानी गई हैं।

**पञ्चम भाव**—विद्या, सन्तान, बुद्धि, प्रबन्ध-क्षमता, नीति, विनय, देवभक्ति, मामा का सुख, गर्भ-स्थान, नौकरी छूटना, धन मिलने के उपाय, अनायास धनप्राप्ति, जठराग्नि, गुण, वाक्स्थान, हाथ का यश, मूत्र पिण्ड, नम्रता आदि का अध्ययन इसी भाव से होता है।

**षष्ठ भाव**—शत्रु, चिन्ता, भय, रोग, झगड़े-झंझट, परतंत्रता, क्षति, गुदा स्थान, मामा की स्थिति, पीड़ा आदि का अध्ययन इस भाव से किया जाता है।

**सप्तम भाव**—स्त्री, स्त्री का स्वास्थ्य, मदन पीड़ा, दैनिक रोजगार, द्यूत, भोग-विलास, काम-चिन्ता, जननेन्द्रिय, व्यापार, विवाह, बवासीर, रोग आदि का अध्ययन इस भाव से किया जाता है। वृश्चिक राशि इस भाव में बलवान होती है।

## द्वादश भाव तालिका

| क्रम संख्या | भावों के प्रसिद्ध नाम | अंग्रेजी नाम | संस्कृत शब्द |
|---|---|---|---|
| १ | प्रथम | Ascadent | लग्न, उदय, तनु, आध, जन्म, होरा |
| २ | द्वितीय | II house | स्व, कुटुम्ब, भुक्त, वाक्, अर्थ, नयन |
| ३ | तृतीय | III house | दुश्चिक्य, सहोदर, पराक्रम, वीर्य, धैर्य |
| ४ | चतुर्थ | Mid Eaven | सुख, पाताल, बुद्धि, क्षिति, मातृ, तुर्य यान |
| ५ | पंचम | V house | धी, वृद्धि, पितृ, नंदन, देवराज, पंचक |
| ६ | षष्ठम | VI house | रोग, अंग, भय, रिपु, नास्त्र, क्षत |
| ७ | सप्तम | VII house | जामित्र, काम, गगन, कलत्र, अस्त्र, संपत |
| ८ | अष्टम | VIII house | आयु, रन्ध्र, मृत्यु, विनाश |
| ९ | नवम | IX house | धर्म, गुरु, शुभ, तप, नव, अंक, भाग्य |
| १० | दशम | X house | व्यापार, मध्य, मान, ज्ञान, राज, मर्म, ख |
| ११ | एकादश | XI house | आगम, भव, आय |
| १२ | द्वादश | XII house | व्यय, अन्त्यम |

**अष्टम भाव**—आयु, मानसिक व्यथा, मृत्यु, पुरातत्वप्रेम, विदेश-गमन, गूढ़ युक्तियाँ, पूर्वसञ्चित द्रव्य, ऋण, संग्राम, द्रव्यादि नष्ट, मृत्यु के कारण, समुद्र-यात्रा, लिंग, योनि आदि के रोग इस भाव से जाने जाते हैं।

**नवम भाव**—भाग्य, धर्म, ईश्वर-प्राप्ति, गुरु, तप, दैव, बल, पुण्य, पाप, ऐश्वर्य, मानसिक वृत्ति, भाग्योदय, तीर्थ-यात्रा, पिता का सुख, दान आदि की जानकारी इस भाव में मिलती है। इस भाव से रवि अथवा गुरु का होना शुभ माना जाता है।

**दशम भाव**- राज्य, मान, नौकरी, प्रतिष्ठा, पिता का सुख, व्यापार, पितृ-द्रव्य, कर्म, समाज, हुकूमत, अधिकार, ऐश्वर्य, भोग, कीर्ति-लाभ, नेतृत्व, शक्ति आदि का अध्ययन इस भाव से किया जाता है। मेष, वृष और सिंह राशियाँ इसमें बलवान मानी जाती हैं।

**एकादश भाव**—लाभ, आमदनी, आवश्यकता-पूर्ति, गुप्त धन, राज द्रव्य, भूषण, वस्त्रादि, गज, अश्व, मोटर, सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य आदि की जानकारी एकादश भाव से होती है।

**द्वादश भाव**—हानि, दान, व्यय, दण्ड, व्यसन, बाहरी स्थानों से सम्बन्ध, शत्रु का विरोध, नेत्र-पीड़ा आदि का अध्ययन इस भाव से किया जाता है।

## फल प्रतिपादन के कुछ नियम

१. जिस भाव में जो राशि होती है, उस राशि का स्वामी ही उस भाव का स्वामी माना जाता है।

२. छठे, आठवें और बारहवें भाव के स्वामी जहाँ भी बैठे होते हैं, उस भाव को नुकसान पहुँचाते हैं।

३. स्वग्रही उस भाव में अच्छा फल देता है।

४. जिस भाव में शुभ ग्रह रहता है, उस भाव का फल उत्तम तथा पाप-ग्रह होने से अशुभ फल देता है।

५. ग्यारहवें भाव में सभी ग्रह अच्छा फल देते हैं।

६. १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभ ग्रह अच्छा फल देते हैं।

७. ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह अच्छा फल देते हैं।

८. ग्रह जिस भाव को देखता है, उस पर अपना प्रभाव डालता है।

ग्रह किस राशि में स्वग्रही होते हैं इसका विवरण इस प्रकार है :

**सूर्य—सिंह**

चन्द्र—कर्क
मंगल—मेष, वृश्चिक
बुध—मिथुन, कन्या
गुरु—धनु, मीन
शुक्र—वृष, तुला
शनि—मकर, कुम्भ
राहु—कन्या

इसके अतिरिक्त कुण्डली में शुभ ग्रह और पाप ग्रहों का भी ध्यान रखना पड़ता है।

**शुभ ग्रह**—चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु और गुरु ये क्रम से अधिक शुभ ग्रह माने गए हैं।

**पाप ग्रह**—सूर्य, मंगल, शनि और राहु क्रम से अधिक पाप ग्रह माने जाते हैं।

कुण्डली का अध्ययन करते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि जातक की कुण्डली में कितने उच्च ग्रह तथा कितने नीच ग्रह हैं। नीचे की तालिका में उच्च और नीच ग्रह स्पष्ट किये गए हैं—

| ग्रह | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | मेष | वृष | मकर | कन्या | कर्क | मीन | तुला | मिथुन | उ० ग्रह |
| अंश | १० | ३ | २८ | १५. | ५ | २७ | २० | १५ | |
| राशि | तुला | वृश्चिक | कर्क | मीन | मकर | कन्या | मेष | धनु | नी० ग्रह |
| अंश | १० | ३ | २८ | १५ | ५ | २७ | २० | १५ | |

ऊपर के चित्र को ध्यानपूर्वक समझने की आवश्यकता है। यदि किसी जातक की कुण्डली में सूर्य मेष राशि में हो तो वह उच्च ग्रह माना जाता है, लेकिन पहले १० अंशों तक ही मेष का सूर्य उच्च माना गया है, इसके बाद नहीं। ऐसे ही तुला में ३ अंशों से सूर्य पड़ा हो तो वह सूर्य नीच ग्रह माना जायेगा। नीच ग्रह जातक को अशुभ फल देता है।

इस प्रकार मेष का १० अंशों में सूर्य, वृष का ३ अंशों में चन्द्रमा, मकर में २८ अंशों में मंगल, कन्या में १५ अंशों में बुध, कर्क में ५ अंशों में गुरु, मीन राशि में २७ अंशों से आया हुआ शुक्र, तुला राशि में २० अंशों में आया हुआ शनि तथा मिथुन राशि में १५ अंशों से आया हुआ राहु उच्च ग्रह माना जाएगा।

तुला राशि में १० अंशों से आया हुआ सूर्य, ३ अंशों से वृश्चिक

का शिव, नवमी की दुर्गा, दशमी का काल, एकादशी के विश्वदेव, द्वादशी के विष्णु, त्रयोदशी के काम, चतुर्दशी के शिव, पूर्णमासी के चन्द्रमा तथा अमावस्या के स्वामी पितृदेव हैं।

तिथियों के शुभाशुभ पर विचार करते समय उनके स्वामियों का भी ध्यान रखना पड़ता है।

## ग्रह-तालिका

आगे के पृष्ठों पर देखिये।

## मास शून्य तिथियाँ

मास शून्य तिथियाँ ज्योतिष में शुभ नही मानी जातीं। ये इस प्रकार हैं।

| मास | तिथियाँ |
|---|---|
| चैत | दोनों पक्षों की अष्टमी और नवमी |
| वैशाख | दोनों पक्षों की द्वादशी |
| ज्येष्ठ | कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी और शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी |
| आषाढ़ | कृष्ण पक्ष की षष्ठी और शुक्ल पक्ष की सप्तमी |
| श्रावण | दोनों पक्षों की द्वितीया और तृतीया |
| भाद्रपद | दोनों पक्षों की प्रतिपदा और द्वितीया |
| आश्विन | दोनों पक्षों की दशमी और दकादशी |
| कार्तिक | कृष्ण पक्ष की पंचमी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी |
| मार्गशीर्ष | दोनों पक्षों की सप्तमी और अष्टमी |
| पौष | दोनों पक्षों की चतुर्थी और पंचमी |
| माघ | कृष्ण पक्ष की पंचमी और शुक्ल पक्ष की षष्ठी |
| फाल्गुन | कृष्ण पक्ष की चतुर्थी और शुक्ल पक्ष की तृतीया। |

## सिद्ध तिथियाँ

सिद्ध तिथियाँ उत्तम मानी गई हैं। इन तिथियों में किया गया कार्य अवश्य सिद्ध होता है। नीचे दी हुई तिथियों के दिन यदि सामने दिया हुआ

## ग्रह-तालिका

| क्रम संख्या | ग्रहों का प्रसिद्ध नाम | अंग्रेजी नाम | अरबी नाम | पर्यायवाची संस्कृत शब्द |
|---|---|---|---|---|
| १ | सूर्य | Sun | शम्स<br>आफताब | आदित्य, अर्क, अर्यमा, इन, उष्ण-रश्मय, गृहपति, दिवाकर, दिनकर, प्रभाकर, रवि, विभाकर, दिनेश, भानु, सुर, सविता, भास्कर, मार्तण्ड । |
| २ | चन्द्रमा | Moon | कमर<br>माह (फारसी) | इन्दु, कलानिधि, चन्द्र, द्विजराज, नक्षत्रेश, मृगांक, मयंक, राकेश, रजनीश, विधु, सोम शशि, शशांक, शशधर, सुधाकर, हिमांशु, तारापति, तारेश । |
| ३ | मंगल | Mars | मरीक<br>मरीख<br>वेहराम (फा०) | अंगारक, कुज, भौम, महीसुत, मिरींव, भू-सुत, लोहितांग, धराज, अवनिज, क्रूर, नैत्र, क्षितिनन्दन । |
| ४ | बुध | Mercury | उतारद | इन्दुसुत, चन्द्रपुत्र, चन्द्रात्मज, ज्ञ, बोधनसु, |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | तीर (फा०) | वित, सौम्य, रौहिणेय, श्याम, गाव, हेम्न, तारासूनु । |
| ५ | वृहस्पति | Jupiter | मुश्तरी<br>अहूरमज्द (फा०) | अंगीरस, अंगिरा, आर्य, गुरु, जीव, गुराचार्य वाचस्पति, सुरगुरु, सूरि, देवगुरु । |
| ६ | शुक्र | Venus | जूहरी<br>नाहीद (फा०) | उसना, कवि, भार्गव भृगु, भृगुसुत, दैत्यगुरु, सित, सूनु, काण, दानवेज्य । |
| ७ | शनि | Saturn | जुहल<br>केदवान (फा०) | असित, आर्कि, क्षायात्मज, मंद, शनैश्चर, सूर्यपुत्र, रविज, पंगु, सौरि, भाष्करी । |
| ८ | राहु | Dragons Head (Node) | रास | अगु, तम, स्वर्भानु, अभि, कृष्णांग, कपिलास, दीर्घ, असुर गृह, सर्प, फणि, आगर्व । |
| ९ | केतु | Dragons Tail (Node) | जनब | ध्वज, शिखि, राहुपुच्छ । |
| १० | वरुण | Uranus | + | + |
| ११ | वारुणी | Naptune | + | + |

वार हो तो वह तिथि सिद्ध तिथि मानी जाती है।

| तिथियाँ | वार |
|---|---|
| ३, ८, १३ | मंगलवार |
| २, ७, १२ | बुधवार |
| ५, १०, १५ | बृहस्पतिवार |
| १, ६, ११ | शुक्रवार |
| ४, ९, १४ | शनियार |

## दग्ध और अशुभ तिथियाँ

नीचे दी हुई तिथियों के दिन यदि उनसे सम्बन्धित वार आता हो, तो वे तिथियाँ दग्ध, विष अथवा हुताशन संज्ञक होती हैं। इन तिथियों से प्रारम्भ किया हुआ कार्य कभी भी फलप्रद नहीं होता।

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | फल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | ११ | ५ | ३ | ६ | ८ | ९ | दग्ध |
| ४ | ६ | ७ | २ | ८ | ९ | ७ | विष |
| १२ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | हुताशन |

## नक्षत्र

ताराओं का समुदाय नक्षत्र कहलाता है। विभिन्न रूपों और आकारों में जो तारा-पुञ्ज दिखाई देते हैं, उन्हें नक्षत्रों की संज्ञा दी गई है। सम्पूर्ण आकाश को २७ भागों में विभाजित कर प्रत्येक भाग का अधिपति एक नक्षत्र मान लिया गया है। ज्योतिष शास्त्र में गणित की सूक्ष्मता के लिए प्रत्येक नक्षत्र को भी चार चरणों में विभाजित कर लिया गया है। नक्षत्र के फलादेश के लिए उनके स्वामियों पर भी विचार किया जाता है। नीचे इसकी स्पष्टता के लिए तालिकाएँ दी जा रही हैं।

### अशुभ नक्षत्र और उनके फल

| संज्ञक नक्षत्र | नाम नक्षत्र | फल |
|---|---|---|
| पंचक संज्ञक नक्षत्र | घनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा-भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, रेवती | इन नक्षत्रों में कार्य प्रारम्भ शुभ नहीं माना जाता। |

| | | |
|---|---|---|
| मूल संज्ञक नक्षत्र | ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती, मघा, मूल, अश्विनी | ...इन नक्षत्रों में बालक के जन्म होने पर उसकी ग्रह शान्ति कराई जाती है। |
| ध्रुव संज्ञक | उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी | ...ये नक्षत्र कार्य में विघ्न डालते हैं। |
| चर या चल संज्ञक | स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण घनिष्ठा, शतभिषा | ...कार्य के अनुसार इनका फल होता है। |
| मिश्र संज्ञक | विशाखा, कृत्तिका | ...ये दोनों सामान्य नक्षत्र हैं। |
| लघु संज्ञक | हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् | ...ये कार्य के अनुसार फल देते हैं। |
| मैत्र संज्ञक | मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा | ...ये सामान्य नक्षत्र हैं। |
| दारुण संज्ञक | मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा | ...इन नक्षत्रों में कार्य शुरू करने से पीड़ा होती है। |

---

प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व तत्सम्बन्धी नक्षत्रों का अवलोकन आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्र में निम्न संज्ञक नक्षत्र भी होते हैं।

**अधोमुख संज्ञक**—आश्लेषा, विशाखा, मूल, कृत्तिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी और मघा नक्षत्र।

**ऊर्ध्वमुख संज्ञक**—आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, घनिष्ठा और शतभिषा।

**तिर्यङ्मुख संज्ञक**—अनुराधा, हस्त, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, स्वाति और अश्विनी।

**दग्ध संज्ञक**—भरणी को रविवार, चित्रा को सोमवार, उत्तराषाढ़ा को मंगलवार, घनिष्ठा को बुधवार, उत्तराफाल्गुनी को गुरुवार, ज्येष्ठा को शुक्रवार और रेवती को शनिवार हो तो वे दग्ध संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं। इन दिनों शुभ कार्य प्रारम्भ करना वर्जित है।

## नक्षत्र और उनके स्वामी

| नक्षत्र संख्या | नक्षत्र | नक्षत्र के पर्यायवाची शब्द | स्वामी | सांकेतिक शब्द |
|---|---|---|---|---|
| १ | अश्विनी | दस्त्र, अश्वियुग, हय | अश्विनीकुमार | अ० |
| २ | भरणी | यम, याम्य | काल | भ० |
| ३ | कृत्तिका | हुताशन, अग्नि, बहुला | अग्नि | कृ० |
| ४ | रोहिणी | विधि, विरंचि | ब्रह्मा | रो० |
| ५ | मृगशिरा | सौम्य, चन्द्र, उडुब | चन्द्रमा | मृग० |
| ६ | आर्द्रा | तारका, रौद्र | रुद्र | आ० |
| ७ | पुनर्वसु | अदिति, सुर जननी | अदिति | पुन० |
| ८ | पुष्य | तिष्य, अमरेज्य | बृहस्पति | पु० |
| ९ | आश्लेषा | अहि, भुजंग, सर्प | सर्प | आश्ले० |
| १० | मघा | जनक, पितृ | पितर | म० |
| ११ | पूर्वा फाल्गुनी | भाग्य, फाल्गुनी, पूर्व भग | भग | पू० फा० |
| १२ | उत्तरा फाल्गुनी | अर्यमा, उत्तर भग | अर्यमा | उ० फा० |
| १३ | हस्त | भानु, अर्क | सूर्य | ह० |

| नक्षत्र संख्या | नक्षत्र | नक्षत्र के पर्यायवाची शब्द | स्वामी | सांकेतिक शब्द |
|---|---|---|---|---|
| १४ | चित्रा | त्वष्ट्रा | विश्वकर्मा | चि० |
| १५ | स्वाति | वात, वायु, समीर | पवन | स्वा० |
| १६ | विशाखा | द्विदैवत, इन्द्राग्नि | शुक्राग्नि | वि० |
| १७ | अनुराधा | मैत्र | मित्र | अनु० |
| १८ | ज्येष्ठा | शतमुख, सुरस्वामी | इन्द्र | ज्ये० |
| १९ | मूल | असुर, ऋतभुज | निर्ऋति | मू० |
| २० | पूर्वाषाढ़ा | पल, सलिल, जल | जल | पू० षा० |
| २१ | उत्तराषाढ़ा | विश्व | विश्वदेव | उ० षा० |
| २२ | श्रवण | श्रोणा, विष्णु, हरि | विष्णु | श्र० |
| २३ | धनिष्ठा | वसु | वसु | ध० |
| २४ | शतभिषा | प्रचेता, शततारका | वरुण | शत० |
| २५ | पूर्वाभाद्रपद | अजैकपाद, अजपात् | अजैकपाद | पू० भा० |
| २६ | उत्तराभाद्रपद | अहिर्बुध्न्य, उत्तरा | अहिर्बुधन्य | उ० भा० |
| २७ | रेवती | पूषा, पौष्ठा | पूषा | रे० |

इसके अतिरिक्त उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण को 'अभिजित' नक्षत्र माना जाता है, जिसके स्वामी ब्रह्मा हैं।

## मास शून्य नक्षत्र

| | |
|---|---|
| चैत्र | अश्विनी, रोहिणी |
| वैशाख | स्वाति, चित्रा |
| ज्येष्ठ | उत्तराषाढ़ा, पुष्य |
| आषाढ़ | धनिष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी |
| श्रावण | उत्तराषाढ़ा, श्रवण |
| भाद्रपद | शतभिषा, रेवती |
| आश्विन | पूर्वाभाद्रपद |
| कार्तिक | कृत्तिका, मघा |
| मार्गशीर्ष | चित्रा, विशाखा |
| पौष | आर्द्रा, अश्विनी, हस्त |
| माघ | श्रवण, मूल |
| फाल्गुन | ज्येष्ठा, भरणी |

## योग

जब एक नक्षत्र के प्रारम्भ से सूर्य और चन्द्रमा ८०० कलाएँ आगे निकल जाते हैं तो योग बीतता है। इस प्रकार १६०० कलाएँ आगे निकल जाने पर वे फिर पहले नक्षत्र पर आ जाते हैं। इस प्रकार कुल २७ योग बनते हैं, जो निम्न प्रकारेण हैं—

**योगों के नाम**—१. विष्कम्भ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान, ४. सौभाग्य, ५. शोभन, ६. अतिगण्ड, ७. सुकर्मा, ८. धृति. ९. शूल, १०. गण्ड ११. वृद्धि. १२. ध्रुव, १३. व्याघात, १४. हर्षण, १५. वज्र, १६. सिद्धि, १७. व्यतिपात, १८. वरीयान्, १९. परिघ, २०. शिव, २१. सिद्ध, २२. साध्य, २३. शुभ, २४. शुक्ल, २५. ब्रह्म, २६. ऐन्द्र, २७. वैधृति।

योगों के शुभाशुभ निर्णय के लिए उनके स्वामियों का भी अध्ययन किया जाता है, जो इस प्रकार है—

**योगों के स्वामी**—विष्कम्भ का यम, प्रीति का विष्णु, आयुष्मान् का चन्द्रमा, सौभाग्य का ब्रह्मा, शोभन का बृहस्पति, अतिगण्ड का चन्द्रमा, सुकर्मा का इन्द्र, धृति का जल, मूल का सर्प, गण्ड का अग्नि, वृद्धि का सूर्य, ध्रुव का भूमि, व्याघात का वायु, हर्षण का भग, वज्र का वरुण, सिद्धि का गणेश, व्यतिपात का शिव, वरीयान् का कुबेर, परिघ का विश्वकर्मा, शिव का मित्र, सिद्ध का कार्तिकेय, साध्य की सावित्री, शुभ की लक्ष्मी, शुक्ल की पार्वती, ब्रह्म का अश्विनीकुमार, ऐन्द्र का पितर

और वैधृति का स्वामी दिति है।

**करण**

तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं। ये ग्यारह हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—१. वव, २. वालव, ३. कौलव, ४. तैतिल, ५. गर, ६. वणिज, ७. विष्टि, ८. शकुनि, ९. चतुष्पद, १०. नाग और ११. किस्तुघ्न।

करणों के स्वामी—वव का स्वामी इन्द्र, वालव का ब्रह्मा, कौलव का सूर्य, तैतिल का शशि, गर का पृथ्वी, वणिज का लक्ष्मी, विष्टि का यम, शकुनि का कलियुग, चतुष्पद का रुद्र, नाग का सर्प एवं किस्तुघ्न का वायु है।

**वार**

जिस दिन की प्रथम होरा का जो स्वामी होना है, उसी दिन उसी ग्रह के नाम का वार होता है।

| क्रम | नाम | संज्ञा | स्वभाव | फल |
|---|---|---|---|---|
| १ | रविवार | क्रूर | स्थिर | —गायनादि के लिए शुभ |
| २ | सोमवार | सौम्य | चर | —शुभकार्य के लिए |
| ३ | मंगलवार | क्रूर | उग्र | —द्यूत क्रीड़ा के लिए |
| ४ | बुधवार | सौम्य | सम | —व्यापारादि प्रारम्भ करने के लिए श्रेष्ठ |
| ५ | बृहस्पतिवार | सौम्य | मृदु | —विद्यारम्भ के लिए शुभ |
| ६ | शुक्रवार | सौम्य | मृदु | —वाद-विवाद प्रारम्भ करना हेतु शुभ है। |
| ७ | शनिवार | क्रूर | तीक्ष्ण | —शल्य क्रिया हेतु उत्तम |

**नक्षत्र चरणाक्षर**

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं। जिस नक्षत्र के जिस चरण में बालक का जन्म होता है, उसी चरण के अक्षर पर बालक का नामकरण किया जाता है। नीचे नक्षत्र और उसके आगे चार अक्षर दिए गये हैं, जो एक-एक चरण के आधारक्षर हैं।

| | नक्षत्र | चरणाक्षर |
|---|---|---|
| १. | अश्विनी | चू चे चो ला |
| २. | भरणी | ली लू ले लो |

| | | |
|---|---|---|
| ३. | कृत्तिका | आ ई उ ए |
| ४. | रोहिणी | ओ वा वी वू |
| ५. | मृगशिरा | वे वो का की |
| ६. | आर्द्रा | कू घ ङ छ |
| ७. | पुनर्वसु | के को हा ही |
| ८. | पुष्य | हू हे हो डा |
| ९. | आश्लेषा | डी डू डे डो |
| १०. | मघा | मा मी मू मे |
| ११. | पूर्वाफाल्गुनी | मो टा टी टू |
| १२. | उत्तराफाल्गुनी | टे टो पा पी |
| १३. | हस्त | पू ष ण ठ |
| १४. | चित्रा | पे पो रा री |
| १५. | स्वाति | रू रे रो ता |
| १६. | विशाखा | ती तू ते तो |
| १७. | अनुराधा | ना नी नू ने |
| १८. | ज्येष्ठा | नो या यी यू |
| १९. | मूल | ये यो भा भी |
| २०. | पूर्वाषाढ़ा | भू धा फा ढा |
| २१. | उत्तराषाढ़ा | भे भो जा जी |
| २२. | श्रवण | खी खू खे खो |
| २३. | धनिष्ठा | गा गी गू गे |
| २४. | शतभिषा | गो सा सी सू |
| २५. | पूर्वभाद्रपद | से सो दा दी |
| २६. | उत्तराभाद्रपद | दु थ झ ञ |
| २७. | रेवती | दे दो चा ची |

## राशि

सवा दो नक्षत्र की एक राशि होती है। ज्योतिर्विज्ञान में कुल १२ राशियाँ हैं, जिनका परिचय आगे दिया गया है।

## अक्षरानुसार राशि-ज्ञान

| | | |
|---|---|---|
| १ | मेष | चू चे चो ला ली लू ले लो आ |
| २ | वृष | ई उ ए ओ वा वी वू वे वो |
| ३ | मिथुन | का की कू घ ङ छ के को हा |

| | |
|---|---|
| ४ कर्क | ही हू हे हो डा डी डू डे डो |
| ५ सिंह | मा मी मू मे मो टा टी टू टे |
| ६ कन्या | टो पा पी पू ष ण ठ पे पो |
| ७ तुला | रा री रू रे रो ता ती तू ते |
| ८ वृश्चिक | तो ना नी नू ने नो या यी यू |
| ९ धनु | ये यो भा भी बा फा ढ़ा भे भू |
| १० मकर | भो जा जी खी खू खे खो गा गी |
| ११ कुम्भ | गू गे गो सा सी सू से सो दा |
| १२ मीन | दी दू थ झ ञ दे दो चा ची |

ऊपर बारह राशियों के सामने अक्षर लिखे हैं जिनकी सहायता से किसी भी व्यक्ति का नाम जानकर उसकी राशि ज्ञात की जा सकती है।

## राशि-परिचय

| राशियों के प्रसिद्ध नाम | अंग्रेजी नाम | पर्यायवाची संस्कृत शब्द | फारसी नाम | अरबी नाम |
|---|---|---|---|---|
| मेष | Aries | अज, क्रिय, एडक छग, प्रथम, वस्त आद्य | वर्रे | हमल |
| वृष | Taurus (Bull) | वृषभ, तावुरी, भद्र, बलीवर्द | गत्व | सोर |
| मिथुन | Gemini (Twines) | जितुम, नृयुक, यम | दोपेकर | जौजा |
| कर्क | Cancer (Crab) | कुलीर, कर्कट आटक | खरचग | सरतान |
| सिंह | Leo (Lion) | लेय, कंटरीभव, मृगेन्द्र, करि | शीर | असद् |
| कन्या | Virgo (Virgin) | पाथोन, तन्वी, वरुणी, कुमारी | खुशे | सम्बला |
| तुला | Libra (Scale) | जूक, वणिक् घट, तौलि | आजु | मीज़र |
| वृश्चिक | Scorpio (Scorpion) | कौर्प्य, अलि, द्रुण अष्टम | कझदुम | अकरब |
| धनु | (Centaur) | चाप, धन्वी | कमान | कोस |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | Sagittarius | शरासन | | |
| मकर | Capricorans (Crocodile) | मृग, आकोकेरो वक्र, एण | बोझ | जद्दी |
| कुम्भ | Aqarius (Water-carrier) | घट, धराभिधान | दुल | दल् |
| मीन | Pisces (fishes) | अन्यभ, झख, क्रिय, रिष्फ | माही | हूत |

## ३ : लग्न

जन्मकुण्डली में सर्वाधिक महत्त्व लग्न का ही होता है। गणित की थोड़ी-सी भूल से भी लग्न में अन्तर आ जाता है और उससे सारी कुण्डली अप्रामाणिक बन जाती है। पाठकों की विशिष्ट जानकारी के लिए लग्न निकालने की सरल विधि आगे दी जा रही है। लग्न निकालने से पूर्व इष्टकाल निकाल लेना चाहिए। इष्टकाल निकालने के लिए निम्न तथ्यों की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है।

१. जन्म-समय या वह समय जिस समय का लग्न निकालना है।
२. सूर्योदय काल
३. सूर्यास्त काल
४. दिनमान

यदि पंचांग को ध्यानपूर्वक देखें तो प्रत्येक दिन के नं० २, ३ और ४ अर्थात् सूर्योदय, सूर्यास्त और दिनमान स्पष्ट किए हुए होते हैं। साथ ही पंचांग में नित्य प्रातः रवि स्पष्ट (प्रा० र० स्प०) भी किया हुआ होता है।

उपर्युक्त चार तथ्यों को एक स्थान पर लिख देने के पश्चात् निम्न चार नियमों में से जिसका उपयोग हो, उसके अनुसार घट्यादि इष्टकाल निकाल लेना चाहिए।

**नियम १.**

सूर्योदय से लेकर दिन के १२ बजे के भीतर जन्म हो तो समय और

सूर्योदय काल का अन्तर कर शेष को ढाई गुना (२½) करने से घट्यादि इष्टकाल सिद्ध होता है।

उदाहरणार्थ, संवत् २०२६ फाल्गुन कृष्णा तीन को प्रातः ६ बजकर ४५ मिनट पर जोधपुर में किसी का जन्म हुआ। ६—४५ को संस्कार करने पर (६—४५—३८=६—७ मिनट) ६ बजकर ७ मिनट बने; संस्कार का अर्थ है अक्षांश-देशान्तर के अनुसार शुद्ध स्टैण्डर्ड समय बनाना। जोधपुर का स्टैण्डर्ड समय बनाने के लिए ३८ मिनट ऋण किया जाता है, अतः ६—४५ में से ३८ मिनट निकाले तो शुद्ध स्टैण्डर्ड समय आया ६—७ अर्थात् घड़ी के मुताबिक उनका जन्म ६—४५ पर था, पर उस समय शास्त्रीय समय ६ बजकर ७ मिनट ही था।

उस दिन सूर्योदय काल था, ६—२१

अतः ६—७ में से
६—२१ घटाए
२—४६ शेष रहे।

२—४६
× २½ से गुणा किया
६—५५ (यहाँ ४६ × २½ ÷ ६० किया)

तो घड़ी के मुताबिक जिसका जन्म ६ बजकर ४५ मिनट पर हुआ था, उसका इष्टकाल ६—५५ सिद्ध हुआ।

**नियम २.**

यदि १२ बजे दिन से सूर्यास्त के अन्दर का जन्म हो तो जन्म समय और सूर्यास्तकाल का अन्तर कर शेष को ढाई गुना करके दिनमान में से घटाने पर जो शेष रहता है, वही इष्टकाल होता है।

उदाहरणार्थ, संवत् २०२६ फाल्गुन शुक्ला २ को जोधपुर में किसी का जन्म ४ बजकर ५१ मिनट पर हुआ।

४—५१ जन्म
—३८ मिनट (जोधपुर अक्षांश-देशान्तर संस्कार करने पर)
शास्त्रीय समय ४—१३

उस दिन सूर्यास्त काल था—५—४६

अतः सूर्यास्त काल ५—४६ में से
शास्त्रीय जन्म समय ४—१३ घटाया,
४५

तो १---३६ शेष रहा
×२½ से गुणा किया
०४—००
दिनमान २९---८ में से
४—०० घटाया
तो २५ --८ इष्टकाल सिद्ध हुआ।

अतः उस दिन ४ बजकर ५१ मिनट पर २५—८ इष्टकाल चल रहा था।

**नियम ३.**

सूर्यास्त से १२ बजे रात्रि के भीतर का जन्म हो तो जन्म-समय और सूर्यास्त काल का अन्तर कर शेष को ढाई गुना कर दिनमान में जोड़ दिया जाए तो घट्यादि इष्टकाल सिद्ध होता है।

उदाहरणार्थ, संवत् २०२६ फाल्गुन शुक्ला २ को किसी का जन्म जोधपुर में रात्रि के ८ बजकर १२ मिनट पर हुआ है।

८—१२ घड़ी का समय
--३८ मिनट (अक्षांश देशांतर शुद्धि)
७--३४ शास्त्रीय समय
सूर्यास्त ५—४९ को घटाया
तो १—४५ शेष रहे
×२½ से गुणा किया
४—२३
दिनमान जोड़ा २९---८
तो ३३--३१ इष्टकाल सिद्ध हुआ।

अतः उस दिन रात्रि को ८ बजकर १२ मिनट पर ३३—३१ इष्टकाल चल रहा था।

**नियम ४.**

यदि रात के १२ बजे के पश्चात् और सूर्योदय से पहले का जन्म हो तो सूर्योदय काल और जन्म-समय का अन्तर कर शेष को ढाई गुना कर ६० घड़ी में से घटा देने से इष्टकाल होता है।

उदाहरणार्थ, संवत् २०२६ फाल्गुन शुक्ला २ की रात्रि को ४ बजकर १७ मिनट पर जोधपुर में जन्म हुआ।

४—१७
—३८

३—३६ शास्त्रीय समय

सूर्योदय—६—१० में से
शास्त्रीय समय ३—३६ घटाया

२—३१ शेष रहा।

२—३१
× २½ से गुणा किया।

तो ६—१८ गुणनफल आया
६०—०० घटी में से
६—१८ घटाये

तो ५३—४२ इष्टकाल सिद्ध हुआ।

अतः उस दिन रात्रि को ४ बजकर १७ मिनट पर ५३—४२ इष्टकाल सिद्ध हुआ।

नियम ५.

सूर्योदय से लेकर जन्म-समय तक जितना समय बीता हो उसे केवल ढाई (२½) गुना कर देने से घट्यादि इष्टकाल होता है।

उदाहरणार्थ, संवत् २०२६ फाल्गुन शुक्ला ७, शनिवार को प्रातः १० बजकर १८ मिनट पर जोधपुर में जन्म हुआ।

१०—१८
—३८ (अक्षांश-देशान्तर शोधन)

९—४० शुद्ध शास्त्रीय जन्म-समय
६— ६ सूर्योदय घटाया

३—३४ शेष रहा
× २½ से गुणा किया

तो ८—५५ इष्टकाल सिद्ध हुआ।

अर्थात् उस दिन १० बजकर १८ मिनट पर ८—५५ इष्टकाल चल रहा था।

पाठकों को यह कठिनाई आ रही होगी कि जोधपुर नगर के अक्षांश-देशान्तर शोधन तो ३८ मिनट हैं, जिन्हें घड़ी के समय में से ऋण करने पर शास्त्रीय समय आ जाता है, परन्तु अन्य शहरों का अक्षांश-देशांतर

शोधन कितना है? उत्तर है कि अक्षांश-देशांतर शोधन एक अत्यन्त जटिल एवं लम्बी प्रक्रिया है। मैं पाठकों को उसकी भूल-भूलैया में नहीं डालना चाहता, अतः नीचे कुछ प्रमुख शहरों के अक्षांश-देशांतर शोधन स्पष्ट करके दे रहा हूँ। ऋण हो तो जन्म-समय में से ऋण कर दें। यदि धन हो तो जोड़ दें।

### स्टैण्डर्ड अन्तर

| शहर का नाम | मि० सं० |
|---|---|
| अजमेर | —३१।१२ |
| अमृतसर | —३०।४८ |
| अहमदाबाद | —३६।२८ |
| अमरावती | —१६।० |
| इन्दौर | —२६।४० |
| कलकत्ता | +२३।३६ |
| कानपुर | —८।२४ |
| ग्वालियर | —१७।२० |
| जम्मू | —३०।२४ |
| जबलपुर | —१०।४ |
| जयपुर | —२६।३२ |
| जोधपुर | —३७।४४ |
| ढाका | +१।४४ |
| त्रिवेन्द्रम | —२२।० |
| दिल्ली | —२१।१२ |
| पटना | +१०।५२ |
| बम्बई | —३८।२४ |
| भोपाल | —१६।३६ |
| मद्रास | —८।५२ |
| शिमला | —२१।८ |

उपरोक्त नियमों के आधार पर किसी भी दिन का किसी भी समय का लग्न निकाला जा सकता है।

जब लग्न स्पष्ट हो जाय, तब फिर उस दिन जो-जो ग्रह जिस-जिस राशि में हों जन्मकुण्डली बनाकर, ऊपर सिंह राशि रखकर बाकी सभी ग्रहों को अपनी-अपनी राशि में स्थापित कर देने से जन्मकुण्डली स्पष्ट

राशि में आया हुआ चन्द्रमा, २८ अंशों से कर्क राशि में आया हुआ मंगल, १५ अंशों से मीन राशि में आया हुआ बुध, ५ अंशों से मकर राशि में आया हुआ बृहस्पति, २७ अंशों से कन्या राशि में आया हुआ शुक्र, २० अंशों से मेष राशि में स्थित शनि तथा १५ अंशों से धनु राशि में स्थित राहु नीच ग्रह माना जाता है।

## ग्रहों का मैत्री-विचार

ग्रहों में परस्पर पाँच प्रकार की परिस्थितियाँ होती हैं। अधिमित्र (बहुत घनिष्ठ मित्रता), मित्र, सम, शत्रु, अधिशत्रु। कुण्डली में यदि कोई ग्रह अपने मित्रके घर में पड़ा होता है तो शुभ फल देता है, परन्तु शत्रु के स्थान पर पड़ा पूर्ण फल नहीं दे पाता।

सूर्य के चन्द्रमा अधिमित्र, बुध मित्र, मंगल-गुरु सम, शुक्र शत्रु तथा शनि अधिशत्रु हैं। चन्द्रमा के बुध अधिमित्र, शुक्र-गुरु-शनि मित्र, सूर्य सम, मंगल शत्रु हैं। मंगल के शनि मित्र, सूर्य-चन्द्रमा-गुरु सम, शुक्र शत्रु तथा बुध अधिशत्रु हैं। बुध के सूर्य अधिमित्र, गुरु मित्र, चन्द्र-शुक्र सम, मंगल-शनि शत्रु हैं। गुरु के मंगल-चन्द्र अधिमित्र, शनि मित्र, सूर्य सम तथा शुक्र-बुध अधिशत्रु हैं। शुक्र के गुरु मित्र, सूर्य-चन्द्र-बुध-शनि सम, मंगल शत्रु हैं तथा शनि के गुरु मित्र, चन्द्र-मंगल-बुध-शुक्र सम तथा सूर्य अधिशत्रु हैं।

## तात्कालिक मैत्री

स्थायी मैत्री के अलावा ग्रहों की तात्कालिक मैत्री पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

जो ग्रह जिस स्थान पर है वह उससे २, ३, ४, १०, ११ और १२वे भाव के साथ मित्रता रखता है तथा १, ५, ६, ७, ८ और ९वें भाव के ग्रह के साथ तात्कालिक शत्रुता रखता है।

## ग्रहों का बल

जातक की जन्म-कुण्डली देखते समय ग्रहों के बल पर भी ध्यान दिया जाता है। ये बल ६ प्रकार के हैं—

१. स्थान बल—जो ग्रह उच्च, सम गृही, मित्र गृही और त्रिकोण-स्थ होता है वह ग्रह स्थान बली कहलाता है। चन्द्रमा और शुक्र, वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर तथा कुम्भ में स्थान बली एवं सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशियों में स्थान बली कहते हैं।

## ग्रहों का मैत्री-चक्र

| ग्रह | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अधिमित्र | चन्द्र | बुध | — | सूर्य | मंगल चन्द्र | — | — |
| मित्र | बुध | शुक्र गुरु शनि | शनि | गुरु | शनि | गुरु | गुरु |
| सम | मंगल गुरु | सूर्य | सूर्य चन्द्र गुरु | चन्द्र शुक्र | | सूर्य चन्द्र बुध शनि | चन्द्र मंगल बुध शुक्र |
| शत्रु | शुक्र | मंगल | शुक्र | मंगल शनि | — | मंगल | — |
| अधिशत्रु | शनि | — | बुध | — | शुक्र बुध | — | सूर्य |

२. **दिग्बल**—लग्न में बुध और गुरु, चौथे भाव में शुक्र और चन्द्रमा, सातवें भाव में शनि तथा दसवें भाव में सूर्य और मंगल ग्रह हों तो वे दिग्बली कहलाते हैं।

३. **काल बल**—रात में जन्म लेने वाले वालक की जन्म-कुण्डली में चन्द्र, शनि तथा मंगल एवं दिन में जन्म लेने वाले की कुण्डली में सूर्य, बुध और शुक्र काल बली कहलाते हैं।

४. **नैसर्गिक**—शनि से मंगल, मंगल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्र और चन्द्र से सूर्य उत्तरोत्तर बली कहलाते हैं।

५. **दृग्बल**—शुभ ग्रहों से देखे जाने वाले सभी ग्रह दृग्बली कहलाते हैं।

६. **चेष्टा बल**—मकर, कुंम्भ, मीन, मेष, वृष और मिथुन राशियों में सूर्य और चन्द्रमा, चन्द्रमा और मंगल, चन्द्रमा और बुध, चन्द्रमा और बृहस्पति, चन्द्रमा और शुक्र, तथा चन्द्रमा और शनि साथ-साथ बैठे हों तो वे चेष्टाबली कहलाते हैं।

बलवान ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस स्थान पर होता वहाँ वह वैसा ही फल देता है।

## ग्रहों की दृष्टि

प्रत्येक ग्रह अपने से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से, तीसरे और दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें और नवें भाव को दो चरण दृष्टि से तथा चौथे-आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से देखता है, परन्तु मंगल चौथे-आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से देखता है, परन्तु मंगल चौथे-आठवें भाव को, गुरु पाँचवें-नवें भाव को तथा शनि तीसरे-दसवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

### ग्रहों की दृष्टि

| ग्रह | एक चरण दृष्टि | दो चरण दृष्टि | तीन चरण दृष्टि | सम्पूर्ण दृष्टि |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ३,१० | ६,५ | ८,४ | ७ |
| चन्द्र | ३,१० | ६,५ | ८,४ | ७ |
| मंगल | ३,१० | ६,५ | ८,४ | ४ |
| बुध | ३,१० | ६,५ | ८,४ | ७ |
| गुरु | ३,१० | ६,५ | ८,४ | ५,७,६ |
| शुक्र | ३,१० | ६,५ | ८,४ | ७ |
| शनि | ३,१० | ६,५ | ८,४ | ३,७,१० |
| राहु | ३,६ | २,१० | स्वयं के घर में | ५,७ |
| केतु | ६ | २,१० | स्वयं के घर में | ५,७ |

## ग्रह शान्ति हेतु रत्न धारण

जातक की कुण्डली में जो ग्रह अशुभ और नीच स्थान पर हो उस ग्रह से सम्बन्धित धातु एवं रत्न धारण करना चाहिए।

### धातु

| ग्रह | भारतीय मत | पाश्चात्य मत | रत्न | धारण करने का समय |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | स्वर्ण, ताम्र | सुवर्ण | माणिक्य | सूर्योदय |
| चन्द्र | चाँदी | चाँदी | मोती | सूर्योदय |
| मंगल | विद्रुम, स्वर्ण | लोहा | मूँगा | सूर्यास्त |
| बुध | स्वर्ण, कांसा | पारा, टीन | पन्ना | किसी भी समय |
| बृहस्पति | चाँदी | टीन | पुखराज | दोपहर |
| शुक्र | चाँदी | ताँबा | हीरा | दोपहर |

| ग्रह | भारतीय मत | पाश्चात्य मत | रत्न | धारण करने का समय |
|---|---|---|---|---|
| शनि | लोहा, सीसा | सीसा | नीलम | रात्रि |
| राहु | पंचधातु | लोहा | गोमेदक | रात्रि |
| केतु | पंचधातु | लोहा | वैदूर्य | रात्रि |

अनिष्ट, निर्बल, नीच या शत्रु-क्षेत्र स्थित ग्रह की महादशा एवं अन्तर्दशा में निम्न रोगों की सम्भावना रहती है।

| ग्रह | सम्भावित रोग |
|---|---|
| सूर्य | सिरदर्द, ज्वर, महाज्वर, नेत्रविकार। |
| चन्द्र | तिल्ली, पांडु, यकृत, कफ, उदर-सम्बन्धी विकार। |
| मंगल | पित्त, वायु, कर्ण रोग, विसूचिका, खुजली आदि। |
| बुध | खाँसी, हृद् रोग, कुष्ठ, आंत और हृदय-सम्बन्धी रोग। |
| बृहस्पति | कण्ठ रोग, गुल्म रोग, प्लीहा, फोड़ा-फुंसी, गुप्त स्थानों में रोग। |
| शुक्र | प्रमेह, मेदवृद्धि, कर्ण रोग, वीर्य विकार, नपुंसकता, वीर्य या इन्द्रिय-सम्बन्धी रोग। |
| शनि | उन्माद, वातरोग, भगन्दर, गठिया, स्नायु रोग। |
| राहु | अनिद्रा, उदर, मस्तिष्क विकार एवं पागलपन आदि। |
| केतु | चर्म रोग, मस्तिष्क रोग तथा क्षुधा-जनित रोग |

## शरीरांग स्थित ग्रह और उनके प्रभाव

जब शरीर पर राशियाँ मानी गईं तब उनके स्वामी ग्रहों की भी वहाँ पर स्थिति स्वयं सिद्ध हो जाती है। फलस्वरूप कौन ग्रह शरीर के किस अंग पर अधिकार रखता है और उसका वहाँ कैसा प्रभाव पड़ता है, यह उसकी विभिन्न अवस्थाओं पर निर्भर है। नीचे ग्रह-सम्बन्धी विशिष्ट जानकारी दी जा रही है।

### सूर्य

इसका अधिकार आमाशय पर रहता है और यह पेट-सम्बन्धी विकृतियों का परिचालन करता है। यह एक राशि पर एक मास रहता है। अंग्रेजी में इसे 'सन' कहते हैं तथा यह सिंह राशि का स्वामी है। कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा इसके नक्षत्र हैं। जातक की कुण्डली में जब-जब भी इन नक्षत्रों पर सूर्य जायेगा उस समय सूर्य से सम्बन्धित भाव की वृद्धि होगी, परन्तु यदि जातक की कुण्डली से सूर्य नीच का या शत्रु के घर में बैठा हुआ होगा तो उस भाव की हानि भी कर सकता है। यह पुल्लिगी और राजस गुणवाला है। इसका उच्च स्थान मेष और नीच स्थान तुला है। सूर्य की मित्र राशियाँ वृश्चिक, धनु, कर्क और मीन हैं तथा शत्रु राशियाँ वृष, मकर और कुम्भ हैं। सूर्य का गुरु के साथ सात्त्विक, चन्द्र के साथ राजस और मंगल के साथ तामस व्यवहार रहता है। शनि, शुक्र, राहु और केतु के साथ उसकी शत्रुता है। यह अपने स्थान से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसकी दैनिक गति ५९ कला तथा ८ विकला है। इसे राशिचक्र के पूर्ण भ्रमण में ३६५ दिन, १५ घटी, ३१ पल और ३१ विपल लगते हैं। विंशोत्तरी दशा के अनुसार सूर्य की महादशा ६ वर्ष की होती है।

कुण्डली में सूर्य की स्थिति भाव के अनुसार आँकी जाती है। विभिन्न स्थितियों के अनुसार यह आत्मसिद्धि, पिता, जंगल, रेगिस्तानवास, भ्रमण, सिरदर्द और मानसिक चिन्ता का कारक है। यह मेष, वृश्चिक

तथा धनु लग्नों में योगकारक होता है। तामस स्वभाव के कारण सूर्य, मंगल, केतु, शनि और राहु के साथ अनिष्ट फलप्रद होता है। इसी प्रकार जब-जब भी सूर्य मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा, अश्विनी, मघा, मूल, पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद, आर्द्रा, स्वाति और शतभिषा पर होता है तो जातक के भाव की हानि करता है, परन्तु चन्द्र और गुरु के साथ यह लाभ देता है। रोहिणी, हस्त, श्रवण, पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रों पर यह श्रेष्ठ फलप्रद बनता है। बुध के साथ सम स्वभाव रहता है। कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्र पर सूर्य अपने साथ के ग्रह के अनुसार ही फल प्रदान करता है। विवाह, यात्रा, माँगलिक कार्यों और व्यापार के लिए सूर्य का विशेष अध्ययन आवश्यक होता है।

## चन्द्र

इसका अधिकार सीने पर रहता है। पुरुषार्थ, मानवप्रकृति आदि का अध्ययन भी इसी ग्रह के द्वारा किया जाता है। यह एक राशि पर सवा दो दिन रहता है। अंग्रेजी में इसे 'मून' कहते हैं तथा यह कर्क राशि का स्वामी है। चन्द्र के अपने नक्षत्र रोहिणी, हस्त और श्रवण कहे जाते हैं। यह स्त्रीलिंगी और राजस गुण वाला है। इसका उच्च स्थान वृष और नीच स्थान वृश्चिक है। चन्द्र की मित्र राशियाँ मिथुन, सिंह तथा कन्या हैं। गुरु के साथ चन्द्र का सात्त्विक योग होता है तथा सूर्य के साथ इसकी शत्रुता है। चन्द्र अपने स्थान से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसकी दैनिक गति ७९० कला और १८ विकला तथा वार्षिक गति ८७ दिन, ७ घंटा और ४० मिनट है। इसे राशिचक्र के पूर्ण भ्रमण में ८७ दिन, १९ घटी, १७ पल और ४२ विपल लगते हैं। विंशोत्तरी दशा के अनुसार इसकी महादशा १० वर्ष की होती है।

कुण्डली में चन्द्र की स्थिति बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि यह बहुत शीघ्र अपनी गति बदलता है और जातक को तुरन्त लाभ-हानि पहुँचाने की क्षमता रखता है। वृष का चन्द्र उच्च तथा वृश्चिक का चन्द्र नीच कहलाता है। यह मन और तत्सम्बन्धी कार्य, सुगन्धित द्रव्य, पानी, माता, आदर-सम्मान, श्री सम्पन्नता, एकान्तप्रियता, सर्दी, जुकाम, चर्मरोग और हृदयरोग का कारक होता है। मेष, तुला, वृश्चिक और मीन लग्नों में यह योगकारक होता है। रोहिणी, हस्त, श्रवण, पुनर्वसु, विशाखा तथा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों पर होने से यह जातक को

सम्बन्धित उत्तम फल प्रदान करता है। गुरु के साथ यह उच्च फल देता है, परन्तु सूर्य और बुध के साथ भी यह योग बनाने में समर्थ होता है। कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्र पर भी यह अच्छा फल देता है। प्रश्नकुण्डली में सम्पूर्ण विचार इसी के द्वारा किया जाता है। यात्रा, विवाह और शुभ कार्यों के लिए इसका विशेष अध्ययन आवश्यक होता है।

### मंगल

इसका विशेष अधिकार सिर पर रहता है तथा यह एक राशि पर डेढ़ मास तक स्थिर रहता है। इसे अंगारक, कुज, भौम, भूमिसुत भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे 'मार्स' कहते हैं। यह मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी होता है, जिसमें भी यह वृश्चिक राशि पर विशेष बली माना जाता है। मकर का मंगल उच्च का तथा कर्क का मंगल अशुभ फल प्रदान करता है। यह पुल्लिंगी और तामस ग्रह है तथा इसके स्वयं के नक्षत्र मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा हैं। सिंह, धनु और मीन इसकी मित्र राशियाँ तथा कन्या एवं मिथुन इसकी शत्रु राशियाँ कही जाती हैं। यह गुरु के साथ सात्त्विक और सूर्य के साथ राजस व्यवहार रखता है। बुध इसका पूर्ण शत्रु है। यह अपने भाव से चौथे, सातवें और आठवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसकी दैनिक गति ४६ कला, १८ विकला है। इसे राशिचक्र के पूर्ण भ्रमण में ६८८ दिन, ५८ घटी, ६ पल और १८ विपल लगते हैं। विंशोत्तरी दशा के अनुसार मंगल की महादशा ७ वर्ष की होती है।

विभिन्न स्थितियों के अनुसार इस ग्रह से ईमानदारी, जमींदारी, रोग, मानसिक आघात, बड़े भाई का सुख अथवा बड़े भाई की आकस्मिक मृत्यु, एक्सीडेन्ट, गरीबी, शूरता और चालाकी आदि का अध्ययन किया जाता है। सूर्य, बुध और राहु के साथ यह उत्तम फल देता है। यह जब भी कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, आर्द्रा, स्वाति और शतभिषा नक्षत्र पर आता है तब-तब कुण्डली के भाव की वृद्धि करता है। भूमि, जायदाद, कृषि, पशुओं के लेन-देन, चोरी, कला, धोखा एवं कपट-व्यवहार आदि कार्यों के लिए मंगल का विशेष अध्ययन किया जाता है।

### बुध

इस ग्रह का विशेष अधिकार कन्धे और ग्रीवा पर रहता है। यह

एक राशि पर एक मास रहता है। अंग्रेजी में इसे 'मर्करी' कहते हैं। यह मिथुन और कन्या राशि का स्वामी है, लेकिन मिथुन राशि पर यह विशेष बली होता है। इसके अपने नक्षत्र आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती हैं। यह नपुंसकलिंगी और सात्त्विक गुण वाला है। यह कन्या राशि में उच्च का तथा मीन राशि में नीच का बन जाता है। इसकी मित्र राशियाँ वृष, सिंह एवं तुला हैं तथा शत्रु राशि कर्क है। शुक्र के साथ यह राजस व्यवहार तथा चन्द्रमा के साथ शत्रु व्यवहार करता है। यह अपने स्थान से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। बुध की दैनिक गति २४५ कला, ३२ विकला है। इसे राशिचक्र के पूर्ण भ्रमण में ३१६ दिन, १५ घटी, ३१ पल और ३० विपल लगते हैं। इसकी विंशोत्तरी महादशा १७ वर्ष की मानी गई है।

विभिन्न स्थितियों के अनुसार बुध ग्रह मुनि, वेद-पुराण, ज्योतिष-शास्त्र का अध्ययन, चाचा, साक्षी, राज्य, व्यापार, वैद्यक, कुष्ठ, संग्रहणी आदि रोगों का कारक है। यह गुरु और चन्द्र के साथ शुभ फल तथा शुक्र के साथ मिश्रित फल देता है। राहु, शनि, मंगल तथा केतु के साथ यह अशुभ फल देता है। पंचांग के अनुसार आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, रोहिणी, हस्त एवं श्रवण नक्षत्रों पर शुभ फलदाता एवम् आर्द्रा, स्वाति, पुष्य, अनुराधा, चित्रा, मघा तथा मूल नक्षत्रों पर अशुभ फल प्रदान करता है। बुध व्यापार का हेतु है। उच्च का बुध जातक को व्यापार अथवा लेने-देने के कार्यों में निपुण कर देता है। बुध की स्थिति और उसकी महादशा जातक के लिए भाग्यवर्द्धक बनती है।

## गुरु

इस ग्रह का अधिकार मूत्राशय पर रहता है। जीव, बृहस्पति आदि इसके दूसरे नाम हैं। अंग्रेजी में इसे 'जुपीटर' कहते हैं। यह एक राशि पर एक वर्ष तक रहता है। यह गुरु, धनु और मीन राशि का स्वामी है, जिसमें भी धनु पर विशेष बली होता है। इसके अपने नक्षत्र पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वाभाद्रपद हैं। यह पुल्लिंगी और राजस स्वभाव वाला है। इसका उच्च स्थान कर्क और नीच स्थान मकर है। गुरु की मित्र राशियाँ मेष, सिंह, कन्या और वृश्चिक हैं तथा शत्रु राशियाँ वृष, मिथुन और तुला हैं। गुरु का सूर्य के साथ सात्त्विक, चन्द्रमा के साथ राजस तथा मंगल के साथ तामस व्यवहार रहता है। बुध तथा शुक्र के साथ इसके सम्बन्ध शत्रुतापूर्ण हैं। यह अपने स्थान से पञ्चम, सप्तम

तथा नवम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसकी दैनिक गति १४ कला, ४६ विकला है। ११ वर्ष, १० मास, १५ दिन, ३६ घटी और ८ पल में यह अपना राशिचक्र भ्रमण पूर्ण कर लेता हैं। ४३ वर्षों के अन्तर से यह पुनः उसी स्थिति में आ जाता है जिस स्थिति से यह प्रारम्भ हुआ था। इसकी विंशोत्तरी महादशा १६ वर्ष होती है।

जातक की कुण्डली में विभिन्न स्थितियों के अनुसार गुरु से संतान, सन्तानसुख और विद्या आदि का अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त इन्द्रिय-निग्रह, राज्य-सम्मान, लाभ-कीर्ति और पवित्र व्यवहार का बोध इसी ग्रह के द्वारा किया जाता है। मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक और मीन लग्नों में यह योगकारक है, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों में यह शुभ फलदाता है तथा इसके विपरीत यह आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा आदि नक्षत्रों पर रहकर जातक को हानि पहुँचा देता है। विवाह में कन्या के लिए इस ग्रह का विशेष अध्यनन आवश्यक है। कन्या की राशि से चतुर्थ, अष्टम और द्वादश गुरु विवाह के लिए अमंगलदायक है।

## शुक्र

दैत्य-गुरु शुक्र का अधिकार चेहरे पर विशेषतः रहता है। यह एक राशि पर डेढ़ मास तक रहता है। भृगु, सित आदि इसके अन्य नाम हैं। अंग्रेजी में इसे 'वीनस' कहते हैं। यह वृष और तुला राशि का स्वामी है, जिसमें भी यह तुला पर विशेष बली होता है। इसके अपने नक्षत्र भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा हैं। यह स्त्रीलिंगी तथा राजस गुण वाला है। इसका उच्च स्थान मीन एवं नीच स्थान कन्या है। शुक्र की मित्र राशियाँ धनु, मकर तथा शत्रु राशियाँ कर्क एवं सिंह हैं। यह बुध के साथ सात्त्विक, शनि एवं राहु के साथ तामस तथा चन्द्र, सूर्य और मंगल के साथ शत्रुवत् व्यवहार करता है। यह अपने स्थान से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। शुक्र की दैनिक गति ७६ कला और ७ विकला है। शुक्र ग्रह २२७ वर्ष में ठीक उसी तिथि, मास, दिन, अंश-अंशादि आ जाता है। शुक्र की विंशोत्तरी महादशा २० वर्ष की होती है।

जातक की कुण्डली में विभिन्न स्थितियों के अनुसार शुक्र ग्रह से विवाह, सगाई, सम्बन्ध-विच्छेद, तलाक अथवा तत्सम्बन्धी कार्य, भोग-विलास, प्रेमी-प्रेमिका आदि सुख, संगीत-चित्र, कला-निपुणता, द्यूत, छल-कपट, कोषाध्यक्षता, मानाध्यक्षता, विदेश-गमन, स्नेह-स्निग्धता,

प्रमेह रोग आदि का अध्ययन होता है। मिथुन, कन्या, मकर और कुम्भ, लग्नों में यह योगकारक होता है। आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, कृत्तिका स्वाति और आर्द्रा नक्षत्र पर रहकर यह शुभ फल देता है तथा भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा आदि नक्षत्रों पर अशुभ फल प्रदान करता है।

### शनि

इस ग्रह का अधिकार जंघाओं पर रहता है। यह एक राशि पर ढाई वर्ष रहता है। इसके अन्य नाम कन्द, शनिश्चर, सौरि आदि हैं। अंग्रेजी में इसे 'सेटर्न' कहा जाता है। यह मकर और कुम्भ राशि का स्वामी है, जिसमें भी यह मकर राशि पर विशेष बली होता है। इसके अपने नक्षत्र पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद हैं। यह नपुंसक-लिंगी और तामस स्वभाव वाला ग्रह है। इसका उच्च स्थान तुला और नीच स्थान मेष है। वृष और मिथुन इसकी मित्र राशियां तथा कर्क, सिंह और वृश्चिक इसकी शत्रु राशियाँ हैं। यह बुध के साथ सात्त्विक, शुक्र के साथ राजस तथा सूर्य एवं चन्द्रमा के साथ शत्रुवत् व्यवहार करता है। यह अपने स्थान से तीसरे, सातवें और दसवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। शनि की दैनिक गति ५ कला, ५ विकला या १० घण्टा, १६ मिनट है। २९ वर्ष, ५ मास, १७ दिन, १२ घटी और ३० पल में यह सम्पूर्ण राशियों का एक चक्कर लगा लेता है। विंशोत्तरी शनि की महादशा १९ वर्ष की होती है।

कुण्डली में शनि की स्थिति के अनुसार आयु, मृत्यु, चौर्यकर्म, द्रव्य की हानि, घाटा, दिवाला, बन्धन, जेल, मुकदमा, फाँसी, शत्रुता, राजभय, त्यागपत्र, बाजुओं में पीड़ा, गठिया एवं वायु-सम्बन्धी रोगों का अध्ययन किया जाता है। तस्करी, जासूसी और दुष्कर्म आदि का ज्ञान भी इसी ग्रह के द्वारा होता है। वृष और तुला लग्न में यह ग्रह योग-कारक बनता है। केतु तथा गुरु से मित्रता, चन्द्र से सम एवं मंगल तथा शुक्र से यह शत्रुता रखता है। पंचांग के अनुसार अश्विनी, मघा, मूल, विशाखा, पुनर्वसु पर उत्तम फल एवं पुष्य, अनुराधा, मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा तथा भरणी पर अशुभ फल प्रदान करता है।

### राहु

इस ग्रह का पैरों पर अधिकार रहता है। यह एक राशि पर १॥ वर्ष तक रहता है। अंग्रेजी में इसे 'ड्रेगन्स हेड' कहते हैं। यह मकर राशि

का स्वामी है। आर्द्रा, स्वाति और शतभिषा नक्षत्र पर यह शुभ फल-दाता है। यह स्त्रीलिंगी तथा तामस गुण वाला है। इसका उच्च स्थान वृश्चिक तथा नीच स्थान वृष है।

कुछ विद्वान वृष और मिथुन राशि भी इसकी उच्च राशि मानते हैं। राहु की मित्र राशियाँ मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर तथा मीन हैं और शत्रु राशियाँ कर्क तथा सिंह हैं। यह ग्रह शुक्र के साथ राजस तथा सूर्य एवं चन्द्रमा के साथ शत्रुवत् व्यवहार करता है। अपने स्थान से सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसकी दैनिक गति ३ कला और ११ विकला है। १८ वर्ष, ७ मास, १८ दिन और १५ घटी में यह सम्पूर्ण राशियों का भ्रमण कर लेता है। राहु ९३ वर्ष के बाद पुनः उसी स्थान, नक्षत्र और राशि पर आ जाता है। इसकी विंशोत्तरी महादशा १८ वर्ष की होती है।

जातक की कुण्डली में विभिन्न स्थितियों के अनुसार राहु के द्वारा शक्ति, परिश्रम, पहलवानी, मोटापा, हिम्मत, साहस, शौर्य, बल, पाप-कर्म, व्यय, शत्रुता, विलासिता, दुःख, चिन्ता, दुर्भाग्य, अन्याय एवं संकट आदि का अध्ययन किया जाता है। यह सब ग्रहों से बलवान माना जाता है तथा वृष और तुला लग्न में यह योगकारक बनता है।

## केतु

इसका पैरों के तलवों पर विशेषाधिकार रहता है। यह एक राशि पर १॥ वर्ष रहता है। अंग्रेजी में इसे 'ड्रेगन्स टेल' कहते हैं। यह मेष राशि का स्वामी है एवं अत्यन्त बली तथा मोक्षप्रद माना गया है। इस के अपने नक्षत्र अश्विनी, मघा तथा मूल हैं। यह नपुंसकलिंगी और तामस स्वभाव वाला है। इसका उच्च स्थान वृष और नीच स्थान वृश्चिक है। केतु की मित्र राशियाँ मिथुन, कन्या, धनु, मकर और मीन हैं तथा शत्रु राशियाँ कर्क एवं सिंह हैं। यह गुरु के साथ सात्त्विक तथा चन्द्र एवं सूर्य के साथ शत्रुवत् व्यवहार करता है। अपने स्थान से सप्तम स्थान को यह पूर्ण दृष्टि से देखता है। केतु की दैनिक गति ३ कला और ११ विकला मानी गई है। सम्पूर्ण राशियों पर यह १८ वर्ष, ७ मास, १८ दिन और १५ घटी में पूरा भ्रमण कर लेता है। राहु की तरह केतु भी ९३ वर्ष बाद पुनः अपने उसी स्थान पर आ जाता है। कुण्डली में यह हमेशा राहु से सातवें स्थान पर रहता है। इसकी विंशोत्तरी दशा ७ वर्ष की मानी गई है।

जातक की कुण्डली में विभिन्न स्थितियों के अनुसार केतु ग्रह से भयानक एवं अद्भुत स्वप्न-दर्शन, दुर्घटना, पर्वत से गिरना, जलाघात, कारावास, मृत्यु, फोड़ा-फुंसी, कुष्ठ रोग और अशुभ भावनाओं का अध्ययन किया जाता है।

## वरुण

नवीन ज्योतिर्विज्ञानशास्त्रियों ने नव ग्रहों के अतिरिक्त दो और नवीन ग्रहों की खोज कर कुल ११ ग्रह माने हैं। उनमें से 'यूरेनस' नामक ग्रह भारत में वरुण ग्रह के नाम से सम्बोधित किया गया है। यह एक राशि पर १४ वर्ष रहता है। यह मीन राशि का स्वामी है तथा जल-चर राशियों में यह सबसे अधिक बलवान माना गया है। इस ग्रह की उच्च राशि मकर है। यूरेनस सूर्य-मण्डल से २७७ करोड़ मील और पृथ्वी से ८३ गुना बड़ा है। इसे पूरे राशिचक्र के भ्रमण में १६८ वर्ष लगते हैं।

चर राशि में इस ग्रह के रहने से जातक की पाचन-शक्ति क्षीण रहती है स्थिर राशि में होने से आमाशय, अंतड़ियाँ और पेट में खराबी उत्पन्न करता है तथा द्वि-स्वभाव राशि पर वीर्य में शिथिलता लाता है।

यह ग्रह शुभ स्थान एवं शुभ राशि पर होने से शुभ फल देता है। 'नेवी', मछुआरा, नौकाचालन, मत्स्य-उद्योग, पनडुब्बी-चालन आदि कार्यों का इस ग्रह द्वारा अध्ययन किया जाता है।

## वारुणी (हर्षल)

नवीन ज्योतिर्विज्ञानानुसार इसका नाम 'हर्षल' है। यह एक राशि पर ७ वर्ष रहता है। यह कुम्भ राशि का स्वामी है तथा इसका उच्च स्थान वृश्चिक एवं नीच स्थान वृष है। 'हर्षल' सूर्य से १७७ करोड़ मील दूर है और इसका आकार पृथ्वी से ६४ गुना बड़ा होता है। यह ८४ वर्ष में सम्पूर्ण राशियों का भ्रमण कर लेता है।

'हर्षल' ग्रह मिथुन, तुला और कुम्भ में बलवान तथा कारक बतलाया गया है। यह एक, तीन, पाँच, सात तथा नवें और दसवें भाव में रहकर उत्तम फल देता है। मेष, सिंह और धनु राशियों पर यह मानव को महत्त्वाकांक्षी, साहसी और धीर स्वभाव वाला बनाता है। कर्क, वृश्चिक और मीन राशियों पर रहने से व्यक्ति कामी, दुष्ट स्वभाव और दुराग्रही बन जाता है। मिथुन, तुला और कुम्भ में रहकर यह जातक को विद्या-व्यसनी और शास्त्र-प्रेमयुक्त बना देता है। साधारणतः

जादूगरी, तन्त्र-मन्त्र, टोना, गुप्त विद्याएँ, वशीकरण, आश्चर्यप्रद स्थान, विचक्षणता विलक्षणता आदि का अध्ययन इसी के द्वारा होता है।

## कुछ अन्य आवश्यक बातें

जन्म-पत्री किसी भी जातक के लिए ऐसा दीपक होता है, जिसके प्रकाश में वह संकटों से बचता हुआ निर्दिष्ट लक्ष्य तक सरलता से अग्रसर हो सकता है। भाग्य को जानकर तदनुसार कार्य करने से हम सफलता की ओर बढ़ सकते हैं। जन्मपत्री का अध्ययन करने से पूर्व ग्रह और उनके सम्बन्ध में कुछ बातें जान लेनी आवश्यक हैं।

**सूर्य**—सूर्य समस्त ग्रहों का पति और परम तेजस्वी माना गया है। यह पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा है। ज्योतिषशास्त्र में यह पूर्व दिशा का स्वामी, पुरुष रूप और पाप ग्रह है। जातक के पिता के सम्बन्ध में सूर्य द्वारा ही विचार किया जाता है। नेत्र, कलेजा और स्नायु आदि अवयवों पर इस ग्रह का विशेष प्रभाव पड़ता है। लग्न से सप्तम स्थान पर पड़ा सूर्य परम प्रतापी और प्रबल माना जाता है। शारीरिक तथा मानसिक रोग, खेद, उदासीनता, अपमान, मन्दाग्नि आदि रोगों का अध्ययन इसी ग्रह द्वारा किया जाता है।

**चन्द्रमा**—साढ़े उन्तीस दिनों में यह पृथ्वी की एक पूरी परिक्रमा कर लेता है। यह पश्चिम-उत्तर दिशा का स्वामी, स्त्री-रूप, श्वेत वर्ण और जल तत्त्व प्रधान ग्रह है। मानव रक्त परिभ्रमण का इससे विशेष संबंध है। चतुर्थ स्थान का स्वामी होने के साथ-साथ इसी स्थान का पूर्ण बली भी माना जाता है। शारीरिक पुष्टि, राज्यकृपा, चित्त, माता-पिता तथा सम्पत्ति आदि का अध्ययन इसी ग्रह से किया जाता है। शारीरिक रोग, पाण्डुता, कृशता, जल, कफ आदि की बीमारियाँ, स्त्री-सम्बन्धी रोग, व्यर्थ भ्रमण, उदर रोग आदि का अध्ययन भी इसी ग्रह से सम्भव है।

**मंगल**—यह ग्रह २५ अंशों का कोण बनाता हुआ हमारे ६८७ दिनों में सूर्य की एक पूरी परिक्रमा कर लेता है। यह दक्षिण दिशा का स्वामी, रक्त वर्ण, अग्नि-तत्त्व और पुरुष जाति का ग्रह है। पाप ग्रह होते हुए भी यह धैर्य तथा पराक्रम का स्वामी है। भाई और बहन के बारे में इस ग्रह से जानकारी प्राप्त की जाती है। लग्न से तीसरे तथा छठे स्थान में बली एवं दूसरे स्थान पर स्थित होने से निष्फलदायक होता है। पित्त, शूल, मूर्छा आदि बीमारियों का ज्ञान इसी ग्रह से किया

जाता है।

**बुध**—हमारे ८८ दिनों में यह सूर्य की पूरी परिक्रमा कर लेता है। यह उत्तर दिशा का स्वामी, वात, पित्त, कफ प्रधान, श्याम वर्ण का ग्रह है। ज्योतिष विद्या, चिकित्सा, शिल्प, कानून, वाणिज्यादि का ज्ञान इसी ग्रह से होता है।

**पापग्रहों**—सूर्य, मंगल, राहु, केतु, शनि के साथ रहकर अशुभ फल तथा चन्द्र, गुरु, शुक्र के साथ रहता हुआ शुभ फल देता है। चतुर्थ स्थान में रहने पर यह निष्फल रहता है। इससे वाणी, गुप्त रोग, संग्रहणी, मूकता, वातरोग, कुष्ठ आदि का अध्ययन किया जाता है।

**बृहस्पति**—यह प्रति सैकेण्ड ८ मील की गति से सूर्य की परिक्रमा करता है।

बृहस्पति पूर्व-उत्तर दिशा का स्वामी, पुरुष जाति, पीत वर्ण और आकाशतत्वीय ग्रह है। लग्न में पड़ा हुआ बृहस्पति बली माना जाता है। यह अपनी दशा में चर्बी और कफ आदि पर प्रभाव डालता है। पुत्र-पौत्र, विद्या, सूजन, ग्रह आदि का विचार इसी ग्रह से किया जाता है।

**शुक्र**—यह ग्रह सौर-मंडल का सबसे अधिक देदीप्यमान नक्षत्र है। इसका वर्षमान हमारे २२५ दिनों के बराबर है तथा २२ मील प्रति सैकेण्ड से यह सूर्य की प्रदक्षिणा करता है। यह ग्रह दक्षिण-पूर्व दिशा का स्वामी, स्त्री जाति, श्याम-गौर वर्ण है, अतः इसके प्रभाव से जातक का रंग भी हुआ होता है। लग्न से छठे स्थान पर यह निष्फल तथा सातवें स्थान पर अशुभ फलदायक है। मदन-पीड़ा, गान, नेत्र वाहन आदि का कारक होता है तथा यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो तो उसकी कुण्डली से इस ग्रह द्वारा माता का विचार किया जाता है।

**शनि**—कान्तिहीन प्रकाश और अत्यन्त धीरे चलने के कारण ही इसका नाम 'शनैःचर' अथवा शनिश्चर प्रसिद्ध हुआ है। यह मन्दगति से २९.५ वर्षों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। यह अपनी धुरी पर १० घंटे, १२ मिनटों में एक चक्कर लगा लेता है, अतः इसका वर्ष हमारे २५,००० दिनों के बराबर होता है। यह पश्चिम दिशा का स्वामी, नपुंसक, वात प्रकृति-प्रधान ग्रह है। यह लग्न से सातवें स्थान में बली माना जाता है। जातक की विद्या का विचार इससे किया जाता है। इस ग्रह से शारीरिक बल, विपत्ति योग, ऐश्वर्य, नौकरी आदि का अध्ययन किया जाता है।

**राहु**—दक्षिण दिशा का स्वामी काले रंग का तथा क्रूर ग्रह है।

राहु कुण्डली में जिस स्थान पर होता है, उस भाव की वृद्धि में अवरोध उत्पन्न करता है।

केतु—यह भी क्रूर ग्रह तथा कृष्ण वर्ण का माना जाता है। चर्म रोग, हाथ-पाँव के रोगों का अध्ययन इस ग्रह के माध्यम से होता है।

# ७ : कुण्डली

## कुण्डली से फल देखने के कुछ नियम

कुण्डली देखते समय ग्रहों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना चाहिए। हड़बड़ी, उतावली या किसी एक ही ग्रह को देखकर फल नहीं कह देना चाहिए। नीचे कुछ नियम दिए जा रहे हैं, जिन्हें ध्यान में रखते हुए कुण्डली का अवलोकन करना चाहिए—

१. जिस भाव की जो राशि हो, उस राशि का स्वामी ही उस भाव का स्वामी या भावेश कहलाता है।

२. लग्न से छठे, आठवें और बारहवें भाव के स्वामी जहाँ भी पड़े होते हैं, वे उसको नुकसान पहुँचाते हैं।

३. किसी भाव का स्वामी यदि अपने ही घर में बैठा हुआ हो, तो वह शुभ फलदायक होता है।

४. लग्न से ११वें घर में कोई भी पड़ा हुआ ग्रह अच्छा फल देता है।

५. जिस भाव में शुभ ग्रह पड़ा होता है, वह उस घर को शुभ फल देता है तथा पापग्रह हो तो अशुभ फल देता है।

६. लग्न से १,४, ५, ७, ९ और १०वें स्थान में शुभ ग्रह हों तो अच्छा फल देते हैं।

७. लग्न से ३, ६ और ११वें स्थान में पापग्रह हों तो जातक को लाभ पहुँचता है।

८. किसी भी भाव में पड़ा हुआ ग्रह शुभ ग्रह से देखा जाने पर शुभ फल देता है और पापग्रह द्वारा देखे जाने पर अशुभ फल देता है।

९. उच्च ग्रह कुण्डली में सदैव अच्छा फल देते हैं।

१०. ८वें और १२वें भावों में सभी ग्रह अनिष्टकारक होते हैं।

११. केन्द्र में शुक्र, बुध और गुरु अच्छे माने जाते हैं। इसी प्रकार गुरु छठे भाव में शत्रुनाशक, शनि आठवें भाव में दीर्घायु एवं मंगल १०वें स्थान में पड़ा हुआ भाग्य को बढ़ाता है।

१२. राहु तथा केतु जहाँ भी होते हैं, उस भाव की हानि ही करते हैं, परन्तु लग्न से दूसरे स्थान में पड़ा हुआ केतु लाभदायक होता है।

१२. अकेला गुरु यदि २, ५ और ७वें भाव में होता है तो धन, पुत्र और स्त्री के लिए हानिकारक होता है।

१४. सूर्य, मंगल, शनि और राहु पापग्रह माने जाते हैं।

१५. चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु और गुरु उत्तरोत्तर शुभ ग्रह माने गये हैं।

## जन्म के समय द्वादश भावों में ग्रहों का फल

### सूर्य

जिस पुरुष के लग्न में रवि होता है, उस व्यक्ति की नासिका, शरीर और ललाट ऊँचा होता है, लेकिन स्त्री, पुत्र तथा कुटुम्बियों से उसका मन व्यथित ही रहता है। वायु-पित्तादि से उसका शरीर कृश तथा क्षीण रहता है। यह पर्यटनप्रिय होता है तथा देश-विदेश में घूमने के योग बनते ही रहते हैं। उसका धन सदैव एक-सा नहीं रहता बल्कि उस में ह्रास-वृद्धि होती रहती है। जातक क्रोधी, स्वाभिमानी, शूरवीर और चंचल होता है।

जिसके दूसरे स्थान में सूर्य होता है, वह अत्यन्त भाग्यशाली होता है। गौ, घोड़े आदि चतुष्पदों का उपयोग करता हुआ वह पूर्ण सुख प्राप्त करता है। उसका धन उत्तम कार्यों में व्यय होता है, परन्तु स्त्री के कारण सम्बन्धियों से उसकी कलह होती रहती है। लाभ के जितने भी उपाय वह सोचता है, निष्फल हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति अधिकतर मुख, नेत्र व कर्ण का रोगी रहता है तथा राज्यभीरुता से कार्य करने में हिचकिचाता है।

तीसरे स्थान में पड़ा हुआ सूर्य अत्यन्त प्रतापी और पराक्रमी होता है। ऐसा जातक अपने भाइयों से पीड़ित रहेगा तथा यदा-कदा तीर्थ-यात्रा करता रहेगा। युद्ध, वाद-विवाद और मुकदमे आदि में वह विजयी रहता है तथा राज्य द्वारा उसे सुख प्राप्त होता रहता है। ऐसा जातक अधिकतर कवि, लब्धप्रतिष्ठ विद्वान और विचारवान होता है।

जिसकी कुण्डली में लग्न से चौथे घर में सूर्य होता है वह अधिकतर

विदेशवासी होता है। युद्ध, वाद-विवाद एवं मुकद्दमे में वह शत्रु से पराजित होता है तथा उसका अंत:करण सदा व्यथित रहता है। ऐसा जातक सुन्दर, पितृधन-नाशक, गुप्त विद्याप्रिय तथा वाहन सुखहीन होता है।

पाँचवें घर में पड़ा हुआ सूर्य जातक को क्रोधी एवं वंचक बना देता है। ऐसे जातक को अपने ज्येष्ठ पुत्र के निधन का दु:ख सालता रहता है। उसकी बुद्धि कुशाग्र होती है तथा शनै:-शनै: धन इकट्ठा करता रहता है। इसकी मृत्यु उदर-व्याधि से होती है।

जिसके लग्न से छठे स्थान में सूर्य हो, वह शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है। राजा, राज्यवर्ग और मित्रों पर अत्यधिक व्यय करता रहता है। माता के कुल द्वारा इसे तकलीफ मिलती है तथा चौपाये द्वारा घायल होता है। ऐसा जातक निरोगी, शत्रुनाशक, वीर्यवान और न्यायप्रिय होता है।

जिसके सातवें स्थान में सूर्य पड़ा हो, उसे स्त्री का सदैव कष्ट रहता हैं। उसका शरीर पीड़ित तथा मन चिन्तित रहता है। व्यापार करने पर इसे हानि उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति कठोर, आत्मरत एवं राज्यवर्ग से पीड़ित रहता है।

जिसके आठवें स्थान में सूर्य होता है, वह कार्यतत्पर, चिन्तायुक्त, क्रोधी, धनी तथा धैर्यहीन होता है। विदेशी नारियों के प्रति वह सदैव लालायित रहता है तथा नशा आदि का विशेष सेवन करते रहने से उसका स्वास्थ्य खराब ही बना रहता है। उसका धन चोरी चला जाता है, अथवा गफलत या आलस्य से नष्ट हो जाता है। गुप्तेन्द्रियों की व्याधि से यह जातक विशेष पीड़ित रहता है।

नवें स्थान का सूर्य जातक को दुष्ट स्वभाव का बना देता है। सगे भाई से पीड़ित यह सदैव चिंतित रहता है। ऐसा जातक योगी, तपस्वी, नेता, ज्योतिषी अथवा साधक होता है। भृत्यादि सुखों से पूरित वाहनादि का पूर्ण उपयोग करता है।

जिसके दसवें स्थान में सूर्य हो उसका श्रम राजा के द्वारा फलदायक होता है। यह माता को पीड़ा देनेवाला तथा स्वजनों से बिछुड़ा रहता है। ऐसा व्यक्ति व्यवहारकुशल, राज्य मान्यताप्राप्त, राज्यमंत्री, उदार एवं ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है।

ग्यारहवें स्थान का सूर्य जातक को राजा द्वारा धन दिलाता है तथा उसे अनायास ही सम्पत्ति प्राप्त होती है। शत्रु इससे घबराते हैं, सन्तान

इसे पीड़ा पहुँचाती रहती है। ऐसा जातक धनी, बलवान, सुखी, स्वाभिमानी, सदाचारी एवं उदर-रोगी होता है।

यदि द्वादश स्थान में सूर्य हो तो व्यक्ति नेत्र रोग से पीड़ित रहता है। युद्ध अथवा वाद-विवाद में इसकी जीत रहती है, शरीर में विभिन्न पीड़ाएँ इसे तकलीफ देती हैं। ऐसा व्यक्ति अधिकतर उदासीन, मस्तक-रोगी, आलसी और मित्र-द्वेषी होता है।

**चन्द्रमा**

यदि किसी की कुण्डली में जन्म-लग्न (मेष, वृष तथा कर्क राशि हो तो) में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य धनवान, कान्तिमान तथा पूर्ण आनन्द का भागी होता है। अन्यथा लग्न में (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ, मीन हो तो) वह मनुष्य धनहीन, दुर्बल, दरिद्र, मूर्ख तथा बहरा-सा होता है। ऐसा जातक स्थूल शरीर एवं गानविद्या का विशेष प्रेमी होता है।

यदि दूसरे भाव में चन्द्रमा हो तो उस पुरुष को धन का विशेष लाभ होता है। शरीर से अत्यन्त सुखी रहता है वह स्त्रियों से विलास करने में निपुण होता है। अपने कुटुम्बियों पर प्रेम रखता है। ऐसा जातक अत्यन्त सुन्दर, भोगी, परदेशप्रिय, सहनशील एवं भाग्यवान होता है।

जिसके तीसरे स्थान में चन्द्र हो उसे पराक्रम से धनप्राप्ति होती है। अनेक स्त्रियों से सहवास करते हुए भी वह संयमशील और समाज में सच्चरित्र माना जाता है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक, यशस्वी, प्रसन्नचित्त, आस्तिक एवं मधुरभाषी होता है। उसे सहोदर भ्राताओं से सुख मिलता है।

यदि लग्न से चौथे स्थान में चन्द्रमा हो तो वह उच्च पद का अभिलाषी होता है, उसे पुत्रों तथा स्त्री का विशेष सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति दानी, सुखी, उदार, रोग-रहित, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी एवं बुद्धिमान होता है।

यदि चन्द्रमा लग्न से पाँचवें स्थान पर हो तो वह मनुष्य उत्तम सन्तान का सुख प्राप्त करता है। श्रेष्ठ रत्नादि धारण करने का विशेष शौक होता है। भूमि-सुख ऐसे व्यक्ति को अनायास ही प्राप्त होता है। यह व्यक्ति ब्याज लेने-देने का कार्य करता है। ऐसा जातक निर्मल बुद्धि का, चंचल, कन्या-सन्तति-प्रधान, सदाचारी, सद्गुणी एवं क्षमाशील होता है।

जिसके छठे स्थान में चन्द्रमा होता है, वह राजा का विरोध करता हुआ भी समाज में पूजनीय होता है। दुश्मन इससे थरति हैं, परन्तु ऐसा व्यक्ति मातृभक्त नहीं होता। ऐसा जातक अल्पायु, कफ-प्रकृति-प्रधान, खर्चीले स्वभाव वाला एवं नेत्र रोगी होता है।

सातवें स्थान का चन्द्रमा स्त्री का पूर्ण सुख देता है। उसे स्थानीय व्यापार से विशेष लाभ होता है। कृष्ण पक्ष में उसकी स्त्रियों पर आसक्ति बढ़ जाती है। मधुर भोजन का वह शौकीन होता है तथा उसकी प्रवृत्ति लोभमय होती है। शत्रुओं से वह सदैव पराजित होता है। ऐसा जातक सभ्य, नेता, विचारक, जलयात्रा करनेवाला, व्यापारी, वकील एवं स्फूर्तिवान होता है।

जिसकी कुण्डली में आठवें स्थान पर चन्द्रमा पड़ा हो, वह सर्वदा रोगी रहता है, भयंकर व्याधियाँ एवं शारीरिक कष्ट उसे घेरे ही रहते हैं। प्रमेह एवं कफ विकार उसे बहुत परेशान करते हैं। व्यापार से लाभ रहता है। ऐसा व्यक्ति वाचाल, स्वाभिमानी एवं ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है।

जिस जातक के नवें स्थान में चन्द्रमा हो, वह समाज में आदर का जीवन व्यतीत करता है। युवावस्था में उसका भाग्योदय होता है तथा शरीर से निरोग रहता है। ऐसा जातक सम्पत्ति-सुख एवं संतति-सुख दानी, धर्मात्मा, कार्यशील, न्यायी,चंचल, विद्वान, विद्या-व्यसनी, साहसी एवं अल्प भ्रातृवान होता है।

यदि चन्द्रमा लग्न से दसवें स्थान पर पड़ा हो, तो वह व्यक्ति धार्मिक स्वभाव का होता है। उसे अपने बन्धु-बान्धवों से सुख मिलता है तथा राज्य की ओर से उसे विशेष सम्मान प्राप्त होता है। पहली सन्तान से उसे विशेष सुख नहीं मिलता। ऐसा जातक कार्यनिपुण, दयालु, व्यापारी, यशस्वी, कुल-दीपक एवं लोक-हितैषी होता है।

ग्यारहवें स्थान का चन्द्रमा जातक को राजा की ओर से प्रतिष्ठा, अधिकार एवं सम्मान दिलाता है। उसके घर में लक्ष्मी का चिरवास रहता है। वह जो भी सोचता है, वह प्रायः पूर्ण नहीं होता। कन्या-सन्तति-प्रधान जातक गुणी, सुखी, लोकप्रिय, दीर्घायु, परदेशप्रिय एवं राज्य-कार्य में दक्ष होता है।

जिसके बारहवें स्थान में चन्द्रमा रहता है, उसे सदैव शत्रु का भय बना रहता है। नेत्रादि विकार इसे विशेष होते हैं। इसका धन सदैव मांगलिक कार्यों में व्यय होता है। माता के द्वारा इसे कष्ट मिलता है।

स्त्रियों से यह स्थायी मैत्री नहीं कर सकता तथा इसके मनोरथ भी सफल नहीं होते। ऐसा जातक चंचल, क्रोधी, मृदुभाषी और खर्चीले स्वभाव का होता है।

## मंगल

जिसके जन्म-लग्न में मंगल हो उसे लोहा तथा अग्नि से भय रहता है, उसका मन सदैव चिन्तित रहता है। स्त्री और पुत्रों द्वारा वह सदैव कष्ट पाता है, उसके कार्य कभी भी पूरे नहीं होते। ऐसा व्यक्ति क्रूर, साहसी, विचाररहित, गुप्त रोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

जिसके दूसरे स्थान पर मंगल पड़ा हो, वह धनहीन होता है, कुटुम्ब से क्लेश पाता रहता है एवं युद्ध, मुकदमे आदि में सदैव पराजित रहता है। ऐसा व्यक्ति कटुभाषी, निर्बुद्धि, पशुपालक एवं नेत्र-कर्ण रोगी होता है।

तीसरे स्थान का मंगल अनिष्टकारी होता है। जातक सदैव बीमार और चिड़चिड़ा-सा रहता है। धन के व्यय करने के सौ रास्ते होते हैं, पर आय सीमित ही रहती है। यह विपत्तियों पर विपत्तियों को सहन करता हुआ जीवन बिताता है। ऐसा जातक शूरवीर, साहसगुण-प्रधान, बन्धु-हीन, भ्रातृ-कष्टकारक एवं कटुभाषी होता है।

यदि चौथे स्थान में मंगल हो तो वाहन-सुख विशेष रहता है। माँ का सुख इसे अल्प अथवा नहीं के बराबर ही होता है। राज्य में यह विशेष तरक्की करता है, नौकरी ऐसे व्यक्ति के लिए लाभदायक होती है। ऐसा व्यक्ति प्रवासी, सन्ततिवान, अल्पमृत्यु अथवा मृत्यु को प्राप्त होने वाला, बन्धु-विरोधी और कृषि-कार्यों में निपुण होता है।

जिसके पाँचवें स्थान में मंगल पड़ा होता है, उसकी जठराग्नि बहुत तेज़ होती है। पाप-कार्य करने में भी ऐसा व्यक्ति निपुण होता है। क्रोध इसे बहुत आता है। और क्रोध में यह सब-कुछ कर डालने को उतारू हो जाता है। ऐसा मंगल इस व्यक्ति की दो या तीन संतानों को गर्भ में ही जला डालता है। ऐसा व्यक्ति कपटी, रोगी, कृश शरीर-प्रधान, चंचल एवं सन्तति-क्लेशयुक्त होता है।

जिसके छठे स्थान में मंगल हो, वह शत्रुओं को सदा नीचा दिखाता है। इसे मामा का सुख नहीं मिलता। ऐसे जातक को धन भी बहुत अधिक मिलता है, पर वह खर्च भी अनाप-शनाप करता है, जिससे उसे सदैव धन की कमी ही बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति प्रबल जठराग्नि

वाला, धैर्यवान, कुलवन्त, ऋषि, पुलिस-अफसर, दाद का रोगी, क्रोधी, रक्तविकारी एवं शत्रुहन्ता होता है।

सातवें स्थान का मंगल व्यक्ति को एक जगह टिकने नहीं देता। शत्रुओं से वह सदैव पीड़ित रहता है तथा उसकी जवानी में ही स्त्री की मृत्यु संभव हो सकती है। ऐसा व्यक्ति वातरोगी, राजभीरु, कटुभाषी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन एवं ईर्ष्यालु होता है।

जिसकी जन्मकुण्डली में आठवें स्थान पर मंगल पड़ा होता है, उसका शुभ ग्रह भी बुरे व्यवहार के कारण शत्रु बना लेता है। इसके प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएं उपस्थित होती ही रहती हैं। ऐसा व्यक्ति मद्यप, व्यसनी, कटु भाषी, नेत्र रोगी, संकोची एवं धन-चिन्तायुक्त होता है।

नवम स्थान पर मंगल मनुष्य को धनी और समाज में श्रेष्ठ होने का अवसर प्रदान करता है। उसकी बुद्धि तीक्षण तथा पाप-प्रधान होती है। वह जितना परिश्रम करता है, उतना फल उसे प्राप्त नहीं होता। ऐसा व्यक्ति व्यर्थ का द्वेष रखने वाला, अभिमानी, क्रोधी, अधिकारी, नेता, यशस्वी एवं भ्रातृ-विरोधी होता है।

दसवाँ मंगल जातक को समाज में श्रेष्ठ एवं कुल-दीपक बना देता है। लोग उसका आदर करते हैं, वह अपनी प्रतिभा से सबको चमत्कृत कर देता है। ऐसा व्यक्ति धनवान, गुणी, श्रेष्ठ, कवि, सुखी, यशस्वी, उत्तम वाहनादि से सुख भोगने वाला तथा सन्तति कष्ट वाला होता है।

जिसकी कुण्डली में लग्न से ग्यारहवें भाव में मंगल हो वह शत्रुओं का नाश करनेवाला होता है। वह अभागा होते हुए भी अपने आपको भाग्यवान समझता है। गाय, घोड़े, रथादि के व्यापार में इसे विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक न्यायप्रिय, साहसी, झगड़ालू, क्रोधी, दम्भी और धैर्यवान होता है।

जिस जातक के बारहवें स्थान में मंगल हो, उसका धर्म नष्ट हो जाता हैं। वह बुरा काम नहीं करने पर भी लाँछन पाता है तथा झूठे अपवाद से व्यथित रहता है। चोरों, ठगों तथा बेईमानी से यह छला जाता है। ऐसा व्यक्ति स्त्री-नाशक, नेत्र-रोगी, ऋषि, झगड़ालू, मूर्ख तथा नीच प्रकृति का साहसी होता है।

## बुध

जिस जातक के लग्न में बुध होता है वह अपने पूरे जीवन को व्यव-

स्थित करता हुआ उन्नति की ओर अग्रसर होता है, उसकी बुद्धि श्रेष्ठ होती है और धार्मिक कार्यों में उसकी रुचि होती है। उसका शरीर स्वर्ण के समान कांति वाला और वह प्रसन्नचित्त प्राणी होता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घायु, गणितज्ञ, विनोदी, उदार, सरल हृदय, विद्वान और मिष्ठभाषी होता है।

जिसकी कुण्डली में दूसरे स्थान पर बुध होता है, वह बुद्धिमान तथा परिश्रमी होता है। सभा आदि में भाषण द्वारा वह जनता को मन्त्रमुग्ध कर सकता है। ऐसा व्यक्ति दलाल, वकील अथवा नेता होता है एवं मितव्ययी, संग्रह करनेवाला, सत्कार्य में प्रवीण और साहसी होता है।

तीसरे स्थान में बुध रखने वाला व्यक्ति व्यापारी से मित्रता स्थापित करने वाला होता है। व्यापारादि कार्यों में उसकी बहुत रुचि होती है तथा स्वतंत्रचेता एवं निर्भीक पुरुष के साथ इसकी मित्रता स्थायी होती है। नम्र स्वभाव और उदार हृदय वाला यह पुरुष कार्यदक्ष तथा परिश्रमी होता है। ऐसा जातक सामुद्रिकशास्त्र में रुचि रखनेवाला, भीरु, लेखक, सम्पादक, कवि, विलासी, विषयानुरक्त, चंचल, यात्राशील, सद्गुणी एवं अल्प भ्रातृवान होता है।

चौथे स्थान में यदि बुध हो तो व्यक्ति बुद्धिमान होता है। राज्य में उसकी प्रतिष्ठा तथा मित्रों में सम्मान होता है। ऐसा व्यक्ति अपने पिता के धन से वंचित रहता है, पर वाहन-सुखी, भाग्यवान, दानी, स्थूलदेही, आलसी, लेखक, नीतिवान एवं बन्धु-बान्धव-प्रेमी होता है।

जिसके पाँचवें स्थान पर बुध होता है, उसे सन्तान-सुख का अभाव रहता है। यदि होता भी है तो वृद्धावस्था में पुत्र-लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति घोर स्वार्थी तथा छल-कपट से पूर्ण होता है, जो धीरे-धीरे स्थायी अर्थ-संचय कर लेता है।

यदि छठे स्थान में बुध हो तो उसका अन्य मनुष्यों के साथ विरोध रहता है। साधु-संतों से मारण-मोहन एवं वशीकरण विद्या सीखने में काफी धन व्यय कर डालता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों की बिना सहायता लिए अपने पुरुषार्थ से धन इकट्ठा करता है। यह जातक वादी, कलहप्रिय, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी एवं स्त्रियों को प्रिय लगनेवाला होता है।

यदि किसी कुण्डली में सातवें स्थान पर बुध पड़ा हो तो वह स्त्री के लिए सुखदायक होता है। उसका शरीर स्वर्ण-कान्तिवत् चमकता

रहता है। ऐसा जातक सुन्दर, कुलीन, व्यवसाय-कुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, धार्मिक, अल्पवीर्यवान और उदार होता है।

आठवें स्थान का बुध व्यक्ति को लम्बी उम्र देता है। यह देश तथा विदेश में भी ख्याति-लाभ करता है। व्यापार से यह लाभ कमाता है तथा एक साथ कई स्त्रियों से रमण करता है। ऐसा व्यक्ति अभिमानी, सुन्दर, कृषि-कार्यों में निपुण, कवि, न्यायाधीश, वक्ता, वकील एवं धर्मात्मा स्वभाव का होता है।

यदि नवें स्थान में बुध हो तो वह मनुष्य धार्मिक कार्यों में रुचि लेनेवाला, बुद्धिमान, तीर्थादि करनेवाला तथा कुल-दीपक होता है। रण में शत्रु इसके सामने टिक नहीं सकते तथा दुर्जनों का यह निर्ममता से विनाश करता है। ऐसा जातक कवि, गान विद्या में निपुण, सम्पादक, लेखक, ज्योतिषी, धर्म-भीरु एवं भाग्यवान होता है।

जिसके दसवें स्थान में बुध पड़ा हो, वह पिता द्वारा अर्जित धन प्राप्त करता है। नीति तथा दंड शास्त्र पर उसका असाधारण अधिकार रहता है। न्याय करने में निपुण होता है। ऐसा व्यक्ति अल्पभाषी, विद्वान, लोकमान्य, व्यवहारकुशल, कवि, लेखक, मातृ-पितृभक्त एवं जमींदार तुल्य होता है।

ग्यारहवें भाव में बुध पड़ा हो तो वह व्यक्ति को खूब सम्पत्ति देता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घायु, सदाचारी, धनवान, प्रसिद्ध, विद्वान, कवि, लेखक, सम्पादक, न्यायी, गायन-प्रिय, कुल-नायक, पुत्रवान, विचारवान एवं शत्रुनाशक होता है।

जिसके बारहवें स्थान में बुध हो तो वह विद्वान होते हुए भी आलसी होता है। वकील, धर्मात्मा, कुलीन, गुणी और शास्त्रों का जानकार ऐसा व्यक्ति सभी बन्धुओं को सन्तुष्ट रखता है।

## गुरु

जिसके जन्म-लग्न में बृहस्पति होता है, वह अपने गुणों से सब जगह आदर की दृष्टि से देखा जाता है। उसका अधिकांश धन पर्यटन में व्यय होता है। ऐसा व्यक्ति ज्योतिष कार्य में रुचि रखनेवाला, दीर्घ आयु भोगनेवाला, कार्यकुशल, तत्पर, स्पष्टवक्ता, सुन्दर, सुखी, विनीत, धनी, मृदुभाषी, पुत्रवान एवं धर्मात्मा होता है।

जिसके दूसरे स्थान पर गुरु होता है, वह कवि-हृदय होता है, उसमें राज्य-संचालन करने की शक्ति होती है तथा बकवादी स्वभाव से कई

बार हताश, निराश और पराजित भी होता है। ऐसे व्यक्ति को कठिनता से द्रव्य-प्राप्ति होती है तथा प्रयत्न करने पर भी उसके पास धन नहीं टिकता। यह जातक सुन्दर, राज्यमान्य, सुकार्यरत, पुण्यात्मा, भाग्यवान, दीर्घायु, पर-द्रव्य पीड़ित होता है।

यदि तीसरे स्थान पर गुरु हो तो वह जातक को नीच स्वभाव का बना देता है। उसे सहोदर भ्राताओं का सुख तो मिलता है तथा मित्रता स्थापित करता हुआ भी कृतघ्न स्वभाव का होता है। भाग्यवान होते हुए ऐसे व्यक्ति को कठिनता से द्रव्य की प्राप्ति होती है। यह पुरुष मंदाग्नि-पीड़ित, लेखक, प्रवासी, योगी, आस्तिक, कामी, स्त्रियों के पीछे घूमनेवाला, विदेशप्रिय और पर्यटनशील होता है।

यदि गुरु चौथे स्थान पर हो तो उसे वाहनादि का पूर्ण सुख मिलता है। शत्रु भी उसकी प्रशंसा करते हैं, पर इसका हृदय सदैव असंतुष्ट रहता है। ऐसा जातक भोगी, सुन्दरदेही, उद्योगी, संतान-रोधक, लोकमान्य, मातृ-पितृ-भक्त, यशस्वी और व्यवहारकुशल होता है।

जिसके पांचवें स्थान में गुरु पड़ा हो, उसका स्वभाव विलासी एवं आरामप्रिय होता है। वह श्रेष्ठ वक्ता, कल्पनाप्रिय कवि एवं लेखक होता है। पुत्र के कारण इसे धन-प्राप्ति होती है, परन्तु जीवन में इसे कठोर संघर्षों के बीच में से गुजरना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति आस्तिक, ज्योतिषी, लोकप्रिय, सट्टे से धन प्राप्त करनेवाला, सन्ततिवान एवं नीति-विशारद होता है।

छठे स्थान में गुरु रखनेवाला जातक सदा रोगी ही रहता है। शत्रुओं का विनाश करता हुआ मुकदमे आदि में जीतता रहता है। भार्या का उसे पूर्ण सुख प्राप्त होता है किन्तु मामा का सुख उसे नहीं मिलता। उसकी माता भी सदैव रोगिणी रहती है। ऐसा जातक विवेकी, प्रसिद्ध विद्वान, सुकर्मरत, उदार और प्रतापी होता है।

जिसके सातवें स्थान में गुरु हो उसकी बुद्धि और विभूति श्रेष्ठ होती है। वह स्त्रियों का अधिक प्रेमी नहीं होता यद्यपि वह स्वयं सुन्दर तथा बलवान होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान, प्रधान, वक्ता, गुणज्ञ, गुणीजनों का आदर करनेवाला, चित्रकार, नम्र, धैर्यवान, प्रवासी और निश्चय रूप से परस्त्रीगामी होता है।

आठवें स्थान में पड़ा हुआ गुरु दीर्घायु प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति अधिक समय तक पिता के घर में नहीं रहता। यदा-कदा उसका शरीर रोगों से भी जूझता रहता है, फिर भी वह शीलसम्पन्न, सुखी,

शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, लोभी, गुप्तरोगी एवं मित्रों का धन खर्च करनेवाला होता है।

जिसके नवें स्थान में बृहस्पति होता है, वह सुन्दर गृह का निर्माण करता है। ऐसा व्यक्ति राज का प्रिय एवं बन्धु-बान्धवों पर स्नेह रखनेवाला होता है। आलसी होने के कारण इसके कई कार्य शुरू किये जाने पर भी अधूरे रहते हैं। ऐसा व्यक्ति यशस्वी, भक्त, वेदान्ती, भाग्यवान, विद्वान, पुत्रवान एवं कई विषयों का थोड़ा-बहुत जानकार होता है।

दसवें स्थान का बृहस्पति जातक को भवन-प्रेमी एवं भूमिपति बना देता है। वह चित्रकला में निपुण होता है, तथा उसकी कीर्ति पूर्वजों से भी बढ़कर होती है। यह व्यक्ति अपने पुत्रों से सन्तुष्ट नहीं रहता। ऐसा जातक सत्कर्मी, सदाचारी, ऐश्वर्यवान, चतुर, न्यायी, ज्योतिष-कला-प्रवीण, स्वतन्त्र विचारक, धनी तथा माता-पिता का परम भक्त होता है।

जिसके ग्यारहवें स्थान में गुरु होता है, वह ऐश्वर्यवान, पिता का धन बढ़ानेवाला एवं दक्षता से व्यापार को बढ़ानेवाला होता है। उसके पाँच संतान पैदा होती हैं। परोपकार में वह सदैव प्रस्तुत रहता है तथा उसका धन सत्कर्मों में ही व्यय होता है। ऐसा व्यक्ति निरोगी, व्यवसायी, धनिक, विद्वान, बहु-स्त्रीयुक्त एवं पराक्रमी होता है।

जिस जातक के बारहवें स्थान में बृहस्पति होता है, आलसी, कम खर्च करनेवाला, दुष्ट स्वभाव का लोभी व्यक्ति होता है। ऐसा व्यक्ति शास्त्रों में रुचि रखनेवाला होते हुए भी उनकी निन्दा करता है। इसका धन उत्तम कार्यों में व्यय नहीं होता और न यह बुद्धि का ही उपयोग करता है। यह योगाभ्यासी, सम्पादक, सुखी और निश्चित स्वभाव का होता है।

## शुक्र

जिसके लग्न-स्थान में शुक्र पड़ा होता है, उसका अंग-प्रत्यंग सुन्दर होता है। श्रेष्ठ रमणियों के साथ विहार करने को वह लालायित रहता है तथा उच्च कर्मों को करता हुआ उत्तम सुखों का भोग करता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घ आयु वाला, स्वस्थ, सुखी, मृदु एवं मधुरभाषी, विद्वान, कामी तथा राज्य-कार्य में दक्ष होता है।

जिसके दूसरे स्थान में शुक्र हो, वह प्रियभाषी तथा बुद्धिमान होता है। स्त्री की कुण्डली हो तो वह सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी पद प्राप्त करने की

अधिकारिणी होती है। सुन्दर वस्त्रों का शौकीन ऐसा पुरुष बहु-रमणा प्रिय होता है। वह मिष्ठान्नभोजी, लोकप्रिय, हीरों-पन्नों की परख करनेवाला, कवि, दीर्घजीवी, साहसी एवं भाग्यवान होता है।

जिसकी कुण्डली में तीसरे स्थान पर शुक्र होता है, वह स्त्रियों का प्रेमी नहीं होता। पुत्र-लाभ होने पर भी सन्तुष्ट नहीं रहता। साहसी होते हुए भी काम करने पर घबरा जाता है। ऐसा व्यक्ति कृपण, आलसी, चित्रकार, भाग्यवान, विद्वान और यात्रा करने का शौकीन होता है।

जिसके चौथे स्थान में शुक्र हो, वह अपने साथियों से आगे बढ़ जाता है तथा उच्च पद प्राप्त करता है। इस व्यक्ति के अनेक मित्र होते हैं। घर सभी वस्तुओं से पूर्ण भरा रहता है। वह जन्म से ही अपनी माता का पालन-पोषण करता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घायु, परोपकारी, आस्तिक, व्यवहार-दक्ष और कुशल होता है।

पाँचवें स्थान पर पड़ा हुआ शुक्र शत्रुनाशक होता है। अल्प परिश्रम से ही इसके कार्य सम्पन्न होते हैं। ऐसा व्यक्ति कवि-हृदय, सुखी, भोगी, न्यायवान, आस्तिक, उदार और व्यवसायी होता है।

जिसके छठे स्थान में शुक्र होता है, उसके नित-नये शत्रु पैदा होते हैं। ठीक प्रकार से काम किये जाने पर भी वह सफल नहीं हो पाता। मित्रों द्वारा इसका आचरण नष्ट हो जाता है और गलत कार्यों में धन व्यय कर लेता है। ऐसा व्यक्ति पिता, गुरु आदि के सुख से भी वंचित रहता है। वह स्त्री-सुखहीन, दुराचारी, बहुमूत्र रोगी, दुःखी, गुप्तरोगी तथा मितव्ययी होता है।

जिसके सातवें स्थान में शुक्र होता है उसके कटि-भाग में सदैव पीड़ा रहती है। वह बड़ा विलासी, प्रवासी तथा अल्प उद्योगी होता है। ऐसा व्यक्ति उदार, लोकप्रिय, धनिक, व्यर्थ की चिन्ता करनेवाला, विवाह के बाद भाग्योदयी, व्यभिचारी. चंचल, विलासी एवं स्त्री से सुखी होता है।

आठवें स्थान में यदि शुक्र हो तो वह व्यक्ति वाहनादि का पूर्ण सुख प्राप्त करता है। वह दीर्घजीवी तथा कटुभाषी होता है। इसके कार्य बड़े कष्ट से सम्पन्न होते हैं। इसके ऊपर हर सम्भव कर्जा चढ़ा रहता है। ऐसा जातक रोगी, क्रोधी, चिड़चिड़ा, दुःखी, गुप्तरोगी, पर्यटन-शील और पराई स्त्रियों में धन व्यय करनेवाला होता है।

यदि लग्न-स्थान से नवें स्थान में शुक्र हो तो जातक अत्यन्त धन-

वान होता है। धर्मादिक कार्यों में इसकी रुचि बहुत बढ़ी हुई होती है। सगे भाइयों से इसे बहुत सुख मिलता है और अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करता है। ऐसा व्यक्ति आस्तिक, गुणी, प्रेमी, राजप्रेमी तथा मौजी स्वभाव का होता है।

जिसके दसवें स्थान में शुक्र होता है, वह व्यक्ति लोभी और कृपण स्वभाव का होता है, इसे सन्तान-सुख का अभाव-सा ही होता है। ऐसा व्यक्ति विलासी, धनवान, विजयी, हस्त-कार्यों में रुचि लेनेवाला एवं शक्की स्वभाव का होता है।

जिसके जन्म-लग्न से ग्यारहवें स्थान में शुक्र होता है, वह प्रत्येक कार्य में लाभ प्राप्त करता है। सुन्दर, सुशील, कीर्तिमान, सत्यप्रेमी, गुणवान, भाग्यवान,धनवान, वाहनसुखी, ऐश्वर्यशील, लोकप्रिय, जौहरी, कामी तथा पुत्र-सुख भोगता हुआ ऐसा व्यक्ति जीवन में कीर्तिमान स्थापित करता है।

यदि बारहवें स्थान में शुक्र हो तो उसके द्रव्य की कमी नहीं रहती। ऐसा व्यक्ति स्थूल, परस्त्रीरत, आलसी, गुण को पहचाननेवाला, विद्या-प्रेमी, मितव्ययी तथा शत्रुनाशक होता है।

## शनि

जिसके शनि जन्म-लग्न में होता है, वह सम्पत्तिशाली,काम-लोलुप, शोक करनेवाला तथा मन्द दृष्टि वाला होता है। यह स्वयं रुग्ण रहता हुआ भी शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। यदि तुला तथा मकर लग्न हो तो शनि अत्यन्त शुभ फल देता है, परन्तु इसके अतिरिक्त अन्य राशियों का लग्न हो तो शनि अपनी दशा में हीन फल ही देता है।

दूसरे भाव में शनि हो तो वह सोने का संग्रह करनेवाला होता है। सुख की खोज में वह इधर-उधर फिरता रहता है, पर उसके मन को शान्ति नहीं मिलती। ऐसा व्यक्ति मुख-रोगी, साधु-संन्यासियों को कटु वचन कहनेवाला तथा भ्रातृ-वियोगी होता है।

जिसके तीसरे स्थान में शनि होता है, वह सुन्दर, प्रभावोत्पादक भाषण करनेवाला पर उद्योगहीन होता है। इसका भाग्य विघ्नों से घिरा रहता है। ऐसा जातक निरोगी, विद्वान, मल्ल, कुश्ती लड़ने का शौकीन, विवेकी तथा शत्रुओं का नाश करनेवाला होता है।

जिसके चौथे स्थान पर शनि पड़ा हो, उस व्यक्ति को पिता का धन प्राप्त नहीं होता। बन्धु-बान्धवों की ओर से उसे कष्ट ही मिलता

है, कुल की हानि होती है तथा ऐसा व्यक्ति माता-पिता को दुःख देनेवाला, बलहीन, अपयशी, शीघ्र क्रोध करनेवाला, कपटी, धूर्त तथा उदासीन होता है।

पाँचवें स्थान पर पड़ा हुआ शनि जातक को सन्तान का अभाव देता हुआ बुद्धि कुण्ठित रखता है। उसकी सम्पत्ति चंचल रहती है। ऐसा व्यक्ति घोर नास्तिक, मित्रद्रोही, उदर-पीड़ा से ग्रस्त, भ्रमणशील, विद्वान, आलसी एव चंचल होता है।

यदि छठे स्थान में शनि पड़ा हो तो वह बलिष्ठ और शत्रुओं का दमन करनेवाला होता है। चौपाए रखने का उसे शौक होता है। ऐसा व्यक्ति भोगी, कंठ-रोगी, कवि, जाति-विरोधी, आचार-व्यवहार के नियमों से हीन, योगी और श्वास, दमा आदि बीमारियों से पीड़ित रहता है।

यदि सातवें स्थान में शनि पड़ा हो तो उसका धन स्थायी रहता है। स्त्री तथा पुत्र के रोगों से सदैव पीड़ित रहता है। किसी भी कार्य को आरम्भ करने के पश्चात् हिचकिचाता रहता है। उसकी प्रवृत्ति लोभी होती है। ऐसा जातक क्रोधी, नीच, भ्रमणप्रिय, आलसी और स्त्री का भक्त होता है।

आठवें स्थान का शनि व्यक्ति के हृदय को संकुचित और कलुषित बना देता है। अपने भाइयों तथा स्वजनों से अकारण ही वैर बनाये रखता है। ऐसा व्यक्ति स्थूलशरीरी, आलसी और धूर्त होता है। वाचालता, डरपोकपन, धूर्तता और उदारता उसके विशेष गुण होते हैं।

जिसके नवें स्थान में शनि हो, वह कठोर बुद्धि वाला होता है, परन्तु उसका स्वभाव मृदु होता है। योग-वैराग्य आदि शास्त्रों पर उसकी श्रद्धा होती है। रजोगुण-प्रधान ऐसा व्यक्ति क्षुद्र बुद्धि के कारण मित्रों तथा बन्धुओं के व्यंग-वाणों से दुःखी रहता है। ऐसा व्यक्ति या तो कठोर कर्म करता है अथवा शनि की दशा में संन्यासी हो जाता है। यह जातक रोग पालने वाला, भ्रमणशील, कृशदेही, भीरु, धर्मात्मा, मातृहीन तथा शत्रुओं का नाश करनेवाला होता है।

जिस जातक के दसवें स्थान में शनि होता है, उसके माता-पिता की मृत्यु बाल्यकाल में ही हो जाती है। अधिकार के घमण्ड से नीच कार्य में प्रवृत्त हो जाता है। जीवन में उसका सुख धीरे-धीरे बढ़ता है। जीविका अल्प और युद्ध में विजयश्री मिलती है। ऐसा व्यक्ति नेता, न्यायी, राजयोगी, अधिकारी, चतुर, महत्त्वाकांक्षी, परिश्रमी तथा

उदर-विकार से पीड़ित रहता है।

जिसके ग्यारहवें स्थान में शनि हो, उसके माता-पिता की मृत्यु उसके वचपन में ही हो जाने की सम्भावना रहती है। पिता द्वारा अर्जित धन नष्ट हो जाता है तथा वह अप्रत्याशित आपत्ति से सदैव दुःखी रहता है, परन्तु अर्जित धन को वह सुरक्षित रख पाता है। ऐसा जातक प्रपञ्ची, उत्कृष्ट, वीर, दीर्घायु, क्रोधी, शिल्पी, व्यवसायी, विद्वान, गुणीजनों का आदर करनेवाला, रोगहीन तथा संतान की ओर से दुःखी होनेवाला होता है।

यदि किसी कुण्डली के वारहवें स्थान में शनि पड़ा हो तो वह व्यक्ति निर्लज्ज तथा छोटी-छोटी आँखों वाला होता है। विदेश यात्रा करने में विशेष रुचि लेता हुआ भी वह व्यक्ति उन्माद का रोगी, अपव्ययी, कटुभाषी, दुष्ट स्वभाव, अविश्वासी तथा मामादि पारिवारिक जनों को कष्ट देने वाला होता है।

## राहु

जिसके जन्म-लग्न में राहु होता है वह शत्रुओं का नाश करनेवाला तथा स्वार्थी स्वभाव का होता है। ऐसा व्यक्ति किसी के संरक्षण में स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने में असमर्थ होता है। ऐसा व्यक्ति अल्पसंतान वाला, मस्तिष्क-रोगी, नीच कर्म में तत्पर, दुर्बल तथा संसार से विरक्ति रखनेवाला होता है।

दूसरे स्थान पर यदि राहु हो तो वह कुटुम्ब का नाश करनेवाला होता है। झूठ बोलनेवाला, कटुभाषी तथा निर्भय स्वभाव का ऐसा व्यक्ति धन की वृद्धि और रक्षा करनेवाला होता है। इसकी मृत्यु शस्त्रादि से हो सकती है। यह जातक अल्प सम्पत्ति वाला, परदेशगमन-प्रिय, संग्रहशील तथा शत्रुओं का विनाश करनेवाला होता है।

जिसके तीसरे स्थान में राहु हो वह व्यक्ति अत्यन्त बलिष्ठ होता है। ऐसा व्यक्ति दृढ़, विवेकयुक्त, प्रवासी, दुःखों का विनाश करनेवाला, विद्वान एवं व्यवसायी होता है।

चौथे स्थान में पड़ा हुआ राहु माता को हानि पहुँचाता है, पर यदि चतुर्थ भाव मेष, कर्क, कन्या और मिथुन राशि का हो और उसमें राहु पड़ा हो तो श्रेष्ठ फल देता है। ऐसा व्यक्ति क्रूर स्वभाव वाला, उदर-रोगी, अल्पभाषी तथा असन्तोषी होता है।

जिसके पांचवें स्थान में राहु होता है, उसे पुत्र-प्राप्ति होती रहती

है। इसकी स्त्री हमेशा बीमार रहती है, अतः उस ओर से यह चिन्तित ही रहता है। ऐसा व्यक्ति मतिमन्द, कुल-धन-नाशक, भाग्यवान, कार्य-कर्ता तथा शास्त्रप्रिय होता है।

छठे स्थान का राहु विधर्मियों द्वारा लाभ उठाता है। बलवान, धैर्यवान तथा वीर्यवान होता हुआ भी ऐसा व्यक्ति कमर-दर्द से पीड़ित रहता है। यह जातक बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, अरिष्ट-नाशक, परा-क्रमी एवं शत्रुओं का विनाश करनेवाला होता है।

जिसके सातवें स्थान में राहु हो वह एक से अधिक विवाह करता है। उसका अन्तःकरण अग्नि के समान सदा प्रज्वलित रहता है। लोग उसकी निन्दा करते नहीं थकते, चाहे वह कितना ही अच्छा काम क्यों न करे। इसे व्यापार से हानि पहुँचती है। यह भ्रमणशील, वात-रोगी, दुष्कर्म करनेवाला, चतुर, लोभी एवं बुरे आचार वाला होता है।

आठवें स्थान में राहु रखनेवाला कठोर परिश्रमी होता है। उदर में वायुगोला तथा रक्तगुल्म आदि की बीमारियाँ उसे सदैव रहती हैं। इसे पिता की सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती तथा कुटुम्बियों से एकान्तवास करता है। विद्वानों तथा बुद्धिमानों में इसकी प्रशंसा होती है। ऐसा नर पुष्टदेही, गुप्तरोगी, बकवाद करनेवाला, कामी स्वभाव का होता है।

जिसके नवें भाव में राहु होता है, वह अपने सद्गुणों से सबको प्रसन्न रखता है। तीर्थों आदि का प्रेमी तथा दयालु स्वभाव का यह जातक अपने कुटुम्ब का कुशलता से पालन-पोषण करता है। ऐसा व्यक्ति वात-रोगी, प्रवासी, परिश्रमी, दुष्ट बुद्धि तथा भाग्योदय से रहित होता है।

दसवें स्थान में राहु पड़ा हुआ मनुष्य को नीच कर्मरत बना देता है। वह व्यसनों का शौकीन तथा क्रूर कार्य करने में तत्पर रहता है। बुरे व्यक्तियों की मित्रता करने से जाति तथा समाज में इसको आदर नहीं मिलता। ऐसा व्यक्ति सुन्दर स्त्रियों का भोग करनेवाला, वाचाल, अनियमित कार्यकर्त्ता, सन्तति-क्लेशी तथा मितव्ययी होता है, परन्तु यदि इस भाव में राहु चन्द्रमा के साथ पड़ा हो तो राजयोग बनता है।

यदि राहु ग्यारहवें स्थान पर हो, तो उस पुरुष को सदैव नीच कार्य वाले लोगों से द्रव्य-प्राप्ति होती है। नौकरों के साथ भ्रमण करने वाला यह व्यक्ति परिजनों का साथ छोड़कर धूर्तों से मित्रता रखता है। पुत्रों का सुख इसे प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति मन्दमति, लाभहीन, परिश्रम करनेवाला, अरिष्टनाशक तथा अपने कार्य में चौकन्ना रहने-

वाला होता है।

बारहवें स्थान में यदि राहु हो तो वह व्यक्ति पसलियों के दर्द से पीड़ित रहता है। उद्योग करने पर भी ऐसे व्यक्ति के कार्य सिद्ध नहीं होते। सज्जनों से विरोध रखता हुआ यह व्यक्ति दुष्टों से मित्रता रखता है। ऐसा जातक विवेकहीन, मतिमन्द, परिश्रमी, फिजूल खर्च करनेवाला, चिन्ताशील एवं कामी होता है।

## केतु

जिसके जन्म-लग्न में केतु हो, उससे बन्धु-बान्धव परेशान रहते है। इसका मन सदैव अशान्त रहता है तथा दुर्जनों से भयभीत रहता है। इसके शरीर में वायु-सम्बन्धी अनेक व्याधियाँ होती हैं। ऐसा व्यक्ति भीरु, चंचल स्वभाव का तथा मूर्ख होता है, परन्तु यदि वृश्चिक लग्न हो और उसमें केतु पड़ा हो तो जातक धनी, परिश्रमी तथा सुख उठानेवाला होता है।

यदि दूसरे स्थान में केतु हो, तो मुख रोग होता है। इसे पिता का धन कठिनता से प्राप्त होता है, उसका आदर अल्प होता है। परन्तु यदि यह भाव मेष, मिथुन या कन्या राशि पर हो तो वह व्यक्ति अत्यन्त सुखी होता है।

तीसरे स्थान में केतु हो तो वह शत्रुओं का नाश करनेवाला, धन-भोग एवं ऐश्वर्य का भोग करनेवाला होता है। इसके दिल में चिन्ता अकारण ही बनी रहती है और उससे पीड़ित रहता है। भूतों और प्रेतों का भक्त यह जातक बकवासी और चंचल स्वभाव का होता है।

यदि चौथे स्थान पर केतु हो तो वह व्यक्ति माता और मित्र के सुख से वंचित रहता है। उसकी पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो जाती है तथा अपने घर में ही वह अधिक दिनों तक नहीं टिक पाता। यदि केतु उच्च हो तो यह बान्धवों को सहायता पहुँचानेवाला होता है। ऐसा व्यक्ति निरुत्साही तथा निरुद्यमी होता है।

पंचम स्थान में केतु हो तो उसके सगे भाई ही उसे पीड़ा पहुँचाते हैं। वायु रोग से वह व्यथित रहता है तथा उल्टे-सीधे कार्य करने पर उससे होनेवाली हानि से पीड़ा उठाता है। कम सन्तान वाला यह जातक पराक्रमी होने पर भी दूसरों का दास बना रहता है।

जिसके छठे स्थान में केतु होता है, उसकी मामा द्वारा मानहानि होती है। चौपायों आदि के पालन में इसे सुख मिलता है। यह मन का

संकीर्ण होता है। ऐसा जातक झगड़ालू, भूत-प्रेत-जनित रोगों से रोगी, सुखी, निरोगी एवं मितव्ययी होता है।

सातवें स्थान में केतु रहे तो उसे व्यर्थ की चिन्ता बहुत करनी पड़ती है। अल्प समय में ही उसका धन नष्ट हो जाता है। जल आदि से उसे घात रहती है। स्त्री-पुत्रादि इससे पीड़ित रहते हैं तथा मन सदैव अशान्त बना रहता है। सातवाँ स्थान वृश्चिक राशि का हो तो केतु बहुत लाभदायक होता है।

जिसके आठवें स्थान में केतु हो, वह व्यक्ति बवासीर आदि रोगों से पीड़ित रहता है। वाहनादि से गिरकर मृत्यु हो जाने का भय रहता है। धन की कमी रहती है। ऐसा नर दुष्टबुद्धि, तेजहीन, स्त्रीद्वेषी एव चालाक होता है, किन्तु यदि आठवें स्थान का केतु वृश्चिक, कन्या और मेष राशि पर हो, तो उस जातक की सम्पत्ति बढ़ती है।

नवें स्थान में केतु होने से भाग्य बढ़ाने वाला होता है। उसका दुःख दूर हो जाता है, नीच कर्मरत पुरुषों से उसका धन बढ़ता है। उसे अपने भाइयों से सदैव भय बना रहता है। वह परोपकार अथवा दान भी करता है तो भी लोग उसकी हँसी उड़ाते हैं।

दसवें स्थान में केतु हो तो वह भाग्यवान तथा कष्टमय जीवन व्यतीत करनेवाला होता है। उसे पिता का सुख नहीं के बराबर मिलता है। यदि नवें स्थान पर कन्या या वृश्चिक राशि हो तो केतु शत्रुओं का नाश करनेवाला होता है।

ग्यारहवें स्थान में केतु होने से वह जातक को सभी प्रकार का लाभ देता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान, विद्वान, उत्तम गुणों से भूषित तथा तेजस्वी होता है। उसकी सन्तान अभागी होती है तथा वह उदर रोग से पीड़ित रहता है।

जिसके बारहवें स्थान में केतु हो, वह पुरुष उच्च पद प्राप्त करनेवाला तेजस्वी व्यक्ति होता है। श्रेष्ठ कर्मों में उसका धन व्यय होता है। मुकदमे आदि में शत्रुओं के विरुद्ध उसकी जीत होती है। वह व्यक्ति गुप्तेन्द्रिय तथा नेत्रों की पीड़ा से व्यथित रहता है। ऐसा जातक चंचल, बुद्धिमान, ठग, धोखा देनेवाला तथा सभी लोगों पर सन्देह करनेवाला होता है।

## विशेष विचार

१. कुण्डली देखते समय चाहिए कि किसी एक ही ग्रह को देख-

भौम की, चौथी राहु की, पाँचवीं गुरु की, छठी शनि की, सातवीं बु की, आठवीं केतु की और नवीं शुक्र की होती है। इसी प्रकार अन्य ग्र में भी समझना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जिस ग्रह की महादशा उसी ग्रह की अन्तर्दशा से प्रारम्भ होकर ९ ग्रहों की अन्तर्दशा होती

अन्तर्दशा निकालने का सरल नियम यह है कि दशा-दशा को प स्पर गुणा कर १० से भाग देने से लब्ध मास और शेष को ३ से गुण करने पर दिन होते हैं।

## सूर्यान्तर्दशा चक्र

| सू. | च. | भौ. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | वर्ष |
| ३ | ६ | ४ | १० | ९ | ११ | १० | ४ | ० | मास |
| १८ | ० | ६ | २४ | १८ | १२ | ६ | ६ | ० | दिन |

## चन्द्रान्तर्दशा चक्र

| च. | भौ. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० | वर्ष |
| १० | ७ | ६ | ४ | ७ | ५ | ७ | ८ | ६ | मास |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | दिन |

## भौमान्तर्दशा चक्र

| भौ. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | च. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | १ | ० | ० | १ | ० | ० | वर्ष |
| ४ | ० | ११ | १ | ११ | ४ | २ | ४ | ७ | मास |
| २७ | १८ | ६ | ९ | २७ | २७ | ० | ६ | ० | दिन |

## राहच्न्तर्दशा चक्र

| रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | च. | म. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ८ | १ | १ | वर्ष |
| ८ | ४ | १० | ६ | ० | ० | १० | ६ | ० | मास |
| १२ | २४ | ६ | १८ | १८ | ० | २४ | ० | १८ | दिन |

## गुरुवान्तर्दशा चक्र

| बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | च. | म. | रा. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ | वर्ष |
| १ | ६ | ३ | ११ | ८ | ९ | ४ | ११ | ४ | मास |
| १८ | १२ | ६ | ६ | ० | १८ | ० | ६ | २४ | दिन |

## शन्यन्तर्दशा चक्र

| श. | बु. | के. | शु. | सू. | च. | रा. | बृ. | मं. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | २ | १ | ३ | ० | १ | १ | २ | २ | वर्ष |
| ० | ८ | १ | २ | ११ | ७ | १ | १० | ९ | मास |
| ३ | ९ | ९ | ० | १२ | ० | ९ | ९ | [illegible] | दिन |

## बुधान्तर्दशा चक्र

| बु. | के. | शु. | सू. | च. | म. | रा | बृ. | श. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ | २ | २ | वर्ष |
| ४ | ११ | १० | १० | ५ | ११ | ६ | ३ | ८ | मास |
| २७ | २७ | ० | ६ | ० | २७ | १८ | ६ | ९ | दिन |

## केत्वन्तर्दशा चक्र

| के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | ० | ० | १ | ० | १ | ० | वर्ष |
| ४ | २ |  | ७ | ४ |  | ११ | १ | ११ | मास |
| २७ | ० | ६ | ० | २७ | १८ | ६ | ९ | २७ | दिन |

## शुक्रांतर्दशा चक्र

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | १ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ | वर्ष |
| ४ | ० | ८ | २ | ० | ८ | २ | १० | २ | मास |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | दिन |

उदाहरणार्थ—सूर्य की महादशा में अन्तर्दशा निकालनी है।

६ × ६ = ३६ ÷ १० = ३, शेष ६

६ × ३ = १८ दिन

अर्थात् सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा ३ मास, १८ दिन की होती है।

सुविधा के लिए पृष्ठ ९७-९८ पर प्रत्येक ग्रह के अन्तर्दशा-चक्र दिए गए हैं, जिनके द्वारा बिना गणित के अन्तर्दशा का ज्ञान किया जा सकता है।

## प्रत्यन्तर्दशा विचार

जिस प्रकार प्रत्येक ग्रह की महादशा में नौ ग्रहों की अन्तर्दशा होती है, ठीक उसी प्रकार एक अन्तर्दशा में नौ ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा चलती है। जैसे सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा ३ मास, १८ दिन है। इस ३ मास, १८ दिन में उसी क्रम और परिणामानुसार प्रत्यन्तर भी होता है।

प्रत्यन्तर्दशा निकालने का नियम यह है कि महादशा के वर्षों को अन्तर और प्रत्यन्तर्दशा के वर्षों से गुणा कर ४० का भाग देने पर जो अनादि आते हैं, वे ही प्रत्यन्तर्दशा के दिन होंगे।

उदाहरणार्थ—सूर्य की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा निकालनी है।

सूर्य की महादशा ६ वर्ष × चन्द्रमा की महादशा १० वर्ष

६ × १० = ६०

= ६० × १० (चन्द्रमा का प्रत्यन्तर मास) = ६००

६०० ÷ ४० = १५ दिन

इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ कि सूर्य की महादशा में चन्द्रमा के अन्तर में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर १५ दिन का होता है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के प्रत्यन्तर दिन भी निकाल लेने चाहिएँ। विस्तार-भय से प्रत्यन्तर्दशा के चक्र नहीं दिए जा रहे हैं।

## अष्टोत्तरी दशा विचार

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, अष्टोत्तरी दशा का विशेष प्रचार दक्षिण भारत में है, परन्तु कुशल ज्योतिषी विंशोत्तरी तथा अष्टोत्तरी दशा—दोनों का अध्ययन कर फलाफल निर्देश करता है।

अष्टोत्तरी दशा में मानव की पूर्ण आयु १०८ वर्ष मानकर उसका

विभाजन किया है. इसके अनुसार सूर्य की दशा ६वर्ष, चन्द्र दशा १५ वर्ष, भौम दशा ८ वर्ष, बुध दशा १७ वर्ष, शनि दशा १० वर्ष, गुरु दशा १९ वर्ष, राहु दशा १२ वर्ष और शुक्र दशा २१ वर्ष की होती है।

विंशोत्तरी दशा की तरह ही जन्म-नक्षत्र से ही अष्टोत्तरी दशा का ज्ञान किया जाता है। नीचे दिए अष्टोत्तरी दशा ज्ञात करने के चक्र से यह स्पष्ट हो जायेगा।

**अष्टोत्तरी भुक्त भोग्य**—जन्म से पूर्व बालक कितनी दशा भोग चुका है इसके लिए भयात के पलों की दशा के वर्षों से गुणा कर भभोग के पलों का भाग देने से भुक्त वर्षादि आ जाते हैं। सम्पूर्ण ग्रह दशा में भुक्त वर्षादि निकाल देने से भोग्य वर्षादि आ जाता है।

**अष्टोत्तरी अन्तर्दशा साधन**—दशा-दशा का परस्पर गुणा कर १०८ का भाग देने से लब्ध वर्ष और शेष को पुनः १२ से गुणा कर १०८ का भाग देने से लब्ध मास, शेष को पुनः ३० से गुणा कर १०८ का भाग देनें से दिन आते हैं।

**उदाहरणार्थ**—सूर्य में चन्द्र का अन्तर निकालना है।

६×१५=९०÷१०८—० (लब्धि) वर्ष

## जन्म-नक्षत्र से अष्टोत्तरी दशा ज्ञात करने का चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | श. | बृ. | रा. | शु. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | १५ | ८ | १७ | १० | १९ | १२ | २१ | वर्ष |
| | म. | ह. | अनु. | पू. भा. | घ. | उ. भा. | कृति | नक्षत्र |
| आर्द्रा | पू. फा. | चि. | | उ. षा. | श. | रे. | रो. | " |
| पुन. | उ. फा. | स्व. | ज्ये. | अभि. | पू. भा. | अ. | मृग. | " |
| पुष्य | | वि. | मू. | श्र. | | भ. | | |
| आश्ले. | | | | | | | | |

## सूर्यान्तर्दशा चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | श. | गु. | रा. | शु. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | १ | ० | १ | वर्ष |
| ४ | १० | ५ | ११ | ६ | ० | ८ | २ | मास |
| ० | ० | १० | १० | २० | २० | ० | ० | दिन |

## चन्द्रान्तर्दशा चक्र

| चं. | मं. | बु. | श. | गु. | रा. | शु. | सू. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | १ | २ | १ | २ | १ | २ | ० | वर्ष |
| १ | १ | ४ | ४ | ७ | ८ | ११ | १० | मास |
| ० | १० | १० | २० | २० | ० | ० | ० | दिन |

## भौमान्तर्दशा चक्र

| भौ. | बु. | श. | गु. | रा. | शु. | सू. | च. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | १ | ० | १ | ० | १ | वर्ष |
| ७ | ३ | ८ | ४ | १० | ६ | ५ | १ | मास |
| ३ | ३ | २६ | २६ | २० | २० | १० | १० | दिन |
| २० | ३० | ४० | ४० | ० | ० | ० | ० | घटी |

## बुधान्तर्दशा चक्र

| बु. | श. | गु. | रा. | शु. | सू. | च. | म. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | १ | २ | १ | ३ | ० | २ | १ | वर्ष |
| ८ | ६ | ११ | १० | २ | ११ | ४ | ३ | मास |
| ३ | २६ | २६ | २० | २० | १० | १० | ३ | दिन |
| २० | ४० | ४० | ० | ० | ० | ० | २० | घटी |

## शन्यन्तर्दशा चक्र

| श. | गु. | रा. | शु. | सू. | चं. | भौ. | बु. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | १ | १ | ० | १ | ० | १ | वर्ष |
| ११ | ८ | १ | ११ | ६ | ४ | ८ | ६ | मास |
| ३ | ३ | १ | १० | २० | २० | २६ | २६ | दिन |
| २० | २० | ० | ० | ० | ० | ४० | ४० | घटी |

## गुरुवन्तर्दशा चक्र

| गु. | रा. | शु. | सू. | चं. | म. | बु. | श. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | २ | ३ | १ | २ | १ | २ | १ | वर्ष |
| ४ | १ | ८ | ० | ७ | ४ | ११ | ६ | मास |
| ३ | १० | १० | २० | २० | २६ | २६ | ३ | दिन |
| २० | ० | ० | ० | ० | ४० | ४० | २० | घटी |

## राह्वन्तर्दशा चक्र

| रा. | शु. | सू. | चं. | भौ. | बु. | श. | गु. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ० | १ | १ | ० | १ | २ | वर्ष |
| ४ | ४ | ८ | ८ | १० | १० | १ | १ | मास |
| ० | ० | ० | ० | २० | २० | १० | १० | दिन |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | घटी |

## शुक्रान्तर्दशा चक्र

| शु. | सू. | चं. | भौ. | बु. | श. | गु. | रा. | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | १ | २ | १ | ३ | १ | ३ | २ | वर्ष |
| १ | २ | ११ | ६ | ३ | ११ | ८ | ४ | मास |
| ० | ० | ० | २० | २० | १० | १० | ० | दिन |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | घटी |

९० × १२ = १०८० ÷ १०० = १० मास

इस प्रकार सूर्य में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर १० मास सिद्ध हुआ।

सुविधा के लिए पृष्ठ १०१-१०२ पर प्रत्येक ग्रह के दशा अन्तर स्पष्ट किए गये हैं।

### योगिनी दशा

योगिनी दशा ३६ वर्ष की मानी गई है। ३६ वर्ष के बाद पुनः इसकी पुनरावृत्ति होती है। योगिनी दशा का अध्ययन भी पूर्ण फलादेश के लिए परमावश्यक है।

विंशोत्तरी अष्टोत्तरी दशा को तरह योगिनी दशा भी जन्म नक्षत्र

## जन्म नक्षत्र से योगिनी दशाबोधक चक्र

| मंगला | पिंगला | धान्या | भ्रामरी | भद्रा | उल्का | सिद्धा | संकटा | योगिनी नाम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं. | सू. | गु. | मं. | बु. | श. | शु. | रा. | के. स्वामी ग्रहा |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | दशा वर्ष |
| आर्द्रा | पुन. | पू. | आश्ले. | म. | पू. फा. | उ. फा. | ह. | जन्म नक्षत्र |
| चि. | स्वा. | वि. | अनु. | ज्ये. | मू. | पू. शा. | उ. | षा. ,, |
| श्र. | ध | श | पू भा | उ भा | रे | रो | मू | ,, |
| | | | अश्वि | भ | कृ | | | |

योगिनी दशा को भी भुक्त-योग विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी दशा की तरह ही जाना जाता है।

## अन्तर्दशा साधन

दशा-दशा की वर्ष-संख्या को परस्पर गुणा कर ३६ से भाग देने पर अन्तर्दशा वर्षादि आते हैं। पाठकों की सुविधार्थ नीचे योगिनी अन्तर्दशा चक्र दिए जा रहे हैं—

### मंगला में अन्तर्दशा चक्र

| मं. | पिं. | धा. | भ्रा. | भ. | उ. | सि. | सं. | यो. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | १ | १ | १ | ० | ० | वर्ष |
| ० | ० | १ | १ | १ | २ | २ | २ | मास |
| १० | २० | ० | १० | २० | ० | १० | २० | दिन |

### पिंगला में अन्तर्दशा चक्र

| पि. | धा. | भ्रा. | भ. | उ. | सि. | सं. | मं. | यो. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | वर्ष |
| १ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ५ | ० | मास |
| १० | ० | २० | १० | ० | २० | १० | २० | दिन |

### धान्या में अन्तर्दशा चक्र

| धा. | भ्रा. | भ. | उ. | सि. | सं. | मं. | पिं. | यो. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | वर्ष |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | १ | २ | मास |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | दिन |

### भ्रामरी में अन्तर्दशा चक्र

| भ्रा. | भ. | उ. | सि. | सं. | मं. | पिं. | धा. | यो. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | वर्ष |
| ५ | ६ | ८ | ९ | १० | १ | २ | ४ | मास |
| १० | २० | ० | १० | २० | १० | २० | ० | दिन |

## भद्रिका में अन्तर्दशा चक्र

| भ. | उ. | सि. | सं. | मं. | पिं. | धा. | भ्रा. | यो. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | १ | ० | ० | ० | ० | वर्ष |
| ८ | १० | ११ | १ | १ | ३ | ५ | ६ | मास |
| १० | ० | २० | १० | २० | १० | २ | २० | दिन |

## उल्का में अन्तर्दशा चक्र

| उ. | सि. | सं. | मं. | पिं. | धा. | भ्रा. | भ. | यो. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | ० | ० | ० | ० | ० | वर्ष |
| ० | २ | ४ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | मास |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | दिन |

## सिद्धा में अन्तर्दशा चक्र

| सि. | सं. | मं. | पिं. | धा. | भ्रा. | भ. | उ. | यो. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ० | ० | ० | ० | ० | १ | वर्ष |
| ४ | ६ | २ | ४ | ७ | ९ | ११ | २ | मास |
| १० | २० | १० | २० | ० | १० | २० | ० | दिन |

## संकटा में अन्तर्दशा चक्र

| सं. | मं. | पिं. | धा. | भ्रा. | भ. | उ. | सि. | यो. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | वर्ष |
| ९ | २ | ५ | ८ | १० | १ | ४ | ६ | मास |
| १० | २० | १० | ० | २० | १० | ० | २० | दिन |

से ही निकाली जाती है। ऊपर योगिनी नाम, उनके स्वामी ग्रह, दशा, वर्ष और सम्बन्धित नक्षत्र दिए गये हैं, जिससे पाठकों को समझने में सुविधा रहे।

**दशाफल**

विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी और योगिनी दशा में शुभ ग्रहों की दशा में शुभ फल और पाप ग्रहों की दशा में अशुभ फल होता है। दशा का विशेष विस्तृत फल अन्यत्र दिया जा चुका है।

# ६ : दशा

प्रत्येक जन्मपत्रिका में दशा तथा उसका समय स्पष्ट रूप से अंकित होता है। दक्षिण भारत में सर्वत्र अष्टोत्तरी दशा तथा उत्तर भारत में विंशोत्तरी दशा का अध्ययन किया जाता है।

सभी ग्रह अपनी उच्च राशि, मित्र राशि या स्वराशिस्थ होते हैं तो अपनी दशा में अच्छा फल देते हैं, परन्तु यदि नीच राशि तथा शत्रु राशि में स्थित ग्रह हों तो उनकी दशा में जातक धन-हानि, दुखी और पीड़ित होता है।

## सूर्य

सूर्य की महादशा में जातक की पदवृद्धि होती है, उसके विदेश जाने के योग भी बनते हैं। व्यापारादि कार्यों में सफेद वस्तु के व्यापार से अच्छा लाभ होता है। इस दशा में जातक धर्मादि कार्यों में रुचि लेता है तथा समाज में भी उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है, परन्तु यदि नीच राशि का सूर्य जातक की कुण्डली में पड़ा होता है तो उसकी दशा में जातक का धन व्यय होता है और उस पर कर्जा चढ़ा रहता है, उसे अनेक प्रकार की व्याधियाँ सताती हैं और परिवार वाले एक-एक कर बिछुड़ते रहते हैं। राज्य पक्ष में जातक की अवनति होती है और पुत्रादि से कलह होता है।

## चन्द्र

चन्द्र उच्च का या स्वराशिस्थ होता है तो उसकी दशा में व्यक्ति को अनेक प्रकार का सम्मान मिलता है, मन्त्री होने का योग बनता है तथा चुनाव में विजयी होता है। मुकदमे आदि में भी जातक की निश्चित जीत होती है। इस दशा में जातक को स्कालरशिप मिल सकती है तथा विद्या का उत्तम योग बनता है। यदि चन्द्रमा जातक की कुण्डली में नीच राशि पर पड़ा हो, नीच का हो, या शत्रु राशि में पड़ा हो तो जातक चन्द्रमा की दशा में घोर दुःख पाता है, घर में हर समय कलह रहती है तथा सिर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। विभिन्न नीच कृत्यों

में उसका धन व्यय होता है तथा वाहनादि से शारीरिक क्षति होने की सम्भावना रहती है।

### मंगल

जिस जातक की कुण्डली में मंगल उच्च का, स्वराशि का या मूल त्रिकोण में स्थित हो, तो जातक भौम की दशा में स्त्री-पुत्र का विशेष सुख प्राप्त करता है। इस दशा में जातक को भूमि से विशेष लाभ होता है। मकान बनवाने, जमीन खरीदने या गड़ा हुआ धन प्राप्त होने का योग बनता है। समाज में व्यक्ति सम्मान प्राप्त करता है और जाति का सिरमौर बनता है। इस दशा में अतिरिक्त (आय के) धनप्राप्ति भी होती है। यदि मंगल नीच राशि में नीच का या शत्रु गृह में हो तो इस दशा में व्यक्ति अग्निपीड़ा से पीड़ित होता है, उसका संचित धन रोगों से जूझने में व्यय हो जाता है, पित्त-वायु आदि रोगों से वह कष्ट पाता है तथा स्त्री-पुत्रादि से दूर रहने को विवश होता है। इन दिनों उसकी शक्ति झगड़ों में भी लग सकती है तथा कर्जा दिनोंदिन चढ़ सकता है।

### बुध

उच्च, बलवान या स्वराशिस्थ बुध की दशा में जातक विज्ञान-विद्या में निपुण होता है, नये-नये आविष्कार, हल और उपाय सोचता है। कृषि में जातक को विशेष लाभ होता है। पुत्रों से उसे विशेष सुख मिलता है और पुत्र की कीर्ति से वह सम्मानित होता है। नीच, हीन राशिस्थ बुध अपनी दशा में जातक को कफ, वात, पित्तादि रोगों से पीड़ित करता है। धनहानि के साथ-साथ मानसिक चिन्ता से भी व्यथित होता है एवं कपटयुक्त कार्यों में लिप्त होने को विवश होता है। गुप्त रोग होने की भी संभावना रहती है तथा शस्त्र आदि से घायल, पीड़ित अथवा परेशान हो सकता है।

### गुरु

यदि गुरु उच्च का हो, स्वराशिस्थ हो अथवा मूल त्रिकोण में बैठा हुआ हो तो जातक गुरु की दशा में ज्ञान-लाभ करता है। नये-नये ग्रन्थों का निर्माण करता है। द्रव्य-प्राप्ति के विशेष योग बनते हैं तथा नौकरी में पदोन्नति होती है। इस दशा में व्यक्ति ख्याति-लाभ भी प्राप्त करता है। ऊँचे अफसरों से उसके मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित होते हैं एवं विदेश

जाने का अवसर बनता है। चुनाव में विजयी होकर उच्च पद भी प्राप्त कर सकता है। परन्तु नीच का गुरु या नीच राशि में पड़ा हुआ गुरु जातक की कुण्डली में होता है तो जातक प्लीहा, गुल्म रोग, कण्ठ रोग आदि से पीड़ित होता है। सम्बन्धियों से उसका विरोध बढ़ता है तथा मतिभ्रम से प्रत्येक कार्य में असफलता ही हाथ लगती है। गुप्त स्थानों पर रोग होने से व्यक्ति पीड़ित होता है एवं आय से खर्च बढ़ जाता है।

### शुक्र

यदि जातक की कुण्डली में शुक्र उच्च का, अपनी राशि का या बलवान होकर पड़ा हो तो जातक इस ग्रह की दशा में विदेश-भ्रमण करता है, सन्तान में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है और काव्य की नई पुस्तक रचने में सफल होता है। उसके व्यवसाय में उन्नति होती है तथा व्यापारियों में साख जमती है। इस दशा में जातक को पशुओं से विशेष लाभ होता है। नेता, एम० पी० या एम० एल० ए० बनने का भी योग इस दशा में बनता है। यदि शुक्र नीच राशि में, पाप ग्रहों के साथ या नीच का होकर पड़ा हो तो जातक शुक्र की दशा में कई नये प्रकार के व्यसन पाल लेता है। मदन-पीड़ा से सदैव पीड़ित रहता हुआ जातक स्त्री से विशेष हानि उठाता है। इस योग में स्त्री से भी धन-लाभ होता है तथा बन्धुओं से झगड़े होने के कारण मुकदमेबाजी में संचित द्रव्य-व्यय होता रहता है। स्त्री-पुत्रों से विरोध होता है तथा वात, कफ आदि के रोग से जातक को कई नई-नई व्याधियाँ आ घेरती हैं। इस दशा में जातक को शस्त्र-भय भी रहता है और स्वयं की चिन्ता से हृदय पर भी विशेष बुरा प्रभाव पड़ता है।

### शनि

बलवान स्वराशिस्थ या उच्च के शनि की दशा में जातक को द्रव्य की विशेष प्राप्ति होती है। विदेश भ्रमण के भी योग बन सकते हैं, परन्तु इनसे लाभ नहीं होता। मुकदमे में दशा के समय जीत होती है। जातक विलास और ऐशो-आराम का ज्यादा सुख भोगता है और भोगोपभोग की कई वस्तुओं का भी संग्रह करता है। जनता में व्यक्ति की ख्याति फैलती है और स्त्री-लाभ होता है। व्यक्ति की उन्नति तीव्रता से अग्रसर होती है। नीच राशि में बैठे शनि की दशा में जातक को मर्म स्थान की पीड़ा से दुःख भोगना पड़ता है। चर्म रोग होने के अलावा बन्धु-बान्धवों का वियोग भी उसे सहन करना पड़ता है। कई प्रकार की विप-

त्तियाँ उस पर आती हैं और दिनोंदिन ऋण उस पर बढ़ता ही जाता है। बुरे व्यक्तियों की संगति होने से भी उसका संचित धन नष्ट होता है। उसे अपने मित्रों, पुत्रों या स्त्री द्वारा विश्वासघात भी होता है, जिससे उसका हृदय सदैव चिन्ता से ग्रस्त रहता है।

## राहु

उच्च के राहु की दशा में व्यक्ति को अर्थलाभ होता है, अधिकार-प्राप्ति के योग बनते हैं तथा पुत्र-लाभ होता है। नये-नये कार्यों को प्रारम्भ किया जाता है तथा मध्यम वर्ग के लोगों से विशेष सुख पहुँचता है। नीच या नीच राशिगत राहु की दशा में जातक को घरेलू झगड़ों से परेशान होना पड़ता है, भाइयों से उसका विरोध बढ़ता है तथा नये-नये रोगों से जीवन दूभर हो जाता है। प्रेम के क्षेत्र में वह समाज में अपमानित होता है तथा व्यसनों से उसे हानि पहुँचती है। नीच कार्यों से जातक को प्रेम होता है और उससे साधारण आय भी करता है। सिर में रोग, वात रोग तथा अन्य रोग होते हैं। आर्थिक संकट से वह तथा उसके परिवार के लोग पीड़ित होते हैं और समाज से विरोध तथा झगड़े बढ़ते हैं।

## केतु

केतु की दशा में जातक को अचानक द्रव्य-प्राप्ति होती है, पुत्र-लाभ एवं स्त्री-लाभ होता है तथा साधारण रूप से आय बढ़ती है। नीच केतु की दशा में जातक कष्ट उठाता है एवं बन्धुओं का विरोध सहने को विवश होता है। व्यसनों से वह अपने आपको पतित कर देता है। उसके सिर तथा नेत्रों में रोग उत्पन्न होते हैं एवं साधारण व्यापारों से उसे लाभ पहुँचता है। नवीन कार्य प्रारम्भ करने से उसे असफलता का मुँह देखना पड़ता है एवं स्त्री से हानि पहुँचती है।

## भावेशों के अनुसार दशा-फल

(१) लग्नेश की दशा में जातक को द्रव्य-प्राप्ति होती है तथा शरीर का विशेष सुख मिलता है। ऐशो-आराम के पदार्थ एकत्र होते हैं, परन्तु जातक स्त्री की ओर से चिन्तित रहता है।

(२) दूसरे घर में स्वामी दशा में जातक शारीरिक कष्ट भोगता है। घोर बीमारी से वह व्यथित होता है, परन्तु इस दशा में उसे अकस्मात् द्रव्य-प्राप्ति होती है।

(३) पराक्रमेश (तीसरे घर का स्वामी) की दशा में व्यक्ति साधारण आय कर सकता है। बान्धवों की ओर से उसे पीड़ा पहुँचती है तथा शारीरिक कष्ट भी रहता है।

(४) चतुर्थेश की दशा में जातक माँ के सुख का लाभ उठाता है, नूतन वाहनादि का भी योग बनता है तथा भूमि की ओर से भी लाभ मिल सकता है। विद्या-लाभ का विशेष योग बनता है तथा जातक पी-एच० डी० जैसी डिग्री भी प्राप्त करने में सफल होता है। जातक इस दशा में नया मकान बनवाने में भी सफल होता है।

(५) पंचमेश की दशा में व्यक्ति समाज में सम्मान प्राप्त करता है, बुद्धि निर्मल बनती है, विद्या का विशेष लाभ पहुँचता है तथा संतान-प्राप्ति भी होती है। इस दशा में जातक माँ की मृत्यु का भी दुःख उठाता है।

(६) छठे घर के स्वामी की दशा में व्यक्ति को शत्रुओं की ओर से हानि पहुँचती है, मुकदमे में हार होती है, उसका संचित धन वैद्यों एवं डाक्टरों के घर पहुँचता है। संतान की ओर से भी उसे हानि उठानी पड़ती है।

(७) सप्तमेश की दशा में व्यक्ति को शारीरिक कष्ट उठाना पड़ता है। उसे मित्रों की ओर से विश्वासघात होता है एवं द्रव्य की विशेष हानि होती है। नौकरी में भी उसे अवनति का द्वार देखना पड़ता है। सप्तमेश पापग्रह हो तो स्त्री की मृत्यु की भी सम्भावना रहती है।

(८) अष्टमेश की दशा में व्यक्ति को मरण-तुल्य कष्ट पहुँचता है। पत्नी का वियोग सहने को भी उसे बाध्य होना पड़ता है एवं कन्या-विवाह का योग प्रस्तुत होता है। इस दशा में जातक को स्त्री-पुत्रादि की ओर से काफी हानि उठानी पड़ती है।

(९) नवमेश की दशा में जातक का भाग्योदय होता है। वह नये-नये उद्योग प्रारम्भ करता है एवं व्यापार में विशेष लाभ उठाता है। इस दशा में जातक को तीर्थ-यात्रा पर जाने का भी अवसर प्राप्त होता है। विद्या के क्षेत्र में जातक को विशेष लाभ होता है एवं किसी महत् कार्य करने से उसकी ख्याति फैलती है।

(१०) दशमेश की दशा में व्यक्ति को नौकरी में पदोन्नति प्राप्ति होती है। उसके सम्मान में वृद्धि होती है एवं स्त्री-पुत्रों की ओर से लाभ पहुँचता है। इस दशा में नौकरी की प्राप्नि होती है और अधूरे कार्य पूरे होने लगते हैं।

(११) एकादशेश की दशा में जातक की आय बढ़ती है, उसकी ख्याति फैलती है और व्यापार में प्रचुर लाभ होता है। इस दशा में पिता की मृत्यु भी सम्भव होती है। जातक इस दशा में अतिरिक्त भोगोपभोग भोगता है।

(१२) द्वादशेश की दशा में जातक शारीरिक कष्ट उठाता है। नित नई-नई चिन्तायें उसके लिए परेशानियाँ उत्पन्न कर देती हैं और घर में बीमारियों से वह असहिष्णु बन जाता है। जातक को इस दशा में सम्बन्धियों की ओर से भी हानि पहुँचती है।

## अन्तर्दशा फल

पापग्रह की महादशा में यदि पापग्रह की ही अन्तर्दशा होती है तो जातक को धन से हाथ धोना पड़ता है, शत्रुओं से उसे हानि मिलती है और रोगों से जूझते-जूझते वह परेशान हो जाता है।

पापग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा चल रही हो तो जातक पूर्वार्द्ध में कष्ट पाता है और उत्तरार्द्ध में वह उस ग्रह के शुभ फलों को भोगता है।

शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा के समय जातक की सम्मानवृद्धि होती है, नौकरी में पदोन्नति होती है और शारीरिक सुख मिलता है।

शुभ ग्रह की महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो जातक पूर्वार्द्ध में उत्तम फल प्राप्त करता है, परन्तु उत्तरार्द्ध में उसे कुफल भोगने पड़ते हैं।

पापग्रह की महादशा में शत्रु गृह स्थित ग्रह की अन्तर्दशा चल रही होती है तो जातक को व्यर्थ ही कलंकित होना पड़ता है।

वक्री ग्रह की दशा में व्यक्ति धन, सुख और इज्जत की हानि उठाता है और कई नये-नये रोगों से पीड़ित होता है।

मार्गी ग्रह की दशा में जातक सम्मान, सुख और द्रव्य-प्राप्ति करता है। ऐसे समय वह चुनाव में जीतकर नेता बनता है तथा उसके प्रत्येक कार्य सिद्ध होते हैं।

नीच और शत्रु क्षेत्री ग्रह की दशा में व्यक्ति परदेश में निवास करता है, व्यापार में हानि होती है और मुकदमे में हार होती है परन्तु इस दशा में जातक नीच कार्यों से धन भी प्राप्त करता है।

राहु और केतु यदि ३, ६ या ११वें स्थान पर न हों तो जातक इन ग्रहों की दशाओं में दुःख उठाता है और द्रव्य-हानि सहता है।

# १० : योग

विशिष्ट योगों का अध्ययन करने के लिए निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिये—

१. लग्न कौन-सा है और उसका स्वामी कहाँ बैठा है ?

२. कौन-सा ग्रह कहाँ बैठा है ?

३. पूरी कुण्डली में कितने ग्रह स्व-क्षेत्री, मित्र-क्षेत्री और शत्रु-क्षेत्री हैं ?

४. उच्च ग्रह कितने और नीच ग्रह कितने हैं ?

५. किस ग्रह की दृष्टि कहाँ-कहाँ पर है ?

५. ग्रह उच्च बली, मध्यम बली या हीन बली है ?

७. पूरी कुण्डली का प्रभाव कैसा है ?

सावधानीपूर्वक उपर्युक्त बातों पर विचार करने के उपरान्त ही फलाफल विचार करना चाहिए। नीचे कुछ प्रसिद्ध योग दिये जा रहे हैं, जिनका जन्म-कुण्डली में सावधानीपूर्वक अध्ययन करना आवश्यक होता है।

## राज योग

(१) जिस जातक की जन्म-कुण्डली में चार ग्रह उच्च के या मूल त्रिकोण में बैठे होते हैं, वह अवश्य मंत्री या राज्यपाल बनता है।

(२) शुक्र, बुध और बृहस्पति केन्द्र में हों और मंगल लग्न से दसवें स्थान पर हो तो वह अवश्य राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है।

(३) जिस जातक के मेष लग्न हो तथा लग्न में चन्द्रमा और मंगल हो तो वह व्यक्ति हजारों-लाखों व्यक्तियों का विश्वास प्राप्त करता हुआ संसद में बैठता है।

(४) मेष लग्न में उच्च का सूर्य हो तथा नवम में गुरु एवं दशम में भौम हो तो वह व्यक्ति राज्यपाल बनता है।

(५) यदि मेष लग्न में भौम और गुरु दोनों साथ बैठे हों तो वह व्यक्ति केन्द्र में मंत्री बनता है और विदेशों का भ्रमण करता है।

(६) यदि केवल मेष लग्न में ही जातक जन्म ले और उसे कोई पाप-

ग्रह नहीं देख रहा हो तो ऐसा व्यक्ति शासनाधिकारी होता है।

(७) यदि मेष लग्न में पापग्रह हो और बृहस्पति नवम भाव में स्थित हो तो केन्द्रीय मन्त्री का पद ग्रहण करता है।

(८) मेष लग्न की कुण्डली में एकादश स्थान पर चन्द्रमा तथा गुरु हों एवं उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो वह जातक राज्य में उच्च सम्मान प्राप्त करता है।

(९) यदि जातक की कुण्डली में मेष लग्न हो और उसमें चन्द्र स्थित हो तथा कुम्भ में शनि, सिंह में सूर्य एवं वृश्चिक में बृहस्पति हो तो उच्चपदासीन होता है।

(१०) कर्क लग्न हो, छठे में सूर्य, चौथे में शुक्र, दशम में गुरु तथा सप्तम स्थान पर बुध हो तो व्यक्ति केन्द्रीय उच्चपद प्राप्त करता है।

(११) कर्क लग्न में चन्द्रमा हो और दशम स्थान पर भौम तथा गुरु हो तो व्यक्ति नेता बनता है।

(१२) मकर लग्न की कुण्डली में लग्नेश शनि हो तथा मिथुन में भौम, कन्या में बुध एवं धनु में गुरु हो तो वह नेतृत्व देने में सक्षम और पूर्णत: सफल होता है।

(१३) मीन लग्न में चन्द्र, दशम स्थान में शनि और चौथे स्थान में बुध हो तो वह एम० पी० तथा नेतृत्वशील बनता है।

(१४) यदि लग्न में सूर्य तथा उच्च का चन्द्रमा हो तो जातक विदेश विभाग में सचिव होता है।

(१५) मूल त्रिकोण में उच्च का मंगल तथा शुक्र हो तो जातक खाद्य-मंत्री का पद ग्रहण करता है।

(१६) तुला में शुक्र, मेष में भौम तथा कर्क में बृहस्पति हो तो जातक शासकीय कार्यों में उच्च पद ग्रहण करता है।

(१७) धनु में सूर्य तथा लग्न में उच्च शनि हो तो जातक राज्य की गुप्त मंत्रणाओं में भाग लेता है।

(१८) जातक की कुण्डली में सभी ग्रह उच्च के हों तथा मित्रों द्वारा देखे जाते हों तो व्यक्ति उच्च शासकीय अधिकारी होता है।

(१९) चन्द्रमा उच्च का हो तथा शुक्र उसे पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो जातक चुनाव में विजयी होकर नेता बनता है।

(२०) लग्नेश और राशिश लग्न में होकर नवें स्थान में चन्द्रमा हो तो व्यक्ति शासन में विरोधी पार्टी का नेतृत्व सँभालता है।

(२१) केन्द्र स्थानों पर पापग्रह न हों तथा शुभ ग्रह अपनी राशियों

में हों वो व्यक्ति राजदूत का पद सँभालता है।

(२२) लग्न में ग्रह अपने उच्च में हो तथा उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो राजयोग बनता है।

(२३) लग्नेश केन्द्र में अपने मित्रों से दृष्ट हो तथा लग्न में मित्र ग्रह हो तो राजयोग बनता है।

(२४) जन्म-कुण्डली में समस्त ग्रह अपने परमोच्च में हों तथा बुध अपने उच्च के नवांश में हो तो जातक देश के सर्वश्रेष्ठ पद को सँभालता है।

(२५) यदि किसी की कुण्डली में पूर्ण चन्द्रमा पर सब ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक उच्च राज्याधिकारी होता है।

## उच्चाभिलाषी योग

(१) यदि समस्त शुभ ग्रह लग्न में हों और उन पर पाप ग्रहों की छाया न पड़ रही हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

(२) लग्न का स्वामी लग्न में हो और उसे मित्र ग्रह देख रहा हो तो जातक उच्च पद सुशोभित करता है।

(३) यदि पूर्ण चन्द्रमा लग्न से ३, ६, १० या ११वें स्थान पर गुरु के साथ हो तो जातक महत पद प्राप्त करने में सक्षम होता है।

(४) पूर्ण चन्द्रमा अपनी उक्त राशि पर हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो व्यक्ति ऊँचा पद प्राप्त करता है।

(५) कोई भी तीन ग्रह अपने उच्च या स्वराशि में हों तो जातक एम० एल० ए० होता है।

(६) गुरु और चन्द्रमा उच्च का हो तो जातक नेता बनता है।

(७) मेष राशि पर बैठे चन्द्रमा को बृहस्पति देखे तो जातक ऊँचे पद पर स्थित मन्त्री होता है।

(८) अपने उच्च, त्रिकोण या स्वराशि में स्थित होकर कोई ग्रह चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो जातक मन्त्री पदासीन होता है। ऐसा योग राजयोग कहलाता है।

(९) लग्न में शनि, सातवें भाव में गुरु और उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो व्यक्ति राज्य में उच्च-पद प्राप्त करता है।

(१०) शुक्र, सूर्य और चन्द्रमा एक स्थान पर हों तथा उन्हें गुरु देखता हो तो ऐसा योग राजयोग कहलाता है।

(११) गुरु मंगल के नवांश में हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो

एवं मेष का सूर्य दशम भाव में स्थित हो तो जातक राजनीतिज्ञ होता है।

(१२) यदि बुध, गुरु और शुक्र नवम भाव में हों और उन पर मित्रग्रहों की दृष्टि हो तो जातक राजनीतिज्ञ बनता है।

(१३) नवम भाव में तीन ग्रह उच्च के हों तो जातक राजनीति-निपुण होता है।

(१४) एक राशि के अन्तर से छह राशियों में कुल ग्रह आ जाते हैं, तो व्यक्ति मन्त्री बनता है।

(१५) उच्च का गुरु केन्द्र में तथा शुक्र दशम भाव में हो तो जातक राजनीति में सफल होता है।

(१६) मंगल उच्च राशि का दशम भाव में हो तो जातक तेजस्वी होता है।

(१७) यदि समस्त ग्रह १।४।६।१० भावों में हों तो जातक मन्त्री-पद सँभालता है।

(१८) समस्त शुभ ग्रह ९वें तथा ११वें भाव में हों तो व्यक्ति राज्यपाल का पद सँभालता है।

(१९) पूर्ण चन्द्रमा उच्च राशि का हो तो व्यक्ति प्रतिष्ठित पद प्राप्त करता है।

(२०) उच्च का गुरु और सातवें चन्द्र उच्च पद देते हैं।

(२१) मकर में शनि, सातवें चन्द्र गुरु कन्या में बुध हो तो राज-योग बनता है।

## धन-सुख योग

(१) दिन में जन्म लेने वाले जातक का चन्द्रमा अपने नवांश में हो तथा उसे गुरु देखता हो तो धन-सुख योग होता है।

(२) रात में जन्म हो, चन्द्रमा को शुक्र देखता हो तो धन-प्राप्ति होती है।

(३) भाग्य के स्वामी का लाभ के स्वामी से योग हो।

(४) चौथे घर का मालिक भाग्येश के साथ बैठा हो।

(५) भाग्येश और पञ्चमेश का योग हो।

(६) भाग्येश और द्वितीयेश का योग हो।

(७) दशमेश और लाभेश साथ हों।

(८) दशमेश और चतुर्थेस २, ४, ५, ९ घर में साथ बैठे हों।

(९) धनेश और पञ्चमेश का योग हो।

(१०) लग्न का स्वामी चौथे घर के स्वामी के साथ बैठा हो।
(११) लाभेश और चतुर्थेश का योग हो।
(१२) लाभेश और धनेश का योग हो।
(१३) लाभेश और लग्नेश का योग हो।
(१४) लग्नेश और धनेश का योग हो।
(१५) लग्न का स्वामी पाँचवें स्थान के स्वामी के साथ हो।

## पैतृक धन-प्राप्ति योग

(१) नवमेश तथा एकादशेश साथ बैठे हों।
(२) द्वितीयेश पर नवमेश की पूर्ण दृष्टि हो।
(३) दूसरे घर में दूसरे घर का मालिक ही हो, पर वह एकादशेश न हो।
(४) दूसरे ग्रह में उच्चस्थ ग्रह हो।
(५) दूसरे घर में अकेला केतु हो।
(६) दूसरे घर में एकादशेश, नवमेश तथा चतुर्थेश हों।
(७) दूसरे घर में अकेला एकादशेश हो।
(८) ग्यारहवें घर में द्वितीयेश उच्च का बनकर बैठा हो।
(९) नौवें घर में द्वितीयेश उच्च का बनकर बैठा हो।
(१०) पाँचवें घर में द्वितीयेश तथा नवमेश हों।

## दरिद्र योग

(१) षष्ठेश और भाग्येश साथ हों।
(२) व्ययेश और धनेश का योग हो।
(३) व्ययेश और दशमेश का योग हो।
(४) छठं घर का स्वामी पाँचवें घर के स्वामी के साथ हो।
(५) षष्ठेश और तृतीयेश साथ-साथ हों।
(६) षष्ठेश और लाभेश एक जगह पर हों।
(७) षष्ठेश और व्ययेश साथ हों।
(८) व्ययेश और अष्टमेश का योग हो।
(९) षष्ठेश और सप्तमेश का योग हो।
(१०) व्ययेश और द्वितीयेश एक साथ हों।
(११) व्ययेश लग्नेश से मित्रता कर साथ बैठता हो।

## ससुराल से धन-प्राप्ति के योग

(१) सप्तमेश और द्वितीयेश एक साथ हों और उन पर शुक्र की दृष्टि हो।

(२) चौथे घर का स्वामी सातवें घर में हो, शुक्र चौथे स्थान पर हो तो ससुराल से धन मिलता है।

(३) सप्तमेश नवमेश शुक्र से देखे जाते हों।

(४) वलवान धनेश सातवें स्थान पर बैठे शुक्र से देखा जाता हो।

## अकस्मात् धन-प्राप्ति योग

(१) पाँचवें स्थान पर चन्द्रमा हो तथा शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो।

(२) यदि द्वितीयेश तथा चतुर्थेश शुभग्रह की राशि में हों।

(३) एकादशेश और द्वितीयेश चौथे स्थान में हों।

(४) लग्नेश शुभग्रह होकर धन भाव में स्थित हो।

(५) धनेश आठवें स्थान पर हो।

(६) लग्न का स्वामी दूसरे स्थान पर, दूसरे का स्वामी ग्यारहवें स्थान पर हो तथा एकादशेश लग्न में हो।

## दिवालिया योग

(१) लग्नेश निर्बल हो तथा अष्टमेश ४, ५ या ९वें स्थान पर हो।

(२) लाभेश व्यय में हो।

(३) भाग्येश और दशमेश व्यय स्थान पर हों।

(४) पंचम स्थान में शनि तुला राशि का हो।

(५) दूसरे घर का मालिक ९, १० या ११वें स्थान पर हो

## जमींदारी योग

(१) चौथे घर का मालिक दशम में तथा दशमेश चतुर्थ में हो।

(२) चतुर्थेश, २ या ११वें स्थान पर हो।

(३) चतुर्थेश-दशमेश और चन्द्रमा बलवान हों तथा परस्पर मित्र हों।

(४) पंचमेश लग्न में हो।

(५) सप्तमेश, नवमेश तथा एकादशेश लग्न में हों।

## सुख योग

(१) चतुर्थेश को गुरु देखता हो।
(२) चौथे घर का मालिक बलवान गुरु के साथ हो।
(३) चौथे स्थान में शुभग्रह हो।
(४) लग्नेश उच्च या स्वराशिस्थ हो।
(५) चन्द्रमा शुभ ग्रहों के मध्य हो।
(६) सुखेश शुभग्रह की राशि में हो।
(७) चतुर्थेश शुभग्रहों के मध्य हो।
(८) मित्र राशिस्थ हो।
(९) चौथे स्थान पर शुभग्रहों की दृष्टि हो।
(१०) चतुर्थेश पुरुष ग्रह बली हो।
(११) चतुर्थ स्थान पर चन्द्र, बुध और शुक्र की दृष्टि हो।
(१२) चतुर्थ स्थान बृहस्पति द्वारा देखा जाता हो।
(१३) लग्नेश शुभग्रहों द्वारा देखा जाता हो।
(१४) चौथे स्थान में स्वराशिस्थ मंगल हो।

## दुःख योग

(१) चौथे स्थान का स्वामी पाप ग्रह से युक्त हो।
(२) चौथे घर में नीच सूर्य व मंगल हो।
(३) आठवें घर का स्वामी ११वें भाव में हो।
(४) लग्न में पाप ग्रह हो।
(५) लग्न में शनि, आठवें स्थान पर राहु तथा छठे स्थान पर मंगल हो।
(६) चन्द्रमा पाप ग्रहों के बीच में हो।
(७) लग्न का स्वामी १२वें स्थान पर, दसवें स्थान पर पाप ग्रह और किसी भी घर में चन्द्रमा तथा सूर्य साथ में बैठे हों।

## जोव जाने का योग

(१) कर्क या सिंह राशि में पाप ग्रह हो।
(२) ४ या १०वें स्थान पर पाप ग्रह हो।
(३) चन्द्रमा से चतुर्थ राशि में पाप ग्रह हो।
(४) सूर्य से ९वें स्थान पर पाप ग्रह हो।

(५) चन्द्रमा या सूर्य शत्रु क्षेत्र में हो।

**विद्या योग**

(१) जन्म-लग्न से पाँचवें स्थान का स्वामी बुध, गुरु या शुक्र ५, ७, ९ या १०वें स्थान में बैठा हो।

(२) चौथे स्थान में उस राशि का ही स्वामी हो।

(३) पाँचवें स्थान पर गुरु हो।

(४) चतुर्थेश ६, ८ या १२वें स्थान पर न हो।

(५) बृहस्पति उच्च का होकर ५वें स्थान को देखता हो।

(६) बुद्ध उच्च का हो।

(७) पाँचवें स्थान पर शुभ बुध पड़ा हो।

(८) गुरु चौथे, बुध पाँचवें तथा पंचमेश ९ या १०वें स्थान पर हों।

(९) दसवें भाव का स्वामी लग्न में हो।

(१०) ११वें घर का स्वामी ११वें स्थान पर हो।

(११) पंचमेश स्वगृही होकर १ या ५वें स्थान में हो।

(१२) पंचमेश व्ययेश हो।

(१३) द्वितीय स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट मंगल हो।

(१४) रवि से पंचम स्थान पर भौम, शुक्र और शनि हो तो जातक अंग्रेजी विद्या का जानकार होता है।

(१५) शनि गुरु नवम पंचम का सम्बन्ध करे तो जातक विश्व-विद्यालय में प्रोफेसर बनता है।

**सन्तान विचार**

(१) लग्नेश पाँचवें भाव में हो तथा बृहस्पति बलवान हो।

(२) बलवान बृहस्पति लग्नेश द्वारा देखा जाता हो।

(३) लग्नेश और पंचमेश साथ हों।

(४) लग्नेश और नवमेश दोनों सप्तमस्थ हों।

(५) द्वितीयेश लग्नस्थ हों।

(६) लग्नेश और पंचमेश १, ४, ७, १० स्थानों पर शुभ ग्रहों से दृष्ट हों।

**बहुसन्तान योग**

(१) पंचमेश शनि शुक्र के साथ पाप स्थानगत हो।

(२) आठवें भाग में पंचमेश हो।
(३) पंचमेश तथा तृतीयेश साथ-साथ हों।
(४) पंचमेश के स्थान में तृतीयेश हो।
(५) सप्तमेश-तृतीयेश का अन्योन्याश्रित योग हो।

## अधिक कन्या योग

(१) पचमेश आठवें स्थान पर हो।
(२) ११वें भाव में बुध, शुक्र या चन्द्रमा हो।
(३) पाँचवें भाव में शुक्र हो।
(४) ५वें भाव में मेष, वृष या कर्क राशि हो और उसमें केतु हो।
(५) पंचमेश और तृतीयेश दोनों नीच हों।

## सन्तानहीन योग

(१) पंचमेश नीच का हो।
(२) पंचमेश तथा सप्तमेश नीच हों।
(३) तृतीयेश और चन्द्रमा १, ४, ६, १०वें स्थान पर हों।
(४) बुध और लग्नेश लग्न के अलावा अन्य स्थानों पर हों।
(५) ५, ८ या १२वें स्थानों में पाप ग्रह हो।
(६) ५वें भाव में चन्द्रमा तथा ८, १२वें स्थान पर पाप ग्रह हों।
(७) ७वें स्थान पर शुक्र, १० में चन्द्र तथा ४ में ३ पाप ग्रह हों।
(८) ५वें स्थान में राहु व बृहस्पति हो।
(९) पंचमेश नीच का होकर अष्टम घर का हो।

## रोग योग

(१) षष्ठेश सूर्य के साथ १ या ८वें भाव में हो तो मुख रोग।
(२) षष्ठेश चन्द्र के साथ १ या ८वें भाव हो तो तालु रोग।
(३) १२वें भाव में गुरु और चन्द्र साथ हों।
(४) मंगल और शनि का योग ६ या १२वें भाव में हो।
(५) लग्नेश रवि का योग ६, ८, १२वें स्थान में हो।
(६) मंगल और शनि लग्न स्थान या लग्नेश को देखते हों।
(७) सूर्य, मंगल तथा शनि तीनों जिस स्थान में हों, उस स्थान वाले अंग पर रोग होता है।
(८) पापी मंगल पाप राशि में हो।

(९) शुक्र और मंगल में सूर्य का योग हो।
(१०) अष्टमेश और लग्नेश साथ हों।
(११) छठे स्थान पर शनि की पूर्ण दृष्टि हो।
(१२) चन्द्र और शनि एक साथ कर्क राशि में हों।
(१३) छठे भाव में चन्द्र, शनि और बुध देखे जाएँ तो जातक कोढ़ी हो।
(१४) अष्टमेश नीच ग्रहों के बीच में हो।
(१५) सूर्य का पाप दृष्ट हो।

## विवाह योग

(१) सप्तम भाव शुभ हो तथा सप्तमेश बली हो।
(२) शुक्र स्वगृही या कन्या राशि का हो।
(३) द्वितीयेश और सप्तमेश १, ४, ७, १० स्थानों पर हों।
(४) लग्नेश लग्न में या द्वितीय भाव में हो।
(५) सप्तम स्थान पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो।
(६) गुरु अपने मित्र के नवांश में हो।
(७) सप्तम में चन्द्र और शुक्र साथ हों।
(८) लग्न से सप्तम भाव में शुभ ग्रह हो।
(९) सप्तमेश शुभ ग्रह मुक्त होकर द्वितीय स्थान में हो।
(१०) विवाह प्रतिबन्धक योग न हो।

## विवाह प्रतिबन्धक योग

(१) सप्तमेश शुभ ग्रह के साथ न हो तथा ६, ८ या १२वें भाव में हो।
(२) सप्तमेश १२वें भाव में हो।
(३) छठे, आठवें तथा बारहवें घर का स्वामी सातवें भाव में हो।
(४) सप्तमेश ६, ८ या १२वें भाव का स्वामी हो।
(५) शुक्र चन्द्रमा से सातवें स्थान पर शनि एवं भौम के साथ हो।
(६) १, ७, १२वें भाव में पाप ग्रह हों।
(७) ७, १२वें भाव में दो पाप ग्रह हों तथा पंचम में चन्द्र हो
(८) सप्तम भाव में पाप ग्रह हो।
(९) लग्न से सातवें भाव में केतु तथा उस पर शुक्र की दृष्टि हो।
(१०) शुक्र, मंगल ५, ७, ९वें भाव में हों।

### स्त्री रोग योग

(१) लग्न में शनि, मंगल या केतु हो।
(२) सप्तमेश ८, १२वें भाव में हो।
(३) सप्तमेश और द्वितीयेश पाप ग्रहों से युक्त हों।
(४) नीच का चन्द्रमा सातवें भाव में हो।
(५) सातवें भाव में बुध पाप ग्रहों से दृष्ट हो।

### दीर्घायु योग

(१) पंचम में चन्द्र, ९ में गुरु तथा १०वें भाव में मंगल हो।
(२) अष्टमेश अपनी राशि में हो।
(३) शनि अष्टम स्थान पर हो।
(४) अष्टमेश, लग्नेश १, ४, ५, ७, १० स्थानों पर हो।
(५) छठे तथा बारहवें घर का मालिक लग्न में हो।
(६) पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों में ही हों।
(७) लग्नेश बलवान होकर केन्द्र में हो।

### अल्पायु योग

(१) १, ४, ५, ८ स्थानों का शनि लग्न में हो।
(२) शुभ ग्रह ३, ६, ९ स्थानों में हो।
(३) अष्टमेश पाप ग्रह होकर गुरु से दृष्ट हो।
(४) चन्द्र, शनि और सूर्य आठवें भाव में हो।
(५) लग्नेश निर्बल होकर पाप राशि में पड़ा हो।
(६) दिन में जन्म हो और चन्द्रमा से आठवें स्थान पर पाप ग्रह हों।
(७) दीर्घायु योग का अभाव हो।

### भाग्योदय योग

(१) सप्तमेश या शुक्र ३, ६, १०, ११वें स्थान पर हो तो २२वें वर्ष में भाग्योदय होता है।
(२) भाग्येश रवि हो तो २४वें वर्ष में।
(३) चन्द्रमा भाग्येश हो तो २५वें वर्ष में।
(४) भाग्येश भौम हो तो २८वें वर्ष में।

(५) भाग्येश बुध हो तो ३२वें वर्ष में।
(६) भाग्येश गुरु हो तो १६वें वर्ष में।
(७) शुक्र भाग्येश हो तो २५वें वर्ष में।
(८) शनि भाग्येश हो तो ३६वें वर्ष में।
(९) राहु-केतु भाग्येश हों तो ४२वें वर्ष में।
(१०) नवम भाव में गुरु या शुक्र हो।
(११) नवमस्थ गुरु को सूर्य देख रहा हो।
(१२) गुरु को सूर्य और बुध साथ बैठे देख रहे हों।
(१३) सूर्य और शनि नवमस्थ गुरु को देख रहे हों।
(१४) नवमस्थ गुरु शुभ राशि का स्वराशिस्थ हो।
(१५) नवम भाव में शुभ ग्रह हो और उस पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि न हो।

## पितृ-सुख योग

(१) दशमेश गुरु शुक्र के साथ हो।
(२) नवमेश परमोच्च हो।
(३) सूर्य, मंगल दसवें भाव में हों।
(४) पाप ग्रह से रहित सूर्य दशम भाव में न हो।
(५) दशमेश शुभ ग्रहों के मध्य में स्थित हो।

## धन-सुख योग

(१) दिन में जन्म तथा चन्द्रमा मित्र के नवांश में हों।
(२) रात्रि में जन्म होने पर चन्द्रमा को शुक्र देख रहा हो।

## महाराज योग

(१) लग्नेश पञ्चमेश में तथा पञ्चमेश लग्न में हो।
(२) लग्नेश शुभ ग्रहों से दृष्ट हो।
(३) लग्नेश तथा पञ्चमेश स्वराशिस्थ हों।

इन योगों में जन्म लेनेवाला जातक उच्च शासनाधिकारी बनता है।

## मूसल योग

समस्त ग्रह स्थिर राशियों में हों तो मूसल योग होता है। ऐसे योग का जातक धनी, राजमान्य, प्रसिद्ध तथा राजदूत बनता है।

### माला योग

बुध, गुरु तथा शुक्र ४, ७, १०वें स्थान में हों तथा अन्य ग्रह दूसरी राशियों में हों तो जातक माला योग बनता हुआ ए० पी० के पद को ग्रहण करता है।

### शकट योग

लग्न तथा सातवें घर में सभी ग्रह हों तो जातक किसी भी व्यक्ति से काम निकालने में चतुर गिना जाता है।

### पक्षी योग

चौथे तथा १० वें स्थान में सभी ग्रह हों तो पक्षी योग बनता है। ऐसा व्यक्ति राजदूत का पद तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

### शृंगटक योग

समस्त ग्रह १, ५, ६ स्थानों में हों तो शृंगटक योग बनता है। ऐसा जातक सेनाध्यक्ष बनता है।

### कमल योग

समस्त शुभ ग्रह १, ४, ७ १० स्थानों में हों तो कमल योग बनता है। ऐसा जातक राज्यपाल बनता है।

### केदार योग

चार राशियों में ही समस्त ग्रह स्थित हों तो व्यक्ति बहुत बड़ा जमींदार बनता है।

### पर्वत योग

७वें तथा ८वें भाव में कोई ग्रह न हो तथा इन राशियों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक महान् लेखक बन सकता है।

### लक्ष्मी योग

लग्नेश बलवान् हो तथा भाग्येश अपने मूल त्रिकोण अथवा स्वराशिस्थ हो तो जातक महान् पराक्रमी और लक्ष्मीयुक्त होता है।

लग्न से ७, ८वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर पाप ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक महान् विद्वान होने के साथ-साथ राजनीतिक-पटु भी होता है।

## ११ : ताजिक

### (वर्ष फल)

वर्ष फल बनाने की विधि ताजिकशास्त्र में वर्णित है। इस शास्त्र का प्रचार भारत में यवनों के सम्पर्क से हुआ है। मानव की जन्म-कुण्डली में जो-जो ग्रह जिस-जिस भाव में स्थिर होते हैं, पंचांग स्थिति के अनुसार जब वे ग्रह अनिष्ट भाव में आकर पड़ते हैं, तब वैसे ही फल में न्यूनाधिक्यता हो जाती है।

इसमें प्रत्येक वर्ष का पृथक्-पृथक् फल निकाला जाता है और प्रत्येक वर्ष में ९ ग्रहों को फल देने का अधिकार देते हुए भी एक प्रधान ग्रह को वर्षेश बना लिया जाता है। भारतीय आचार्यों ने यवनों की इस विद्या का खुलकर स्वागत किया और उसे अपने ढाँचे में ढालकर वर्ष पत्र-विषयक अनेक ग्रन्थों की रचना की। इन आचार्यों ने वर्ष-प्रवेश समय की कुण्डली में १२ भागों में स्थित ९ ग्रहों के फल का विवेचन जातकशास्त्र के अनुसार किया तथा जन्मकालीन एवं वर्षकालीन कुण्डली के ग्रहों का साम्य-वैषम्य देखकर तदनुसार उस वर्ष का फल जातक के लिए वर्णित किया तथा निम्न ५ ग्रहों में से किसी एक बली ग्रह को वर्ष का स्वामी निर्धारित करने की प्रक्रिया घोषित की।

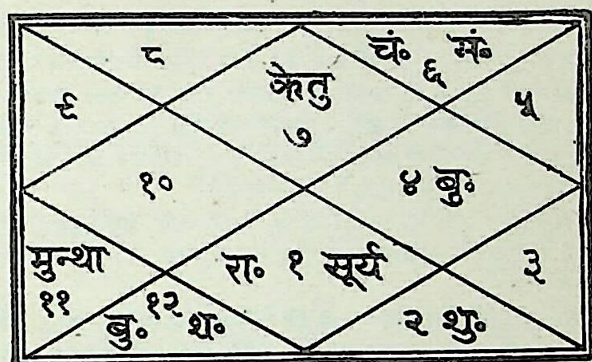
(१) जन्म-कुण्डली की लग्नराशि का स्वामी,
(२) वर्ष-प्रवेश काल की लग्नराशि का स्वामी,
(३) वर्ष का मून्थेश,
(४) त्रिराशिपति,

---

नोट : योगों के विशेष अध्ययनार्थ देखें पुस्तक 'ज्योतिष-योग'
लेखक : डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

(५) वर्ष-प्रवेश दिनों में हो तो वर्ष-कुण्डली की सूर्याधिष्ठित राशि का स्वामी और रात में प्रवेश हो तो वर्ष-कुण्डली की चन्द्राधिष्ठित राशि का स्वामी।

**वर्ष-कुण्डली**




**मुन्थासाधन**

मुन्था को नवग्रहों की माता माना है और इसे भी वर्ष-कुण्डली में स्थान दिया जाता है। इसकी वार्षिक गति एक राशि, मासिक ढाई अंश और दैनिक ५ कला है। इसके स्थान के लिए यह नियम है कि जातक के गतवर्ष संख्या में १ जोड़कर १२ का भाग देना चाहिए। शेष जितनी संख्या बचे लग्न से आगे उतने ही स्थान पर मुन्था की राशि आती है और उस राशि का स्वामी ही मुन्था का स्वामी माना जाता है।

**ताजिक मित्रादि संज्ञा**

प्रत्येक ग्रह अपने भाव से ३, ५, ९ और ११वें भाव को मित्र दृष्टि से, २, ६, ८ और १२वें भाव को समदृष्टि से एवं १, ४, ७ और १०वें भाव को शत्रु दृष्टि से देखता है। इसका तात्पर्य यह है कि जो ग्रह जहां पर हो उसके ३, ५, ९ व ११वें स्थान में रहने वाले ग्रह मित्र, २, ६, ८ व १२वें स्थान में रहनेवाले ग्रह सम तथा १, ४, ७ और १०वें भाव में रहने वाले ग्रह शत्रु होते हैं। यह विचार वर्ष-कुण्डली में ही किया जाता है।

## पंचम वर्ग

वर्ष पत्र में पञ्चमवर्गी बल का अधिक महत्त्व रहता है। यह पंचम वर्गी गृह, उच्च, हद्दा, द्रेष्काण और नवांश, ये पाँच माने गये हैं।

## पंचवर्गी बलसाधन

वर्ष-फल में पंचवर्गी बलसाधन भी देखा जाता है। अपनी राशि में जो ग्रह हो उसका ३० विश्वा बल, जो उच्च में हो उसका २० विश्वा बल, जो अपने हद्दा में हो उसका १५ विश्वा बल, जो अपने द्रेष्काण में हो उसका १० विश्वा बल और जो अपने नवांश में हो उसका ५ विश्वा बल होता है। इन पाँचों अधिकारों के बलों को जोड़कर चार का भाग देने से विंशोपक बल निकलता है।

परन्तु यदि कोई ग्रह अपनी राशि, अपने उच्च, अपने हद्दा, अपने द्रेष्काण और अपने नवमांश में न पड़ा हो तो उसका बल निम्न प्रकार से माना जाता है।

जो ग्रह अपने मित्रों के घर में हो वह तीन-चौथाई बलवान, सम-राशि में हो तो आधा बलवान एवं शत्रु राशि में हो तो चौथाई बलवान होता है। यह बलसाधन की प्रक्रिया, गृह, उच्च, हद्दा, नवमांश और द्रेष्काण में एक-सी होती है।

## बली ग्रह का निर्णय

जिस ग्रह का विंशोपक बल ११ से २० तक हो वह पूर्णबली, जिसका ६ से १० अंश तक हो वह मध्यमबली, जिसका १ से ५ अंश तक हो वह अल्पबली और जिसका विंशोपक बल शून्य हो वह निर्बल ग्रह माना जाता है। कहीं-कहीं ५ अंश से कम विंशोपक बल वाले ग्रह को भी निर्बल माना गया है।

## पंचाधिकारी

जन्मलग्नेश, वर्षलग्नेश, मुन्था का स्वामी, त्रिराशिपति और दिन में वर्ष-प्रवेश हो तो सूर्य राशिपति तथा रात्रि में वर्ष-प्रवेश हो तो चन्द्र राशिपति, ये पाँच ग्रह वर्ष-पत्र में विशेषाधिकारी माने जाते हैं

## त्रिराशिपति विचार

आगे चक्र में से दिन में वर्ष-प्रवेश हो तो वर्ष-लग्न की राशि के

अनुसार द्विवात्रि राशि पति और रात्रि में वर्ष-प्रवेश हो तो रात्रि का त्रिराशिपति स्वीकार करना चाहिए।

## त्रिराशिपति चक्र

| राशि | मे० | वृ० | मि० | क० | सि० | तु० | वृ० | ध० | म० | कुं० | मी० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिवा त्रिराशिपति | सू० | शु० | ज्ञ० | शु० | गु० | चं० | बु० | मं० | श० | म० | गु० | चं० |
| रात्रि त्रिराशिपति | गु० | चं० | बु० | मं० | सू० | शु० | श० | शु० | श० | मं० | गु० | चं० |

## बाल-बोधक चक्र

| पतयः | स्व० | मि० | सम | शत्रु | भाव/ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| | ३० | २२ | १५ | ७ | बल |
| गृहेश | ० | ३० | ० | ३० | |
| | १५ | ११ | ७ | ३ | बल |
| हद्देश | ० | १५ | ३० | ४५ | |
| | १० | ७ | ५ | २ | बल |
| द्रेष्काणेश | ० | ३० | ० | ३० | |
| | ५ | ३ | २ | १ | बल |
| नवमांशेश | ० | ४५ | ३० | १५ | |

### ताजिक शास्त्रानुसार ग्रहों की दृष्टि

ताजिकशास्त्र में चार प्रकार की दृष्टि मानी गई है।

(१) प्रत्यक्ष स्नेहादृष्टि—वर्ष-कुण्डली में ग्रह जहां रहता है उससे नवम् और पंचम स्थान में स्थित ग्रह को प्रत्यक्ष स्नेही ४५ कला वाली दृष्टि से देखता है। यह दृष्टि सम्पूर्ण कार्यों में सिद्धि देनेवाली, मिलाप करनेवाली तथा हितकारी मानी गई है।

(२) गुप्त स्नेहादृष्टि—कोई भी ग्रह अपने स्थान से तीसरे और ११वें स्थान में स्थित ग्रह को गुप्त स्नेहादृष्टि से देखता है। ३रे भाव की दृष्टि ४० कला वाली और ११वें भाव की दृष्टि १० कला वाली होती है। यह दृष्टि हितकारी, सौख्यवर्द्धक तथा कार्य सिद्ध करनेवाली होती है।

(३) गुप्त वैरादृष्टि—अपने स्थान से ४थे और १०वें स्थान स्थित ग्रह को कोई भी ग्रह यदि गुप्त दृष्टि से देखता है तो यह १५ कला वाली दृष्टि होती है। यह दृष्टि हानिकारक तथा पीड़ादायक है।

(४) प्रत्यक्ष वैरादृष्टि—ग्रह के स्थान से १ तथा ७वें भाव में रहनेवाले ग्रह पर प्रत्यक्ष वैरादृष्टि रहती है। यह ६० कला वाली दृष्टि होती है तथा प्राणघातक, अनिष्टकारक एवं कार्यनाश करनेवाली बताई गई है।

## दीप्तांश

वर्षफल में ग्रहों के फल के लिए उनके दीप्तांश भी देखे जाते हैं। सूर्य के १५ अंश, चन्द्र के १२ अंश, मंगल के ८ अंश, बुध के ७ अंश, गुरु के ९ अंश, शुक्र के ७ अंश और शनि के ९ अंश दीप्तांश माने गये हैं। दीप्तांश ग्रह भाव की वृद्धि करता है तथा अन्य ग्रह भाव के लिए सम माना गया है।

## वर्षेश का निर्णय

वर्ष के पंचाधिकारियों में जन्मलग्नेश, वर्षलग्नेश, मुन्थाधिप, त्रिराशिपति एवं सूर्य राशिपति अथवा चन्द्र राशिपति—जो ग्रह बलवान होकर लग्न को देखता है वही वर्ष का स्वामी माना जाता है। यदि पंचाधिकारियों में कई ग्रहों का बल समान हो तो जो लग्न को देखता है वही वर्षेश माना जाता है।

## हर्षबल

ग्रहों के हर्ष स्थान चार प्रकार के माने जाते हैं—

(१) वर्ष लग्न से सूर्य ९वें, चन्द्र ३रे, मंगल ६ठे, बुध लग्न में, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि बारहवें स्थान में हो तो ये ग्रह हर्षित कहलाते हैं।

(२) स्वयं के गृह में व अपनी उच्चराशि में ग्रह हर्षित होते हैं।

(३) वर्ष लग्न से १, २, ३, ७, ८ और ९वें भाव में स्त्री ग्रह (शुक्र, बुध, शनि और चन्द्र) तथा ४, ५, ६, १०, ११, १२वें भाव में पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) हर्षित होते हैं।

(४) पुरुष ग्रह दिन में और स्त्री ग्रह रात में हर्ष प्रवेश होने पर हर्षित होते हैं।

कर अच्छी या बुरी धारणा न बना लें, अपितु सब ग्रहों का सम्यक् प्रभाव देखें।

२. प्रत्येक ग्रह अपनी दशा अथवा मित्र की दशा में अच्छा या बुरा फल देता है।

३. स्त्री के सम्बन्ध से कही हुई बातें स्त्री की कुण्डली में पुरुष के बारे में जाननी चाहिए।

४. ग्रह को देखने के साथ-साथ उसके उच्च, नीच, स्वक्षेत्री तथा मित्रगृही को देखकर भी तदनुसार फल जानना चाहिए। इसलिए आगे के पृष्ठों में उच्च-नीच राशिगत ग्रहों का फल दिया जा रहा है।

## उच्च राशिगत ग्रहों का फल

यदि किसी की कुण्डली में सूर्य उच्च हो तो वह व्यक्ति विद्वानों में पूज्य, सहधर्मियों में नायक, भाग्यवान धनवान, तथा सुख-भोग करनेवाला होता है।

यदि चन्द्रमा उच्च का हो तो वह समाज में सम्मान पाता है। स्वभाव से चपल और विलासी प्रकृति का होता है।

मंगल उच्च राशि का होने पर वह व्यक्ति बलिष्ठ और शूरवीर होता है। कर्त्तव्यपालन में वह शिथिलता नहीं दिखाता तथा राज्य की नौकरी में उसे विशेष लाभ होता है।

यदि कुण्डली में बुध उच्च का हो तो वह व्यक्ति कुशल संपादक प्रसिद्ध लेखक अथवा कवि होता है। यश-वृद्धि से वह सन्तुष्ट रहता है तथा समाज में उसे सम्मान मिलता है।

यदि गुरु उच्च का हो तो वह व्यक्ति चतुर, सोच-समझकर कार्य करनेवाला, सुशील, ऐश्वर्यवान तथा नीति-निपुण होता है।

यदि किसी का शुक्र उच्च का हो तो वह संगीतज्ञ, काम-कला-निपुण, कई स्त्रियों के संसर्ग में रहनेवाला, विलासी, प्रिय तथा उन्नत भाग्यवाला होता है।

शनि उच्च का हो तो उसकी दशा में विशेष द्रव्य-प्राप्ति होती है, अचानक धन मिलने का योग होता है अथवा सट्टे या ला[illegible] धन-प्राप्ति होती है।

उच्च का राहु व्यक्ति को स्पष्ट बना देता है, परन्तु सा[illegible] उसे द्रव्य-प्राप्ति भी कराता है।

केतु यदि उच्च का हो तो वह राज्य म रशोन्नति प[illegible]

नीच, लम्पट तथा धोखेबाज मित्रों के संसर्ग से उसका धन नष्ट हो जाता है। ऐसा व्यक्ति सरदार तथा किसी टीम का नेतृत्व करता है।

## नीच राशिगत ग्रहों का फल

यदि किसी की कुण्डली में सूर्य नीच का हो तो वह व्यक्ति पापी, साथियों की मदद करनेवाला और नीच कर्म में तत्पर होता है।

चन्द्रमा यदि नीच का पड़ा हो तो जातक रोगी, धन को व्यर्थ ही नष्ट करनेवाला और विद्वानों का साथ करनेवाला होता है।

नीच राशिगत मंगल जातक की बुद्धि कुण्ठित कर देता है, उसके सोचे हुए काम अधूरे रहते हैं तथा वह किसी का भी एहसान भुलाते देर नहीं करता।

बुध यदि नीच का हो तो जातक जाति-द्रोही, बन्धुओं द्वारा अपमानित तथा चित्रकला आदि में प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

नीच गुरु अपनी दशा में व्यक्ति को व्यर्थ ही कलंकित करता हुआ इसके भाग्य के साथ खिलवाड़ करता रहता है।

शुक्र यदि नीच का हो तो वह व्यक्ति परिश्रम करने पर भी धन-प्राप्ति नहीं कर सकता, पश्चात्ताप की अग्नि हर समय उसके हृदय में सुलगती रहती है।

यदि किसी के शनि नीच का पड़ा हो, तो वह व्यक्ति अपव्ययी, मद्यप तथा परस्त्रीगामी होता है।

राहु नीच का हो तो वह व्यक्ति दंगल अथवा मुकदमे में जीतनेवाला होता है, परन्तु इसे द्रव्य-प्राप्ति नहीं होती।

नीच केतु व्यक्ति को मलिन मन का, दुर्बुद्धि और कष्टसहिष्णु बना देता है।

## स्वक्षेत्री ग्रहों का फल

यदि रवि अपनी राशि में हो तो वह व्यक्ति ऐश्वर्यवान, धनवान, सुन्दर तथा कामी होता है। ऐसा व्यक्ति कई स्त्रियों से घिरा रहता है।

किसीके यदि चन्द्रमा स्वगृही हो तो वह व्यक्ति तेजस्वी और रूपवान होता है, समय-समय पर उसका भाग्य खुला रहता है और अनायास द्रव्य-प्राप्ति होती है।

भौम स्वगृही हो तो वह व्यक्ति बलवान और हिम्मतवाला होता है, उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल जाती है तथा कृषि-कार्यों से उसे धन-प्राप्ति होती है।

यदि बुध स्वगृही हो तो वह व्यक्ति विद्वान्, कुशल सम्पादक और विख्यात कवि होता है। शास्त्र चर्चा में उसे विशेष आनन्द मिलता है।

गुरु अपने घर का हो तो वह व्यक्ति रसिक होता है, चिकित्सा-शास्त्र में उसे विशेष रुचि होती है।

स्वगृही शुक्र व्यक्ति को स्वतंत्र और स्वच्छन्द प्रकृति का बना लेता है, उसका धन कम नहीं होता और प्रत्येक कार्य विचारपूर्वक करता है।

यदि शनि अपने ही घर में बैठा हो, तो वह कई प्रकार के कष्ट सहते हुए भी मुस्कराता रहता है। उसका पराक्रम प्रशंसनीय होता है तथा यह जातक क्रोधी एवं उग्र स्वभाव का होता है।

यदि राहु अपने ही घर का हो तो वह व्यक्ति सुन्दर, यश अर्जित करनेवाला तथा भाग्यवान होता है।

## मित्र क्षेत्रगत ग्रहों का फल

यदि किसी की कुण्डली में सूर्य अपने मित्र के घर में बैठा हो तो वह व्यक्ति यशस्वी, दान कला में निपुण एवं समाज में व्यवहारकुशल होता है।

यदि चन्द्रमा मित्र-क्षेत्री हो तो वह व्यक्ति गुणवान, सुखी और द्रव्य संचय करनेवाला होता है।

मंगल मित्र-क्षेत्री होने पर जातक मित्रों में प्रशंसा प्राप्त करता है और जीवन में अपने भुजबल से द्रव्य संचय करके भोग-विलासमय जीवन व्यतीत करता है।

अपने मित्र के घर में हो तो वह व्यक्ति विनोदी स्वभाव का, कई प्रकार के हस्त-कौशल जाननेवाला तथा गुणवान होता है।

गुरु मित्र-क्षेत्री हो तो उस व्यक्ति की निश्चय ही उन्नति होती है। अपनी बुद्धि से वह उच्च पद प्राप्त करने में सफल होता है।

शुक्र अपने मित्र के घर में बैठा हो तो जातक कई पुत्रों का पिता तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

मित्र-क्षेत्री शनि व्यक्ति को पराश्रयी और कुटिल स्वभाव का बना देता है। ऐसा व्यक्ति धीर स्वभाव का होते हुए भी कई स्त्रियों से प्रेम करने में सफल होता है।

यदि राहु अपने मित्र के घर बैठा है, तो वह व्यक्ति भाग्यशाली तथा उच्चपद प्रत्याशी होता है।

मित्र-क्षेत्री केतु व्यक्ति को धनवान, पापी और नास्तिक बना देता है।

## शत्रु क्षेत्रगत ग्रहों का फल

यदि किसी की कुण्डली में रवि शत्रु के घर में पड़ा हो तो वह व्यक्ति दुःखी, समाज़ द्वारा अपमानित तथा कलंकित एवं अनिच्छा से नौकरी करनेवाला होता है।

चन्द्रमा शत्रु के घर में पड़ा हो, तो माता द्वारा उसे पीड़ा पहुँचती है। उसे पेट, वायु तथा हृदय की कई बीमारियाँ परेशान करती हैं।

मंगल यदि शत्रु-क्षेत्री हो तो वह जातक को दीन, हीन और निर्बल बना देता है। ऐसा व्यक्ति सर्वथा अनिश्चित मन वाला और संशयालु होता है।

शत्रु-क्षेत्र में पड़ा बुध व्यक्ति को कर्त्तव्यच्युत बना देता है, ऐसा व्यक्ति स्त्रियों के पीछे भटकनेवाला और साधारण जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

गुरु यदि शत्रु के घर में हो तो वह व्यक्ति कई कार्यों में चतुर होता है, उसकी बुद्धि तीक्ष्ण और नई प्रतिभा से सबको चमत्कृत करता हुआ भी वह व्यक्ति हीन भाग्यवाला होता है।

शत्रु-क्षेत्री शुक्र मनुष्य को दास जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर कर देता है, वह व्यक्ति एक साथ कई स्थानों पर नौकरी करता है।

यदि शनि शत्रु-क्षेत्र में पड़ा हो तो वह व्यक्ति उद्यम और परिश्रम करते हुए भी जीवन-भर दुःखी रहता है।

शत्रु-क्षेत्री राहु व्यक्ति के भाग्य को चमकाने वाला और उसके सोचे हुए कार्य सम्पादित करनेवाला होता है।

यदि केतु शत्रु के घर में पड़ा हो तो वह व्यक्ति गड़ा हुआ धन प्राप्त करता है, अथवा लाटरी या सट्टे से अल्प धन पाता है, परन्तु ऐसा धन चिरस्थायी नहीं रहता।

**त्रिकोण राशियों[1] में गये ग्रहों का फल**—सूर्य यदि मूल त्रिकोण में हो तो व्यक्ति धनवान तथा समाज में आदर प्राप्त करनेवाला होता है।

मूल त्रिकोणगत चन्द्र व्यक्ति को सुखी, सुन्दर तथा भाग्यवान बना देता है।

यदि भौम मूल त्रिकोण में हो, तो व्यक्ति दुष्ट, क्रोधी, निर्बल और कामचोर होता है।

बुध मूल त्रिकोण में होने पर व्यक्ति सिद्धान्त गुणी, राजमान्य,

---

१. लग्न से पहला, पांचवां और नवां ग्रह।

सैनिक, चिकित्सक, विद्वान या प्रोफेसर होता है।

गुरु हो तो भोगी तथा कीर्ति स्थापित करता हुआ वह व्यक्ति अपने भाग्य को स्वयं बनाने में सक्षम होता है।

यदि शुक्र मूल त्रिकोण में हो तो वह कई पुरस्कार जीतता है, वह विदेशों का भ्रमण करता हुआ प्रशंसा प्राप्त करता है।

शनि मूल त्रिकोण में स्थित होने पर वह सैनिक, सेना-अफसर, वैज्ञानिक और अस्त्र-शस्त्रों को चलाने में निपुण होता है।

राहु मूल त्रिकोण में हो तो व्यक्ति लम्पट और बकवादी होता है।

यदि किसी की कुण्डली में केतु मूल त्रिकोण में हो तो वह व्यक्ति धनवान तथा कामिनी-प्रिय होता है।

## राशियों में नव ग्रहों का फल

### रवि

यदि किसी की कुण्डली में रवि मेष राशि का हो तो उस व्यक्ति का आत्मबल मजबूत होता है, प्रत्येक कार्य में चातुर्य दिखाता हुआ वह व्यक्ति यश अर्जित करता है। ऐसा जातक उदार, प्रतापी, साहसी और महत्त्वाकांक्षी होता है।

वृष राशि पर सूर्य हो तो वह व्यक्ति स्त्रियों से अकारण द्वेष करनेवाला, पापों से डरनेवाला, शान्त तथा चंचल चित्त वाला होता है।

यदि सूर्य मिथुन में हो तो वह व्यक्ति विचारवान, विवेकी, ज्ञान की खोज में तत्पर रहनेवाला, मधुरभाषी, पुरानी वस्तुओं को इकट्ठा करने का शौकीन, इतिहास तथा ज्योतिषशास्त्र में पारंगत होता है।

यदि सूर्य कर्क राशि में हो तो वह व्यक्ति कर्त्तव्य को सर्वोपरि मान्यता देनेवाला, चंचल, समानता में विश्वास रखनेवाला, प्रसिद्ध कीर्तियुक्त एवं परोपकारी होता है।

सिंह राशि पर सूर्य हो तो वह व्यक्ति क्रोधी, जंगल में पशु-पक्षियों का शिकार करनेवाला, धैर्यशाली और पुरुषार्थी होता है। ऐसा व्यक्ति कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी नहीं घबराता है।

यदि कन्या राशि पर सूर्य हो तो वह व्यक्ति शक्तिहीन और मन्दाग्नि का शिकार होता है। ऐसा व्यक्ति लेखन-कला में कुशल होते हुए भी उचित स्थान प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाता।

तुला राशि में सूर्य होने पर वह परदेश-गमन-प्रिय होता है। मन्दाग्नि

रोग से पीड़ित होता हुआ भी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करने में हिचकिचाता है और स्त्रियों के चक्कर में व्यर्थ लालसा पालता हुआ व्यथित रहता है।

सूर्य यदि जातक की कुण्डली में वृश्चिक राशि का हो तो वह व्यक्ति समाज द्वारा मान्यता प्राप्त करता है, ऐसा व्यक्ति लोभी तथा गुप्त रोगों से पीड़ित रहता है। चिकित्साशास्त्र में रुचि लेता है तथा साहस से प्रत्येक कार्य में तत्पर रहता है।

धनु राशि का सूर्य जातक को योग मार्ग की शिक्षा देता है। वह व्यक्ति आस्तिक, साधु-सन्तों की सेवा करनेवाला, व्यवहार-कुशल, दयालु और स्थिरचित्त होता है।

यदि मकर लग्न में सूर्य हो तो वह झगड़ालू स्वभाव का उद्दण्ड व्यक्ति होता है, लोभ में गलत कार्य करने को भी तत्पर हो जाता है। ऐसा व्यक्ति चंचल, बकवादी और दुराचारी होता है।

कुम्भ राशि में सूर्य हो तो व्यक्ति कार्य-कुशल होता है। ऐसा व्यक्ति घोर स्वार्थी, मित्रों को धोखा देनेवाला तथा संशयालु होता है।

यदि मीन राशि पर सूर्य हो तो जातक ज्ञानी, विवेकी, स्थिरचित्त, बुद्धिमान, भाग्य-निर्माता तथा श्वसुर से धन प्राप्त करता है।

## चन्द्रमा

मेष राशि का चन्द्र हो तो व्यक्ति बहु सम्पत्तिशाली, दृढ़ शरीर वाला और शूरवीर होता है। जल में इसकी मृत्यु सम्भव है तथा घर की स्त्री इससे सन्तुष्ट नहीं रहती।

वृष राशिगत चन्द्र व्यक्ति को दानी-मानी और धनी बना देता है। ऐसा व्यक्ति कन्या सन्तति-बहुल होने से दुखी रहता है। कफ रोग से यह जातक चिड़चिड़ा हो जाता है।

यदि चन्द्र मिथुन राशि पर हो तो ऐसा व्यक्ति मर्मज्ञ, विद्वान्, नीति-निपुण होता है। रति-कुशल व्यक्ति आँखों का चिकित्सक होता है।

कर्क राशि पर चन्द्रमा हो तो व्यक्ति उन्मादी और रोगी होता है, बहुसम्पत्तिशाली और बहुसन्ततिवाला यह जातक जलविहारी, कामान्ध और कृतज्ञ होता है। ज्योतिष, पुरातत्त्व आदि विषयों में इसकी रुचि रहती है।

सिंह राशि पर चन्द्रमा हो तो व्यक्ति बलिष्ठ योद्धा तथा दन्त-रोगी होता है। ऐसा व्यक्ति अल्प सन्ततिवान तथा माता-पिता का भक्त

होता है।



कन्या राशिगत चन्द्र व्यक्ति को विद्वान् और दीर्घजीवी बना देता है। यह कई कलाओं में निपुण, मधुरभाषी और सदाचारी होता है।

यदि तुला राशि में चन्द्रमा हो तो व्यक्ति कृषि-कार्यों में अच्छा धन कमा सकता है। ऐसा नर बलिष्ठ, हृदय-पुष्ट और सैनिक या जमींदार-सा जीवन व्यतीत करता है।

वृश्चिक राशि का चन्द्रमा हो तो व्यक्ति देवताओं की खिल्ली उड़ाता हुआ भी उससे डरनेवाला होता है। ऐसा व्यक्ति पर-स्त्रीरत, लोभी तथा गुणीजनों का आदर करनेवाला होता है।

धनु राशि पर चन्द्रमा हो तो वह व्यक्ति कुशल शिल्पी, धनवान तथा समाज में आदर पानेवाला होता है। यह व्यक्ति प्रभावोत्पादक वक्ता अथवा नेता होता है।

मकर राशिगत चन्द्रमा कवि, क्रोधी और निर्बल होता है। संगीत कला में इसकी रुचि होती है तथा धार्मिक कार्यों में धनव्यय करने में यह सुख अनुभव करता है।

कुम्भ राशिगत चन्द्रमा क्षीण शरीर का तथा उन्मत्त स्वभाव के जातक को आलसी और दुःखी बना लेता है। ऐसा पुरुष शिल्पकलाओं में प्रवीण होता है।

यदि कुण्डली में मीन राशि पर चन्द्र हो तो व्यक्ति धार्मिक और शिल्पकार होता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर और बहुभोगी होता है। शिल्प तथा हस्तकला में प्रवीण होने के कारण यह व्यक्ति धनवान होता हुआ सुखभोग करता है।

## मंगल

किसी की कुण्डली में यदि मेष राशि पर मंगल हो तो व्यक्ति सत्य बोलनेवाला, धैर्यवान, शूरवीर, सैनिक, नेता या विद्वान् होता है।

वृष राशि पर चन्द्र हो तो उसके पुत्र उसे दुःख देते हैं तथा वह पाप-पूर्ण जीवन व्यतीत करता हुआ दुःख भोगता रहता है। लड़ाकू प्रवृत्ति के फलस्वरूप बन्धु-बान्धवों से उसका द्वेष रहता है।

यदि मिथुन राशि पर मंगल हो तो वह व्यक्ति लोगों की मदद करनेवाला, परदेश में जाकर रहनेवाला तथा शिल्पकार होता है।

कर्क में यदि मंगल हो तो ऐसा व्यक्ति गरीब और सुख-सुविधा से वंचित रहकर दिन गुजारता है। रोगी और सुख की खोज में भटकता

हुआ यह सेवकवृत्ति धारण कर लेता है।

सिंह राशि पर मंगल होने से व्यक्ति शूरवीर, परोपकारी, कार्य-निपुण, स्नेह रखनेवाला और सदाचारी जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

कन्या राशिगत मंगल व्यक्ति को लोकमान्य, व्यवहारकुशल, आस्तिक, सुखी तथा माता-पिता का भक्त बना देता है।

तुला राशि पर यदि मंगल हो तो वह व्यक्ति कुशलता से दूसरों के धन पर मौज उड़ाता है। परदेश-निवासी तथा कामी जीवन व्यतीत करता हुआ भी यह व्यक्ति विद्वानों द्वारा आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

वृश्चिक राशि पर यदि मंगल हो तो व्यक्ति या तो पक्का व्यापारी बनता है या फिर चोरों, ठगों और बदमाशों का सरदार बनता है। यह व्यक्ति पातकी, झूठा होते हुए भी शोक से जीवन बिताता है।

यदि मंगल धनु राशि पर हो तो व्यक्ति क्रूर और दुराचारी होता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों की सेवा में तन-मन झोंक देता है।

मकर राशि पर यदि मंगल हो तो व्यक्ति ख्यातिप्राप्त नेता, कुशल सम्पादक अथवा पराक्रमी नायक बनता है। ऐश्वर्य और भोग-विलास में जीवन व्यतीत करता हुआ वह स्वच्छन्द जीवन बिताने में सक्षम होता है।

यदि मंगल कुम्भ राशि पर हो तो उसका धन सट्टे में खत्म हो जाता है। अधिक व्यसन से उसकी देह जर्जर हो जाती है तथा आचारहीन, मद्यप-सा जीवन बिताने के लिए मजबूर हो जाता है।

मीन राशि पर यदि मंगल हो तो जातक रोगी, मन्त्र-तन्त्र में विश्वास रखनेवाला, नास्तिक, हठी, धूर्त, वाचाल और बन्धुओं को पीड़ा पहुंचानेवाला होता है।

## बुध

यदि जातक की कुण्डली में बुध मेष राशि पर हो तो वह कृश देह का होते हुए भी हिम्मत और साहस वाला होता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, कुशल प्रेमी, सत्य बोलनेवाला, स्त्रियों को प्रसन्न करनेवाला, नट, लेखक, कर्जे पर कर्जा करनेवाला होता है।

यदि बुध वृष राशि पर हो तो वह व्यक्ति रति-चर्या में निपुण, शास्त्रों का जाननेवाला, हृष्ट-पुष्ट, मधुरभाषी, धनवान और विलासी

होता है।

मिथुन राशि में पड़ा हुआ बुध लब्धप्रतिष्ठ वक्ता, मीठा बोलनेवाला, शास्त्रोंका जानकार, लेखक और सदाचारी बनता हुआ भी जातक को सन्तान-दुःख प्रदान करता रहता है।

यदि बुध कर्क राशि पर हो तो व्यक्ति निश्चय ही परस्त्रीरत होता है। ऐसा व्यक्ति गाने-बजाने का शौकीन, कामी, परिश्रमी और विदेश में रहने का इच्छुक होता है।

यदि बुध सिंह पर हो तो वह व्यक्ति ठग, धोखा देनेवाला, कपटी, व्यभिचारी और मिथ्या भाषण करने में पटु होता है।

कन्या राशि पर बुध जिसकी कुण्डली में हो वह व्यक्ति सुप्रसिद्ध साहित्यकार, विख्यात कवि अथवा कुशल सम्पादक होता है। ऐसा व्यक्ति भाषण देने में निपुण होता है।

यदि बुध तुला राशि पर हो तो जातक चतुर वक्ता एवं व्यापार-कार्यों में दक्ष होता है। शिल्पकला में प्रवीण यह व्यक्ति कुटुम्ब का पालन-पोषण करनेवाला, आस्तिक व धार्मिक मनोवृत्ति का होता है।

यदि वृश्चिक राशि पर बुध हो तो व्यक्ति दुराचारी, लम्पट, धूर्त, अनेक प्रकार के व्यसन वाला, मूर्ख और कर्जा बढ़ानेवाला होता है।

धनु राशि का बुध व्यक्ति को उदार, प्रसन्नचित्त, राजनीतिज्ञ, विद्वान, लेखक, आलोचक अथवा विरोधी पार्टी का नेता बना लेता है।

यदि बुध मकर राशि में हो तो व्यक्ति कुलहीन, दुष्ट, दुराचारी, दुस्साहस करने वाला, मिथ्याभाषी तथा मूर्ख होता है।

कुम्भ राशि में यदि बुध हो तो वह व्यक्ति कुटुम्ब द्वारा तिरस्कृत होकर परदेश में निवास करता है। ऐसा जातक दुःखी, अल्पधनी और हीन मनोवृत्ति का होता है।

यदि जातक की कुण्डली में मीन राशि पर बुध स्थित हो तो वह व्यक्ति परदेश में धन कमानेवाला, कार्य-कुशल, मीठा बोलनेवाला, छली एवं स्वाभिमानी होता है।

## गुरु

यदि किसीकी कुण्डली में मेष राशि पर गुरु हो तो वह व्यक्ति वकील धन कमानेवाला, असत्यवादी, प्रसिद्ध कीर्तिवान एवं विजयी होता है।

वृष राशि पर गुरु हो तो वह व्यक्ति देवताओं में विश्वास रखने-

वाला, स्थूल शरीर, बलवान, विज्ञान और चिकित्साशास्त्र में प्रवीण होता है।

मिथुन राशि का गुरु होने से जातक विज्ञान विषय में रुचि लेने-वाला होता है, उसे जीवन में अनायास धन प्राप्त होता है तथा लेखक बनकर कीर्ति प्राप्त करता है। व्यवहार-कुशल होता है।

कर्क राशि पर गुरु होने से व्यक्ति विद्वान्, सत्य बोलनेवाला, साम्य-वादी विचारों का प्रशंसक, योगी, सुखी, धनी और धर्मात्मा होता है।

यदि सिंह राशि में गुरु हो तो जातक शत्रुओं को जीतकर शत्रुजित कहलाता है। ऐसा व्यक्ति सभा में उपस्थित सभी लोगों को भाषण से मन्त्र-मुग्ध कर देता है।

कन्या राशि का गुरु भोगी, विलासी, चित्रकला-प्रवीण तथा चंचल स्वभाव का बनाने के साथ-साथ व्यक्ति को ऐशो-आराम का शौकीन भी बना देता है।

यदि गुरु तुला में हो तो जातक बुद्धिमान, व्यापारकुशल, कवि या लेखक होता है। वह सुखी जीवन बिताता हुआ यश का भागी होता है।

वृश्चिक राशि का गुरु व्यक्ति को राज्यकार्य-दक्ष, पुण्यात्मा और शास्त्र-चतुर बनाने में सहायक होता है।

यदि धनु राशि में बृहस्पति हो तो जातक धूर्त होने के साथ-साथ नीच और निम्न व्यक्तियों से सम्पर्क रखता है। उसका दम्भ उसे धीरे-धीरे पतन के मार्ग पर ले जाता हैं। ऐसा व्यक्ति किसी की भी सलाह नहीं मानता।

मकर राशिगत गुरु जिसकी कुण्डली में होता है, वह चाहे जितना भी परिश्रम करे, उसका पूरा फल उसे नहीं मिलता। धन का सदैव उसे अभाव रहता है।

यदि गुरु कुम्भ राशि में हो तो वह व्यक्ति डरपोक स्वभाव वाला, कपटी और पत्नी तक को धोखा देनेवाला होता है। उसकी उम्र विदेशों में ही कटती है।

यदि गुरु मीन राशि में हो तो व्यक्ति दार्शनिक, लेखक, गर्वहीन, शान्त, सहिष्णु और व्यवहारकुशल होता है। ऐसा व्यक्ति साहित्य का विशेष प्रेमी होता है।

## शुक्र

यदि मेष राशि पर शुक्र हो तो वह व्यक्ति दुराचारी और अवि-

श्वसनीय होता है। ऐसा व्यक्ति झगड़ालू और व्यर्थ की रार बढ़ानेवाला तथा वेश्यागामी होता है। लम्पटता, धूर्तता, चञ्चलता उसके विशेष गुण होते हैं।

यदि वृष राशि पर शुक्र हो तो वह व्यक्ति ऐश्वर्यवान और परोपकारी होता है। अनेक शास्त्रों और विद्याओं का वह जानकार होता है, सुन्दर स्वभाव की कई स्त्रियों के मन-मन्दिर का देवता होता है।

मिथुन राशिगत शुक्र हो तो व्यक्ति चित्रकला में निपुण होता है। साहित्यकारों के साथ उठता-बैठता है और कवि-हृदय व सज्जन होता है।

यदि शुक्र कर्क राशि में हो तो व्यक्ति धार्मिक स्वभाव का परोपकारी होता है, वह सदैव धन का इच्छुक रहता है और उसके कार्य सफलता के पास आते-आते रुक जाते हैं।

सिंह राशि में यदि शुक्र हो तो वह व्यक्ति सदैव चिन्तातुर रहता है, पुत्र और पुत्रियों से उसे कष्ट मिलता है तथा जीवन के अन्तिम दिनों मे उसे भाँति-भाँति के रोग आ घेरते हैं।

यदि शुक्र कन्या राशि में हो तो व्यक्ति अति कामी होता है, सभा में आदर प्राप्त करता है और सट्टे द्वारा अपना सारा धन लुटा देता है। वह भोगी, रोगी और वीर्यहीन होता है।

तुला राशि का शुक्र व्यक्ति को कई कार्यों में दक्ष बना लेता है। अपने बन्धुओं से दूर उसकी आजीविका चलती है और कार्यकाल में यश प्राप्त करता रहता है।

यदि शुक्र वृश्चिक राशि पर हो तो उसका धन कुकर्मों से एकत्र होता है, दिनोंदिन उस पर ऋण बढ़ता ही रहता है तथा वह क्रोधी और दरिद्र होता है। वह गुप्तांगों में रोग होने से बेचैन रहता है।

यदि धनु राशि पर शुक्र स्थित हो तो उसे पिता द्वारा अर्जित धन नहीं मिलता। वह अपने भुजबल से धन एकत्र करता है तथा दान करता हुआ पुण्यलाभ प्राप्त करता है। समाज में उसकी कद्र होती है, तथा उसके जीवन से अन्य लोग प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

यदि शुक्र मकर राशि पर स्थित हो तो वह जातक निर्बल तथा कृपण हृदय होता है। मान रखता हुआ भी वह दुःखी रहता है तथा एकान्त में विचरण करना इसका प्रिय विषय रहता है।

कुम्भ राशिगत शुक्र जिसकी कुण्डली में हो तो वह चिन्ता से ग्रसित, रोगों से दुःखी, परस्त्री में अनुरक्त तथा धन को व्यर्थ ही खर्च करनेवाला

होता है। धर्मादिक कर्मों में उसकी कतई रुचि नहीं रहती।

यदि मीन राशि में शुक्र हो तो वह व्यक्ति शिल्पादि कार्यों का जानकार होता है, अपने कार्यों में दक्ष तथा कृषि-कर्म का जानकार होता है। ऐसा जातक जौहरी, धनी तथा शान्त स्वभाव का होता है।

## शनि

यदि किसी की कुण्डली मेष राशि का शनि हो तो वह व्यक्ति आत्मबलहीन और निर्बल होता है। किसी का भी अहसान वह शीघ्र ही भुला देता है व दुराचारी कामों में अपने समय को बरबाद करता है।

यदि शनि वृष राशि पर हो तो वह व्यक्ति दुराचारी, द्रव्यहीन, मूर्ख और असत्यभाषी होगा। ऐसे व्यक्ति के वचनों का विश्वास कठिनता से ही होता है।

मिथुन राशि स्थित शनि, व्यक्ति को कपटी, दुराचारी, पाखण्डी और निर्धन बनाने में सहायक होता है। कामातुर रहते हुए भी ऐसे व्यक्ति को कोई नहीं चाहता।

यदि शनि कर्क राशि पर हो तो जातक बाल्यावस्था में अत्यन्त दुःखी रहता है। माता का उसे नहीं के बराबर स्नेह मिलता है, इसका स्वभाव चञ्चल और अस्थिर होता है, जिसके कारण कोई उसका विश्वास करने को तैयार नहीं होता।

सिंह राशि का शनि होने से व्यक्ति लेखक बनता है। जासूसी कार्यों अथवा जासूसी लेखन में इसकी विशेष रुचि रहती है और साधारण जीवन व्यतीत करता है।

यदि शनि कन्या राशि पर हो तो जातक बलवान, अपने क्षेत्र का कुशल कार्यकर्त्ता, अवसरवादी, लेखक, सम्पादक अथवा कट्टर आलोचक होता है।

यदि शनि तुला में हो तो जातक नेतृत्व वहन करने में सक्षम होता है। वह सदैव अपनी उन्नति की ओर अग्रसर रहता है तथा भुजबल से यश अर्जित करता है।

वृश्चिक राशिगत शनि जातक को स्त्रीहीन, क्रोधी तथा लम्पट बना देता है। हिंसक कार्यों में वह रुचि लेता है तथा लोभ में आकर जघन्य से जघन्य कार्य करने को तत्पर हो जाता है।

यदि शनि धनु राशि पर हो तो जातक व्यवहारकुशल होता है। पुत्र की कीर्ति से उसकी प्रसिद्धी फैलती है तथा बाल्यावस्था से यौवन

तथा यौवन से वृद्धकाल में अधिक सुख देखता है।

मकर राशि स्थित शनि जातक को मक्कार, छली और परिश्रमी बना लेता है। भोग भोगने में यह तत्पर रहता है तथा शिल्पादि कार्यों में अत्यन्त कुशल एवं दक्ष होता है।

यदि शनि कुम्भ राशि पर स्थित हो तो जातक कई प्रकार के व्यसन करनेवाला, देवी-देवताओं को ठुकरानेवाला, परिश्रमी तथा उन्मादी स्वभाव का होता है।

मीन राशि में शनि हो तो व्यक्ति हतोत्साही होता है, अपने व्यक्तित्व का वह स्वयं नाश करता है और अविचार से बना-बनाया कार्य बिगाड़ देता है। ऐसा व्यक्ति शिल्पकार और कठोर स्वभाव का होता है।

## राहु

यदि किसी की कुण्डली में मेष राशि पर राहु हो तो जातक आलसी और अकर्मण्य होता है। अपने अविवेक से चारों ओर शत्रुओं की कतार इकट्ठी कर लेता है।

वृष राशि पर राहु हो तो व्यक्ति कुरूप और मटमैले रंग का होता है। इसका स्वभाव चञ्चल और अस्थिर होता है, जिसके कारण कोई उसका विश्वास करने को तैयार नहीं होता।

यदि मिथुन राशि का राहु हो तो जातक योगाभ्यासी होता है। गायन और वाद्य आदि में उसकी रुचि रहती है और दीर्घ आयु भोगता हुआ वह सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

कर्क राशि का राहु व्यक्ति को उदार बनाने के साथ-साथ योगी भी बना लेता है। मित्र उसका धन खा लेते हैं और कई बार कपट से छला जाता है।

सिंह में यदि राहु हो तो जातक चतुर, नीतिवान, सत्पुरुष और सोच-विचारकर आगे बढ़नेवाला एवं व्यवहारकुशल होता है।

कन्या का राहु व्यक्ति को लोकप्रिय बनने में मदद करता है। ऐसा व्यक्ति कवि, लेखक, दार्शनिक अथवा गायन विद्या में निपुण होता है।

यदि तुला राशि में राहु हो तो जातक की उम्र थोड़ी होती है। वह किसी के द्वारा गोद लिया जाता है, जिससे उसे धनप्राप्ति होती है। अपने कार्य में दक्ष ऐसा व्यक्ति दांतों के रोग से पीड़ित रहता है।

यदि राहु वृश्चिक राशि में हो तो व्यक्ति धूर्त, निर्बल, निर्धन और रोगी होता है। उसका धन डाक्टर और वैद्य हड़प लेते हैं तथा वह अन्य

व्यर्थ की चिन्ताओं से ग्रसित रहता है।

धनु में यदि राहु हो तो व्यक्ति छोटी उम्र में ही दुःख भोगने लग जाता है। ऐसा व्यक्ति निश्चय ही दूसरे व्यक्ति द्वारा गोद लिया जाता है तथा वह मित्रों को धोखा देने में पटु होता है। इस प्रकार के जातक से उसकी स्त्री अप्रसन्न रहती है।

यदि मकर राशि में राहु हो तो व्यक्ति का भाग्योदय विवाह के वाद खुलता है। ऐसा जातक श्रेष्ठ, गुणज्ञ और शायरी करने में चतुर होता है।

कुम्भ राशि में यदि राहु हो तो जातक कुटुम्बहीन तथा दाँतों का रोगी होता है। वह बहुत कम बोलता है पर जो कुछ भी कहता है, उसका सामने वाले व्यक्ति पर पूरा असर पड़ता है। लेखक होने पर भी धन का सदा अभाव रहता है।

यदि मीन राशि में राहु होता है तो जातक आस्तिक, शान्तचित्त वाला, सहृदय, कार्य-दक्ष और विभिन्न कलाओं का प्रेमी होता है।

## केतु

यदि जातक की कुण्डली में मेष राशि पर केतु हो तो व्यक्ति स्वाभिमानी, क्रोध में जलनेवाला, वात-रोग से पीड़ित और कई भाषाओं को जाननेवाला होता है।

वृष राशि पर केतु हो तो जातक दुःखी और निरुद्यमी होता है। व्यर्थ में बकवास करनेवाला वह व्यक्ति किसीकी भी सहानुभूति अर्जित नहीं कर पाता। धन की सदैव उसके पास कमी ही रहती है।

यदि मिथुन राशि में केतु हो तो साधारण व्यक्तित्व का पुरुष कम आय पर ही सन्तोष करके बैठा रहता है। कमी होने के कारण शत्रु नित नये पैदा होते रहते हैं तथा कम उम्र में ही बहुत-कुछ दुःख देख लेता है।

कर्क राशि का केतु जातक को भूत-प्रेतों से पीड़ित रखता है, वात-विकारी होने के कारण उसे कई प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं।

यदि केतु सिंह राशि का हो तो व्यक्ति डरपोक और क्रोधी होता है। उसकी मृत्यु साँप के डसने से होती है तथा वह कई कलाओं की जानकारी रखता है।

कन्या राशि स्थित केतु जातक को रोगग्रस्त, मंदाग्नि पीड़ित और मूर्ख बना देता है। ऐसा व्यक्ति अपनी सन्तान तथा स्त्री से सदैव पीड़ित रहता है।

यदि केतु तुला राशि पर हो तो अठ्ठाईसवें वर्ष के बाद श्वेत कुष्ठ होने का भय रहता है। वह कामान्ध होकर जगह-जगह अपमानित होता है।

वृश्चिक राशि का केतु जातक को धूर्त एवं वाचाल बना देता है। रुपयों की चिन्ता में वह दिनोंदिन पीला पड़ता रहता है तथा यौवनकाल में कुष्ठ के लक्षण प्रकट होते हैं।

यदि धनु राशि में केतु हो तो जातक धूर्त और असत्य बोलनेवाला होता है। वह अपनी चालाकी, ठगी और कला से दूसरे के धन पर ही मौज करता है।

मकर राशि में केतु हो तो व्यक्ति परिश्रम करनेवाला, पराक्रमी और नायक होता है।

यदि कुम्भ में केतु हो तो व्यक्ति गरीब, कान का रोगी और इधर-उधर भटकनेवाला होता है।

यदि जातक की कुण्डली में मीन राशि का केतु हो तो कार्यपरायण होते हुए भी जातक भाग्यहीन और डरा-डरा-सा जीवन व्यतीत करता है।

# ८ : दशा-विचार

दशाएँ मुख्यत: तीन प्रकार की मानी गई हैं—अष्टोत्तरी, विंशोत्तरी, योगिनी। दक्षिण में अष्टोत्तरी दशा से तथा उत्तर भारत में प्रधानत: विंशोत्तरी दशा से ही शुभाशुभत्व जाना जाता है। मारकेश का निर्णय भी विंशोत्तरी दशा से ही किया जाता है।

## विंशोत्तरी

इस दशा में मनुष्य की १२० वर्ष की आयु मानकर ग्रहों का विभाजन किया गया है, जिसके फलस्वरूप सूर्य की दशा ६ वर्ष, चन्द्रमा की १० वर्ष, मंगल की ७ वर्ष, राहु की १७ वर्ष, गुरु की १६ वर्ष, शनि की १९ वर्ष, बुध की १७ वर्ष, केतु की ७ वर्ष एवं शुक्र की २० वर्ष की दशा बताई गई है।

इन ग्रहों का क्रम भी इस प्रकार से रहता है। जन्म-नक्षत्र के अनु-

सार ग्रह की दशा मानी गई है अर्थात् बालक के जन्म के समय में जो नक्षत्र होता है उस नक्षत्र से सम्बन्धित ग्रह की दशा भी प्रारम्भ हो जाती है। अगले पृष्ठों पर ग्रह, उनकी दशा, वर्ष तथा उससे सम्बन्धित नक्षत्र दिए जा रहे हैं।

उदाहरणार्थ—यदि किसीका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र में हो तो उसके जन्म से बृहस्पति की दशा प्रारम्भ होती है जो १६ वर्ष की मानी गई है, इसके बाद शनि की दशा प्रारम्भ होगी, जिसकी अवधि १९ वर्ष है, इसी प्रकार आगे समझनी चाहिए।

जन्म के समय बालक का नक्षत्र जितने अंश भोग चुका होता है यानी बालकके जन्म के समय जितने अंशों तक नक्षत्र बीत चुका होता है, उसी अनुपात में उस ग्रह की दशा भी बालक अपने जन्म से पूर्व भोग लेता है। उदाहरणार्थ—भरणी नक्षत्र से आधे अंश बीतने पर बालक का जन्म हुआ तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि भरणी से सम्बन्धित ग्रह शुक्र की आधी दशा (१० वर्ष) बालक अपने जन्म से पूर्व भोग चुका है। इसी प्रकार अन्य स्थिति में भी समझना चाहिए।

## जन्म-नक्षत्र द्वारा ग्रहदशा बोधक चक्र

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | चन्द्र | भौम | राहु | गुरु |
| ६ | १० | ७ | १८ | १६ |
| कृ. | रो. | मृ. | आर्द्रा | पुन. |
| उ. फा. | ह. | चि. | स्वा: | वि. |
| उ. षा. | श्र. | न. | श. | पू. भा. |

| | | | |
|---|---|---|---|
| शनि | बुध | केतु | शुक्र |
| १९ | १७ | ७ | २० |
| पुष्य | आश्ले. | म. | पू. फा. |
| अनु. | ज्ये. | म. | पू. षा. |
| उ. भा. | रे. | म. | भ. |

### अन्तर्दशा

प्रत्येक ग्रह की महादशा में ९ ग्रहों की अन्तर्दशा होती है, जैसे सूर्य की महादशा मे पहली अन्तर्दशा सूर्य की, दूसरी चन्द्रमा की, तीसरी

जिस ग्रह का हर्षबल होता है वह ५ विश्वा बल प्राप्त करता है।

जिस ग्रह का हर्षबल ५ विश्वा हो वह अल्पबली, १० विश्वा हो वह मध्यबली, १५ विश्वा हो वह पूर्णबली और शून्य विश्वा हो वह निर्बल ग्रह माना जाता है। हर्षित ग्रह अपनी दशा आने पर इच्छा फल देते हैं।

## षोडश योग

मुख्यत: ताजिकशास्त्र में वर्ष-फल में सोलह योग माने गये हैं। इसमें लग्न के स्वामी को लग्नेश तथा शेष भावों के स्वामियों को कार्येश कहा गया है। इन दोनों के योग से ही ये सोलह योग बनते हैं।

(१) इक्कवाल—केन्द्र (१, ४, ७ और १०वां स्थान) और पणफर (२, ५, ८, ११) में सभी ग्रह हों तो 'इक्कवाल' योग बनता है। इस योग के होने से जातक की उन्नति होती है, राज्य की ओर से तरक्की मिलती है तथा यश, धन और संतान की प्राप्ति होती है। यदि ३, ६, ९ और १२वें भाव में कोई ग्रह न हो तो ऐसा इक्कवाल योग समस्त अरिष्ट को भंग करनेवाला माना गया है।

(२) इन्दुवार—आपोक्लिम (३, ६. ९, १२) में सभी ग्रह हों तो 'इन्दुवार' योग होता है। इस योग के होनेसे सामान्य सुख की प्राप्ति होती है, परन्तु उस वर्ष उसकी उन्नति के मार्ग में कई प्रकार की बाधाएँ उपस्थित होती रहती हैं।

(३) इत्थशाल—इस योग के तीन भेद हैं—इत्थशाल, पूर्ण-इत्थशाल, भविष्यत् इत्थशाल।

(क) लग्नेश तथा कार्येश दोनों में जो मन्दगति पर हो तथा वह शीघ्रगति वाले ग्रह से अधिक अंश पर होकर परस्पर दृष्टि रखता हो तो 'इत्थशाल' योग बनता है।

(ख) लग्नेश और कार्येश में मन्दगति ग्रह से शीघ्रगति ग्रह १ विकला से ३० विकला तक न्यून हो तो वह 'पूर्ण इत्थशाल' योग कहलाता है।

(ग) मन्दगति (चन्द्र, बुध, सूर्य, भौम, गुरु और शनि उत्तरोत्तर मन्दगति ग्रह कहलाते हैं) ग्रह जिस राशि में हों उससे पिछली राशि में शीघ्रगति ग्रह हो तो 'भविष्यत् इत्थशाल' योग बनता है।

लग्नेश से जिन-जिन भावों के स्वामियों का इत्थशाल योग हो उन भाव-सम्बन्धी लाभों को जातक प्राप्त करता है। तीसरे स्थान से भाई,

पाँचवें स्थान से संतान, सातवें से स्त्री और दसवें स्थान से राज्य-सम्बन्धी शुभाशुभ जानना चाहिए। इत्थशाल योग जातककी कार्यसिद्धि करनेवाला, उन्नतिशील और मनोवांछित कार्य पूर्ण करनेवाला माना गया है, परन्तु इस योग में लग्नेश तथा कार्येश की दृष्टि लग्न तथा कार्य भाव पर होनी नितान्त आवश्यक है।

(४) ईशराफ—मन्दगति ग्रह से शीघ्रगति ग्रह अधिक-से-अधिक एक अंश आगे हो तो 'ईशराफ' योग बनता है। इसे 'मूशरिफ' योग भी कहते हैं। यह योग शुभग्रह से युक्त होने पर शान्ति, सुख, प्रेम और आनन्द प्रदान करता है तथा अशुभ ग्रहों से युक्त होने पर दुःख, चिन्ता एवं मानसिक क्लेश को भी बढ़ाता है।

(५) यमय—लग्नेश कार्येश में, जब शीघ्रगति ग्रह थोड़े अंशों पर व मन्दगति ग्रह अधिक अंशों पर हो और दोनों एक-दूसरे को न देख रहे हों तथा इन दोनों के बीच मन्दगति ग्रह दीप्तांश अन्तर से देख रहा हो तो 'यमय' योग बनता है। जिस जातक के वर्ष में ऐसा योग पड़ता है तो उस वर्ष उस व्यक्ति का कार्य तुरन्त हो जाता है और अन्य लोग उस कार्य में भरपूर सहायता देते हैं।

(६) नक्त—लग्नेश तथा कार्येश में जो शीघ्रगति ग्रह हो वह थोड़े अंश पर और मन्दगति ग्रह अधिक अंशों पर हों एवं परस्पर न देख रहे हों तो 'नक्त' योग होता है। इस योग का फल भी यमय योग के तुल्य ही समझना चाहिए।

(७) मणऊ—लग्नेश तथा कार्येश में जो शीघ्रगति ग्रह हो उससे हीनाधिक अंश पर शनि या मंगल हों तथा शीघ्रगति ग्रह को शत्रु देख रहे हों तो 'मणऊ' योग होता है। जिस वर्ष में ऐसा योग होता है, वह वर्ष जातक के लिए दुःखमय होता है एवं वर्ष-भर में हानि, उपद्रव, कष्ट तथा बीमारी आदि सहनी पड़ती है।

(८) कम्बूल—लग्नेश और कार्येश का परस्पर इत्थशाल या मुत्थशाब योग होने पर 'कम्बूल' योग होता है। इस योग के मुख्य ५ भेद हैं।

(क) उत्तमोत्तम कम्बूल—चन्द्रमा उच्च का अथवा स्वराशि का हो तथा लग्नेश एवं कार्येश भी इसी प्रकार की स्थिति में हों अथवा दोनों में से एक स्वगृही उच्च का हो, जिसमें चन्द्रमा इत्थशाल करता हो तो वह 'उत्तमोत्तम कम्बूल' योग कहलाता है। यह योग जातक की कार्यसिद्धि करनेवाला एवं सुख-शान्ति प्रदान करनेवाला है।

(ख) मध्यमोत्तम कम्बूल—चन्द्रमा स्व हद्दा, खुद के द्रेष्काण अथवा स्वयं के नवांश में हो एवं लग्नेश तथा कार्येश उच्च के हों या स्वगृही हों तो वह 'मध्यमोत्तम कम्बूल' योग कहलाता है। यह योग अभीष्ट सिद्धि करनेवाला एवं वर्ष-भर व्यक्ति की बाधाओं को शान्त करनेवाला होता है।

(ग) उत्तम कम्बूल—चन्द्रमा नीच का अथवा अधिकारच्युत हो और लग्नेश, कार्येश, स्वगृही अथवा उच्च के हों तो 'उत्तम कम्बूल' योग बनता है। यह जातक की मित्र-संख्या बढ़ानेवाला तथा मित्रों द्वारा ही कार्यसिद्धि करनेवाला माना गया है।

(घ) अधमोत्तम कम्बूल—चन्द्र नीच का हो या शत्रु राशि स्थित हो एवं लग्नेश कार्येश उच्च के, स्वगृही अथवा अधिकारयुक्त हों तो 'अधमोत्तम कम्बूल' योग बनता है। इस योग से वर्ष-भर मानसिक परेशानी रहती है तथा काफी कठिनाइयों के बाद कार्यसिद्धि होती है।

(ङ) अधमाधम कम्बूल—चन्द्रमा नीच राशि पर हो, लग्नेश शत्रु क्षेत्री हो, कार्येश भी शत्रु स्थान पर स्थित हो एवं परस्पर इत्थशाल योग करते हों तो 'अधमाधम कम्बूल' योग बनता है। यह योग वर्ष-भर महा-कष्ट एवं विपत्तिदायक होता है।

(९) गैरी कम्बूल—लग्नेश और कार्येश का परस्पर इत्थशाल योग होता हो और चन्द्र शीघ्र ही अग्रिम राशि पर जानेवाला हो यानी राशि के २९वें अंश पर स्थित हो और उससे अग्रिम राशि में उच्च का लग्नेश अथवा कार्येश स्थित हों, जिससे चन्द्रमा मुत्थशिल योग करता हो तो ऐसी स्थिति में 'गैरी कम्बूल' योग बनता है। यह योग अन्य स्वजनों की सहायता से कार्यसिद्धि करता है।

(१०) रद्द—जो ग्रह अस्त, नीच, शत्रुक्षेत्री, हीनकान्ति, वक्री और बलवान होकर इत्थशाली योग करता हो तथा यह कार्येश के रूप में केन्द्र में स्थित हो तो 'रद्द' योग बनता है। यह योग प्राणघातक, शत्रुओं को बढ़ानेवाला एवं उन्नति के मार्ग में अवरोधक है।

(११) खल्लासर—लग्नेश और कार्येश का परस्पर इत्थशाल हो और चन्द्रमा शून्य मार्ग पर गत हो तो ऐसे योग को ज्योतिषियों ने 'खल्लासर' नाम से सम्बोधित किया है। यह योग कम्बूल योग के शुभा-शुभ को नष्ट करनेवाला है।

(१२) दुष्फालि कुथ—मन्दगति ग्रह स्वगृह अथवा अपनी उच्च राशि पर हो और अधिकार से हीन होकर शीघ्रगति ग्रह से इत्थशाल योग करता हो तो 'दुष्फालि कुथ' योग बनता है। यह योग कार्य में धीमापन और अवरोध लाने वाला है।

(१३) दुत्थोत्थदिवीर—लग्नेश और कार्येश 'रद्द योग' में हों और दोनों में से एक अधिकारवान ग्रह से मुत्थशिल योग करता हो तो 'दुत्थोत्थदिवीर' योग बनता है। यह योग भी वर्षफल में अशुभ माना गया है।

(१४) तम्बीर—लग्नेश कार्येश से इत्थशाल योग न करता हो और इनमें से कोई एकमार्गी ग्रह बनकर राशि के अन्तिम अंशों में हो और अग्रिम राशि में ग्रह उच्च राशि में अथवा स्वगृही हो तो 'तम्बीर योग' बनता है। यह योग कार्यसाधक एवं वर्ष-भर सुख-शान्ति बढ़ानेवाला है।

(१५) कुत्थ—लग्न में स्थित ग्रह बली होता है। इससे २, ३, ४ ५, ७, ९, १० तथा ११वें स्थान में स्थित उत्तरोत्तर कमजोर माने जाते हैं। इसी प्रकार स्वक्षेत्र, स्वोच्च, स्व हद्दा, स्वद्रेष्काण और स्व नवमांश में स्थित ग्रह, उत्तरोत्तर बली माने जाते हैं। इन ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध को 'कुत्थ' योग कहते हैं। यह योग जातक के लिए लाभकारी तथा धनधान्य बढ़ानेवाला माना जाता है।

(१६) दुरफ्फ—वक्री होने वाला ग्रह वक्री ग्रह, ३, ८वें व १२वें भाव में स्थित ग्रह, नीच पाप ग्रह से रत, अस्त, बलहीन ग्रह और कांतिहीन ग्रह यदि अन्य निर्बल ग्रह से मुत्थशिल योग करता हो तो 'दुरफ्फ' योग होता है। यह योग वर्ष-भर सन्तापकारक, प्राणघातक और दुःखदायक होता है।

इन सोलह योगों का वर्षफल में अत्यधिक महत्त्व है। इन योगों के अध्ययन से ही जातक के शुभाशुभ का निर्णय किया जा सकता है।

विंशोत्तरी मुद्दादशा—अश्विनी नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आए उसमें गतवर्षों को जोड़ देना चाहिए और योगफल में से दो घटाकर जो शेष बचे उसमें ९ का भाग देना चाहिए। नीचे जो शेष बचे वह क्रमशः सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है अर्थात् एक शेष बचे तो सूर्य की दशा, दो बचे तो चन्द्र की दशा। इसी प्रकार आगे भी समझना चाहिए।

विंशोत्तरी दशा के वर्षों को ३ से गुणा करने से विंशोत्तरी मुद्दा

दशा के दिन आते हैं। विंशोत्तरी दशा में १२० वर्ष की आयु मानकर ग्रह दशा वर्ष इसी प्रकार मानी गई है।

सूर्य की दशा ६ वर्ष, चन्द्रमा की १० वर्ष, भौम की ७ वर्ष, राहु की १८ वर्ष, बृहस्पति की १६ वर्ष, शनि की १९ वर्ष, बुध की १७ वर्ष, केतु की ७ वर्ष एवं शुक्र की २० वर्ष की दशा मानी गई है।

इसी के अनुसार विंशोत्तरी महादशा इस प्रकार से होगी : सूर्य ६ × ३ = १८ दिन, चन्द्रमा १० × ३ = ३० दिन, भौम ७ × ३ = २१ दिन, राहु १८ × ३ = ५४ दिन (या १ मास २४ दिन), गुरु १६ × ३ = ४८ दिन, शनि १९ × ३ = ५७ दिन, बुध १७ × ३ = ५१ दिन, केतु ७ × ३ = २१ दिन और शुक्र २० × ३ = ६० दिन अर्थात् दो मास की मुद्दादशा होगी।

## विंशोत्तरी मुद्दादशा चक्र

| सू. | चं. | भौ. | रा. | गु. | श. | बु. | के. | शु. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | २ | मास |
| १८ | ० | २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ | ० | दिन |

मुद्दा अन्तर्दशा—मुद्दा अन्तर्दशा निकालने का यह नियम है कि जिस ग्रह की दिशा में अन्तर निकालना हो उस ग्रह की दशा को सम्बन्धित ध्रुवांकों से गुणा करने देना चाहिए। गुणा करने पर जो गुणनफल आए उस गुणनफल में ६० से भाग देने पर अन्तर्दशा के दिनादि आते हैं।

ध्रुवांक—सूर्य—४, चन्द्र—८, भौम—५, बुध—७, गुरु—१०, शुक्र—५, शनि—९, राहु—५, केतु—६।

उदाहरणार्थ—सूर्य की अन्तर्दशा निकालनी है तो सूर्य मुद्दा की दिन-संख्या १८ को उसके ध्रुवांक ४ से गुणा किया। गुणनफल में ६० का भाग दिया तो—

१८ × ४ = ७२, ७२ ÷ ६० = १ दिन शेष १२

१२ × ६० = ७२० ÷ ६० = १२ घटी

इस प्रकार सूर्य की मुद्दादशा में सूर्यान्तर्दशा १ दिन, १२ घटी सिद्ध हुई।

योगिनी मुद्दादशा—अश्विनी से जन्म नक्षत्र तक गिनने से जितनी संख्या हो उसमें ३ और गताब्द संख्या जोड़ने से जो योगफल आए उसमें ८ का भाग देने से शेष बचे ५ आदि क्रम से मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रा, उल्का, सिद्धा और संकटा की दशा सिद्ध होती है।

योगिनी दशा के वर्षों को १० से गुणा करने पर मुद्दा योगिनी दशा की दिनादि संख्या आती है। इस प्रकार इस साल में मंगला की दशा १० दिन, पिंगला की २० दिन, धान्या की एक मास, भ्रामरी की एक मास, १० दिन; भद्रा की १ मास, २० दिन; उल्का की २ मास, ३० दिन और संकटा की दो मास, २० दिन होती है।

वर्षफल में जो वर्षेश होता है उसका प्रभाव सबसे अधिक होता है। नीचे हम वर्षेश का फलाफल दे रहे हैं।

पूर्ण बलवान वर्षेश सुख, धन-प्राप्ति, यश-लाभ और सुख-सुविधा देता है तथा निर्बल वर्षेश नाना प्रकार का कष्ट, धन-हानि और शारीरिक रोग आदि उत्पन्न करता है। यदि वर्ष-कुण्डली में वर्षेश लग्न से ३, ८, १२वें स्थानों में स्थित हो तो अनिष्ट फल देता है।

**वर्षेश सूर्य का फल**

यदि वर्ष का स्वामी पूर्णबली सूर्य हो तो उस वर्ष जातक को मान-प्रतिष्ठा, धन, पुत्र-लाभ और कुटुम्बियों से सुख मिलता है। राज्य-पद में प्रतिष्ठा बढ़ती है और मकान सम्बन्धी कार्यों से लाभ पहुँचता है। स्वास्थ्य उत्तम कोटि का रहता है और अचानक द्रव्यप्राप्ति का योग होता है।

परन्तु यदि सूर्य मध्यबली हो तो जातक को अल्प सुख मिलता है, परिवार में कलह बढ़ती और नौकरी में हो तो स्थान बदलने का अवसर प्राप्त करता है। जातक को ऐसी स्थिति में सन्तान-लाभ होता है, साथ ही रोग, भय एवं ससुराल से लाभ होने की पृष्ठभूमि तैयार होती है।

यदि वर्षेश अल्पबली अथवा शून्यबली हो तो जातक को व्यर्थ ही घुमक्कड़ जीवन बिताना पड़ता है, समाज में अपशय फैलता है और आलस्य के कारण सोचे हुए कार्य रुक जाते हैं। यही नहीं, व्यर्थ ही भोग-विलास में द्रव्य खर्च हो जाता है और अनेक प्रकार की व्याधियों से घिरकर जातक कष्ट उठाता है।

**चन्द्रमा**

पूर्णबली चन्द्रमा यदि वर्षेश हो तो जातक को अतुल-वैभव, धन-धान्य और श्री देता है। शरीर में निरोगता और कार्य में निपुणता ले आता है। स्त्री, पुत्र, परिवार की ओर से जातक को लाभ पहुंचता है और नौकरी में उन्नति करता है। स्वादिष्ट भोजन, विविध ऐश्वर्य और विलासिता की सामग्री से जातक समृद्धिशाली बनता है।

मध्यबली चन्द्र यदि वर्षेश हो तो जातक को साधारण सुख मिलता है। माता-पिता की ओर से कष्ट एवं कुटुम्बियों से कलह रहता है। सम्मान के साथ-साथ स्थान बदलने का भय योग बनता है। पेट में पीड़ा और उदर विकार से जातक पीड़ित रहता है। यदि मध्यबली चन्द्रमा किसी पापग्रह के साथ हो तो जातक बीमारी से रुग्ण रहता है और श्वास, कफ, ज्वर आदि तकलीफों से दु:खी होता है।

अल्पबली, नष्ट या हीनबली चन्द्र यदि वर्षेश हो तो जातक लम्बी बीमारी भुगतता है और नाना प्रकार की व्याधियों से मृत्यु तुल्य कष्ट भोगता है।

मंगल

यदि मंगल पूर्णबली वर्षेश हो तो उस वर्ष जातक समाज में सम्मान प्राप्त करता है। मुकदमे आदि में उसकी विजय होती है और युद्ध में जय लाभ प्राप्त करता है। यदि जातक मिलिटरी में हो तो उसे नायक का पद प्राप्त होता है। युद्ध होने पर साधारण वीरता दिखाता है और पदोन्नति प्राप्त करता है। पूर्णबली भौम नाना प्रकार की वैभव-प्राप्ति के साथ-साथ पुत्र-सुख भी देता है।

मध्यबली भौम जातक के रुधिर में विकार उत्पन्न करता है। युद्ध में अंगक्षति होती है और फोड़े-फुन्सियाँ व कष्ट पाता है। यदि मध्यबली भौम लग्न से बारहवें स्थान पर हो तो वह व्यक्ति अवश्य ही झूठी जाल-साजी में फँसता है और मुकदमे आदि में द्रव्य की हानि होती है। यह अनुभूत है, मैंने एक नहीं कई वर्ष फलों को टटोलकर देखा तो सभी में यह बात प्रामाणिक उतरी। मध्यबली भौम कृषि-कार्यों से धन लाभ देता है।

हीनबली मंगल वर्षेश हो तो उसके कई शत्रु तैयार हो जाते हैं, समाज में तिरस्कार प्राप्त करता है, मकान में आग लगती है या उसका कुछ हिस्सा नष्ट हो जाता है। युद्ध तथा मुकदमेबाजी में वह पराजित होता है तथा यदि जातक राज्यवर्गी हो तो अपमानपूर्वक उसका स्थानान्तरण होता है। हीनबली भौम जातक को दुराचारी और व्यसनी भी बना देता है।

बुध

बलवान बुध वर्षेश हो तो जातक के लिए श्रेष्ठ लाभकारी होता है। उसकी बुद्धि का विकास होता है। वह कठिन से कठिन परीक्षा में

भी सफल होता है। बलवान बुध आई० ए० एस० एवं आई० सी० एस० जैसी परीक्षाओं में भी सफलता प्राप्त करता है। इस वर्ष जातक की बुद्धि का विकास होता है, कलाओं में निपुणता प्राप्त करता है और लेखक हो तो अवश्य देशान्तर तक अपनी कृति से सम्मान प्राप्त करता है। राज्यों में भी जातक को सम्मान प्राप्त होता है और उसकी आय के कई स्रोत बन जाते हैं।

यदि किसी जातक के वर्ष में मध्यबली बुध वर्षेश हो तो वह व्यापार आदि कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। मित्रों में सम्मान प्राप्त करता है और विद्या, परीक्षा आदि कार्यों में वह निपुणता प्राप्त कर यश लाभ भोगी होता है।

हीनबली बुध वर्षेश होने पर जातक अपने धर्म से गिर जाता है। हर समय उन्मत्त अवस्था में घूमता रहता है और कई प्रकार के खर्चों से उसकी संचित निधि समाप्त हो जाती है। हीनबली बुध पुत्र-मृत्यु का भी योग करता है अथवा सन्तान पेट में ही समाप्त हो जाती है या सन्तान किसी दुर्घटना से घायल होकर पीड़ा देखती है। ऐसी दशा में जातक दुराचरण और तिरस्कार आदि फल प्राप्त करता है।

**गुरु**

पूर्णबली गुरु वर्षेश हो तो जातक को सन्तान-लाभ होता है, कीर्ति फैलती है तथा अकस्मात् धन-प्राप्ति का योग बनता है। पूर्णबली गुरु शत्रु नाश करने के साथ-साथ जातक को राज्य में मान्यता भी दिलाता है। उसकी बुद्धि निर्मल होती है और उस पर समाज विश्वास करने लगता है। उसे सब प्रकार का लाभ होता है।

मध्यबली गुरु यदि वर्षेश हो तो जातक सम्मान, सुख तथा ऐश्वर्य प्राप्त करता है, परन्तु राज्य पक्ष में उसे कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। झूठे मुकदमे में फँसता है अथवा समाज की ओर से उसे तिरस्कार सहना पड़ता है।

हीनबली गुरु यदि वर्षेश हो तो वह धर्मच्युत होने के साथ-साथ धन की ओर से भी जातक को हानि उठानी पड़ती है, लोकनिन्दा से परेशान रहता है और मानसिक परेशानियों से घिरा रहता है। उदर, रक्त और पित्त-सम्बन्धी कई रोगों का शिकार होकर वह पीड़ा भोगता है।

**शुक्र**

पूर्णबली शुक्र यदि वर्षेश हो तो जातक अथवा उसके परिवार में से

लोगों का विवाह आदि होता है। मिष्ठान्न लाभ करता है और विलास की वस्तुओं की ओर जातक की रुचि बढ़ती है। उसके व्यक्तित्व में सहृदता, सुघड़ता और सलोनापन आता है। यश-वृद्धि के साथ-साथ विजय-लाभ भी करता है। ऐसी दशा में यदि जातक लेन-देन अथवा व्यापारिक कार्य करे तो वह अधिक लाभ प्राप्त करता है। सुख, प्रसन्नता तथा ऐश्वर्यभोग में जातक अग्रणी रहता है।

मध्यबली शुक्र यदि वर्षेश हो तो जातक के गुप्तांग में पीड़ा होती है। वीर्य सम्बन्धी बीमारियों से ग्रस्त रहता है। वैद्यों एवं डाक्टरों के चक्कर में धन-हानि करता है। मध्यबली शुक्र समाज में जातक को अवश्य सम्मान-प्राप्ति करता है।

हीनबली शुक्र यदि वर्षेश हो तो पत्नी से वाद-विवाद बढ़ाता है। ससुराल पक्ष से लड़ाई होती है और आजीविका में व्यवधान पड़ता है। उन्नति में रुकावट आती है तथा उसे कई प्रकार की यात्राएँ करनी पड़ती हैं। रोगों के आक्रमण से भी जातक दुःखी रहता है।

## शनि

पूर्णबली शनि यदि वर्षेश हो तो जातक नया मकान खरीदता है अथवा खेती करता है या भूमि सम्बन्धी लेन-देन करता है। पृथ्वी सम्बन्धी कार्यों में जातक को लाभ होता है। जातक उच्च पद प्राप्त करता है तथा विदेश-गमन का योग बनता है।

मध्यबली शनि यदि वर्षेश हो तो जातक कामुकता का शिकार होता है तथा वासना के बाहुल्य से व्यर्थ ही इधर-उधर भटकता फिरता है। उसे नेत्र सम्बन्धी पीड़ा होती है तथा धन-हानि से व्यथित, चिन्तित, चिड़चिड़ा तथा दुर्बल दिखाई देने लगता है।

अल्पबली शनि यदि वर्षेश हो तो जातक को भूमि-सम्बन्धी कार्यों में हानि पहुँचती है, शत्रुओं द्वारा अंग-भंग होता है तथा कुटुम्बियों से कलह आदि होती है। हीनबली शनि जातक को वर्ष-भर विविध व्याधियों, आशंकाओं और चिन्ताओं से ग्रस्त रखता है।

## मुन्थाफल

मुन्था का वर्षफल में सर्वाधिक महत्त्व रहता है। विभिन्न स्थानों में मुन्था का फल भी भिन्न-भिन्न रहता है। नीचे की पंक्तियों में मुन्थाफल दिया जा रहा है—

(१) यदि मुन्था लग्न में हो तो व्यक्ति सुख-शान्ति तथा आरोग्य

लाभ करता है। वह राज्य में तरक्की करता है और समाज में भी उसे सम्मान मिलता है।

(२) यदि मुन्था लग्न से द्वितीय भाव में हो तो जातक को अकस्मात् द्रव्य-प्राप्ति होती है। व्यापार से विशेष लाभ होता है। सट्टा, लेन-देन, ब्याज-बट्टा आदि कार्यों में जातक द्रव्य लाभ उठाता है तथा तस्कर आदि कार्यों या सम्बन्धित व्यक्तियों से सम्बन्धित होकर भी वह लाभ उठाता है।

(३) यदि मुन्था लग्न से तीसरे स्थान पर हो तो व्यक्ति किसी भी प्रकार के साक्षात्कार में सफलता प्राप्त करता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता और यदि मुकदमा आदि चल रहा होता है तो उसके पक्ष में लाभ उठाता है। स्वास्थ्य-लाभ के अतिरिक्त वह समाज में सम्मान प्राप्त करता है। उसके व्यक्तित्व में निखार आता है। मित्र-संख्या बढ़ती है और उसके कई रुके हुए कार्य आसानी से हल हो जाते हैं।

(४) चतुर्थ स्थान में स्थित मुन्था जातक के लिए दुःखदायी होती है। वह मातृ-सुख से वंचित होता है, परिवार में कलह बढ़ाता है और मानसिक चिन्ता से वह हर समय खिन्न, मलिन और दुःखी भटकता रहता है।

(५) यदि वर्षफल में मुन्था लग्न से पाँचवें स्थान में हो तो जातक आरोग्य लाभ करता है, उसे सन्तान सुख मिलता है, पुत्र उन्नति करता है अथवा राष्ट्रव्यापी ख्याति लाभ करता है। कुटुम्बियों से प्रेम बढ़ता है और सन्तान के माध्यम से उसकी स्वयं की भी इज्जत बढ़ती है।

(६) छठे स्थान में यदि मुन्था हो तो उसका परिवार विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त होता है। मकान, खेत अथवा खलिहान में आग लगती है। शत्रुओं द्वारा उसे शारीरिक हानि भी उठानी पड़ती है। ननिहाल में उसके मामा या उससे सम्बन्धित परिवार में से किसी की मृत्यु भी सम्भव है।

(७) सप्तम स्थान में यदि मुन्था हो तो जातक की पत्नी कई प्रकार के रोगों से परेशान होती है और उसका संचित द्रव्य दवाइयों आदि में व्यय हो जाता है। उसकी सन्तान भी नाना प्रकार के कष्टों का सामना करती है और राज्यभय से पीड़ित रहती है। वह स्वयं भी कई प्रकार की हानियां उठाता है तथा तिरस्कारपूर्ण स्थान परिवर्तन करता है।

(८) यदि अष्टम स्थान में मुन्था हो तो जातक की मृत्यु होती है अथवा मृत्यु-तुल्य कष्ट सहन करता है। उदर, चर्म या रुधिर-सम्बन्धी

कई विकार उत्पन्न हो जाते हैं। मस्तिष्क में पीड़ा रहती है अथवा नेत्र पीड़ा रहती है। घर में किसी स्वजन की मृत्यु भी हो सकती है या दुर्घटना आदि की आशंका बनी रहती है :

(९) नवम भाव में मुन्था हो तो जातक का अधिकांश समय धर्मादि कार्यों में खर्च होता है। भाग्योदय होता है और उसके कई रुके हुए तथा सोचे हुए कार्य निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्न हो जाते हैं। भाग्य में वृद्धि होने के साथ-साथ समाज में भी उसे सम्मान प्राप्त होता है एवं आय के कई नवीन स्रोत खुल जाते हैं। गंगा, हरिद्वार आदि तीर्थ-यात्रा का भी योग बनता है तथा अपने माता-पिता को भी तीर्थ-लाभ कराने में समर्थ होता है।

(१०) दसवें स्थान में यदि मुन्था हो तो उनके सम्मान में वृद्धि होती है, राज्यपद में उन्नति होती है। नई नौकरी लगती है या उन्नत नौकरी में प्रमोशन होता है। तात्पर्य यह है कि राज्य सम्बन्धी एवं नौकरी सम्बन्धी कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। शासन में अधिकार प्राप्त होता है और जातक एम० एल० ए० या एम० पी० आदि हो तो उसकी राष्ट्रव्यापी ख्याति होती है।

(११) ग्यारहवें भाव में यदि मुन्था हो तो उसे उस वर्ष व्यापार में घाटा उठाना पड़ता है। समाज में तिरस्कार होता है अथवा इसके ऐसे कार्य हो जाते हैं जिससे वह समाज की दृष्टि में गिर जाता है।

(१२) बारहवें भाव में मुन्था जातक के लिए कई प्रकार के रोग उत्पन्न करता है। उसे विभिन्न प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं और रोग आदि से सञ्चित द्रव्य नष्ट हो जाता है।

### विशेष मुन्थाफल

(१) जो भाव पापयुक्त हो या जिस पर क्रूर ग्रह की शत्रु दृष्टि हो और उसी भाग में मुन्था हो तो वह शुभ स्थान होने पर शुभ फल न देकर अशुभ फल ही प्रदान करता है।

(२) यदि मुन्था खुद के स्वामी से या शुभ ग्रह से युक्त तो या उसके द्वारा दृष्ट हो तो अशुभ स्थान भी किञ्चित् शुभ फल प्रदान कर देता है।

(३) यदि मुन्था अपने स्वामी या शुभ ग्रह से इत्थशालिनी हो तो वह जिस भाव में है उस भाव सम्बन्धी शुभ फल को बढ़ाती है।

(४) यदि मुन्था निर्बल ग्रह के साथ 'मूशरीफ' योग करती हो तो

उस भाव सम्बन्धी शुभ फल को नाश कर अशुभ फल को ही बढ़ाती है।

(५) यदि मुन्था जन्म लग्न से ६, ८ या १२वें स्थान में हो तो उस भाव का नाश करती है। जैसे द्वितीय में हो तो धन का, तृतीय में भाई का। इसी प्रकार अन्य स्थानों पर भी फल समझना चाहिए।

(६) मुन्था जन्म लग्न से तथा वर्ष लग्न से पापाक्रांत न होकर शुभ स्थान में हो तो उस भाव के शुभ फल को बढ़ाती है।

(७) जन्म लग्न से मुन्था चौथे भाव में शुभ ग्रहों के साथ हो तो पिता का संचित द्रव्य मिलता है। सातवें में श्वसुर से धन लाभ होता है, परन्तु यदि पापग्रहयुक्त हो तो विपरीत फल समझना चाहिए।

(८) वर्ष लग्न में मुन्था स्वस्वामी या शुभग्रह युक्त अथवा दृष्ट वह जन्म लग्न से जिस भाव में हो उस भाव की वृद्धि करती है।

## ग्रहयुक्त दृष्ट मुन्थाफल

१. यदि मुन्था सूर्य की राशि (सिंह) में हो और सूर्य के साथ या उससे दृष्ट हो तो उस वर्ष जातक को राज्य में सम्मान मिलता है। राज्य कर्मचारियों से मित्रता बढ़ती है, विवाह होता है, ससुराल से द्रव्य प्राप्त होता है तथा भोग-विलास की प्रचुरता रहती है।

२. यदि मुन्था कर्क राशि में चन्द्रमा के साथ अथवा चन्द्रमा से देखी जाती हो तो उस वर्ष जातक स्वास्थ्य की प्राप्ति करता है, यश की वृद्धि होती है तथा सोचे हुए कार्य सम्पन्न होते हैं, परन्तु यदि पापग्रह की दृष्टि हो तो मानसिक क्लेश और चिन्ता बढ़ती है।

३. यदि मुन्था मेष और वृश्चिक राशि में मंगल के साथ या मंगल द्वारा दृष्ट हो तो उस वर्ष जातक कई प्रकार की बीमारियाँ सहन करता है। युद्ध में वह अपंग होता है अथवा अंग-भंग होता है। कृषि-कार्यों में हानि होती है एवं कई प्रकार की परेशानियाँ उसे चिन्तित बनाये रखती हैं।

४. यदि मुन्था मिथुन और कन्या राशि में बुध के साथ या उसके द्वारा दृष्ट हो तो जातक परीक्षा में पास होता है। साक्षात्कार में सफल होता एवं राज्य में उन्नति करता है। यदि जातक लेखक, कवि या उपन्यासकार हो तो अपनी कृति से वह विशेष यशोपार्जन करता है।

५. मुन्था यदि धन या मीन राशि में बृहस्पति के साथ या उसके द्वारा देखी जाती हो तो जातक को पुत्र तथा स्त्री का विशेष सुख प्राप्त होता है। वस्त्रादि के व्यापार से जातक लाभ प्राप्त करता है। ऐसी

मुन्था के साथ इत्थशालिनी योग करती हो तो उसे कुलानुमान राज्यसुख प्राप्त होता है।

६. मुन्था यदि वृष और तुला राशि पर शुक्र से दृष्टयुक्त हो तो जातक तीर्थ लाभ प्राप्त करता है। समाज में सम्मान बढ़ता है तथा धर्मादि कार्यों में उसकी रुचि बढ़ती है।

७. यदि मुन्था मकर या कुम्भ राशि में शनि से युक्त या दृष्ट हो तो जातक वात-सम्बन्धी बीमारियों से ग्रस्त रहता है। उस वर्ष वह किसी वाहनादि दुर्घटना का शिकार होता है और विभिन्न रोगों से ग्रस्त रहता है।

८. यदि मुन्था राहु या केतु के साथ हो तो उस भाव से जैसा भी फल होता है वैसा ही फल मिलता है। राहु और केतु 'मुन्था' के साथ निर्लिप्त रहते हैं।

९. जो ग्रह जन्मकाल में बलवान और वर्ष फल में निर्बल हों वे वर्ष के पूर्वार्द्ध में शुभ और वर्ष के उत्तरार्द्ध में अशुभ फल देते हैं, इसके विपरीत जो ग्रह जन्म में निर्बल और वर्ष में बलवान होते हैं वे वर्ष के पूर्वार्द्ध में अशुभ तथा उत्तरार्द्ध में शुभ फल देते हैं, परन्तु यदि दोनों समय में एक से ही होते हैं तो सम्पूर्ण वर्ष में वैसा ही फल देते रहते हैं।

१०. मुन्था का स्वामी ६, ७, ८वें या ४थे स्थान में हो, वक्री अस्तोगत या पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो वह भाव शुभ फल न देकर रोगोंत्पत्ति एवं धन-हानि ही कराता है।

११. यदि मुन्थेश वर्ष लग्न से अष्टमेश युक्त या १, ४, ७, १० से युक्त दृष्टि से दृष्ट हो तो भी वह भाव शुभ फल नहीं देता।

१२. यदि जन्मकाल में मुन्था या मुन्थेश शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हों तो पूर्वार्द्ध में ही शुभ फल नहीं देते हैं। इस प्रकार वर्षकाल में मुन्था या मुन्थेश शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हों तो वर्ष के पूर्वार्द्ध में शुभ फल देते हैं।

## वर्ष अरिष्ट योग

१. वर्ष लग्नेश, अष्टमेश और मुन्थेश ४, ८, १२वें स्थान में हों या जन्म लग्नेश अथवा चन्द्रमा अनेक पाप ग्रहों से युक्त होकर आठवें स्थान में हो और शनि वर्ष लग्न में ही हो तो वह वर्ष जातक के लिए अनिष्टकारक होता है।

२. जन्म लग्नेश जन्म तथा वर्ष में निर्बल हो और वर्ष फल में अष्ट-

मेष लग्न में हो और उस पर सूर्य की दृष्टि हो तो यह वर्ष जातक के लिए प्राणघातक होता है।

३. वर्षेश के साथ क्रूर ग्रह का मूशरीफ हो तो वर्ष में जातक पर कई विपत्तियाँ आती हैं।

४. मुन्थेश और लग्नेश अस्त हों तथा इन पर शनि की दृष्टि हो तो उस वर्ष जातक की पत्नी की मृत्यु सम्भव है, साथ ही जातक सन्तान पक्ष की ओर से हानि उठाता है।

५. क्रूर ग्रह बलवान होकर ६, ८, ११वें स्थान में हो तथा शुभ ग्रह निर्बल होकर ६, ८, १२वें स्थान में हो तो जातक वर्ष-भर मानसिक चिन्ता, रोग, कलह और धनहानि से पीड़ित रहता है।

६. शुक्र नीच राशि में और बृहस्पति शत्रु राशि में हो तो उस वर्ष जातक नाना प्रकार के कष्ट सहन करता है और यदि ८वें भाव में और अष्टमेश लग्न में हो तो उस वर्ष जातक की मृत्यु निश्चित समझनी चाहिए।

७. नवम भाव का स्वामी तथा दूसरे भाव का स्वामी निर्बल हो और पापग्रह लग्न में हो तो उस वर्ष उसका सारा संचित द्रव्य मुकदमे-बाजी में खर्च हो जाता है।

८. चन्द्रमा नीच राशि में हो तथा शुभ ग्रह अस्त हो तो उस वर्ष जातक के कई सम्बन्धियों की मृत्यु हो जाती है।

९. वर्ष-लग्न जन्म-लग्न, जन्म-राशि से ८वें हों तो उस वर्ष जातक को क्षय की बीमारी होती है।

१०. जन्मकाल में जो ग्रह आठवें भाव में हो वही ग्रह वर्षफल में लग्न का हो तो जातक उस वर्ष विभिन्न प्रकार के दुःख भोगता है।

११. जन्म लग्नेश तथा वर्ष लग्नेश पापयुक्त होकर आठवें स्थान में हों तो उस वर्ष जातक मृत्यु-तुल्य कष्ट भोगता है।

१२. जन्म लग्नेश, वर्षेश और मुन्था तीनों बारहवें, ४थे, ८वें और छठे स्थानों में से किसी में भी एक साथ हो तो जातक की मृत्यु निश्चित समझनी चाहिए।

१३. शनि के साथ चन्द्रमा बारहवें स्थाम में हो और शुक्र छठे स्थान में हो तो धन का नाश होता है।

१४. यदि शनि, शुक्र के साथ किसी पाप ग्रह का ईशराफ योग हो और उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो उसे राज्य पक्ष से हानि उठानी पड़ती है।

१५. चन्द्रमा अस्तगत होकर ६, १२, ८ या ४थे स्थान में हो तो जातक वात, पित्त, कफ के विकार से ग्रस्त होकर सन्निपात अवस्था में प्राप्त होता है।

१६. त्रिराशिपति नीच राशि में पाप दृष्ट हो तो इच्छित कार्य का नाश होता है।

१७. चन्द्रमा बारहवें, छठे, आठवें, पहले या सातवें स्थान मे हो और इस पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो उस वर्ष कई सम्बन्धियों की मृत्यु होती है।

१८. मुन्था क्रूर ग्रह के साथ में हो और शनि उसे देखता हो तो वह जातक के लिए अनिष्टकारक होता है।

## अरिष्ट भंग योग

१. वर्ष लग्नेश पंचवर्गी में सबसे अधिक बलवान होकर एक, चार, पाँच, सात, नौ, दसवें भाव में हो तो अरिष्टनाशक योग होता है।

२. बृहस्पति केन्द्र (१, ४, ७, १०) या त्रिकोण (५, ९) में शुभ ग्रहों से दुष्ट हो और उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि न हो तो अरिष्ट निवारक योग होता है।

३. चतुर्थ भाव अपने स्वामी के साथ या शुभग्रह के साथ अथवा उससे दृष्ट हो तो भी अरिष्टनाशक योग होकर धन, दुःख और सम्मान की वृद्धि करता है।

४. सप्तमेश लग्न में बृहस्पति के साथ हो और क्रूर ग्रह इसे न देखते हों तो ऐसा योग अरिष्ट निवारक योग कहलाता है।

५. नवम घर का स्वामी तथा दूसरे घर का स्वामी बलवान होकर लग्न में हों तथा उन पर पापग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक राज्य में सम्मान प्राप्त करता है।

६. तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें स्थानों में पापग्रह एवं केन्द्र तथा त्रिकोण में शुभग्रह होते हैं तो अरिष्ट निवारक योग बनता है।

७. लग्नेश पूर्णबली होकर केन्द्र, त्रिकोण या ११, १२वें स्थान में हो तो जातक की सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं।

८. उच्च राशि का स्वामी बलवान होकर वर्षेश हो तथा वह ३, ग्यारहवें भाग में स्थित हो तो अरिष्ट निवारक योग होता है।

९. सूर्य, बृहस्पति तथा शुक्र परस्पर इत्थशाल योग करते हों तो उस वर्ष जातक को नौकरी में प्रमोशन मिलता है।

१०. शुक्र, बुध और चन्दमा अपनी मुद्रा में हों तो मनुष्य व्यापार से लाभ उठाता है।

११. मंगल वर्षेश होकर मित्र की राशि में हो और अपने घर में पड़े ग्रह से मुत्थशिल योग करता हो तो उस वर्ष जातक को उच्चवाहन मिलता है।

## धन-प्राप्ति का विचार

१. जन्मकुण्डली में गुरु जिस भाव का स्वामी हो यदि वर्षकुण्डली में भी वह उसी भाव में बैठा हो और वर्ष लग्नेश के साथ मुत्थशिल योग करता हो तो वर्ष-भर व्यक्ति को अर्थ-लाभ होता ही रहता है।

२. जन्म में दूसरे भाव का स्वामी गुरु यदि वर्ष में भी दूसरे भाव में ही हो तो अकस्मात् द्रव्य-लाभ होता है।

३. जन्म में धन-स्थान को बृहस्पति देखे और वर्ष में वर्षेश में हो जाए तो जातक को बिना कमाए ही द्रव्य-प्राप्ति होती है।

४. यदि बृहस्पति वर्ष में वर्षेश हो और उस जन्म में वह जिस भाव को देखता हो उस वर्ष उस भाव की वृद्धि होती है।

५. जन्म में बुध षष्ठेश हो और वर्ष में छठे स्थान में हो तो व्यापार से धन-लाभ होता है।

६. बृहस्पति दूसरे स्थान में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो नौकरी में उन्नति होकर विशेष अर्थलाभ होता है।

७. शुक्र दूसरे स्थान में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और वर्ष में शुक्र वर्षेश हो तो जातक को जमीन में गड़ा हुआ धन प्राप्त होता है।

८. बुध बलवान होकर वर्षेश और धनस्थान में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो पुस्तक-लेखन से काफी धन प्राप्त होगा।

९. जन्मकुण्डली में जो शुभ ग्रह लग्न में हैं, वही वर्ष में धन-स्थान में हों तो धन-लाभ देते हैं।

१०. लग्नेश और धनेश का मित्र दृष्टि से मुत्थशिल योग होता है तो ससुराल से धन मिलता है।

११. जन्म में बृहस्पति धन भाव का स्वामी हो और वर्ष में वर्षेश हो जाय तो जिस भाव में बैठा है उस भाव-सम्बन्धी ही लाभ प्रदान करता है।

## स्वास्थ्य-विचार

१. बलवान वर्षेश या लग्नेश शुभ ग्रहों से युक्त केन्द्र या त्रिकोण में

हो तो व्यक्ति निरोगता प्राप्त करता है।

२. मुन्थेश या मुन्था शत्रु में (६, ८, १२) हो और उन पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो कई प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

३. सूर्य नष्टबली वर्षेश हो तो त्वचा-सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते हैं।

४. पंचवर्गीय में मंगल बलहीन होकर अधिकारी हो तो जातक के शरीर में निर्बलता आती है और कई प्रकार के दुःख सहन करने पड़ते हैं।

५. लग्न पापग्रह से युक्त हो तथा शुभग्रहों से दृष्ट या युक्त न हो तो जातक जहरीली वस्तु खाकर आत्मघातवत् दुःख उठाता है।

## सन्तान भाव विचार

१. वर्षेश बृहस्पति पंचम या ग्यारहवें स्थान में हो या सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र में से कोई एक वर्षेश होकर ५ या ११वें स्थान में हो तो उस वर्ष जातक की पुत्र के द्वारा ख्याति फैलती है।

२. पंचम भाव पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो जातक को पुत्र-सुख मिलता है।

३. निर्बल बुध ५ या ११वें स्थान में हो तो पुत्र को पीड़ा प्रदान करता है।

४. जन्मकाल में बृहस्पति जिस राशि में हो वह राशि वर्ष में पंचम हो तथा बलवान शुभग्रहों की दृष्टि हो तो उस वर्ष जातक को निश्चित ही पुत्र-प्राप्ति होती है।

५. जन्मकाल में बृहस्पति जिस राशि में हो वह वर्ष में लग्न हो और शुभग्रहयुक्त हो तो भी पुत्र-प्राप्ति योग बनता है।

६. जन्मकाल में पंचमेश शुक्र हो, वह वर्ष में बलवान होकर पंचम में हो तथा लग्नेश इत्थशाली योग करता हो तो उस वर्ष जातक का पुत्र अवश्य ही विदेशगमन करता है।

७. जन्म का शनि जिस राशि में हो वह वर्ष में पंचम हो तथा उस पर पापग्रह की दृष्टि हो तो जातक की सन्तान मृत्यु-तुल्य कष्ट पाती है।

## जायाभाव विचार

१. वर्षेश शुक्रबली होकर सप्तम स्थान में हो तो उस वर्ष जातक का विवाह होता है अथवा पत्नी से विशेष सुख प्राप्त होता है।

२. वर्षेश यदि बुध से युक्त हो या दृष्ट हो तो उस वर्ष जातक परस्त्री से सम्बन्ध कायम करता है, परन्तु यदि उस शुक्र पर शनि की दृष्टि

हो तो जातक प्रौढ़ा स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर धन-धान्य प्राप्त करता है।

३. जन्म लग्नेश वर्षकाल में सप्तम होकर बलवान हो तो ससुराल पक्ष से लाभ होता है।

४. जन्म लग्नेश तथा वर्ष लग्नेश बलवान होकर सप्तम में हो तो स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है।

५. जन्म का शुक्र जिस राशि में है उसमें वर्ष लग्नेश हो अथवा वह राशि सप्तम हो तो पुरुष का उस वर्ष अवश्य ही विवाह होता है।

६. जन्म की शुक्र राशि में, वर्ष फल में क्षीण चन्द्रमा हो तो जातक स्त्री-सुख से वञ्चित रहता है।

७. जन्म का सप्तमेश वर्ष में शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो जातक कई स्त्रियों के संसर्ग में आता है।

८. पंचाधिकारियों में से किसी की राशि में सूर्य हो तो वर्ष-भर स्त्री से कलह रहती है।

९. मुन्था की राशि में बृहस्पति हो या मुन्था राशि को बृहस्पति देखता हो तो उस वर्ष विवाह योग होता है।

१०. सूर्य, मंगल के साथ मुन्था सप्तम स्थान में हो तो जातक स्त्री से कष्ट प्राप्त करता है।

११. जन्म का सप्तमेश शुक्र वर्ष में बलवान होकर सप्तम स्थान में हो तथा लग्नेश के साथ इत्थशाली योग होता हो तो निश्चय ही उस वर्ष अविवाहित होने पर विवाह समझना चाहिए।

१२. चन्द्रमा अपने ग्रह या उच्च राशि का होकर मुन्था से सातवें स्थान में हो तो जातक स्त्री के साथ विदेशगमन करता है।

## राज्य भाव विचार

१. बलवान वर्षेश दशम स्थान में हो तो उस वर्ष राज्य में अथवा नौकरी में अवश्य ही तरक्की होती है।

२. वर्षेश सूर्य बल सहित चतुर्थ स्थान में हो तो पूर्व संचित या राज्य में पड़ा हुआ द्रव्य प्राप्त होता है।

३. वर्षेश सूर्य नीच राशि होकर दसवें स्थान में हो तो नौकरी छूटने की आशंका रहती है।

४. जन्म का सूर्य सिंह राशि में हो और वर्ष में बलवान होकर दशम स्थान में हो तो जातक का स्थानान्तरण होता है।

५. जन्म की मंगल स्थित राशि के वर्ष में चन्द्रमा हो तो सौभाग्य-दायक स्थानान्तरण होता है।

६. दशमेश, लग्नेश और वर्षेश का परस्पर इत्थशाल हो तो उस वर्ष जातक की राज्य में तरक्की होती है।

७. जन्म की शनि-स्थित राशि में वर्ष का मंगल दशम स्थान में हो और मुन्था को देखे तो जातक को नौकरी में कष्ट उठाना पड़ता है।

८. जन्म का दशमेश सूर्य वर्ष में बलवान होकर दशम हो तो जातक की नौकरी लगती है।

९. लग्नेश यदि बलवान हो तो तब भी जातक को उस वर्ष राज्य में नौकरी प्राप्त होती है।

१०. दशम भाव में यदि शुभ ग्रह हों तो शुभ फल और पापग्रह हो तो अशुभ फल मिलता है।

इन्हीं नियमों से अन्य भावों का विचार कर लेना चाहिए।

मास प्रवेश कुण्डली और ग्रह स्पष्टों से प्रत्येक मास का फलाफल ग्रहों के बल तथा स्थान के अनुसार ही समझना चाहिए।

## १२ : वर्ष दशाफल

मुख्यत: वर्ष फल में विंशोत्तरी दशा और मुद्दादशा का अध्ययन किया जाता है, जिसके सम्बन्ध में पीछे के पृष्ठों में कहा जा चुका है। नीचे प्रत्येक ग्रह की दशा का फल वर्णित है।

### सूर्य

पूर्ण बली सूर्य की दशा हो तो जातक को व्यापार में लाभ होता है, राज्य में सम्मान प्राप्त करता है और वह धार्मिक कार्यों में व्यय कर समाज में सम्मान प्राप्त करता है।

मध्यबली सूर्य की दशा में जातक को नवीन वाहन प्राप्त होता है। समाज में सम्मान मिलता है, ज्वर से कष्ट होने के अतिरिक्त वह मानसिक चिन्ताओं से भी ग्रस्त रहता है।

अल्पबली सूर्य जातक को सब प्रकार के रोगों से ग्रस्त रखता है। परिवार में व्यर्थ वाद-विवाद बढ़ता है, सोचे हुए कार्य सम्पन्न नहीं होते

और मुकदमे आदि में उसकी पराजय होती है।

यदि वर्ष में नष्टबली सूर्य की दशा हो तो व्यक्ति का तिरस्कारपूर्वक स्थानान्तरण होता है। भाइयों तथा पुत्रों में धन-सम्बन्धी विवाद बढ़ता है और बुद्धिभ्रम से कई सोचे हुए काम अपूर्ण रहकर जातक को दुःख प्रदान करते हैं।

यदि सूर्य लग्न से ३, ६, १०, ११वें स्थान में हो और निर्बल भी हो तो भी आधा शुभ फल दे देता है और हीनबली होकर पूर्वोक्त स्थानों पर हो तो मध्यत्त्व का फल देता है, मध्यबली हो तो पूर्णबल का फल देता है, एवं उत्तमबली होकर इन स्थानों में हो तो अत्यन्त शुभ फल देता है।

## चन्द्रमा

पूर्णबली चन्द्रमा की दशा में श्वेत रंग की वस्तुओं के व्यापार से जातक को लाभ होता है। ससुराल में द्रव्य-प्राप्ति तथा समाज में सम्मान मिलता है। इस दशा में राज्य में तरक्की, भूमि-सम्बन्धी कार्यों से लाभ तथा जातक पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त करता है।

मध्यबली चन्द्रमा की दशा में व्यापार में मित्रों से ही हानि होने की सम्भावना रहती है। स्त्री का स्वास्थ्य कमजोर होता है, परन्तु धर्मादि कार्यों में जातक की रुचि बढ़ती है और कृषि-कार्य मे लाभ मिलता है।

अल्पबली चन्द्रमा की दशा में जातक को वात, पित्त और कफ की बीमारियाँ घेरती हैं तथा उसके शरीर की कान्ति का नाश हो जाता है। छोटी-छोटी बातों पर मित्रादि से वैर हो जाता है। घर में कन्या का जन्म होता है, धर्म का नाश होता है तथा जातक के कार्यों में अवरोध उत्पन्न होने लगते हैं।

नष्टबली चन्द्रमा की दशा पुत्रों, स्वजनों और सम्बन्धियों से वैर बढ़ाती है। उस वर्ष जातक पर झूठा कलंक लगता है। पत्नी को उदर-सम्बन्धी बीमारी होती है जिससे संचित धन का नाश होने लगता है।

यदि चन्द्रमा ६, ८, १२वें स्थानों में न हो तो वह हीनबली भी होकर आधा शुभ फल देता है, हीनबली भिन्न स्थानों पर हो तो मध्य-बली का फल देता है और मध्यबली हो तो हीन शुभ फल देता है तथा उत्तमबली हो तो अत्यन्त शुभ फल देता है।

## मंगल

वर्ष में यदि जातक को पूर्णबली मंगल की दशा चला रही हो तो जातक सेना में असाधारण वीरता दिखाता है, जिसके परिणामस्वरूप

उसकी तरक्की होती है। उसमें साहस का संचार होता है तथा स्वास्थ्य में असाधारण प्रगति दिखाई देती है।

यदि मध्यबली मंगल की दशा चल रही हो तो उसे भूमि-सम्बन्धी कार्यों में प्रचुर मात्रा में धन प्राप्त होता है। उच्चतर वाहन-प्राप्ति का योग होता है, शत्रु परास्त होते हैं तथा कोर्ट-कचहरी में उसकी जीत होती है।

दशापति मंगल यदि अल्पबली हो तो अपनी दशा में पित्त और गर्मी के विकार से शरीर में रोग उत्पन्न करता है। शत्रुओं से भय बना रहता है तथा झूठे मुकदमे आदि में उलझकर कष्ट प्राप्त भी कर सकता है। परिवार में कलह तथा अशान्ति बनी रहती है।

यदि वर्ष में नष्टबली मंगल की दशा हो तो भाइयों से वैर होता है, स्वजनों में सम्मान हानि होती है तथा द्रव्य हेतु मुकदमेबाजी में द्रव्य-नाश हो जाता है। घर में चोरी भी हो सकती है, रुधिर-सम्बन्धी कई विकार होने से उसे धन-हानि भी सहन करनी पड़ती है।

मंगल दशापति ३, ६ और ११वें स्थान में नष्टबली हो तो आधा शुभ फल देता है, हीनबली हो तो मध्यबली का फल है और मध्यबली होकर शुभ फल देता है तथा उत्तमबली हो तो अत्यन्त शुभ फल देता है।

## बुध

दशापति बुध यदि पूर्णबली हो तो उस वर्ष जातक का गणित तथा शिल्प विद्या से यश बढ़ता है। दूत-सेवा से भी लाभ प्राप्त हो सकता है, ऊँचे अफसरों से मित्रता के सम्बन्ध स्थापित होते हैं, आय के कई नये स्रोत खुलते हैं तथा जातक की प्रसिद्धि लेखन-कार्य द्वारा होती है।

दशापति बुध यदि अल्पबली हो तो जातक कई प्रकार की कलाओं में प्रवीण होता है, मित्रों से उसे सम्मान और लाभ पहुँचता है तथा लिखने-पढ़ने के कार्यों से जातक ख्याति प्राप्त करता है, समाज में सम्मान होता है, परन्तु गृह-कलह से जातक एकान्तप्रिय-सा हो जाता है।

अल्पबली बुध की दशा में व्यक्ति को समाज में तिरस्कार सहन करना पड़ता है। व्यर्थ ही उस पर झूठा कलंक आता है, जिससे वह परेशानी अनुभव करता है। उसे बोलने की सुध नहीं रहती तथा व्यर्थ के वाद-विवाद में जातक अपनी हानि भी कर बैठता है।

हीनबली बुध की दशा में जातक मन्द बुद्धि होकर अपनी उन्नति के सभी द्वार अवरुद्ध कर लेता है। लड़ाई में उसके अंगों को क्षति पहुं-

पड़ती है और नौकरी से उसे प्रशासकीय हानि उठानी पड़ती है। वात, पित्त और कफ-सम्बन्धी रोगों से जातक परेशानी अनुभव करता है। उसका दिया हुआ अथवा जमा कराया हुआ द्रव्य नष्ट हो जाता है।

दशापति बुध यदि ६, ८, १२वें स्थानों से और किसी स्थान में हो तो नष्टबली भी आधा शुभ फल देता है तथा इससे भिन्न स्थानों में नष्ट बली बुध मध्यबली का फल और मध्यबली ग्रह शुभ फल देता है। उत्तम बली अत्यन्त शुभ फल देता है। ६, ४, १२वें स्थानों में उत्तमबली भी अशुभ और हीनबली अत्यन्त अशुभ फल देता है।

## गुरु

पूर्णबली गुरु की दशा राज्य में सम्मान प्रदान करती है। स्वास्थ्य में असाधारण वृद्धि करती है तथा चेहरे की कान्ति बढ़ाती है। यह दशा धन-लाभ करने के साथ-साथ राज्यसुख, पुत्र-प्राप्ति सुख तथा शत्रु एवं रोग का नाश करती है।

मध्यबली गुरु की दशा में राज्य से सम्बन्धित उच्च अधिकारियों से मित्रता स्थापित होती है। पुत्र ख्याति प्राप्त करते हैं तथा जातक को स्त्री एवं मित्र का सुख प्राप्त होता है।

अल्पबली गुरु की दशा दरिद्रता प्रदान करती है, शत्रुओं की तरफ से नित्य हानि होती है तथा कर्ण रोग से जातक परेशान रहता है। यह दशा हृदय में वैराग्य की भावना स्थापित करती है, थोड़ा धनागम भी होता है और जातक छोटी-छोटी कलाओं में प्रवीणता प्राप्त करने की कोशिश करता है।

नष्टबली बृहस्पति की दशा चर्म एवं रुधिर विकार से उत्पन्न कई प्रकार के रोग जातक को प्रदान करती है। जातक स्त्री तथा पुत्र की ओर से चिन्तित रहता है तथा धन के नाश के साथ-साथ शरीर-पीड़ा भी होती है।

दशापति गुरु ६, ८, १२वें भावों से अन्य स्थानों में हो तो नष्टबली आधा शुभ फल देता है और हीनबली मध्यफल तथा मध्यबली शुभफल देता है। पूर्णबली अत्यन्त शुभफल देता हैं। ८, ६, १२वें स्थानों में उत्तम-बली भी पूर्ण रूप से शुभफल नहीं देता।

## शुक्र

पूर्णबली शुक्र की दशा जातक को भोग-विलास में लीन करती है। उसे नवीन वाहन-लाभ होता है।

विभिन्न स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध बनते हैं तथा नवीन मकान बनता है या पुराना मकान बदलकर नये मकान में जाने का योग है। व्यक्ति सुगन्धित वस्तुएँ, नृत्य-गायनादि से भी आनन्द प्राप्त करता है।

मध्यबली शुक्र की दशा में व्यापार तथा कृषि-कार्य में अत्यधिक लाभ होता है। भोग-विलास में लिप्त रहता है। आय के नवीन साधन बनते हैं तथा मित्र, पुत्र तथा स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

अल्पबली शुक्र की दशा जातक के धन का नाश करती है। वह नये-नये कुटेव सीखता है तथा ट्यूशन-वृद्धि, रोगपीड़ित होता है, स्त्री-पक्ष में उसे हानि उठानी पड़ती है तथा शत्रुओं से वैमनस्य होता है। जिसके फलस्वरूप मन अस्थिर तथा बुद्धि विभ्रम हो जाती है।

नष्टबली शुक्र की दशा में जातक का स्थानान्तरण होता है। उसे अपने स्वजनों के विरोध का सामना करना पड़ता है। पुत्रों से वैमनस्य बढ़ता है तथा धन-हानि से व्यक्ति चिन्तित रहता है।

दशापति शुक्र ६, ८, १२ से अन्य स्थानों में नष्टबली होने पर भी आधा शुभ फल देता है और हीनबली मध्यफल तथा मध्यबली शुभफल देता है। उत्तमबली अत्यन्य शुभफल देता है। ६, ८, १२वें स्थानों में शुभ भी अशुभ फल देता है।

## शनि

पूर्णबली शनि की दशा में नया घर बनता है। जन्म-स्थान का निर्माण होता है एवं राज्य पक्ष में उन्नति होती है।

मध्यबली शनि की दशा में वाहन नष्ट हो जाता है। तस्कर, झूठ, कपट अथवा ठगी के कार्यों से धन-प्राप्ति होती है। प्रौढ़ अथवा वृद्धा स्त्री के साथ संगम होता है तथा भोजन-वस्त्र-सम्बन्धी समस्याओं से जातक चिन्ताग्रस्त रहता है।

अल्पबली शनि की दशा में चोरी होती है अथवा वह ठगी का शिकार होता है। शीत तथा वात के कोप से कई रोग उत्पन्न होने लगते हैं, झूठे कलंक से सामाजिक सम्मान का पतन होता है एवं उन्नति के मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं।

नष्टबली शनि की दशा पुरुषों को कई प्रकार के व्यसन सिखा देती है। उसे पुत्र, मित्र आदि के विरोधों का सामना करना पड़ता है तथा किसी आकस्मिक संकट से वह मरण-तुल्य स्थिति में पहुँच जाता है।

शनि ३, ६, ११वें स्थानों में नष्टबली होने पर भी आधा सुफल दे

देता है तथा हीनबली मध्यबली शुभ फल देता है। उत्तमबली अत्यन्त ही शुभ फल देता है।

## भावानुसार ग्रह फल

१. सूर्य, मंगल, शनि सभी एक साथ या इनमें से कोई भी एक यदि लग्न में हो तो जातक ज्वर, उदर-विकार आदि बीमारियों से पीड़ित रहता है।

२. पापयुक्त चन्द्रमा यदि लग्न में हो तो जातक ज्वर से चिन्तित रहता है।

३. बृहस्पति, बुध या शुक्र यदि लग्न में हों तो उस वर्ष जातक को नौकरी में तरक्की मिलती है।

४. बुध अकेला शुभ होकर लग्न में हो तो परिवार में सुखद समाचार सुनाई पड़ता है।

५. दूसरे स्थान में चन्द्र, बुध, गुरु या शुक्र हो तो कई तरीकों से अर्थ-संचय होता है।

६. यदि दूसरे स्थान में नीच का शनि हो तो धन-हानि की सम्भावनाएँ बना देता है।

७. दूसरे भाव में शनि हो तो सोचे हुए प्रत्येक कार्य अधूरे रहकर जातक तकलीफ उठाता है।

८. तीसरे स्थान में पड़े हुए पापग्रह धन-प्राप्ति का योग बनाते हैं और यदि वे ग्रह बलयुक्त हों तो जमीन में गड़ा धन मिलता है।

९. तीसरे स्थान में पड़े हुए शुभग्रह कार्यसिद्धि में पूर्ण रूप से सहायक होते हैं।

१०. चौथे स्थान में चन्द्रमा मन प्रसन्न रखता है, परन्तु यदि वह पापयुक्त हो तो जुए में धन-नाश हो जाता है।

११. पंचम स्थान में स्थित शुभग्रह या पूर्ण चन्द्र धन और सुख को बढ़ाते हैं। यदि पंचम स्थान में पापग्रह हों तो सन्तान को विशेष कष्ट रहता है।

१२. छठे भाव में पापग्रह पड़े हों तो वे शुभ माने जाते हैं। मंगल हो तो वह शत्रुओं का नाश करता है, मुकदमे में विजय दिलाता है। सूर्य हो तो ननिहाल से आर्थिक लाभ होता है।

१३. सप्तम भाव में पापयुक्त चन्द्रमा रोग तथा राज्य-भय को बढ़ाते हैं। पापग्रह हो तो जातक की स्त्री कष्ट पाती है। क्षीण चन्द्र स्त्री के

उदर-सम्बन्धी विकार उत्पन्न करता है, परन्तु यदि इस स्थान में शुभग्रह हों या शुभग्रहों से दृष्ट हो तो धन-लाभ, सुख-लाभ तथा यश-प्राप्ति होती है।

१४. आठवें स्थान में यदि पापयुक्त चन्द्रमा हो तो जातक मृत्युतुल्य कष्ट भोगता है। शुभग्रह भी इस स्थान पर हों तो धननाश और मान हानि करते हैं।

१५. नवम भाव में यदि पापग्रह हों तो भाइयों को कष्ट भोगना पड़ता है तथा जातक को पशुओं से हानि उठानी पड़ती है।

१६. नवम स्थित शुभग्रह अन्न एवं धन की वृद्धि करते हैं।

१७. दशम भाव में यदि सूर्य हो तो जातक को व्यवसाय से विशेष लाभ मिलता है। यदि इस स्थान पर शुभग्रह पड़े हों तो जातक नौकरी में उन्नति करता है तथा राज्य-सम्बन्धी लाभ प्राप्त करता है।

१८. ग्यारहवें भाव में सभी ग्रह यश की वृद्धि करते हैं। मित्रों के द्वारा उसके सभी सोचे हुए कार्य पूर्ण होते हैं तथा शरीर निरोग, पुष्ट एवं स्वस्थ रहता है।

१९. बारहवें भाव में पापग्रह हो तो व्यय की अनेक सम्भावनाएँ बन जाती हैं। यदि मंगल हो तो उसे झूठे मुकदमे में फँसकर संचित द्रव्य से हाथ धोना पड़ता है।

२०. बारहवें भाव में स्थित शनि शुभ फल प्रदान करता है।

२१. यदि बारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक की विदेश-यात्रा का योग बनता है।

## वर्ष का विशेष फल

१. जन्म लग्नेश और लग्नेश के सम्बन्ध से वर्ष का फल अवगत करना चाहिए।

२. ये दोनों शुभ ग्रह हों तथा केन्द्र और त्रिकोण में स्थित हों एवं उन पर मित्र दृष्टि हो तो जातक का वर्ष अच्छा रहता है।

३. दोनों के पापग्रह होने पर तथा ६, ८, १२वें भाव में स्थित होने पर वर्ष सामान्यतया अनिष्टकारी होता है।

४. पदोन्नति के लिए वर्ष लग्नेश या मास लग्नेश का उच्चराशि या मूल त्रिकोण में स्थित रहना आवश्यक है।

५. मास फल जानने के लिए मास कुण्डली का अध्ययन करना चाहिए।

१. मास लग्न का नवांशेश यदि मास लग्नेश यथा नवांश स्वामी के साथ मित्रभाव से बैठा हो या देखा जाता हो एवं उन दोनों को चन्द्रमा मित्र दृष्टि से देख रहा हो तो वह मास जातक के लिए शुभ होता है।

२. यदि लग्नेश तथा लग्नेशांशेश दोनों परस्पर शत्रु भाव से देखते हों और क्षीण चन्द्रमा की उस पर दृष्टि हो तो वह मास व्यक्ति के लिए नाना प्रकार के कष्ट लेकर उपस्थित होता है।

३. मास लग्न में जिस भाव के नवांश का स्वामी अपने स्वामी के नवांश स्वामी द्वारा मित्र दृष्टि से देखा जाता हो या युक्त हो तो वह भाव जातक के लिए श्रेष्ठ होता है और उस भाव की वृद्धि होती है।

४. वर्ष लग्नेश, मास लग्नेश, वर्षेश और मास लग्न नवांमेश ये चारों जिस किसी भाव में नवांशेश द्वारा मित्र-दृष्टि द्वारा देखे जा रहे हों तो उस भाव की उन्नति होती है।

५. बारहवें, छठे तथा आठवें भावों के नवांश स्वामी निर्बल हों तो जातक को लाभ पहुँचता है।

६. वर्ष लग्नेश, मासेश, वर्षेश और मुन्थेश—ये चारों पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तथा ३, ८वें स्थान में पड़े हों तो जातक उस मास में बीमार पड़कर परेशानी उठाता है।

७. मासेश निर्बल हो या पापग्रहयुक्त हो तो व्यक्ति को सम्मान-हानि सहनी पड़ती है।

८. वर्ष लग्नेश, मासेश और वर्षेश ये तीनों बलवान होकर १, ४, ७, १०वें भाव या त्रिकोण १, ५, ९ में हों तो उस मास में जातक को पदोन्नति होती है तथा सभी प्रकार का सुख प्राप्त करता है।

९. मास लग्नेश १, ४, ७, १०, ११वें भाव में हो तो वह मास जातक के लिए श्रेष्ठ होता है।

१०. मासेश तथा मास लग्नेश के नवम या दशम भाव में रहने से जातक को विशेष आर्थिक लाभ होता है। राज्य में तरक्की, प्रमोशन या सम्मान होता है।

११. जिस मास में ८वें स्थान में चन्द्रमा पापग्रहों के साथ या उनसे दृष्ट हो तो जातक का शत्रुओं द्वारा अंग-भंग होता है।

१२. मास में यदि भौम १२वें स्थान में हो तो जातक अवश्य कोर्ट-कचहरी चढ़ता है।

१३. जन्म-कुण्डली का मारकेश यदि मास में भी आठवें भाव में स्थित हो और पापग्रह से देखा जाता हो तो जातक उस मास मरणतुल्य कष्ट पाता है।

१४. मास फल जानने के लिए मास लग्नेश, चन्द्रमास लग्न और मास लग्न नवांशेश के बलाबल पर सूक्ष्मतापूर्वक विचार करना चाहिए।

१५. जिस मास में लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों और उन पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो उस मास जातक की उन्नति होती है।

१६. जिस मास में चन्द्रमा उच्च होकर स्वराशि या दशम स्थित हो तो वह मास जातक के लिए लाभकारी होता है।

१७. अभीष्ट सिद्धि, राज्यपद, नौकरी आदि के लिए चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। मैंने वर्ष में तथा मास फल में चन्द्र की स्थिति से जब-जब भी जो निष्कर्ष निकाले, वे पूर्णतः सही और प्रामाणिक निकले।

१८. यदि दशम् भाव का स्वामी चर राशि में हो तो सरकारी नौकरी करनेवाले का अवश्य स्थानान्तरण होता है।

१९. दशमेश शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक का पदोन्नतिपूर्वक तबादला होता है।

## १३ : प्रश्न विचार

जिस समय किसी भी कार्य के लाभालाभ, शुभाशुभ जानने की इच्छा हो उस समय का लग्न निकालकर प्रश्न कुण्डली बना लेनी चाहिए, साथ ही ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट, नवमांश कुण्डली तथा चलित कुण्डली बनाकर शुभाशुभ विचार करना चाहिए।

### ग्रहावस्था

प्रश्न कुण्डली में ग्रहों की अवस्था का भी निश्चय कर लेना चाहिए। अवस्था से ग्रहों के दस भेद किए जाते हैं—

१. दीप्त—उच्च राशि में पड़ा हुआ ग्रह।

२. दीन—अपनी नीच राशि में पड़ा हुआ ग्रह।

३. मुदित—अपनी मित्र राशि में पड़ा हुआ ग्रह।
४. स्वस्थ—अपनी राशि में पड़ा हुआ ग्रह।
५. सुप्त—शत्रु राशि में पड़ा हुआ ग्रह।
६. पीड़ित—पापग्रहों से युक्त या दृष्ट ग्रह।
७. दीन—नीचाभिलाषी ग्रह।
८. मुषित—अस्तंगत ग्रह।
९. सुवीर्य—उच्चाभिलाषी ग्रह।
१०. अधिवीर्य—शुभांशक में पड़ा हुआ ग्रह।

### ग्रहावस्था फल

१. दीप्तावस्था में ग्रह कार्य सिद्धि करता है।
२. दीनावस्था में जातक को दुःख की प्राप्ति होती है।
३. स्वस्थावस्था में जातक को कीर्ति-लाभ होता है और धन-प्राप्ति का योग बनता है।
४. मुदितावस्था में आनन्द, सुख एवम् प्रसन्नता का लाभ होता है।
५. सुप्तावस्था में शत्रुओं के आक्रमण की चिन्ता रहती है तथा अंग-भंग से दुःख-प्राप्ति होती है।
६. पीड़ितावस्था में धन-हानि एवं घाटा उठाना पड़ता है।
७. मुषितावस्था में कार्य का नाश होता है।
८. परिहीनावस्था में उन्नति में गतिरोध उपस्थित होता है।
९. सुवीर्यावस्था में उत्तम वाहनादि का योग बनता है।
१०. अधिवीर्यावस्था में राज्यसम्मान, प्रमोशन, उन्नति तथा धन-लाभ होता है।

### फल नियम

१. जो भाव अपने स्वामी से या शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होता है, उस भाव की वृद्धि तथा पापी ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होने पर उस भाव की हानि होती है।

२. सौम्य राशि लग्न में हो तो कार्यसिद्धि करता है।

३. क्रूर लग्नयुक्त ग्रह हो तो कार्य पूर्ण होने में विलम्ब समझना चाहिए।

४. लग्न को लग्नेश न देखकर शुभ ग्रह देखे तो चौथाई योग समझना चाहिए।

५. लग्नेश को शुभग्रह देखें और कार्यसिद्धि योग उनमें न हो तो

आधा योग माना जायेगा।

६. एक शुभग्रह लग्न या लग्नेश को देखे तो जातक की कार्यसिद्धि अवश्य होती है।

७. लग्नेश को दो या तीन शुभग्रह देखते हों तो ऐसा योग त्रिभागोन कहलाता है और कार्यसिद्धि करता है।

८. पापग्रह दृष्टिरहित चन्द्रमा और शुभग्रह लग्न तथा लग्नेश को देखे तो पूर्ण कार्यसिद्धि का योग समझना चाहिए।

९. कार्य से सम्बन्धित भाव स्वामी पापग्रह युक्त या दृष्ट हो तो कार्यनाश समझना चाहिए।

## कार्य अवधि ज्ञान

१. कार्य भाव का स्वामी कार्य स्थान को देखे तो कार्य शीघ्र ही सम्पन्न होगा, ऐसा समझना चाहिए।

२. लग्नेश को देखता हो, तब भी कार्य शीघ्र ही समझना चाहिए।

३. कार्येश लग्न में हो और लग्नेश को देखता हो तो कार्य शीघ्र ही सम्पन्न होगा।

४. चन्द्रमा लग्न को या लग्नेश को देखता हो, तब भी कार्यसिद्धि शीघ्र ही समझनी चाहिए।

५. लग्नेश और कार्येश एक ही स्थान पर हों तो कार्य तुरन्त होगा, ऐसा समझना चाहिए।

६. लग्नेश, कार्येश को न देखता हो तो कार्य के पूरा होने में विलम्ब होगा।

७. लग्नेश कार्यस्थान को न देख रहा हो तो भी कार्य में विलम्ब ही समझना चाहिए।

८. लग्नेश और अष्टमेश दोनों अष्टम स्थान में एक ही द्रेष्काण हों तो पूछनेवाले को शीघ्र ही लाभ होता है।

९. लग्नेश और लाभेश परस्पर दृष्ट हों तो कार्य तुरन्त होकर लाभ पहुँचाता है।

१०. चन्द्रमा जिस स्थान को देखता है, उस भाव की वृद्धि करता है।

११. लग्नेश छठे स्थान में हो तो कार्य नहीं होगा, ऐसा ही समझना चाहिए।

**प्रश्न ज्ञान**

प्रश्न पूछने वाले के दिल में क्या है या वह किस सम्बन्ध में प्रश्न करना चाहता है, इसकी जानकारी के लिए नीचे लिखे नियमों को ध्यान में रखना चाहिए।

१. प्रश्न लग्न विषम राशि (१, ३, ५, ७, ६, ११) पर हो तो १, ४, ७ होने पर धातु-सम्बन्धी प्रश्न, २, ५, ८ लग्न रहें तो मूल-सम्बन्धी तथा ३, ६, ६ हो तो जीव चिन्ता समझनी चाहिए।

२. सूर्य या मंगल बलवान होकर केन्द्रगत हो तो धातु-सम्बन्धी बुध, शनि हो तो मूल-सम्बन्धी एवं चन्द्रमा, बृहस्पति हो तो जीव चिन्ता समझनी चाहिए। इस प्रकार की स्थिति में शुक्र हो तो भी जीव चिन्ता ही समझनी चाहिए।

३. लग्न में १, ८, ५ राशि हो तथा मंगल या शनि से युक्त अथवा दृष्ट हो तो धातु-सम्बन्धी, ३, ११, ६ राशि लग्न में हो तथा बुध शनि-युक्त या दृष्ट हो तो मूल-सम्बन्धी एवम् २, ७, ५, १२, ६, ४ राशि चन्द्र, गुरु, शुक्र से युक्त अथवा दृष्ट हों तो जीव-सम्बन्धी प्रश्न जानना चाहिए।

४. लग्नेश वा द्वितीयेश में जो बलवान हो अथवा इनके अंशेशों से जितने भाव में चन्द्रमा हो उसे भाव-सम्बन्धी ही प्रश्न है, ऐसा जानना चाहिए।

५. चन्द्रमा से लग्नेश जितने में हो, उससे सम्बन्धित प्रश्न ही विचार रखा है, ऐसा समझना चाहिए।

६. सर्वोत्तम बली ग्रह या तत्काल लग्न का नवांशेश लग्न में हो तो शरीर-सम्बन्धी, तीसरा हो तो मातृ-सम्बन्धी, पञ्चम में पुत्र-सम्बन्धी, चतुर्थ में माता-बहन के सम्बन्ध में, छठे में शत्रु-सम्बन्धी, सप्तम में स्त्री-सम्बन्धी, नवम में धर्म-सम्बन्धी, दशम में राज्य-सम्बन्धी और एकादश में आय-सम्बन्धी प्रश्न जानना चाहिए।

७ पूर्वोक्त ग्रह चरराशि, चरनवांश में दशम स्थान से ऊपर १०, ११ १२ में हो तो परदेश-सम्बन्धी या प्रवासी-सम्बन्धी प्रश्न जानना चाहिए।

८. सप्तम स्थान में सूर्य, शुक्र या बली मंगल हो तो प्रेमिका अथवा परस्त्री-सम्बन्धी, बृहस्पति हो तो अपनी स्त्री-सम्बन्धी, बुध हो तो वेश्या, चन्द्र हो तो भी वेश्या एवम् शनि हो तो हीन जाति की स्त्री-सम्बन्धी प्रश्न जानना चाहिए।

९. चर राशि नवांश में सप्तमाधिक ७, ८, ९ में हो तो प्रश्नकर्ता का मानसिक चिन्ता-सम्बन्धी प्रश्न है, ऐसा कहना चाहिए।

**प्रश्न अवधि**

१. लग्नेश जिस घर में हो, उस भाव या राशि का अंक जो भी हो, उस संख्या के काल में कार्य सिद्ध होगा, ऐसा जानना चाहिए।

२. राशि संख्यानुसार—मंगल से दिन, चन्द्र से घटी, बुध से ऋतु, गुरु, भृगु से मास तथा शनि से वर्ष की संख्या निश्चित करनी चाहिए।

धातु अर्थ—ऊपर 'धातु' शब्द का प्रयोग किया है। धातु-सम्बन्धी प्रश्न में—द्रव्य, द्रव्य का लेन-देन, पत्थर का कार्य, हीरे-मोतियों का व्यापार, आभूषण, लाभ, नौकरी एवं राज्य-सम्बन्धी प्रश्न जानना।

मूल अर्थ—हिसाब-किताब, भूमि-सम्बन्धी कार्य, कृषि, भोग-विलास, वस्त्र, व्यापार, लेखन-कार्य, अन्न का व्यापार आदि मूल अर्थ में जानना चाहिए।

**जीव अर्थ**

पत्नी, पुत्र, परिवार-सम्बन्धी सुख-दुःख, स्वयं का स्वास्थ्य, यात्रा, पशुओं का लेन-देन आदि इसमें समझना चाहिए।

**प्रश्न विचार**

१. स्वास्थ्य, सुख-दुःख आदि के लिए लग्न, लग्नेश तथा लग्न राशिपति से विचार करना चाहिए।

इसी प्रकार—

२. धन-प्राप्ति के प्रश्न में—लग्न-लग्नेश, धन-धनेश और चन्द्रमा से।

३. यश-प्राप्ति के प्रश्न में—लग्न, तृतीय स्थान, दशम और इन स्थानों के स्वामियों से।

४. सुख-शान्ति, ग्रह, भूमि, आदि के प्रश्न में—लग्न, चतुर्थ स्थान, दशम स्थान, इन स्थानों के स्वामी तथा चन्द्रमा की स्थिति से।

५. परीक्षा, साक्षात्कार आदि के प्रश्नों में—लग्न, पंचम, नवम, तथा दशम स्थान, इन स्थानों के स्वामी तथा चन्द्रमा से।

६. विवाह के प्रश्न में—लग्न, द्वितीय, सप्तम स्थान, इन स्थानों के स्वामी तथा चन्द्रमा की स्थिति से।

७. नौकरी, व्यवसाय, मुकदमे आदि के प्रश्न में—लग्न-लग्नेश

दशम स्थान तथा दशमेश, एकादश, एकादशेश एवम् चन्द्रमा से।

८. बड़े व्यापार के प्रश्न में—लग्न-लग्नेश, द्वितीय-द्वितीयेश, सप्तम-सप्तमेश, दशम-दशमेश, एकादश-एकादशेश तथा चन्द्रमा की स्थिति से।

९. लाभ के प्रश्न में—लग्नेश, एकादश-एकादशेश तथा चन्द्र से।

१०. सन्तान-प्राप्ति के प्रश्न में—लग्न-लग्नेश, द्वितीय-द्वितीयेश, पंचम-पंचमेश तथा गुरु की स्थिति से विचार करना चाहिए।

## रोगी के स्वस्थ-अस्वस्थ होने का विचार

१. प्रश्न कुण्डली में सप्तम से रोग, दशम से रोगी और चतुर्थ स्थान से औषधि का विचार करना चाहिए।

२. पाप ग्रह आठवें या बारहवें स्थान में हो या चन्द्रमा लग्न से १, ६, ७, ८वें स्थान पर हो तो रोगी की शीघ्र ही मृत्यु होती है।

३. लग्न पापाक्रान्त हो तो वैद्य से रोग ठीक नहीं होगा। दशम स्थान में पापग्रह हो तो अपनी ही गलती से रोग बढ़ेगा।

४. सप्तम में पापग्रह हो तो रोग में से नया रोग उत्पन्न होगा।

५. लग्नेश चतुर्थ हो तथा चन्द्र सप्तम से मुन्थशिल हो या सप्तमेश से छठा हो तो रोगी की शीघ्र मृत्यु जाननी चाहिए।

६. चन्द्रमा लग्न में, सूर्य सप्तम में, मंगल मेष राशि का होकर वृश्चिक के नवांश में हो तो रोगी की मृत्यु शीघ्र जाननी चाहिए।

७. लग्नेश निर्बल हो, अष्टमेश बली हो तथा चन्द्रमा ६, ८वें भाव में हो या अष्टम में शनि, मंगल से दृष्ट हो तब भी रोगी की मृत्यु शीघ्र समझनी चाहिए।

८. आठवें भाव में सूर्य हो तो रक्त-पित्त, बुध हो तो सन्निपात, राहु से युक्त सूर्य हो तो कुष्ठ, राहु से युक्त शनि हो तो वायु विकार तथा चन्द्र, शुक्र साथ हो तो भी सन्निपात होता है।

९. प्रश्न के १, ७, ४ में सूर्य व चन्द्र शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो रोगी निरोग होगा।

१०. लग्नेश बलवान तथा अष्टमेश निर्बल हो तो शीघ्र ही रोगी ठीक होगा, ऐसा जानना चाहिए।

११. अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हो, पर सप्तम एवं दशम में शुभ हो तथा दृष्ट हो तो रोगी निरोगी बनेगा।

## चोर-ज्ञान

१. प्रश्न लग्न स्थिर राशि हो या स्थिर राशि के नवमांश में प्रश्न लग्न हो तो भाई, बन्धु, स्वजातीय, उच्चजातीय व्यक्ति या घर के नौकर को ही चोर समझना चाहिए।

२. (i) लग्न में सम्पूर्ण चन्द्र हो और उस पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो।

(ii) शीर्षोदय राशि ३, ५, ६, ७, ८, ११वां लग्न हो तथा लग्न में बलवान और शुभ ग्रह स्थित हों।

(iii) लग्नेश, सप्तमेश, दशमेश, लाभेश और बलवान चन्द्र ये सब परस्पर मित्र हों।

(iv) या वे ग्रह परस्पर इत्थशाल करते हों तो चोरी गई वस्तु शीघ्र ही पुनः प्राप्त हो जाती है।

३. पूर्णबली चन्द्र लग्न में हो, एकादश में शुभग्रह हो या शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो भी चोरी गई वस्तु शीघ्र ही मिलती है।

४. केन्द्र में जो बलवान ग्रह हो उस ग्रह की दिशा में ही चोर गया है या रहता है, ऐसा समझना चाहिए।

५. यदि केन्द्र स्थान में कोई ग्रह न हो तो लग्न राशि की दिशा में चोरी गई वस्तु है, ऐसा समझना चाहिए।

६. सप्तम स्थान में शुभ ग्रह हो या लग्नेश सप्तम स्थान में हो तो चोरी गई वस्तु नहीं मिलती है।

७. सप्तमेश और चन्द्र सूर्य के साथ स्थित हों तो भी चोरी गई वस्तु नहीं मिलती है।

८. लग्न पर सूर्य और चन्द्रमा की दृष्टि हो तो आत्मीय चोर होता है।

९. लग्नेश और सप्तमेश लग्न में हों तो कुटुम्ब का व्यक्ति चोर होता है।

१०. सप्तमेश २, १२वें स्थान में हो तो चोर नौकर ही होता है।

११. प्रश्न लग्न मेष हो, तो ब्राह्मण चोर, वृष हो तो क्षत्रिय चोर, मिथुन हो तो वैश्य, कर्क हो तो शूद्र, सिंह हो तो अन्त्यज, कन्या हो तो स्त्री, तुला हो तो पुत्र, भाई या मित्र, वृश्चिक हो तो घर का नौकर, धनु हो तो स्त्री या स्त्री का भाई, मकर हो तो वेश्या, पड़ोसी, कुम्भ हो तो मनुष्येतर प्राणी चूहा आदि और मीन लग्न हो तो भूली हुई समझना चाहिए।

१२. सप्तम स्थान में शुक्र चन्द्रमा द्वारा दृष्ट हो तो दूसरी चाबी से ताला खोलकर चोरी हुई समझना चाहिए। बुध हो तो मनुष्य प्रपंची, चोर, शुक्र हो तो युवा चोर, बुध से बालक, गुरु हो तो मध्यावस्था, भौम से तरुण, शनि से वृद्ध तथा सूर्य से अति वृद्ध समझना चाहिए।

१३. चौथे स्थान में चतुर्थेश या जो वली ग्रह हो उससे चोरी का द्रव्य स्थान समझना चाहिए। यथा—शनि से मैला स्थान, चन्द्रमा से जलाशय, गुरु से देव मन्दिर या वगीचा, मंगल से अग्नि, चूल्हा या रसोई का स्थान, सूर्य से गृहपति का निजी कमरा, शुक्र से शयन-स्थान, बुध से पुस्तकालय स्थान में चोरी गई वस्तु छिपाई है, ऐसा समझना चाहिए।

१४. सप्तमेश स्त्री राशि में हो तो चोर स्त्री है तथा पुरुष राशि में हो तो चोर पुरुष है, ऐसा समझना चाहिए।

१५. लग्न-लग्नेश तथा लग्नेश के नवांशेश से चोरी-सम्बन्धी प्रश्न का अध्ययन करना चाहिए।

## धन-संबंधी प्रश्न विचार

१. धन-लाभ प्रश्न में लग्नेश से चन्द्रांशांश यथा धनभावेश इत्थशाल करे तो धन-लाभ होगा।

२. जो पापग्रह धन एवं स्थान (द्वितीय भाव) में हो तो लाभ देरी से होगा।

३. धनेश धनाभाव में चतुर्थ हो तो शीघ्र ही मिलेगा।

४. जो मंगल सप्तम या अष्टम हो तो धन नहीं मिलेगा।

५. लग्न से राहु, अष्टमस्थ सूर्य हो तो द्रव्य-प्राप्ति नहीं होगी।

६. लग्न से ७, ८, १०, १४वें स्थानों में चन्द्रमा और गुरु हो तो धनागम के मार्ग में कई व्यवधान आयेंगे।

७. लग्नेश सप्तम-सप्तमेश लग्न में ही हो तो धन नहीं मिलेगा।

## प्रवासी-प्रश्न विचार

१. प्रश्न-कुण्डली में शुक्र और गुरु दूसरे और तीसरे स्थान पर हों तो प्रवासी विलम्ब से घर आता है।

२. यदि उपर्युक्त ग्रह, १, ४ स्थान में हों तो प्रवासी तुरन्त ही लौटता है।

३. छठे या सातवें स्थान में कोई ग्रह हो तथा केन्द्र में गुरु तथा त्रिकोण में बुध या शुक्र हो तो प्रवासी शीघ्र ही लौटता है।

४. लग्न चर राशि का हो तो प्रवासी शीघ्र आता है।

५. चन्द्र चर राशि का द्विस्वभाव में हो तब भी प्रवासी शीघ्र ही लौटेगा, ऐसा समझना चाहिए।

६. स्थिर लग्न हो तो प्रवासी के लौटने में देर हो सकती है।

७. लग्नेश २, ३, ८, ९वें स्थान में वक्रीग्रह हो तथा केन्द्र से गुरु, बुध हो तो भी प्रवासी शीघ्र लौटता है।

८. २, ३, ५, ६, ७वें स्थान में वक्रीग्रह हो तथा केन्द्र से गुरु, बुध हो तो भी प्रवासी शीघ्र लौटता है।

## संतान-संबंधी प्रश्न

१. सन्तान-सम्बन्धी प्रश्न के लिए लग्नेश और पञ्चमेश तथा लग्न और पंचम स्थान के सम्बन्ध के बारे में विचार करना चाहिए।

२. लग्नेश और पंचमेश एक-दूसरे को देखते हों तो बहुसन्तान और न देखते हों तो सन्तान का अभाव समझना चाहिए।

३. प्रश्न लग्न या चन्द्रमा से पंचम स्थान में सिंह, वृष, वृश्चिक और कन्या राशि हो तो सन्तान विलम्ब से होगी।

४. यदि पंचम स्थान में पापग्रह हों या पंचम स्थान पापग्रहों से दृष्ट हों तो भी विलम्ब से सन्तान होती है।

५. प्रश्नकाल में आठवें से सूर्य और शनि, सिंह, मकर या कुम्भ राशि में हों तो सन्तान का अभाव समझना चाहिए।

६. चन्द्र और बुध अष्टम स्थान में हों तो विलम्ब से एक सन्तान होती है।

७. बलवान चन्द्रमा कन्या सन्तान देता है।

८. अष्टम भाव में केवल बुध हो तो सन्तान का अभाव रहता है।

९. अष्टम स्थान में शुक्र हो तो सन्तान उत्पन्न होकर मर जाती है।

१०. अष्टमेश अष्टम में हो तो सन्तान का अभाव रहता है।

११. द्वादश भाव का स्वामी केन्द्र में हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो शीघ्र ही दीर्घजीवी बालक उत्पन्न होता है।

१२. पंचमेश लग्न में एवं लग्नेश और चन्द्रमा पंचम में हों तो शीघ्र ही सन्तान-लाभ होगा।

१३. पंचमेश या लग्नेश मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशियों में स्थित हों तो निःसन्देह पुत्र-प्राप्ति होगी।

१४. लग्न से विषम स्थान में शनि हो तो पुत्र-लाभ एवं सम स्थान

में हो तो कन्या सन्तान होती है।

१५. पंचम भाव का स्वामी लग्नेश या चन्द्रमा से इत्थशाल करता हो तो निश्चय ही सन्तान-लाभ समझना चाहिए।

## गर्भस्थान सन्तान विचार

गर्भस्थ शिशु पुत्र है या कन्या, इस बात की जानकारी के लिए निम्न नियम सहायक होंगे—

(१) लग्नेश, चन्द्रमा और पंचमेश परस्पर इत्थशाली हों तो प्रश्न-कर्त्री या प्रश्नकर्ता की पत्नी गर्भवती है।

(२) प्रश्न कुण्डली में लग्न में सूर्य, गुरु या मंगल हो या ये ग्रह ३, ५, ७, ९वें स्थान में हों तो पुत्र होगा और अन्य कोई ग्रह हो तो कन्या होगी, ऐसा जानना चाहिए।

(३) लग्न में पुरुष राशि हो और बलवान पुरुष ग्रह की दृष्टि हो तो पुत्र, समराशि हो और स्त्रीग्रह की दृष्टि हो तो कन्या का जन्म होगा।

(४) चन्द्रमा पुरुष राशि में पुरुष ग्रह से मुत्थशिल हो तो पुत्र होता है।

(५) उच्च राशि का चन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त हो तो तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होगा।

(६) लग्नेश तथा चन्द्र नीच, पतित या वक्री ग्रह से मुत्थशिल करते हों तो गर्भपात होगा।

(७) बारहवें भाव का स्वामी पापग्रह, दग्ध तथा आपोक्लिम स्थान हो तो बालक की भ्रूण हत्या होती है।

(८) शनि लग्न के सिवा अन्य विषम राशि में हो तो पुत्र होगा।

(९) पंचमेश और लग्नेश समराशि में हो तो कन्या और विषम राशि में हो तो पुत्र उत्पन्न होता है।

(१०) पुरुष ग्रह (सूर्य, भौम, गुरु) बलवान हो तो पुत्र और स्त्री ग्रह (चन्द्र, शुक्र) बलवान हो तो कन्या का जन्म समझना चाहिए।

(११) लग्न से शुक्र जितने स्थान में हो तो उतने महीने का गर्भ समझना चाहिए, परन्तु यदि नवम स्थान से ऊपर शुक्र हो तो पंचम भाव से शुक्र पर्यन्त भाव के मास कहने चाहिए।

(१२) लग्न दिवाबली हो तो बालक का जन्म दिन में तथा रात्रि-बली हो तो रात में बालक का जन्म होगा, ऐसा समझना चाहिए।

(१३) इस साल सन्तान होगी या नहीं, इसके लिए यदि लग्नेश

पंचमेश इत्थशाली हो तो उसी वर्ष सन्तान होगी, अन्यथा नहीं।

(१४) लग्नेश-पंचमेश साथ हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो अवश्य पुत्रोत्पत्ति होगी।

(१५) जितने पुरुष ग्रह पंचम भाव को देखते हों, उतने पुत्र तथा जितने स्त्री ग्रह पंचम को देखते हों, उतनी लड़कियाँ होंगी, समझना चाहिए।

## विवाह प्रश्न

१. सप्तमेश का लग्नेश या चन्द्रमा के साथ इत्थशाल योग हो तो विवाह शीघ्र होगा।

२. यदि लग्नेश अथवा चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो शीघ्र विवाह होना समझना चाहिए।

३. सप्तमेश का जिस ग्रह के साथ इत्थशाल हो और वह ग्रह वक्री, निर्बल या नीच राशिगत हो तो विवाह काफी परेशानियों के बाद होगा।

४. सप्तम भाव में अष्टमेश या पापग्रह हो तो विवाह के तुरन्त बाद पति या पत्नी में से किसी एक की मृत्यु समझनी चाहिए।

५. सप्तम भाव या सप्तमेश पर शुभ दृष्टि हो तो शीघ्र ही विवाह होता है।

६. इस प्रकार के प्रश्न में लग्नेश, सप्तमेश तथा चन्द्रमा की स्थिति पर विचार करके ही फलाफल समझना चाहिए।

७. लग्नेश चन्द्र ३, ५, ७, ११वें स्थान पर होकर सूर्य बुध से दृष्ट हो तो शीघ्र विवाह होता है।

## कन्या परीक्षा

जिस कन्या के साथ विवाह-सम्बन्ध स्थापित किया जा रहा है वह सदोष है या निर्दोष, इसके लिए निम्नलिखित तथ्य ध्यान में रखने चाहिये—

१. लग्न तथा लग्नेश और चन्द्रमा स्थिर राशियों में हों तो कन्या को निर्दोष समझना चाहिए।

२. लग्न, लग्नेश और चन्द्रमा चर राशि में हों तो कन्या दोषी और चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि पर हो और लग्न चर राशि का हो तो कन्या को अल्पदोषी समझना चाहिये।

३. शनि, मंगल एक स्थान में चर राशि पर हों तो कन्या ने गुप्त प्रेम किया है और भोग में लीन रही है, परन्तु यदि इसी प्रकार शनि,

चन्द्रमा लग्न में हों तो प्रकट भोगी समझना चाहिये।

४. मंगल शनि केन्द्र में चन्द्रमा से दृष्ट हों तो निस्सन्देह कन्या पर-पुरुष प्रिय है।

५. शुक्र वृश्चिक राशि का या वृश्चिक के द्रेष्काण में हो तो भी कन्या को सदोषी ही समझना चाहिए।

## पातिव्रत परीक्षा

१. लग्नेश यथा चन्द्रमा से मंगल एकांश से मुत्थशिल हो तो स्त्री को परपुरुषरत समझना चाहिए।

२. लग्नेश चन्द्रमा से मुत्थशिल एवम् मंगल अपनी राशि पर हो तो स्त्री शीघ्र ही परपुरुष के साथ भागेगी।

३. यदि उपयुक्तरूपेण सूर्य से मुत्थशिल हो तो स्त्री राजकीय पुरुष के साथ भोगविलास में रत हुई है।

४. मंगल तथा लग्नेश इत्थशाली हो तो लेखक, पण्डित या बनिये से संसर्ग समझना चाहिए।

५. यदि लग्नेश शुक्र के साथ इत्थशाली हो तो स्त्री के समान कोमल पुरुष ने रमण किया है।

६. शनि तथा लग्नेश इत्थशाली हो तो स्त्री ने घर के नौकर के साथ संसर्ग किया है, ऐसा समझना चाहिए।

## वाद-विवाद या मुकदमे का प्रश्न

१. यदि लग्न में पापग्रह हों तो प्रश्नकर्ता मुकदमे में अवश्य जीतेगा।

२. सप्तम भाव में नीच ग्रह हों तो विजय संदिग्ध रहती है।

३. लग्न और सप्तम में क्रूर ग्रह हो तो मुकदमा लम्बे समय तक चलेगा।

४. लग्नेश, पञ्चमेश और शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो सन्धि हो जाती है।

५. लग्नेश, सप्तमेश और षष्ठेश छठे स्थान में हों तो परस्पर कलह और अधिक कटुता ले लेगा।

६. मुकदमे के प्रश्न में लग्न पञ्चम और षष्ठम स्थान तथा इन स्थानों के स्वामियों से विचार करना चाहिए।

७. लग्न के निर्बल होने से विजय की सम्भावना नहीं रहती।

८. लग्नेश, पञ्चमेश हीनबली हो और इन पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो पूर्वजों की सञ्चित निधि समाप्त होने पर भी मुकदमा निबटने

का आसार नहीं रहता।

९. चन्द्रमा लग्न या पञ्चम को देखता हो तथा उसका लग्नेश या पञ्चमेश के साथ इत्थशाल योग हो तो पूर्ण विजय-लाभ होता है।

## कार्य सिद्धि-असिद्धि प्रश्न

१. मेष, मिथुन, कन्या और मीन लग्न हो तो कार्य सिद्ध।

२. तुला, कर्क, सिंह और वृष लग्न हो तो विलम्ब से कार्य-सिद्धि।

३. वृश्चिक, धनु, मकर और कुम्भ लग्न हो तो कार्यसिद्धि नहीं होती।

४. लग्नेश ४, ५ और १०वें भाव में किसी भी स्थान पर हो तो निस्सन्देह कार्यसिद्धि होती है।

५. चन्द्रमा चतुर्थेश या दशमेश में से कोई भी ग्रह लग्न हो तो कार्य-सिद्धि होती है।

६. दशम भाव में उच्च का मंगल या सूर्य हो तो अवश्य ही कार्य-सिद्धि होती है।

७. दशमेश चन्द्रमा लग्नेश के साथ इत्थशाल हो तो कार्यसिद्धि होती है।

८. लग्न स्थान में भौम हो और उस पर गुरु की दृष्टि हो तो अवश्य कार्यसिद्धि होती है।

९. शनि का नवांश लग्न में तथा लग्न में राहु या केतु हो तो कार्य-सिद्धि नहीं होती।

१०. दशम या दशमेश पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो कार्य-सिद्धि नहीं होती।

११. पञ्चमेश और चतुर्थेश दशम भाव में हों तो शीघ्र ही कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

१२. चतुर्थेश या दशमेश का वक्री होना कार्यसिद्धि में बाधक है।

## लाभालाभ प्रश्न

१. प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और अष्टमेश दोनों अष्टम स्थान में हों तो व्यक्ति को लाभ होता है।

२. लग्न में सौम्य ग्रह हो तो लाभ है।

३. लग्न में चन्द्रमा, लाभभाव में गुरु या शुक्र एवं लाभ भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक को विशेष लाभ होता है।

४. लग्नेश और लाभेश एक स्थान पर हों तो जातक लाभ में रहता है।

५. लग्नेश और लाभेश का इत्थशाल हो तो लाभ होता है।

६. लग्नेश चन्द्रमा से दृष्ट होकर लाभ स्थान में स्थित हो तो दूसरों की सहायता से लाभ होता है।

७. दशमेश और चन्द्रमा का इत्थशाल हो तो लाभ-प्राप्ति होती है।

८. कर्माधिपति लग्नेश के साथ हो तो विशेष लाभ रहता है।

९. लाभेश और अष्टमेश का योग लाभ में रोड़े अटकाता है।

१०. अष्टम स्थान पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो लाभ नहीं होता :

११. लग्नेश छठे या आठवें भाव में हो तो हानि होती है।

१२. लग्नेश १२वें भाव में हो तो खर्च अधिक होने पर लाभ पहुँचता है।

१३. लग्न में बुध हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो विशेष लाभ होता है।

१४. ३, ८, १२वें भाव में ग्रह लाभ प्रदान करते है।

१५. लग्नेश में तथा दशमेश लग्न में हो तो चिन्ता कराने के बाद अल्प लाभ देता है।

## मूक प्रश्न विचार

जब प्रश्नकर्ता प्रश्न करने के लिए आए तब उसके दिल में किस सम्बन्ध को लेकर प्रश्न है, इसे जानने के लिए मैं नीचे कुछ नियम दे रहा हूँ—

१. यदि प्रश्न लग्न मेष हो तो प्रश्नकर्ता के मन में मनुष्यों की चिन्ता या इससे सम्बन्धित प्रश्न समझना चाहिए।

२. वृष—चौपायों या सवारी सम्बन्धित।

३. मिथुन—गर्भ से सम्बन्धित।

४. कर्क—व्यवसाय से सम्बन्धित।

५. सिंह—स्वयं से सम्बन्धित।

६. कन्या—स्वयं की स्त्री से सम्बन्धित।

७. तुला—द्रव्य से सम्बन्धित।

८. वृश्चिक—रोगी या औषधि से सम्बन्धित।

९. धनु—संचित द्रव्य से सम्बन्धित।

१०. मकर—शत्रु की चिन्ता से सम्बन्धित।

११. कुम्भ—मकान या स्थान से सम्बन्धित।

१२. मीन—देव-पितृ से सम्बन्धित।

१३. लग्नेश या लाभेश से जिस स्थान में चन्द्रमा हो उस भाव की चिन्ता प्रश्नकर्ता के मन में रहती है।

१४. बलवान चन्द्रमा से जिस स्थान में लग्नेश हो उस भाव से सम्बन्धित प्रश्न समझना चाहिए।

१५. जिस स्थान में चन्द्रमा हो उस भाव से सम्बन्धित प्रश्न होगा।

१६. कुण्डली में सबसे अधिक बलवान ग्रह जिस भाव में बैठा हो उस भाव का प्रश्न जानना चाहिए।

१७. लग्न में बलवान ग्रह हो तो स्वयं के विषय में, तीसरे स्थान में बलवान ग्रह हो तो भाई के विषय में, पंचम स्थान में हो तो सन्तान के विषय में, चतुर्थ स्थान में हो तो माता और मौसी के सम्बन्ध में, छठे स्थान में हो तो शत्रु के विषय में, सप्तम भाव में हो तो स्त्री के विषय में।

१८. नवम स्थान में हो तो धर्म या भाग्य के विषय में, और

१९. दशम स्थान में हो तो राज्य से सम्बन्धित प्रश्न समझना चाहिए।

२०. सूर्य स्वग्रही हो तो राज्य के सम्बन्ध में, चन्द्रमा स्वग्रही हो तो जल, खेत, धन या माता के सम्बन्ध में, मंगल हो तो शत्रु भय, राज्य भय, जमींदारी, भूमि आदि के सम्बन्ध में, बुध हो तो शास्त्र, चाचा या स्वामी चिन्ता के सम्बन्ध में, गुरु हो तो धर्म, मित्र, विद्या, परीक्षा और साक्षात्कार के सम्बन्ध में, शुक्र हो तो प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्ध में और शनि हो तो मकान के सम्बन्ध में, प्रश्न जातक के मन में होता है।

२१. चन्द्रमा लग्न में हो तो मार्ग या शत्रु चिन्ता, धन स्थान में हो तो धन के सम्बन्ध में, तीसरे स्थान में हो तो यात्रा के सम्बन्ध में, चतुर्थ स्थान में माता, ग्रह पंचम में सन्तान, षष्ठम में रोग, सप्तम में स्त्री चिन्ता, अष्टम स्थान में हो तो अरिष्ट चिन्ता, नवम से कृषि, दशम से भाग्य कार्य सिद्ध एकादश से व्यापार और बारहवें स्थान में चन्द्रमा हो तो चोरी गई वस्तु से सम्बन्धित चिन्ता जातक के मन में रहती है।

२२. मंगल बलवान हो तो अपने विषय में, गुरु बलवान हो तो स्त्री या प्रेमिका के सम्बन्ध में, चन्द्रमा बलवान हो तो माता के विषय में, शुक्र बलवान हो तो वंश के विषय में, शनि बलवान हो तो शत्रु के विषय में और सूर्य बलवान हो तो पिता के विषय में प्रश्न पृच्छक के मन में होता है।

जिस प्रकार अथवा जिस विधि से पुरुषों की कुण्डली का अध्ययन किया जाता है, उसी विधि से स्त्रियों की कुण्डली में पति के वास्ते फल कहना चाहिए।

स्त्रियों के देह का शुभाशुभ फल लग्न या चन्द्रमा में जो अधिक बली हो, उससे विचारना चाहिए।

लग्न से सप्तम स्थान में या इस स्थान द्वारा पति के गुण-अवगुण विचारना चाहिए।

अष्टम स्थान से पति की मृत्यु जाननी चाहिए। शुभ ग्रह और पाप ग्रहों के फल वही होते हैं जो पुरुष के लिए भाव-फलाध्याय में बताए गए हैं।

सप्तम ग्रह से स्वामी का शुभाशुभ, अष्टम स्थान से वैधव्य योग तथा लग्न से तेज, यश और सम्पत्ति का विचार करना चाहिए।

पंचम भाव से पुत्र विचार और नवम से पति का सुख विचारना चाहिए।

शेष भावों के फल स्त्री व पुरुष के समान हैं।

यदि सम राशि में लग्न और चन्द्रमा दोनों हों तो श्रेष्ठ स्त्री रूप और शीलयुक्त होती है। यदि उसे शुभ ग्रह देखते हों तो वह स्त्री गुणवती, साध्वी तथा सम्पत्तियुक्त होती है।

लग्न और चन्द्रमा यदि विषम राशि में हों तो स्त्री पुरुष की आकृति वाली, चंचल, परपुरुषरत तथा दुराचारिणी होती है और यदि पापग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हों, शुभ ग्रहों से युक्त हों और उन्हें शुभग्रह देखते हों तो स्त्री मिश्रित गुण, आकृति, स्थिति, चलबुद्धि वाली होती है।

यदि लग्न और चन्द्रमा समराशि में हों, पापग्रहों से युक्त दृष्ट हों तो मिश्रित गुण समझने चाहिए।

विषम राशि में लग्न हो, पुरुषग्रह बली हो, चन्द्रमा, बुध तथा शुक्र बलवान हों, शनि सामान्य शक्तियुक्त हो तो उस स्त्री के निश्चय ही कई पति होते हैं।

समराशि लग्न में मंगल, बुध, गुरु और शुक्र बलवान हों तो वह स्त्री विख्यात नाम वाली, साध्वी और बुद्धिमान होती है।

शनि मध्यबली हो, चन्द्र, शुक्र और बुध बल से हीन हों, शेष ग्रह

बलयुक्त हों और लग्न विषम राशि में हो तो वह स्त्री परपुरुषगामिनी होती है।

समराशि में लग्न हो, बृहस्पति, शुक्र और बुध बलवान हों तो वह स्त्री विदुषी और पतिव्रता होती है।

यदि लग्न या चन्द्रमा मंगल की राशि (१, ८) में बली हो और उसका जन्म मंगल के त्रिशांश में हो तो स्त्री दुराचारिणी होती है। शनि के त्रिशांश में हो तो दूती, गुरु के त्रिशांश में हो तो गुणवती, बुध के त्रिशांश में मलीना, शुक्र के त्रिशांश में हो तो स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

लग्न में शुक्र की राशि (२, ७) हो तो मंगल के त्रिशांश में कलह करने वाली, गुरु के त्रिशांश में साध्वी, बुध के त्रिशांश में वाद्यप्रिय तथा शुक्र के त्रिशांश में जन्म होने पर सुन्दरी होती है।

बुध का ग्रह (३, ६) लग्न में हो तो मंगल के त्रिशांश में विधवा, गुरु के त्रिशांश में पतिव्रता, बुध के त्रिशांश में प्रसिद्ध तथा शुक्र के त्रिशांश में जन्म लेनेवाली सौभाग्यवती भार्या होती है।

लग्न चन्द्रमा के ग्रह (४) में हो तो मंगल के त्रिशांश में जन्म लेने वाली स्त्री बलवान, चन्द्रमा पापग्रह से देखा जाता हो तो वह परपुरुष से विनोद करने वाली, शनि के त्रिशांश में विश्वस्तता, बृहस्पति के त्रिशांश में अल्प आयु एवं अल्पपुत्र वाली, बुध के त्रिशांश में शिल्पकला जानने वाली तथा शुक्र के त्रिशांश में जन्म लेनेवाली भ्रमणप्रिय होती है।

सातवाँ भाव यदि पापग्रहों से युक्त हो तो वह स्त्री विधवा होती है। यदि सप्तम स्थान को पापग्रह और शुभ ग्रह दोनों ग्रह देखते हों तो स्त्री दो बार ब्याही जाय या अनेक पति वाली हो। बलरहित क्रूर ग्रह सप्तम स्थान में हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों तो वह स्त्री जवानी में पति द्वारा त्यागी जाय। शुक्र और मंगल परस्पर एक-दूसरे के अंश में हों तो वह स्त्री अन्य पुरुष में आसक्त रहे। यदि दोनों सप्तम स्थान में चन्द्रमा से युक्त हों तो पति की आज्ञा से परपुरुषसंगिनी हो।

नीच या शत्रु स्थान में पापग्रह हो तो स्त्री पतिघातिनी होती है। शनि सप्तम स्थान में शत्रु ग्रह द्वारा देखा जाता हो तो वह स्त्री वृद्धावस्था तक कुंवारी रहती है। मंगल सप्तम में हो तो स्त्री उम्रभर पुरुष से कलह करती रहती है।

सप्तम ग्रह पापराशि हो तथा उस पर शनि हो तो स्त्री विधवा

होती है। शुक्र और मंगल एक-दूसरे की राशि में हों तो स्त्री अत्यधिक भोगप्रिय होती है।

चन्द्रमा सप्तम में हो तो पति-पत्नी दोनों लम्पट होते हैं।

चन्द्रमा और शुक्र यदि शनि या मंगल की राशिगत लग्न में हों तथा पंचम में पापग्रह हो तो वह स्त्री वन्ध्या होती है।

सप्तम भावराशि के नवांश में मंगल हो तथा उसको शनि देखता हो तो वह स्त्री नपुंसक होती है। चन्द्रमा और शुक्र मंगल की राशिगत लग्न में हों तो पति-पत्नी परस्पर वैर रखते हैं। मंगल और बुध हों तो भोगप्रिय तथा बृहस्पति लग्न में हो तो सुन्दर सन्तान वाली होती है।

उच्चस्थान में शुभ ग्रह हो तथा अष्टम स्थान पापग्रह से इष्ट हो तो स्त्री विधवा होती है।

अष्टमेश का नवांश पतिपापग्रह हो तो निस्सन्देह विधवा होती है।

शुभग्रह यदि आठवें स्थान में हो तो उसकी मृत्यु स्वामी से पहले होती है।

लग्न में धनु या कर्क राशि हो तो स्त्री दरिद्र होती है।

वृष, सिंह, वृश्चिक या कन्या लग्न हो तथा पचम में चन्द्रमा हो तो उसके बहुत कम पुत्र होते हैं।

स्त्री के जन्म लग्न से सप्तम स्थान में चन्द्रमा हो तथा उस पर शुक्र और मंगल की दृष्टि हो तो वह स्त्री पति की आज्ञा से दूसरे पुरुष के साथ रमण करती है।

शनि और मंगल की राशि या नवांश में ग्रह-प्राप्ति हो, शुक्र और चन्द्रमा से युक्त तथा पापग्रह से इष्ट हो तो कन्या और उसकी माता दोनों परपुरुषरत होती हैं।

यदि सप्तम में शुभ ग्रह हो तो वह राजा के नौकर की स्त्री होती है।

सातवें स्थान में यदि तीन शुभ ग्रह हों तो वह कन्या गुणवती तथा राजा की रानी होती है।

चन्द्रमा से सातवें ग्रह में शुभ ग्रह हो तो कन्या नौकरी करती है।

स्त्री के जन्मलग्न में चन्द्रमायुक्त शुक्र हो तो यह ऐशो-आराम करने वाली होती है।

लग्न शुक्र या चन्द्रमा के ग्रह में हो तो कन्या सुन्दरी, गुरु या बुध की राशि में हो तो कलहप्रिय होती है। लग्न में बृहस्पति, बुध या शुक्र हो तो वह सर्वगुणसम्पन्न होती है।

शुभग्रह लग्न को देखते हों तो कन्या रमणीय, पुत्रवती, पतिप्रेमा, शुद्ध चित्तवाली, पढ़ी-लिखी और नौकरी करनेवाली होती है।

बृहस्पति नवम, पंचम या केन्द्र में हो तो कन्या कुल का यश बढ़ानेवाली होती है।

मंगल चौथे स्थान में हो या सप्तम स्थान में हो तो उसका पति शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

## सन्तानहीन योग

१. पञ्चमेश नीच का हो तथा पाँचवें भाव में धनु राशि का मंगल हो।

२. पञ्चमेश नीच हो तथा पाँचवें भाव में कर्क राशि का मंगल हो।

३. पाँचवें तथा सातवें भाव में नीच राशि के ग्रह हों।

४. पञ्चमेश, षष्ठेश एक साथ कहीं भी हों तथा धनु का बृहस्पति हो।

५. पाँचवें स्थान में नीच ग्रह हो और उस पर नीच ग्रह की दृष्टि हो।

६. पाँचवें भाव में राहु हो तथा पंचमेश मंगल हो।

७. पाँचवें भाव में मेष का बृहस्पति बुध के साथ हो।

८. पंचमेश नीच का हो, अष्टम स्थान में हो।

९. पंचम स्थान में बृहस्पति और राहु मेष राशि में हों।

## अनेक सन्तान योग

१. पंचमेश शनि और शुक्र के साथ पाप स्थान गत हो।

२. अष्टम में पंचमेश हो।

३. पंचमेश और तृतीयेश कहीं पर भी एक साथ हों।

४. पंचमेश एवं तृतीयेश का अन्योन्याश्रित योग हो।

५. पंचम स्थान में तृतीयेश हो।

## वैधव्य योग

१. सातवें स्थान पर मंगल हो तथा उस पर पापग्रहों की दृष्टि हो।

२. लग्न से सप्तम भाव के बीच में तीन या चार पापग्रह स्थित हों।

३. सप्तम स्थान में नीच का होकर पापग्रह हो।

४. मंगल की राशि में राहु पापग्रह के ७वें, ८वें, १२वें भाव में हो।
५. क्षीण या नीच का चन्द्र ६, ८वें भाव में हो।
६. लग्न और ७वें स्थान पर पापग्रह हो।
७. षष्ठेश और अष्टमेश ६, १२वें भाव में हो।
८. सप्तमेश आठवें घर में तथा अष्टमेश सातवें घर में हो।
९. चन्द्रमा से सातवें भाव में मंगल, शनि या राहु हों।

## दुराचारिणी योग

१. सातवें तथा दूसरे घर में नीच ग्रह हो।
२. दूसरे घर में अष्टमेश हो।
३. सप्तम या द्वितीय स्थान पर नीच ग्रह की दृष्टि हो।
४. सप्तम स्थान पर अष्टमेश की पूर्ण दृष्टि हो।
५. सप्तमेश त्रिपडाय (३, ११) में पापी ग्रह के साथ हो।

## बाँझ योग

१. पञ्चम स्थान में तीन पापग्रह हों।
२. पञ्चम पर तीन पापग्रह की दृष्टि हो।
३. पञ्चमेश शत्रु राशि में पाप ग्रह के साथ पड़ा हो।
४. ८वें स्थान में बुध, गुरु और शुक्र हों।
५. ७वें घर में मंगल हो और उस पर शनि की दृष्टि हो।
६. सप्तम स्थान में शनि व मंगल साथ बैठे हों।

## निज फल

स्त्री की कुण्डली में सातवें भाव से उसका रूप-रंग एवं स्वभाव देखा जाता है।

१. यदि सातवें भाव में सूर्य पड़ा हो तो वह स्त्री दुष्ट स्वभाव की होती है। पति से उसकी सदा अनबन बनी रहती है तथा उसकी सन्तान गुणहीन होती है।

२. यदि चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो वह स्त्री नारी के गुणों से विभूषित, लज्जाशील, धनी और सुन्दर होती है।

३. यदि मंगल ७वें घर में हो तो नारी परपुरुषरत, कुकर्म-तत्पर और सौभाग्यहीन होती है।

४. कर्क या सिंह राशि में शनि के साथ मंगल हो तो स्त्री निस्संदेह वेश्या-सा जीवन व्यतीत करती है।

५. बुध यदि सातवें भाव में हो तो नारी कवि-हृदय, सौभाग्य-शालिनी और सुन्दर गुणों में मण्डित होती है। ऐसी स्त्री नाना प्रकार के ऐश्वर्य भोगती है।

६. गुरु सप्तम स्थान में होने से वह स्त्री पति को प्यारी, सुशील और पतिव्रता होती है।

७. चन्द्र कर्क राशि में एवं गुरु सप्तम में हो तो वह स्त्री विश्वसुंदरी का मुकुट धारण करती है।

८. शुक्र सातवें घर में होने से जातक गान-विद्या में प्रवीण, उच्च भोग भोगने वाली तथा स्वर्ग-प्रेमी होती है।

९. यदि शनि सातवें घर में हो तो वह स्त्री पेट के रोग से पीड़ित होती है, रूप में इसकी समता कम स्त्रियाँ करती हैं।

१०. सातवें स्थान में राहु हो तो नारी अपने कुल को दाग लगाने वाली होती है।

११. यदि सातवें भाव में केतु हो तो स्त्री पति-सुख से वंचित होती है तथा परपुरुष के संसर्ग हेतु बेचैन रहती है।

## पति योग

१. सातवें स्थान में वृष या तुला राशि हो और उसमें शुक्र का नव-मांश हो तो उस स्त्री को पण्डित, भाग्यशाली और चतुर पति प्राप्त होता है।

२. सातवें स्थान में सूर्य या उसका नवांश हो तो उस स्त्री का पति लेखक, विचारक या अफसर होता है, परन्तु रतिचर्या में स्त्री उस पति से प्रसन्न नहीं रहती।

३. सप्तम भाव में चन्द्र या चन्द्र का नवांश हो तो व्यक्ति कामा-तुर होता है, परन्तु दयालु स्वभाव के साथ-साथ रसिक और धनी होता है।

४. सातवें भाव में मंगल या उसका नवांश हो तो उसे व्यसनी, हिंसक और क्रोधी पति मिलता है, परन्तु धन के मामले में वह श्रेष्ठ होता है।

५. सप्तम स्थान में बुध या बुध का नवमांश हो तो उस स्त्री को विद्वान और इतिहासज्ञ पति मिलता है। ऐसा व्यक्ति कवि, लेखक या कुशल सम्पादक हो सकता है, परन्तु उसका शक्की स्वभाव होगा।

६. सातवें स्थान में गुरु या उसका नवमांश हो तो जातक का

पति विशेषज्ञ, विज्ञान में रुचि लेने वाला, पत्नी-भक्त एवं सेवापरायण होता है। मन्त्री, न्यायाधीश होने के साथ-साथ वह चिड़चिड़े स्वभाव का भी होता है।

७. सप्तम स्थान में शुक्र या उसका नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति भोगी और ऐशो-आराम का शौकीन होता हैं। उसका जीवन स्वच्छन्द होता है।

८. यदि सप्तम भाव में शनि या उसका नवमांश हो तो स्त्री को मूर्ख, व्यसनी, मद्यप, क्रोधी और चिड़चिड़े स्वभाव का पति मिलता है।

९. यदि सप्तम भाव में राहु, केतु अथवा उनका नवमांश हो तो ऐसी स्त्री को परस्त्रीरत पति मिलता है। वह क्रोधी और मद्यप होने के साथ-साथ स्त्री की उपेक्षा करनेवाला नीच पति होता है।

## पति लक्षण

१. जिस स्त्री का सप्तम स्थान बल-रहित एवं शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो उसका पति कायर होता है।

२. बुध सातवें स्थान में शनियुक्त हो तो पति नपुंसक होता है।

३. सप्तम भाव में चर राशि हो तो पति परदेश में रहता है।

४. सूर्य अपने नवांश के सातवें भाव में हो तो उसका पति कोमल-मति तथा रति-क्रीड़ा का विनोदी होता है।

५. शनि सप्तम भाव में अपनी राशि या नवांश में हो तो उस स्त्री का पति वृद्ध तथा मूर्ख होता है।

६. धर्मेश और बृहस्पति दुष्ट स्थान में हों तो पति अल्पायु होता है। यदि दोनों त्रिकोण या केन्द्र में हों तो पति दीर्घायु और धनी होता है। यदि ये दोनों केन्द्रकोण में बुध या सुखेश से युक्त हों तो पति विद्वान होता है। मंगल या शनि के साथ हों तो कृषक एवं षष्ठेश से युक्त हों तो पक्का तस्कर होता है।

सूर्य सप्तम भाव में हो तो पति गौर वर्ण, कामी और क्रोधी, चन्द्रमा हो तो रूपगुण से युक्त, दुर्बल गात्र, भोगी एवं योगी, मंगल हो तो पति नम्र, आलसी, चतुर और रक्तकान्ति वाला; बुध हो तो विद्या-व्यसनी, धनवान तथा रसिक; बृहस्पति हो तो पति दीर्घायु, धनी तथा कामी; शुक्र हो तो तेजस्वी, कवि, कामी और बहुभोगी; शनि हो तो वृद्ध एवं पाप कर्मरत और सप्तम भाव में राहु और केतु हो तो पति मलिन बुद्धि तथा नीच होता है।

७. इसके अतिरिक्त अन्य कार्य अथवा भाव जो अन्य स्थानों से देखे जाते हैं वे ही कार्य स्त्री की कुण्डली से भी समझने चाहिए।

## १४ : मेलापक व मुहूर्त

विवाह से पूर्व वर-वधू की जन्म-कुण्डली मिलाने को 'मेलापक' कहते हैं। इससे जहाँ एक ओर एक-दूसरे के स्वभाव, वर्ण, विचार और प्रेम के बारे में ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है, वहाँ दूसरी ओर दोनों पक्षों के लोग भी आश्वस्त हो जाते हैं। आजकल पढ़े-लिखे और उच्च वर्ग के लोगों में भी यह भावना उग्र रूप में देखी जा रही है।

इस प्रकार ग्रह, नक्षत्र और राशि के माध्यम से भावी वर-वधू की कुण्डली का मिलान कर समान स्वभाव के लोगों का विवाह किया जाय तो उन दोनों का दाम्पत्य जीवन मधुर बना रहता है।

नीचे ज्योतिषशास्त्र में वर्णित मेलापक योग दिए जा रहे हैं—

१. वर के सप्तमेश का नीच स्थान यदि कन्या की राशि हो तो वैवाहिक जीवन मधुर रहता है।

२. यदि कन्या की राशि वर के सप्तमेश का उच्च स्थान हो तो वर-वधू का जीवन आनन्दमय बीतता है।

३. वर के सप्तम स्थान के स्वामी की राशि कन्या की भी हो तो दोनों का जीवन मधुर रहता है।

४. वर के शुक्र की राशि कन्या की राशि हो तो भी जीवन सुखमय बीतता है।

५. वर की सप्तमांश राशि में कन्या का चन्द्रमा पड़ा हो तो वैवाहिक जीवन सुखकारी होता है।

६. वर के लग्नेश की राशि, कन्या की राशि भी हो तो वैवाहिक जीवर मधुर होता है।

७. लग्न से सातवीं राशि दूसरे पक्ष की राशि हो तो पति-पत्नी आनन्दमय जीवन बिताते हैं।

८. यदि दोनों की एक ही राशि मित्र तत्त्व हो तो दोनों में प्रेम रहता है।

९. वर-कन्या के लग्नेश मित्र घर में पड़े हों तो दोनों का जीवन सुखमय होता है।

१०. दोनों के गुण, रवि और चन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो वैवाहिक जीवन मधुर होता है।

११. वर और कन्या की कुण्डली में सन्तान न हो तो भी दोनों का जीवन सुखमय बीत सकता है।

## वर्ग विचार

पति-पत्नी के सुख का विचार करते समय वर्ग पर भी ध्यान दिया जाता है। यदि पति के वर्ग से पाँचवें वर्ग की पत्नी हो तो उम्र-भर कलह, तीसरा वर्ग हो तो साधारण जीवन तथा दो ही वर्ग हो तो साधारण जीवन तथा एक ही वर्ग हो तो मित्रता रहती है।

| | |
|---|---|
| १. अ इ उ ऊ ए ऐ ओ औ अं | गरुड़ वर्ग |
| २. क ख ग घ ङ | बिल्ली वर्ग |
| ३. ट ठ ड ढ ण | श्वान वर्ग |
| ४. त थ द ध न | सर्प वर्ग |
| ५. प फ ब भ म | चूहा वर्ग |
| ६. य र ल व | हरिण वर्ग |
| ७. श ष स ह | भेड़ा वर्ग |

ऊपर एक तरफ अक्षर दिए हैं, जिनका नाम इन अक्षरों से प्रारम्भ होता है, उसका वर्ग उसके सामने लिखा है।

## मुहूर्त

प्रत्येक मांगलिक कार्य को प्रारम्भ करते समय मुहूर्त देखा जाता है। नीचे कुछ प्रसिद्ध मुहूर्त दिए जा रहे हैं—

## विवाह मुहूर्त

१. शुभ लग्न—तुला, कन्या, मिथुन तथा धनु शुभ लग्न हैं।

२. शुभनक्षत्र—मूल, अनुराधा, रेवती, हस्त, स्वाति, मघा एवं रोहिणी।

३. शुभ मास—ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख, आषाढ़।

४. मुहूर्त—दस रेखाएँ या ७-८ रेखाएँ।

५. पंचांग में लिखित मुहूर्त भी देख लेने चाहिए।

## अक्षरारम्भ मुहूर्त

नक्षत्र—अश्विनी, हस्त, श्रवण, स्वाति, रेवती।
वार—सोम, बुध, गुरु।
तिथि—२, ३, ५, १०, १२।
लग्न—२, ३, ६।

## यात्रा मुहूर्त

नक्षत्र—अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा।
तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३।
पूर्व दिशा की ओर जाना हो तो—मेष, सिंह और धनु के चन्द्र में।
दक्षिण दिशा की ओर जाना हो तो—वृष, कन्या और मकर के चन्द्र में।
पश्चिम दिशा की ओर जाना हो तो—तुला, मिथुन और कुम्भ के चन्द्र में।
उत्तर दिशा की ओर जाना हो तो—कर्क, वृश्चिक तथा मीन के चन्द्र में।

## गृहारम्भ मुहूर्त

नक्षत्र—पुष्य, अनुराधा, धनिष्ठा, चित्रा, हस्त, स्वाति, रेवती और मृगशिरा।
वार—चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्र।
तिथि—२, ३, ५, ७, १० तथा १३वीं।

## शान्तिक कार्यों का मुहूर्त

नक्षत्र—अश्विनी, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी, रेवती।
वार—चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र।
तिथि—२, ३, ५, ७, ११, १३।

## बड़े व्यक्ति से मिलने का मुहूर्त

नक्षत्र—श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, रेवती और अश्विनी।
वार—रवि, सोम, बुध, गुरु और शुक्र।

## मुकदमा दायर करने का मुहूर्त

नक्षत्र—अश्विनी, भरणी, आश्लेषा, मघा।
वार—रवि, बुध, गुरु, शुक्र।
तिथि—३, ५, ८, १०, १५।
लग्न— ३, ६, ७, ८।

## सर्वारम्भ मुहूर्त

नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, हस्त।
वार—बुध, गुरु।
तिथि—२,५, ७, ६, १३।
लग्न—१, ५, ६, १०, ११।

## सूतिका स्नान मुहूर्त

रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, मृगशिरा, रोहिणी, स्वाति, अनुराधा, अश्विनी नक्षत्र, रवि, मंगल और गुरुवार, प्रसूता स्त्री को स्नान कराने के लिए शुभ हैं।

परन्तु आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, विशाखा, मूल, चित्रा नक्षत्र तथा बुध, शनि इस मुहूर्त के लिए त्याज्य हैं।

कुछ विद्वान चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी तिथि भी इस कार्य के लिए वर्जित समझते हैं।

## नामकरण मुहूर्त

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु और शुक्र।
शुभ नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद और रेवती।
शुभ वार—बुध, गुरु एवं शुक्र।

## अन्न प्राशन मुहूर्त

शुभ वार—सोम, बुध, बृहस्पति एवं शुक्र।
शुभ तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३, १५।
शुभ नक्षत्र—रोहिणी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, पुष्य, अश्विनी, श्रवण एवम् धनिष्ठा।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १०, ११।
शुभ मास—६ मास के वाद किसी सम (८, १०, १२वें) मास में।
पक्ष—शुक्ल पक्ष।
समय—दोपहर के पूर्व।

## कर्णवेध मुहूर्त

शुभ नक्षत्र—श्रवण, घनिष्ठा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी एवं पुनर्वसु।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्र।

शुभ तिथि—१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२।

विशेष—चैत्र, आषाढ़, शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक और पौष मास को छोड़ अन्य मास।

कुछ विद्वान जन्म-मास को भी शुभ नहीं मानते हैं।

## विद्यारम्भ मुहूर्त

शुभ नक्षत्र—मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, पुष्य एवं आश्लेषा।

शुभ वार—रवि, गुरु एवं शुक्र।

शुभ तिथि—५, ६, ११, १२, २, १०।

शुभ लग्न—शुभ लग्न।

## द्विरागमन मुहूर्त (मुकलावा)

समय—विवाह के वाद १, ३, ५, ७, ९वें साल में।

सूर्य—मेष, वृश्चिक, कुम्भ के सूर्य में।

नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, हस्त, उ० षा, उ० फा०, उ० भा०, रोहिणी, श्रवण, घनिष्ठा, पुनर्वसु, स्वाति, मूल, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु एवम् शुक्र।

शुभ तिथि—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

शुभ लग्न—२, ३, ६, ७, १२।

## चन्द्रवास विचार

मेष, सिंह, धनु राशि का चन्द्र पूर्व में रहता है। वृष, कन्या, मकर राशि का चन्द्र दक्षिण दिशा में रहता है। तुला, मिथुन, कुम्भ राशि का चन्द्रमा पश्चिम दिशा में और कर्क, वृश्चिक तथा मीन का चन्द्रमा उत्तर दिशा में रहता है। यात्रा में चन्द्र दिशा का विशेष ध्यान रखा जाता है।

## चन्द्र फल

सम्मुख चन्द्रमा धन देने वाला अर्थात् यदि व्यक्ति मेष, सिंह और धनु राशि के चन्द्र में पूर्व दिशा की ओर यात्रा करे तो अर्थ-लाभ, कार्य-सिद्धि और सफल कार्य होगा।

इसी समय यात्रा करते समय दक्षिण की ओर रहने वाला चन्द्र सुख-सम्पत्ति देने वाला, पाठी (पृष्ठ) का चन्द्रमा शोकसन्तप्त करने वाला तथा वाम चन्द्र धन-क्षय वाला होता है।

## दिशाशूल विचार

चन्द्र और शनिवार को पूर्व में दिशाशूल होता है। गुरुवार को दक्षिण दिशा की ओर, रवि और शुक्रवार पश्चिम दिशा की ओर तथा मंगलवार और बुधवार को उत्तर दिशा में दिशाशूल वास माना गया है।

## शुभ फल

वाम हस्त की ओर दिशाशूल रहना ही शुभ माना गया है।

## दिशाशूल परिहार

रवि को पान, सोम को चन्दन, मंगल को छाछ, बुध को पुष्प, गुरु को दही, शुक्र को घृत और शनि को तिल दान करने से दिशाशूल परिहार हो जाता है।

## पंचम विचार

श्रवण, धनिष्ठा, पू० भा०, उ० भा० और रेवती ये पाँच नक्षत्र पंचम कहलाते हैं।

**पंचक फल**—पंचक नक्षत्रों में दक्षिण गमन, नई वस्तु का आरम्भ, काष्ठ संग्रह, शुभ कार्य आदि वर्जित हैं।

## योगिनी विचार

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १. | ९ | तिथि में | योगिनी | पूर्व | में |
| २. | १० | " | " | उत्तर | " |
| ३. | ११ | " | " | आग्नेय | " |
| ४. | १२ | " | " | नैऋत्य | " |
| ५. | १३ | " | " | दक्षिण | " |
| ६. | १४ | " | " | पश्चिम | " |
| ७. | १५ (पूर्णिमा) | " | " | वायव्य | " |
| ८. | ३० (अमावस्या) | " | " | ईशानकोण | " |

योगिनी वास माना गया है।

## योगिनी फल

यात्रा के समय वाम हस्त की ओर रहनेवाली योगिनी सुखदायक, पृष्ठ की मनोच्छा पूर्ण करनेवाली, दक्षिण की धनहर्ता और सम्मुख की ओर रहनेवाली योगिनी मरण-तुल्य कष्ट देनेवाली होती है।

जिस जातक की जो राशि होती है, उसके सामने अंकित मास, तिथि और वार आदि जातक होते हैं। जातक चन्द्रवार या लग्न में जातक को विशेष कष्ट उठाना पड़ता है।

## नूतन गृह-प्रवेश मुहूर्त

शुभनक्षत्र—उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा एवं रेवती।

शुभ वार—चन्द्र, चित्रा, गुरु एवं शुक्र।

शुभ तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३।

शुभ लग्न—२, ५, ८, ११।

## दुकान करने का मुहूर्त

शुभ नक्षत्र—रो०, उ० षा०, उ० भा०, उ० फा०, ह०, पु०, चि० रे०, अनु०, अश्वि०।

शुभ व आर—शुक्र, गुरु, बुध और शनि।

शुभ तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३।

# सप्तवारादि मध्ये कार्याकार्य विचार

## रविवार

संगीतवाद्यादि शिक्षा, स्वास्थ्य लाभ प्रयोग, मोटर यानादि खरीदना या उसमें बैठना, नौकरी प्रारम्भ, पशु खरीदना, हवन मन्त्र, उपदेश, शिक्षा-दीक्षा देना, दवा-सेवन, शस्त्र खरीदना, वस्त्र, धातु आदि का क्रय-विक्रय, वाद-विवाद, न्यायालय विषयक सलाह-मशविरा और नवीन पद ग्रहण आदि कार्य रविवार को करना शुभ और सफलतादायक माना गया है।

## सोमवार

कृषि-यन्त्र खरीदना, बीज बोना, बगीचा, वृक्ष लगाना, रत्नधारण, औषधालय, क्रय-विक्रय, निर्माण, भ्रमण, यात्रा, कलाप्रिय कृत्य, स्त्री-प्रसंग, नवीन कार्य, अलंकार तथा आभूषण धारण, गायन, वादन, पशुपालन और वस्त्र-भूषणादि क्रय-विक्रय आदि सोमवार को शुभ माने गए हैं।

## मंगलवार

जासूसी कार्य, भेद लेना, युद्ध-नीति विचार, असत्य कार्य, ऋण देना, गवाही देना, चोरी, विष, अग्नि-विषयक कार्य, निर्माण, सैन्य-संगठन, वाद-विवाद, निर्णय, साहस से सम्बन्धित कार्य आदि शुभ हैं, पर मंगलवार को ऋण लेना अशुभ फलदायक है।

## बुधवार

ऋण देना, अहितकर कार्य, शिक्षा-दीक्षा विषयक कृत्य, विद्यारम्भ, अध्ययन, चातुर्य कार्य, सेवा-वृत्ति, बहीखाता-किताब विचार, शिल्प-कार्य, वस्तु-निर्माण, धातु क्रिया, नोटिस देना, गृह-प्रवेश, जलपान, राजनीतिक विचार, शालागमन आदि उत्तम हैं, पर इस दिन ऋण लेना ठीक नहीं है।

## गुरुवार

ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा, धर्म, न्याय-विषयक कृत्य, अनुष्ठान का

# घात चक्र

| क्रम संख्या | राशि | मास | तिथि | वार | पुरुष चन्द्र | लग्न | नक्षत्र | योग | करण | प्रहर | स्त्री चन्द्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | मेष | कार्तिक | १,६,११ | रवि | १ | १ | मघा | विष्क | बव | १ | १ |
| २ | वृष | माघ | ५,१०,१५ | शनि | ५ | २ | हस्त | शुक्ल | शकुनी | ४ | ८ |
| ३ | मिथुन | आषाढ़ | २,७,१२ | चन्द्र | ९ | ४ | स्वाति | परि | चतुष्प | ३ | ७ |
| ४ | कर्क | पौष | २,७,१२ | बुध | २ | ७ | अनु. | व्याघा | नाग | १ | ९ |
| ५ | सिंह | ज्येष्ठ | ३,९,१३ | शनि | ६ | ० | मूल: | धृति | बव | १ | ४ |
| ६ | कन्या | भाद्र | ५,१०,१५ | शनि | १० | १२ | श्रव. | शूल | कौल | १ | ३ |
| ७ | तुला | माघ | ४,९,१४ | गुरु | ३ | ६ | शत. | शूल | तैति. | ४ | ६ |
| ८ | वृश्चिक | आश्विन | १,६,११ | शुक्र | ७ | ८ | रेव. | व्यती. | गर. | १ | २ |
| ९ | धनु | श्रावण | ३,८,१३ | शुक्र | ४ | ९ | भर. | वर | तैतिल | १ | १० |
| १० | मकर | वैशाख | ४,९,१४ | मंगल | ८ | ११ | रोहि. | वैधृति | शकुनी | ४ | ११ |
| ११ | कुम्भ | चैत्र | ३,८,१३ | गुरु | ११ | ३ | आर्द्रा | मंड | किस्तुघ्न | ३ | ५ |
| १२ | मीन | फाल्गुन | ५,१०,१५ | शुक्र | १२ | ५ | आश्ले. | वैधृति | चतुष्प. | ४ | १२ |

आरम्भ, वेदाभ्यास, ग्रह-शान्ति, मांगलिक कृत्य, नवीन पद ग्रहण, वस्त्र धारण, आभूषण ग्रहण, यात्रारम्भ, ट्रक एवं मोटर चालन, औषध-निर्माण तथा दवाई प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

### शुक्रवार

भोग-विलास, सांसर्गिक कृत्य, प्रेमिका-प्रेमी से मिलना या सम्बन्ध स्थापित करना, प्रेम-व्यवहार, मित्रता, मणि-रत्न-धारण, वस्त्र-निर्माण, इत्र, अर्क आदि निकालना, व्यापार, नाटक, दान देना, भण्डार भरना, कृषि, हल प्रवाह, धान्य रोपण, आयुर्वेद शिक्षा, विद्याभ्यास आदि कार्य शुभ माने गये हैं।

### शनिवार

गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, धातु-लौह-मशीनरी व कलपुर्जों का व्यापार, गवाही देना, वाद-विवाद, इत्र निकालना, गृह-निर्माण, दुष्ट कृत्य, वाहनादि खरीदना, उपदेश देना, सेवा विषयक कृत्य प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

### जन्म समय पाद-विवेक

जन्मकाल में चन्द्रमा लग्न से १, ६, ११ भवन में हो तो सोने का, १, ५, ९, हो तो चाँदी का, ३, ७, १० हो तो ताँबे का, ४, ८, १२ हो तो लोहे का पाया जाना चाहिए।

### पाद फल

लोह-पाद में जन्म लेनेवाला कष्ट, पीड़ा, स्वर्णपादवश, सुखानन्द ; ताम्रपादवश, आराम तथा चाँदी का पाया जन्म के समय शुभ माना गया है।

### राशि निर्णय व्यवस्था

विवाह, सभी प्रकार के मांगलिक कार्य, यात्रा, ग्रह-गोचर देखना आदि कार्यों में जन्म-राशि को ही प्रधानता देनी चाहिए।

देवालय ग्राम, युद्ध, सेवा-कार्य और व्यवहार आदि में नाम राशि को प्रधानता देनी चाहिए।

## ग्रह शान्ति व्यवस्था

अशुभ ग्रह अथवा पाप ग्रह की दशा आने पर उस ग्रह की शान्ति आवश्यक है। नीचे पाठकों की सुविधार्थं ग्रह शान्ति के लिए आवश्यक दानादि, जप संख्या और जप करने का तन्त्रीय मन्त्र दिया जा रहा है।

### सूर्य

दान—माणिक्य, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, गुड़, घी, रक्तवस्त्र, रक्तपुष्प, रक्तचन्दन और धेनु आदि।

जप संख्या—७०००।

जप मन्त्र—(तन्त्रीय) ॐ ह्रीं ह्रूं सः सूर्याय स्वाहा।

### चन्द्र

दान—मोती, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, शंख, कपूर।

जप संख्या—११०००।

जप मन्त्र (तन्त्रीय) ॐ श्रीं श्रूं सः सोमाय स्वाहा

### भौम

दान—मूंगा, स्वर्ण, गेहूँ, ताम्र, मसूर, गुड़, घी, रक्तवस्त्र, रक्त, कनेर, केशर।

जप संख्या—१००।

जप मन्त्र (तन्त्रीय) ॐ क्रां क्रीं क्रूं सः भौमाय स्वाहा।

### बुध

दान—पन्ना, स्वर्ण, मूंगा, कांस्य पात्र, शक्कर, घृत, कपूर, हरित वस्त्र, हाथीदाँत और पञ्च रक्त।

जप संख्या—८०००।

जप मन्त्र (तन्त्रीय) ॐ व्रां व्रीं व्रूं सः बुधाय स्वाहा।

### गुरु

दान—पुखराज, सुवर्ण, कांस्य पात्र, दाल, चीनी, शक्कर, घृत, पीला वस्त्र, पुष्प, हल्दी, पुस्तक।

जप संख्या—१६००० ।

जप मन्त्र (तन्त्रीय) ॐ ज्ञां ज्ञीं ज्ञूं सः गुरुवे स्वाहा ।

**शुक्र**

दान—हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, श्वेत वस्त्र, दही, घोड़ा, चन्दन, घी, सुगन्धित द्रव्य ।

जप संख्या—१६,००० ।

जप मन्त्र (तन्त्रीय) ॐ श्रं इँ ऊं सः शुक्राय स्वाहा ।

**शनि**

दान—नीलम, सुवर्ण, लोहा, उड़द, तेल, कृष्ण वस्त्र, पुष्पं, गौ, कस्तूरी, भैंस और उपानह ।

जप संख्या—२३,००० ।

जप मन्त्र (तन्त्रीय) ॐ षां षीं षूं सः शनये स्वाहा ।

**राहु**

दान—गोमेद, स्वर्ण, सीसा, तिल, सरसों, नील वस्त्र, खड्ग और कम्बल ।

जप संख्या—१८,०००

जप मन्त्र (तन्त्रीय) ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं सः राहवे स्वाहा ।

**केतु**

दान—लहसुनिया, स्वर्ण, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूम्रवस्त्र, नारियल और बकरा ।

जप संख्या—१७,०००

जप मन्त्र (तन्त्रीय) ॐ क्लां क्लीं क्लूं सः केतवे स्वाहा ।

उपर्युक्त दी गई दान सूची में से यथाशक्य सामर्थ्यानुसार ही दान करना चाहिए ।

शुद्ध होकर, पवित्र कपड़े पहन, नियत सम्बन्धित जप करने से अवश्य ही अभीष्ट सिद्धि होती है ।

## १५ : भारतीय ज्योतिष की उपयोगिता

भारतीय ज्योतिष अपने-आपमें पूर्ण ज्योतिष है और इसकी सत्ता तथा इसके अस्तित्व को सभीने एक स्वर से स्वीकार किया है। आज का जीवन इतना अधिक जटिल हो गया है कि मनुष्य को अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए जरूरत से ज्यादा परिश्रम करना पड़ रहा है। इसलिए उसका सारा जीवन अपने लक्ष्य तक पहुँचने और उसका फल प्राप्त करने में ही व्यतीत हो जाता है।

परन्तु इतना होने पर भी अधिकांश व्यक्ति अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते या यों कहा जाए कि बहुत अधिक व्यक्ति तो वे होते हैं जिन्हें अपने लक्ष्य का भली प्रकार से ज्ञान ही नहीं होता। प्रारंभ में वे किसी एक रास्ते को स्वीकार करते हैं और उसपर आगे बढ़ते हैं, परन्तु काफी कुछ चलने के बाद वे इस बात को अनुभव करते हैं कि उन्होंने जो रास्ता चुना है वह उनकी प्रकृति से मेल नहीं खाता या उस मंजिल पर पहुँचने की उनकी जो गति है वह इतनी धीमी है कि इस जीवन में उस मंजिल तक पहुँचना संभव नहीं हो सकेगा।

ऐसी स्थिति में उनकी दृष्टि ऐसे विषयों की खोज में लगी जिसके माध्यम से वे अपने लक्ष्य को भली प्रकार से पहचान सकें या अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफलता प्राप्त कर सकें।

यद्यपि जीवन में उन्नति के लिए सैकड़ों विषय हैं परन्तु ये सारे विषय मानव-जीवन से संबंध रखने वाले हैं। मानव-जीवन को आगे बढ़ाने में या उसे पूर्णता देने में सहायक नहीं हैं। एक प्रकार से देखा जाए तो ये सभी विषय पूर्व काल में किए गए शोध के परिणाम हैं, परन्तु ज्योतिषशास्त्र एक ऐसा विषय है जो भविष्य को भली प्रकार से पहचान सकता है और इसके माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि आने वाला समय किस प्रकार का है।

जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूँ, आज का मानव जल्दी से जल्दी अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आतुर है। उसकी एक ही इच्छा या आकांक्षा है कि जल्दी से जल्दी वह उस क्षेत्र की पूर्णता तक पहुँच जाए जो कि उसके जीवन का लक्ष्य रहा है। प्रत्येक व्यापारी यह चाहता

है कि वह अपने व्यापार के माध्यम से बहुत ऊँचे स्तर पर पहुँचकर एक सफल उद्योगपति के रूप में अपने-आपको समाज में स्थापित कर सके या एक शिक्षार्थी यह चाहता है कि वह शिक्षा के उन आयामों को स्पर्श कर सके जहाँ तक अभी तक बहुत कम लोग पहुँच सके हैं। इसी प्रकार एक कलाकार अपने जीवन में कला के अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आतुर है। एक साहित्यकार एक ऐसी अमर कृति को पूर्णता देने में विश्वास करता है जिससे उसका नाम आने वाली पीढ़ियों में सुरक्षित रह सके।

परन्तु व्यक्ति के पास समय कम रह गया है, क्योंकि वर्तमान समय में जरूरत से ज्यादा संघर्ष और एक-दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ बढ़ गई है, फलस्वरूप व्यक्ति को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए जरूरत से ज्यादा संघर्ष करना पड़ रहा है और उसका पूरा जीवन इस संघर्ष में ही व्यतीत हो जाता है। उसे अपने जीवन में जो मौलिक कार्य करना होता है उसके लिए उसके पास बहुत ही कम समय बच पाता है। इसके अलावा जैसा मैंने ऊपर बताया कि व्यक्ति अपने सही क्षेत्र का चुनाव नहीं कर पाता फलस्वरूप वह अपने कार्य के प्रति न तो आत्मीयता रख पाता है और न अपने जीवन में संतुष्ट ही हो पाता है। उदाहरण के लिए कपड़े के व्यापारी को यदि लकड़ी के व्यापार में लगा दिया जाए तो उसके मानस में यह व्यापार अनुकूल नहीं हो पाएगा और न वह इस कार्य के प्रति उतनी आत्मीयता स्थापित कर पाएगा जितनी कि वास्तव में उस व्यापार के लिए आवश्यक होती है।

ऐसी स्थिति में वह अपने जीवन में जितनी प्रगति करना चाहता है उतनी प्रगति नहीं कर पाता और एक प्रकार से देखा जाए तो उसे अपने जीवन के प्रति और कार्य के प्रति उतना अनुराग नहीं रह पाता जितना कि वास्तव में होना चाहिए।

इस प्रकार जब कुछ वर्षों बाद वह यह अनुभव करता है कि मैं जीवन की दौड़ में पिछड़ गया हूँ और वास्तव में ही मुझे इस उम्र तक जितनी प्रगति करनी चाहिए थी उतनी प्रगति नहीं कर पाया हूँ तो उसके मन में स्थायी रूप से असन्तोष घर कर लेता है और वह अपने जीवन को भारवत् समझने लग जाता है।

तब उसे महसूस होता है कि मेरी रुचि कपड़े के व्यापार में है जबकि मैं लकड़ी का व्यापार कर रहा हूँ और वह लकड़ी के व्यापार को छोड़कर कपड़े के व्यापार में प्रवेश करता है; परन्तु तब तक वह

जीवन का अधिकतर हिस्सा भोग चुका होता है और फिर नये सिरे से इस उम्र में कार्य प्रारम्भ करने के कारण अपने जीवन में लक्ष्य तक पहुँचने में समर्थ नहीं हो पाता।

ज्योतिष इसी समस्या का समाधान करता है, क्योंकि यह भूत-काल का विज्ञान नहीं है अपितु यह एक ऐसा विज्ञान है जिसके माध्यम से भविष्य के गर्भ में झाँका जा सकता है। यह वह विज्ञान है जिसकी जड़ें मानव-जाति के प्रारम्भ से हैं और मानव-सभ्यता ने जब पहली बार अपनी आँखें खोली थीं तो आकाश में ग्रहों और नक्षत्रों को देख-कर विचार किया था कि ये क्या हैं। क्या इनका प्रभाव इस पृथ्वी पर पड़ता है ? क्या इनका सम्बन्ध मानव-जीवन से भी है ? और क्या इनके प्रभाव से ही मानव-जीवन संचालित होता है ?

आज भी जन-मानस में ज्योतिष को लेकर काफी सन्देह और गलतफहमियाँ हैं और यह भी स्पष्ट है कि जब तक उनके सन्देहों का निराकरण नहीं होगा तब तक उनका मानस स्पष्ट नहीं हो सकेगा।

आगे के पृष्ठों में मैं उन सन्देहों का निराकरण करने का प्रयत्न कर रहा हूँ जो सन्देह आज जन-मानस में विद्यमान हैं।

प्रश्न : क्या ज्योतिष भविष्य में झाँकने का एक सशक्त माध्यम है ? क्या इसके माध्यम से हम अपने भविष्य को भली प्रकार से पहचान सकते हैं ?

उत्तर : जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूँ, ज्योतिषशास्त्र मानव की सभ्यता के साथ-साथ विकसित हुआ है अतः मानव-सभ्यता जितनी पुरानी है ज्योतिष-विज्ञान भी उतना ही पुराना है। यदि इस विज्ञान में आन्तरिक बल नहीं होता तो यह विज्ञान कभी का समाप्त हो चुका होता। यह विज्ञान ही एक ऐसा विज्ञान है जिसके द्वारा हम मानव के भविष्य को भली प्रकार से देख सकते हैं और उसका अध्ययन कर सकते हैं क्योंकि मानव-जीवन पूर्णतया ग्रहों के परस्पर आकर्षण-विकर्षण से बँधा हुआ है अतः उन आकर्षण-विकर्षण का प्रभाव मानव पर निश्चित रूप से पड़ता ही है और उसी के फ़लस्वरूप मानव-जीवन संचालित होता है।

ग्रहों की गति एक निश्चित पथ पर एक निश्चित समय के द्वारा बँधी हुई है अतः यह शुद्ध गणित का कार्य है और गणित अपने-आप में पूर्ण सत्य है तथा विश्व के किसी भी भाग में गणित का फल अपने-आप में एक-सा स्पष्ट होता है।

अतः मानव-जीवन पर प्रभाव डालने वाले ग्रहों का गणित के द्वारा अध्ययन कर यह निश्चित किया जा सकता है कि आने वाले समय में इन ग्रहों का किस प्रकार से सम्बन्ध बनेगा या इन ग्रहों के सम्बन्ध से किस प्रकार के प्रभाव की पुष्टि हो सकेगी। इसी के आधार पर उसके फल-कथन को स्पष्ट कर दिया जाता है।

प्रश्न : इतनी दूर से ग्रह-नक्षत्र किस प्रकार से मानव-जीवन पर प्रभाव डाल सकते हैं ?

उत्तर : हम पूर्ण ब्रह्माण्ड के मात्र अंशभूत हैं। इस प्रकार से देखा जाए तो हमारी अपने-आपमें कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है अपितु उस ब्रह्माण्ड के एक भाग हैं। अतः ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी घटित होता है उसका प्रभाव इस न्यूनतम भाग पर भी पड़ना स्वाभाविक है। उदाहरण के लिए समुद्र की एक बूंद यदि हम अपनी हथेली पर ले लें तो यह अपने-आपमें बूंद कहलाएगी परन्तु समुद्र के साथ यदि देखा जाए तो वह बूंद अपना अलग अस्तित्व रखते हुए भी उस पूरे समुद्र का ही एक भाग है और समुद्र पर जो भी प्रभाव पड़ता है उस प्रभाव को वह बूंद भी स्वीकार करती है। या यों कहा जाए कि समुद्र जिस प्रभाव को झेलता है उसी प्रभाव को वह बूंद भी उतनी ही क्षमता के साथ अपनी स्थिति के अनुसार झेलती है।

मानव-जीवन भी इस पूरे ब्रह्माण्ड का एक अंश है, अतः ब्रह्माण्ड में गतिशील ग्रहों, नक्षत्रों के प्रभाव को यह मानव-जीवन भी पूर्ण क्षमता के साथ झेलता है और ब्रह्माण्ड में ग्रहों के परस्पर आकर्षण-विकर्षण से जो प्रभाव बनता हैं उसी प्रभाव को मानव-जीवन अपने-आप में समाहित करता है।

चन्द्रमा पृथ्वी से काफी दूर है परन्तु फिर भी उसके प्रभाव के फलस्वरूप समुद्र में एक निश्चित समय पर ज्वारभाटा आता है तथा चन्द्रमा की किरणों के साथ ही साथ समुद्र का पानी जरूरत से ज्यादा ऊपर उठता है और उन्हीं किरणों के प्रभाव के साथ ही साथ वह पानी नीचे उतरकर पुनः अपने समान स्तर पर आ जाता है। यह तो निश्चित है कि चन्द्रमा के आकर्षण से ही समुद्र में ज्वार-भाटा आता है। यदि चन्द्रमा के आकर्षण से समुद्र में ज्वार आ सकता है तो वैसे ही तत्त्वों की रचना मानव-शरीर में भी होने के कारण यदि उस चन्द्रमा का प्रभाव मानव-शरीर में पाए जाने वाले पानी पर या दूसरे शब्दों में मानव पर पड़ता हैं तो कोई आश्चर्य नहीं।

वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि चन्द्रमा का प्रभाव जिस प्रकार से और जितनी क्षमता के साथ समुद्र पर पड़ता है ठीक उसी क्षमता के साथ मानव पर भी पड़ता है।

अमेरिका के नृतत्व-शास्त्रियों ने स्वीकार किया है कि पूर्णिमा के आसपास पागलों के उत्पात में वृद्धि हो जाती है। उनमें पागलपन जरूरत से ज्यादा बढ़ जाता है और वे नियन्त्रण से बाहर होने लगते हैं। इसकी अपेक्षा अन्य दिनों में उनकी गतिविधियाँ सामान्य बनी रहती हैं। ब्रिटेन के पुलिस अधिकारियों ने पिछले ५० वर्षों का रिकार्ड देखकर इस बात की पुष्टि की है कि पूर्णिमा के आसपास चन्द्रमा का प्रभाव मानव पर विशेष रूप से पड़ता है। उस समय वे ज्यादा कामोत्तेजक हो जाते हैं और इन्हीं दिनों में उनका मानस नियन्त्रण से बाहर हो जाने के कारण उनमें हिंसक प्रवृत्तियाँ जरूरत से ज्यादा बढ़ जाती हैं। दूसरे शब्दों में उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है कि पूर्णिमा के आसपास अपराध ज्यादा होते हैं।

चन्द्रमा के साथ ही साथ अन्य ग्रहों का प्रभाव भी मानव पर इसी प्रकार से बराबर पड़ता रहता है। यह अलग बात है कि चन्द्रमा पृथ्वी के सबसे निकट का ग्रह है, इसलिए उसके प्रभाव को हम स्पष्टत: देखने में समर्थ होते हैं जबकि अन्य ग्रह पृथ्वी से बहुत दूर होने के कारण उनके प्रभाव को एकदम से नहीं पहचान पाते।

**प्रश्न :** जब एक ही स्थान पर दो बालक पैदा होते हैं तब उनका भविष्य भी एक ही सा होना चाहिए। फिर उनमें अन्तर क्यों आ जाता है जबकि ज्योतिष के अनुसार उन दोनों बालकों पर एक-सा ही ग्रह-प्रभाव होता है ?

**उत्तर :** वास्तव में यह तो सही है कि एक ही स्थान पर यदि दो बालकों का जन्म होता है तो उन दोनों बालकों पर एक ही प्रकार की ग्रह-रश्मियों का प्रभाव पड़ता है परन्तु आगे चलकर यदि दोनों बालकों का भविष्य आँकते हैं तो दोनों में काफी अन्तर प्रतीत होता है।

इसका मूल कारण यह है कि बालक की जन्म-कुण्डली अपने-आप में स्थूल है। किसीका भविष्य तब तक सही रूप से नहीं जाना जा सकता जब तक उसकी गर्भ-कुण्डली स्पष्ट न हो जाए, क्योंकि गर्भ-कुण्डली ही वह बिन्दु है जहाँ से बालक का मौलिक विकास प्रारम्भ होता है, जन्म तो एक स्थूल और गौण घटना है जबकि वास्तविक जन्म गर्भ में भ्रूण-प्रवेश से ही हो जाता है।

जिस क्षण-विशेष में गर्भ में बालक का भ्रूण स्थापित होता है वही क्षण उसके पूरे जीवन को आप्लावित करता है। उसकी माता के द्वारा उस बालक पर भी ग्रहों का प्रभाव पड़ता ही है। चिकित्सा-शास्त्र के अनुसार भी माँ जिस प्रकार का भोजन करती है, या जिस प्रकार का खान-पान, रहन-सहन, विचारधारा होती है उस बालक पर भी न्यूनाधिक रूप से उसका प्रभाव पड़ता है।

जब खानपान का प्रभाव बालक स्वीकार करता है तो ग्रहों का प्रभाव तो माँ के द्वारा स्वीकार करता ही है, इसमें सन्देह की गुंजाइश नहीं है। इसलिए बालक के सही रूप में भविष्य को आँकने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी गर्भ-कुण्डली बनाई जाए और उसके माध्यम से उसके भविष्य का आकलन किया जाए, तभी उसके भविष्य को सही प्रकार से समझा जा सकेगा।

ज्योतिष-नियमों के अनुसार जन्म-क्षण से गर्भ-क्षण निकाला जा सकता है, अर्थात् जन्म-कुण्डली से गर्भ-कुण्डली बनाई जा सकती है। यद्यपि इस प्रकार का ज्ञान बहुत ही कम ज्योतिषियों को है परन्तु यह अपने-आपमें सर्वमान्य तथ्य है और इसके द्वारा गर्भ-कुण्डली भली प्रकार से स्पष्ट कर सकते हैं।

जब उन दो बालकों का, जिनका कि जन्म एक ही स्थान पर एक ही क्षण में हुआ है, उनकी गर्भ कुण्डली देखें तो उनमें बहुत अधिक अन्तर होगा, क्योंकि गर्भ-प्रवेश एक ही क्षण हो, ऐसा संभव नहीं है।

गर्भ-कुण्डली अलग-अलग हो जाने से उनका भविष्य भी अलग-अलग रूप में विकसित होगा, यह अपने-आपमें स्पष्ट है।

प्रश्न : यदि दो जुड़वाँ बच्चे एक ही समय में या दो-तीन मिनट के अन्तर से हों तो लगभग दोनों पर ग्रहों का प्रभाव एक-सा ही होगा, तो क्या उन दोनों का भविष्य एक-सा ही स्पष्ट होगा ?

उत्तर : यह बात सही है कि यदि दो जुड़वाँ भाई हों और दोनों का जन्म एक ही स्थान पर दो-तीन मिनट के अन्तर से होता है, तो उनकी जन्म-कुण्डली लगभग एक-सी ही होगी और उन दोनों पर ग्रहों का प्रभाव भी लगभग एक-सा ही होगा।

परन्तु यहाँ पर भी गर्भ-कुण्डली का विवेचन आवश्यक हो जाएगा, क्योंकि गर्भ-कुण्डली ही बालक की वास्तविक कुण्डली होती है अतः दोनों बालकों के भ्रूण-प्रवेश में निश्चय ही अन्तर होता है। अतः दोनों की गर्भ-कुण्डलियाँ भी अलग-अलग होंगी और इस प्रकार अलग-अलग

होने से दोनों का विकास या भविष्य अलग-अलग होना स्वाभाविक है।

प्रश्न : यदि दोनों का भ्रूण-प्रवेश एक ही क्षण में हो तब क्या दोनों का भविष्य एक-सा ही होगा ?

उत्तर : निश्चय ही यदि दोनों बालकों का गर्भ-प्रवेश एक ही क्षण में हो तो उन दोनों बालकों की गर्भ-कुण्डली एक ही होगी और उन दोनों बालकों का भविष्य भी एक-सा ही होगा।

ब्रिटेन के दो भाई—हर्बर और प्रिन्टल सगे भाई थे। दोनों का जन्म लगभग साथ ही हुआ था। आगे चलकर दोनों व्यापारी बने और दोनों ने कपड़े का ही व्यापार किया। यद्यपि दोनों अलग-अलग शहरों में रहते थे।

जब एक भाई बीमार पड़ता तो उसी समय दूसरा भाई भी उसी रोग से ग्रस्त होता। दोनों का जीवन लगभग एक-सा ही रहा। दोनों ने तीन-तीन विवाह किए। प्रत्येक भाई के दो पुत्र और एक पुत्री हुई तथा दोनों की मृत्यु एक ही क्षण में अलग-अलग शहरों में हुई।

यह तथ्य इस बात को स्पष्ट करता है कि यदि गर्भ-प्रवेश एक ही क्षण में होता है तो निश्चय ही उनका जीवन भी एक-सा ही बनता है और उनका पूरा भविष्य समान कार्यकलापों में व्यतीत होता है।

प्रश्न : यदि मानव के भाग्य में जो कुछ लिखा हुआ है और उसी को ज्योतिष स्पष्ट करता है तो फिर ज्योतिष की उपयोगिता क्या है; क्योंकि जो कुछ होना है वह तो होगा ही, चाहे हमें पहले ही ज्ञात क्यों न हो जाए ?

उत्तर : ज्योतिष यद्यपि भविष्य को स्पष्ट करता है और भविष्य तभी स्पष्ट हो सकता है जबकि किसीका भविष्य सुनिश्चित हो, क्योंकि यदि कोई वस्तु या तथ्य निश्चित नहीं है तो उसका आकलन भी संभव नहीं है। यह स्पष्ट है कि भविष्य निश्चित है और इस भविष्य का निर्माण पूर्व जीवन के कार्यों से भी बँधा हुआ है। भारतीय दर्शन इस बात को स्वीकार करता है कि हमारा जो वर्तमान जीवन है वही अपने-आपमें पूर्ण जीवन नहीं है अपितु यह तो उस पूरी जीवन-शृंखला की एक कड़ी है। यह कड़ी तभी शृंखला कहला सकती है जबकि यह आगे की और पीछे की कड़ी से जुड़ी हुई हो।

अतः यह स्पष्ट है कि हमने पूर्व जीवन में जो कार्य किए हैं या जिस प्रकार के कार्य-कलाप रहे हैं उसका परिणाम हम इस जीवन में भुगतते हैं। एक प्रकार से देखा जाए तो पूर्व जीवन के कृत्यों से ही

हमारे वर्तमान जीवन का भविष्य निर्माण होता है और इस जीवन में हम जो कार्य करते हैं, उसका प्रभाव आने वाले जीवन पर पड़ेगा। सही रूप में हम वर्तमान जीवन में जो कार्य कर रहे हैं वही एक प्रकार से आगामी जीवन का भविष्य-निर्माण है।

परन्तु पूर्व जीवन के कार्यों के साथ ही साथ वर्तमान जीवन के कार्य और विचारधारा का प्रभाव भी हमारे भविष्य पर पड़ता है, इसके साथ ही साथ वातावरण, जीवन, चिन्तन आदि का प्रभाव भी हमारे वर्तमान जीवन और भविष्य पर स्पष्ट रूप से होता है।

ज्योतिष इसी भविष्य को इस रूप में स्पष्ट करता है कि वर्तमान जीवन से पूर्व किस प्रकार की ग्रह-दशा से संचालित था और वर्तमान जीवन में किस प्रकार की ग्रह-दशा से संचालित है तथा आगे के जीवन में ग्रहों का प्रभाव किस-किस रूप में होगा।

ज्योतिष का आधार ग्रहों की गति, ग्रहों का परस्पर आकर्षण-विकर्षण तथा ग्रहों का मानव पर प्रभावों का अध्ययन है। यह शुद्ध रूप से गणित-कार्य है, और गणित अपने-आपमें पूर्णतया सत्य होता है। अतः गणित के द्वारा जो कुछ तथ्य स्पष्ट होते हैं वे अपने-आपमें पूर्णतया सत्य और प्रामाणिक होंगे, इसमें सन्देह नहीं।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, भविष्य का निर्माण पूर्व जीवन के कार्य और वर्तमान जीवन के क्रिया-कलापों से निर्मित होता है, अतः वह निश्चित है और ज्योतिष इसी भविष्य को पहले से ही आपके सामने स्पष्ट कर देता है क्योंकि वर्तमान क्षण को मानव आँक सकता है तथा उसे पहचान सकता है परन्तु आने वाले क्षण के प्रति वह पूर्णतया अज्ञानयुक्त है। उसे इस बात का ज्ञान नहीं है कि आने वाला क्षण अनुकूल होगा या प्रतिकूल, वह क्षण मेरे लिए लाभदायक रहेगा या हानिकारक।

अतः इस अज्ञान-रूपी अंधकार में से प्रकाश की किरण निकालने का कार्य ज्योतिष करता है, जिसके प्रकाश में मानव यह देख सकता है कि आने वाला समय किस प्रकार का है।

जब यह ज्ञात हो जाता है कि आने वाले समय में कुछ बाधाएँ हैं या प्रगति में रुकावट है तो वह उसको अनुकूल बनाने के लिए प्रयत्नशील हो उठता है और इस प्रकार कुछ विशेष प्रयत्नों से उस विपरीत भविष्य के क्षणों को अनुकूल बनाने में समर्थ हो जाता है।

प्रश्न : वे कौन-सी विधियाँ हैं जिनके माध्यम से हम भविष्य में

परिवर्तन ला सकते हैं ?

उत्तर : ज्योतिष-मान्य कई विधियाँ हैं जिनके माध्यम से हम भविष्य में परिवर्तन ला सकते हैं, परन्तु भविष्य को पूर्णतया नहीं बदला जा सकता। उसके प्रभाव में न्यूनाधिक्यता लाई जा सकती है।

उदाहरण के लिए यदि ग्रहों की गति के अध्ययन के फलस्वरूप स्पष्ट होता है कि ११ नवम्बर को दुर्घटना होगी तो यह मानव के लिए विपरीत क्षण है और वह यह जानकर चिन्तित हो उठेगा कि आने वाले ११ नवम्बर को दुर्घटना होगी और वह इसके लिए प्रयत्नशील बनेगा। इस दुर्घटना का कारण ग्रहों का प्रभाव होगा, क्योंकि जो कुछ भी जीवन में घटित होता है वह ग्रहों के प्रभाव के फलस्वरूप ही संभव है और उस प्रभाव का अध्ययन ही फलित ज्योतिष कहलाता है। अतः उस ग्रह के क्षण-विशेष में जो प्रभाव निर्मित हो रहा है वह इस बात को स्पष्ट कर रहा है कि उस क्षण-विशेष में सम्बन्धित व्यक्ति को दुर्घटनाग्रस्त होना पड़ेगा।

अब यदि उस सम्बन्धित ग्रह के प्रभाव को न्यून कर दिया जाए तो निश्चय ही दुर्घटना भी न्यून रूप से ही होगी और उसका प्रभाव भी न्यून रहेगा। इस प्रकार ग्रहों के प्रभाव को न्यून करके विपरीत क्षण को कुछ अनुकूल बनाया जा सकता है। यहाँ पर यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि उस क्षण-विशेष पर दुर्घटना तो होगी ही, क्योंकि यह भविष्य निश्चित है, परन्तु उसके प्रभाव में न्यूनता लाना तभी संभव हो सका है जबकि हमें ज्योतिष के माध्यम से पहले से ही यह ज्ञान हुआ कि ११ नवम्बर को दुर्घटना होगी।

अब यह स्पष्ट हुआ कि हमारा भविष्य सुनिश्चित है। उसको परिवर्तित नहीं किया जा सकता, परन्तु उसके प्रभाव को कम या ज्यादा किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए यह ज्ञात हो जाए कि जून से सितम्बर तक का समय विशेष अनुकूल है तो यह भी ज्ञात हो सकता है कि यह किस ग्रह के प्रभाव के फलस्वरूप है। अब यदि उस ग्रह के प्रभाव को बढ़ा दिया जाए तो उस समय में विशेष लाभ उठाया जा सकता है।

प्रश्न : वे कौन-सी विधियाँ हैं जिनके माध्यम से ग्रहों के प्रभाव को न्यून या अधिक किया जा सकता है ?

उत्तर : यद्यपि कई विधियाँ हैं जिनके माध्यम से ग्रहों के प्रभाव को अनुकूल या प्रतिकूल किया जा सकता है। इनमें मंत्र, तंत्र, यंत्र, रत्न

आदि मुख्य हैं। यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि हम इनके माध्यम से ग्रहों को प्रसन्न या अप्रसन्न नहीं कर सकते। यह धारणा गलत है कि मंत्र ग्रहों को प्रसन्न करने के लिए हैं या सम्बन्धित ग्रह की स्तुति करने से वह ग्रह प्रसन्न हो जाएगा और अपने विपरीत प्रभाव को कम कर देगा। यह धारणा ही मूल रूप से गलत है। कोई भी मंत्र ग्रह को प्रसन्न या अप्रसन्न नहीं कर सकता।

रत्न मूल रूप से ग्रहों की रश्मियों का संवाहक है। जिस क्षण-विशेष में बालक माता के गर्भ से इस वायुमण्डल में प्रवेश करता है उस समय पहले ही क्षण में ग्रहों की रश्मियों का प्रवेश उसके शरीर में हो जाता है और वे उसके पूरे जीवन को संचालित करती हैं।

प्रत्येक क्षण प्रत्येक ग्रह की रश्मियाँ प्रवाहित हैं। यह बात अलग है कि किसी समय किसी ग्रह की विशेष घनीभूत रश्मियाँ प्रवाहित रहती हैं और किसी क्षण में उसकी अत्यन्त विरल।

शोध के द्वारा यह स्पष्ट हो चुका है कि प्रारंभिक क्षण में जो रश्मियाँ बालक के शरीर में प्रवाहित होती हैं वे स्थायी रूप से रहती हैं।

जब उसके शरीर में किसी ग्रह की रश्मियाँ कम होती हैं तो उस ग्रह से संबंधित प्रभाव में भी न्यूनता रहती है। उदाहरण के लिए किसी बालक पर मंगल का प्रभाव स्वास्थ्य से सम्बन्धित है और जिस समय उसका जन्म होता है तब मंगल की रश्मियाँ यदि विरल होती हैं तो उसके शरीर में मंगल की रश्मियों का अभाव या न्यूनता होती है, फलस्वरूप उसका स्वास्थ्य सामान्यतः कमजोर ही बना रहेगा।

अब यह निश्चित है कि यदि शरीर को जितनी मंगल रश्मियों की आवश्यकता होती है उतनी पूर्ति यदि हो जाए तो उसकी न्यूनता की वजह से जो स्वास्थ्य में कमी है वह कमी दूर हो सकती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जाए कि यदि उस व्यक्ति के शरीर में मंगल रश्मियों का प्रवाह हो सके तो उसका स्वास्थ्य अनुकूल बन सकता है।

इसके लिए रत्न ही सर्वाधिक उपयोगी है, क्योंकि मंगल ग्रह से सम्बन्धित रत्न मूँगा है, जिसे अंग्रेजी में 'कोरल' कहते हैं। इस रत्न में यह विशेषता है कि यह वायुमण्डल में से मात्र मंगल की रश्मियों को ही अपने में जज्ब करता है और वह रत्न यदि मानव-त्वचा से सम्बन्धित रहे तो मानव-त्वचा संवेदनशील होने के कारण उसके माध्यम से मंगल रश्मियों को अपने-आप में जज्ब करती रहती है और इस प्रकार वह अपने शरीर में मंगल रश्मियों की पूर्ति कर लेती है।

जब शरीर में मंगल रश्मियों का संतुलन बराबर हो जाएगा तो उसके अभाव की वजह से जो स्वास्थ्य में कमी थी वह अपने-आप ही दूर हो जाएगी और इस प्रकार उसका स्वास्थ्य पूर्णतया अनुकूल हो सकेगा।

इसी प्रकार यदि ग्रहों के प्रभाव को कम करना है, तो उनसे संबंधित रत्न धारण न करके उनके विपरीत ग्रह से संबंधित रत्न को धारण करना चाहिए जिससे कि वह उस ग्रह की रश्मियों को प्रभाव-शून्य बना सके। फलस्वरूप उस ग्रह के विपरीत प्रभाव को न्यून किया जा सके।

इसी प्रकार मंत्र एक विशेष ध्वनि-संयोजन है और इस ध्वनि-संयोजन से उन रश्मियों में बाधा पहुँचाई जा सकती है जो कि मानव को प्रभावित करती हैं और इस प्रकार मंत्रों के माध्यम से भी व्यक्ति को अनुकूल और प्रतिकूल फल दिया जा सकता है।

इस प्रकार मंत्र-तंत्र आदि ग्रहों को प्रसन्न करने के लिए नहीं हैं अपितु इसके पीछे ठोस वैज्ञानिक आधार है, जिसके माध्यम से ग्रहों के प्रभाव को अनुकूल किया जा सकता है।

इस प्रकार से ज्योतिष की उपयोगिता निर्विवाद रूप से मानव-कल्याण के लिए उपयोगी मानी जा सकती है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने भविष्य को सही रूप में देख सकता है और उस विपरीत क्षण को अनुकूल बनाने में समर्थ हो सकता है जिससे कि वह अपने लक्ष्य तक बिना हिचकिचाहट के पहुँच सके।

प्रश्न: क्या भारत में वैज्ञानिक दृष्टि से ज्योतिष का अध्ययन और कार्य हो रहा है?

उत्तर: इस बात को स्वीकार करने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि विश्व के उन्नत देशों में जिस प्रकार से ज्योतिष पर शोध-कार्य हो रहे हैं उस प्रकार से भारत में कार्य नहीं हो रहा है। इसके कई कारण हैं। एक तो यहाँ पर इस प्रकार की वेधशालाएँ नहीं हैं जिनके माध्यम से ग्रहों की गति का सूक्ष्मता से अध्ययन किया जा सके। इसके अतिरिक्त ज्योतिष के प्रभाव को सही रूप से अध्ययन करने की रुचि भी अभी तक व्याप्त नहीं हो सकी है।

फिर भी पिछले कुछ वर्षों में इस प्रकार की चेतना जन-मानस में व्याप्त हुई है। उसने ज्योतिष की उपयोगिता समझी है। कुछ स्थानों पर ज्योतिष का पठन-पाठन भी प्रारम्भ हुआ है और जो वेधशालाएँ

भारत में हैं उनकी कार्य-पद्धति में सुचारुता आ सकी है।

दिल्ली, कानपुर, देव प्रयाग, बम्बई आदि कई स्थानों पर ऐसे संस्थान या केन्द्र स्थापित हुए हैं जिनके माध्यम से ज्योतिष का ला जन साधारण को दिया जाना संभव हो सका है और जहाँ पर वैज्ञानि पद्धति से कार्य-सम्पादन हो रहा है। यद्यपि उनकी भी अपनी सीम हैं और उन सीमाओं में रहकर उन्हें अपना कार्य करना पड़ रहा उनके पास जो पंचांग है उसी को आधार मानकर ग्रह गति अध्ययन किया जाता है और प्रभाव स्पष्ट किया जाता है। वेधशा के अभाव से पंचांगों में त्रुटियाँ या न्यूनता स्वाभाविक है। प स्वरूप उसके आधार पर स्पष्ट भविष्य भी अर्द्ध सत्य हो सकत फिर भी यह प्रसन्नता की बात है कि ये संस्थान और केन्द्र पूरी क्षमता के साथ वैज्ञानिक पद्धति से कार्य कर रहे हैं।

जोधपुर का भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसन्धान केन्द्र भी इसी प्रकार से कार्य-सम्पादन में गतिशील है। इसके माध्यम से ज्योति कार्य सम्पादन होता है। जन्म-कुण्डली या हस्तरेखा के माध्यम भविष्यफल स्पष्ट किया जाता है और इसके अतिरिक्त भी ज्योतिष तथा मंत्र आदि से संबंधित कार्य पूर्ण वैज्ञानिकता के साथ सम्पन्न किए जाते हैं। इसके अलावा भी भारत में कई स्थानों पर ज्योतिषी बन्धु समर्पित भाव से ज्योतिष में कार्य कर रहे हैं और पूर्ण वैज्ञानिक दृष्टि होने के कारण जन साधारण में प्रतिष्ठा अर्जित कर ज्योतिष को सम्माननीय स्थान दिलाने में समर्थ हो सके हैं।

वस्तुत: आवश्यकता इस बात की है कि जन साधारण में ज्योतिष के प्रति चेतना व्याप्त हो, वे ज्योतिष की उपयोगिता को समझें और इसके माध्यम से अपने भविष्य को सही प्रकार से पहचानकर उसे अनुकूल बना सकें जिससे आने वाला जीवन-पथ कंटक-रहित और सुखदायक हो सके जिससे कि वे कम समय में अपने लक्ष्य पर पहुँचकर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें।

●●●

# डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली



# भारतीय ज्योतिष

यह प्रसन्नता की बात है, कि मेरी इस पुस्तक का प्रकाशन "आनन्द पेपर बेक्स" जैसी प्रतिष्ठित एवं विख्यात संस्था कर रही है।

दो नये अध्याय के साथ इस पुस्तक का परिवर्तित एवं परिवर्द्धित संस्करण प्रकाशित करने से इसकी उपयोगिता एवं महत्व कई गुना बढ़ गया है।

मुझे पूरा विश्वास है, कि मेरे पाठक इस पुस्तक को ललक कर अपनायेंगे।

— डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

श्रीमाली मार्ग
हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर (राजस्थान)

6/-



आनंद पेपरबेक्स